केन्द्रीय विद्यालय संगठन

चेन्नई सम्भाग

अध्ययन सामग्री

कक्षा X

हिंदी पाठ्यक्रम-ए 2022-23

संरक्षक

सुश्री टी. रुक्मणी

कार्यवाहक उपायुक्त

के० वि० एस० क्षे० का० चेन्नई

श्री. पी.आई. तंगराजा

सहायक आयुक्त

के० वि० एस० क्षे० का० चेन्नई

सदस्य और आवंटित विषयों का विवरण/MEMBERS & DETAILS OF TOPICS ALLOTTED			
S No.	**Names of Teacher**	**Name of KV**	**Topics Allotted (क्षितिज-1 to 17) (कृतिका-1,3,5)**
1	MR. MAHENDRA KUMAR	CHENNAI CLRI	पाठ 1:सूरदास (Class X) क्षितिज
2	MRS.MONIKA	CHENNAI HVF AVADI	पाठ 2: तुलसीदास (Class X)
3	MRS. K SARTAJ BEGUM	COIMBATORE	पाठ 4: जयशंकर प्रसाद (Class X)
4	MR.DALIP KUMAR	DHARMAPURI	पाठ 5: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (Class X)
5	MRS.VISHAKHA	DINDIGUL	पाठ 6: नागार्जुन (Class X)
6	MS. PRIYANKA SHARMA	TRICHY NO.1	पाठ 9: मंगलेश डबराल (Class X)
7	MR. BHERUN LAL MEENA	SULUR	पाठ 10: स्वयं प्रकाश (Class X)
8	ANAND KUMAR SINGH	VIJAYANARAYANAM	पाठ 11: रामवृक्ष बेनीपुरी (Class X)
9	MR. KULDEEP	VIRUDHUNAGAR	पाठ 12: यशपाल (Class X)
10	MRS.VARSHA YADAV	PORT BLAIR NO.1	पाठ 14: मन्नू भंडारी (Class X)
11	HARE KRISHNA YADAV	KARAIKKAL	पाठ 16: यतीन्द्र मिश्रा (Class X)
12	MR. SAURABH SAINI	PORT BLAIR NO.2	पाठ 17: भदंत आनंद कौसल्यायन (Class X)
13	MRS.SUMAN SINGH SENGER	CHENNAI DGQA	पाठ 1: माता का अँचल (Class X) कृतिका
14	SMT. SUJATHA KUMARI	CHENNAI CRPF AVADI	पाठ 3: साना – साना हाथ जोड़ि (Class X)
15	FATIMA.X	CHENNAI ISLAND GROUNDS	पाठ 5: मैं क्यों लिखता हूँ? (Class X)
16	SMT. C. REETA	KARAIKUDI	व्याकरण (वाक्य भेद)
17	MS. JAYANTI	PERAMBALUR	व्याकरण (वाक्य भेद)
18	SMT. SRIVIDHYA	SIVAGANGA	व्याकरण (वाच्य भेद)
19	SMTI. MALLIGAI	SIVAGANGA	व्याकरण (पद परिचय भेद)
20	SMT.VANDANA PANDEY	THANJAVUR	व्याकरण (अलंकार)
21	SMT.SNEHALATHA SUKELA	THANJAVUR	व्याकरण (समास)
22	MRS.K.ROJARAMANI	THIRUVANNAMALAI	संक्षेप में विभिन्न प्रकार के विज्ञापन
23	SMT.CHITRA	TRICHY NO.2	संक्षेप में विभिन्न प्रकार के शिकायत पत्र (ईमेल से)
24	SMT.NEHA MISHRA	TRICHY NO.2	सारगर्भित अनुच्छेद (सारांशित लेख) के लिए संकेत भिंदु के साथ चयनित महत्वपूर्ण विषय
26	MRS. A. VIJAYA	TRICHY NO. 3 GOLDEN ROCK	संक्षेप में विभिन्न प्रकार के बधाई संदेश
27	MRS. PRITE TRIPATHI	WELLINGTON	विभिन्न मुद्दों + विषय पर औपचारिक और अनौपचारिक पत्र लेखन

जांच और समीक्षा समिति का विवरण/Details of Scrutinizing and Review Committee		
Names of Teacher	Name of KV	Topics Allotted
MRS. ARUNDHATI	CHENNAI AFS AVADI	क्षितिज पाठ-1,2,4,5,6 & 7 + कृतिका पाठ-1,3
MRS. MEENA RAJU	CHENNAI ANNANAGAR	क्षितिज 9,10,11,12,14,16 & 17 + कृतिका 5
MR. A.P. ANTONY JOSEPH	PONDICHERRY NO.1 (S-1)	व्याकरण

COORDINATOR: V. MEGANATHAN, PRINCIPAL, KV AFS SULUR

INDEX		
S NO	**CONTENT**	**PAGE NO.**
1	पाठ 1:सूरदास (Class X) क्षितिज	4
2	पाठ 2: तुलसीदास (Class X)	9
3	पाठ 4: जयशंकर प्रसाद (Class X)	37
4	पाठ 5: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (Class X)	46
5	पाठ 6: नागार्जुन (Class X)	55
6	पाठ 9: मंगलेश डबराल (Class X)	61
7	पाठ 10: स्वयं प्रकाश (Class X)	69
8	पाठ 11: रामवृक्ष बेनीपुरी (Class X)	74
9	पाठ 12: यशपाल (Class X)	81
10	पाठ 14: मन्नू भंडारी (Class X)	92
11	पाठ 16: यतीन्द्र मिश्रा (Class X)	98
12	पाठ 17: भदंत आनंद कौसल्यायन (Class X)	109
13	पाठ 1: माता का अँचल (Class X) कृतिका	119
14	पाठ 3: साना – साना हाथ जोड़ि (Class X)	136
15	पाठ 5: मैं क्यों लिखता हूँ? (Class X)	141
16	व्याकरण (वाच्य भेद)	146
17	व्याकरण (वाक्य भेद)	150
18	व्याकरण (समास)	163
19	व्याकरण (पद परिचय भेद)	166
20	संक्षेप में विभिन्न प्रकार के बधाई संदेश	172
21	संक्षेप में विभिन्न प्रकार के विज्ञापन	180
22	सारगर्भित अनुच्छेद लेखन	196
23	विभिन्न प्रकार के शिकायत पत्र (ईमेल से)	230
24	विभिन्न प्रकार के बायोडाटा (स्ववृत)	235
26	औपचारिक और अनौपचारिक पत्र लेखन	245
27	व्याकरण (अलंकार)	258

कक्षा दसवीं: क्षितिज भाग-2: **पद्य भाग**

पाठ-1 – 'पद' – कवि सूरदास

कवि-परिचय – हिन्दी साहित्य के 'स्वर्णिम युग' भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के अंतर्गत कृष्णाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि भक्त कवि सूरदास का जन्म 1478 ई. में सीही नामक ग्राम में हुआ था, लेकिन कुछ विद्वानों का मानना है कि सूरदास का जन्म मथुरा-आगरा मार्ग पर स्थित रुनकता नामक ग्राम में हुआ था।

इनकी भक्ति का एक पद सुनकर पुष्टिमार्ग के संस्थापक महाप्रभु बल्लभाचार्य ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया। बल्लभाचार्य के पुत्र बिट्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' नाम से कृष्णभक्त कवियों के लिए समूह तैयार किया जिसमे यह सबसे श्रेष्ठ कवि थे। इनकी मृत्यु 1583 ई. में पारसौली नामक ग्राम में हुई थी।

रचनाएँ: सूरदास की प्रमुख रचनाएँ हैं-- "**सूरसागर, सूर-सारावली, साहित्य लहरी"।** इनमें 'सूरसागर' ही सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुआ। हिन्दी साहित्य में इन्हें 'सूर्य' की उपाधि दी गयी है। उनके इस उपाधि पर एक दोहा प्रसिद्ध है--

"सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकाश॥"

कहा जाता है- श्रीमद्-भागवत के आधार पर 'सूरसागर' में सवा लाख पद हैं। इसमें श्री कृष्ण की बाल-लीलाओं, गोपी-प्रेम, उद्धव-गोपी संवाद और गोपी-विरह का बड़ा सरस वर्णन है। सूरसागर के दो प्रसंग "कृष्ण की बाल-लीला' और" भ्रमर-गीत-सार' अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

काव्यगत विशेषताएँ—

- सूरदास मूलत: कृष्ण-भक्त कवि हैं, इसलिए उनकी भक्ति में कहीं वात्सल्य की झलक मिलती है तो कहीं श्रृंगार की।
- उन्होंने कृष्ण के शिशु, बाल, किशोर और तरुण रूप की अत्यंत मनोहर झाँकियाँ प्रस्तुत की है।
- श्रृंगार में भी उन्होंने संयोग और वियोग – दोनों पक्ष का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया हैं।
- उन्हें 'वात्सल्य' और 'श्रृंगार' रस का सर्वश्रेष्ठ कवि कहा जाता है।
- कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है।

भाषा-शैली--

- उनके काव्य में ब्रजभाषा के कारण अद्भुत मिठास, माधुर्य और कोमलता है।
- उनके पदों में अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टांत, रूपक, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग बन पड़ा है।

'पद'

प्रतिपाद्य – यहाँ 'सूरसागर' के भ्रमरगीत से चार पद संकलित हैं। इन पदों में श्रीकृष्ण के प्रति गहरे अनुराग की अभिव्यक्ति हुई है। श्रीकृष्ण गोकुल छोडकर मथुरा चले गए। मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण ने गोपियाँ श्रीकृष्ण के वियोग में व्याकुल हो गईं। तब श्रीकृष्ण ने अपने परम मित्र उद्धव के माध्यम से गोपियों को अपने शीघ्र लौट आने संदेश देकर भेजा। गोकुल पहुँचकर उद्धव ने गोपियों को निर्गुण ब्रह्म

और योग का उपदेश देकर उनकी विरह-वेदना को शांत करने का प्रयास किया। पर गोपियों को उनका शुष्क और नीरस ज्ञान रास नहीं आया और उन्होंने नीरस ज्ञान मार्ग की बजाय प्रेम मार्ग को अपनाना उचित समझा। उसी समय एक भौंरा वहाँ उड़ता-उड़ता आ पहुँचा जिसे लक्ष्य करके गोपियों ने उद्धव और उनके ज्ञान पर तीक्ष्ण व्यंग्य बाण छोड़े। इसी जगह 'भ्रमरगीत' का आरंभ होता है।

सार--

पहले पद में, गोपियों ने उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आप बड़े भाग्यशाली हैं जो श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेमरूपी धागे से नहीं बंधे हैं, अन्यथा हमारी ही तरह आपको भी विरह वेदना की अनुभूति होती। जहाँ आप कृष्ण के प्रेम से बिलकुल अछूते रहे, वहीं हम सभी उनके प्रेम में ऐसे लिपट गईं जैसे गुड़ से चींटी लिपट जाती हैं।

दूसरे पद में, श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम की गहराई व्यक्त हुई है। गोपियाँ स्वीकार करती हैं कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं।

तीसरे पद में, वे उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी की तरह बताकर उसे स्वीकार करने से मना कर देती हैं और अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती है।

चौथे पद में, गोपियाँ उद्धव को ताना मारती हैं और बताती हैं कि श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। वे कहती हैं कि राजा का धर्म यही है कि प्रजा को सताया नहीं जाना चाहिए।

विशेष:

- श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के प्रति एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।
- गोपियाँ ज्ञान और योग के बजाए प्रेम मार्ग को अपनाना चाहती हैं।
- 'प्रीति-नदी' में रूपक तथा 'गुर चाँटी ज्यों पागी' में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है।
- पहले पद में 'वक्रोक्ति' अलंकार का प्रयोग है।
- सभी पदों में संगीत तत्व विद्यमान होने के कारण ये गेय हैं।
- कविता में बिंबों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
- गोपियों और श्रीकृष्ण के प्रेम के विरह के कारण वियोग श्रृंगार रस है।

बहुविकल्पी प्रश्न – पद एक

प्रश्न- i गोपियों ने उद्धव को भाग्यशाली क्यों कहा है?

(क) उद्धव श्रीकृष्ण के प्रेम में डूब गए हैं

(ख) उद्धव श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम में नहीं डूबे

(ग) श्रीकृष्ण उद्धव के प्रेम में डूब गए हैं

(घ) गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में डूब गई हैं

प्रश्न- ii प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयो – में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) यमक **(ग) रूपक** (घ) उपमा

प्रश्न- iii गोपियाँ स्वयं को भोली क्यों कहती हैं?

(क) वे परिणाम जाने बिना कृष्ण के प्रेम में मग्न हो गईं (ख) वे कृष्ण के छल को नहीं समझ पाईं
(ग) वे श्रीकृष्ण की बातों में आ गईं (घ) वे उद्धव की बातों में आ गईं

प्रश्न- iv कमल के पत्ते और उद्धव में क्या समानता है?
(क) दोनों अपनों से दूरी बनाए रखते हैं (ख) दोनों पानी के बहुत निकट रहते हैं
(ग) दोनों बहुत कोमल होते हैं (घ) दोनों बहुत उदास रहते हैं

प्रश्न- v अलंकार बताइए- 'गुर चाँटी ज्यों पागी'
(क) उत्प्रेक्षा (ख) यमक (ग) उपमा (घ) अनुप्रास

बहुविकल्पी प्रश्न – पद दो
प्रश्न- i 'मन की मन ही माँझ रही' का अर्थ है?
(क) मन की दृढ़ता **(ख) मन की बात मन में ही रहना**
(ग) मन का भेद (घ) मन का पाप

प्रश्न- ii गोपियाँ कौन-सी बात किसे बताना चाहती थीं?
(क) अपने मन की बात श्रीकृष्ण को (ख) अपने मन की बात उद्धव को
(ग) संसार के व्यवहार की बात अक्रूर को (घ) समाज की बात नंद को

प्रश्न- iii उद्धव गोपियों को कौन-सा संदेश देता है?
(क) प्रेम का **(ख) योग-साधना का** (ग) मोक्ष-प्राप्ति का (घ) भक्ति का

प्रश्न-iv योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(क) गोपियाँ प्रसन्न हो गईं (ख) वे खिन्न हो उठीं
(ग) उन्हें कृष्ण का प्रेम मिल गया **(घ) वे विरह से व्यथित हो उठीं**

प्रश्न-v किसने प्रेम की मर्यादा का उल्लंघन किया है?
(क) गोपियों ने (ख) उद्धव ने (ग) राजा ने **(घ) कृष्ण ने**

बहुविकल्पी प्रश्न – पद तीन
प्रश्न- i 'मन चकरी' से क्या अभिप्राय है?
(क). मन की चालाकी (ख) मन का चक्र **(ग) मन की अस्थिरता** (घ) मन की स्थिरता

प्रश्न- ii गोपियों ने हरि (श्रीकृष्ण) की तुलना किससे की है?
(क). गिद्ध से (ख) बाज से **(ग) हारिल से** (घ) कबूतर से

प्रश्न- iii गोपियाँ सोते जागते रात-दिन किसका ध्यान करती हैं?
(क) श्रीकृष्ण का (ख) उद्धव का (ग) कंस का (घ) बलराम का

प्रश्न-iv गोपियाँ 'कड़वी ककड़ी' किसे कहती हैं?

(क) ककड़ी को (ख) श्रीकृष्ण को (ग) यशोदा को **(घ) उद्धव द्वारा दिए गए योग संदेश को**

प्रश्न- v योग का संदेश किन्हें बुरा लगता है?

(क) उद्धव को (ख) श्रीकृष्ण को (ग) यशोदा को **(घ) गोपियों को**

बहुविकल्पी प्रश्न – पद चार

प्रश्न-i पुराने जमाने के लोगों को भला क्यों कहा गया है?

(क) दूसरों की भलाई करने के कारण (ख) स्वार्थ के कारण

(ग) चालाकी के कारण (घ) समभाव रहने के कारण

प्रश्न- ii गोपियों के अनुसार पहले से ही चतुर कौन था? .

(क) बलराम **(ख) श्रीकृष्ण** (ग) कंस (घ) उद्धव

प्रश्न- iii गोपियों के अनुसार राज-धर्म क्या है?

(क) प्रजा को परेशान करना (ख) राजा प्रजा से कोई मतलब न रखे

(ग) प्रजा को नहीं सताना (घ) पराजा का ध्यान न रखना

प्रश्न—iv चौथे पद में किस पर व्यंग्य किया है?

(क) बलराम **(ख) श्रीकृष्ण** (ग) कंस (घ) उद्धव

प्रश्न—v "मधुकर" शब्द का क्या अर्थ है?

(क) बलराम **(ख) भंवरा** (ग) कृष्ण (घ) उद्धव

वर्णनात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 - सूरदास के पद के अनुसार गोपियों के जीने का आधार क्या था?

उत्तर -गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था । उनके विरह से गोपियां अत्यंत व्याकुल थीं।कृष्ण के वृंदावन आने की आशा ही उनके जीने का आधार था।

प्रश्न2 - पठित पाठ के आधार पर सूर की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था। उनके मथुरा चले जाने से गोपियां अत्यंत व्याकुल थीं। कृष्ण के वृंदावन लौटने की आशा ही उनके जीने का एकमात्र आधार था।

प्रश्न-3 गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी कहने के समान क्यों बताया है ?

उत्तर-: गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के सामान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारील पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

प्रश्न- 4 ऐसी कौन सी बात थी जिसे गोपियों को अपने मन में दबाए रखने के लिए विवश होना पड़ा ?
उत्तर-: गोपियां चाहती थी कि श्री कृष्ण के दर्शन करें और अपने प्रेम की अभिव्यक्ति उनसे करें। वह इन बातों को उद्धव से नहीं कर सकती थी । यही बात उनके मन में दबी रह गई ।

प्रश्न-5 कमल के पत्ते और तेल लगी गागर की क्या विशेषता होती है ?
उत्तर-: कमल का पत्ता इतना चिकना होता है कि पानी की बूंद उस पर ठहर नहीं सकती है। इसलिए कमल का पत्ता पानी में रहने पर भी गिला नहीं होता है इसी प्रकार तेल लगी गागर को जब पानी में डुबोया जाता है तो उसे भी पानी छू नहीं पाता है और वह सूखी की सूखी रह जाती हैं।

प्रश्न- 6 गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है। आपकी दृष्टि से उनका ऐसा कहना कितना उपयुक्त है ?
उत्तर-: गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है पर मेरी दृष्टि में ऐसा नहीं है। गोपियां कृष्ण से दूर रहकर भी उनके प्यार में अनुरक्त हैं। वे स्वयं को कृष्ण के प्रेम बंधन में बंधी पाती हैं, जिसे कृष्ण से इस तरह का प्रेम मिल रहा हो वह अबला और भली नहीं हो सकती हैं ।

प्रश्न 7 'प्रीति नदी में पाँव न बोरयो' का आशय स्पष्ट कीजिए। ऐसा किसके लिए कहा गया है?
उत्तर-: 'प्रीति नदी में पाँव न बोरयों' का आशय है कि प्रेम रूपी नदी में पैर न डूबाना अर्थात किसी से प्रेम ना करना और प्रेम का महत्व ना समझना ऐसा उद्धव के लिए कहा गया है जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अछूते बने रहें ।

प्रश्न- 8 गोपियाँ किस आधार पर विरह व्यथा सह रही थीं ?
उत्तर-: मथुरा जाते समय श्री कृष्ण ने गोपियों से एक निश्चित समय सीमा की ओर संकेत करके कहा था कि इतने समय के बाद ब्रज वापस आ जाएंगे। उसी आने की अवधि को आधार बनाकर गोपियां तन और मन की विरह सह रही थीं ।

प्रश्न- 9 गोपियों को मदद मिलने की आशा कहां लगी थी? उनकी यह आशा निराशा में कैसे बदल गई ?

उत्तर- गोपियां जो विरह व्यथा जी लेने को विवश थी, को श्री कृष्ण की ओर से दर्शन और प्रेम संदेश के रूप में मदद मिलने की आशा लगी थी पर जब कृष्ण ने ही उद्धव के हाथों योग संदेश भिजवाया तो उनकी यह आशा निराशा में बदल गई।

प्रश्न-10 गोपियां अब धैर्य क्यों नहीं रखना चाहती हैं ?
उत्तर- गोपियों को श्रीकृष्ण की ओर प्रेम के प्रतिदान और शीघ्र आकर दर्शन देने की आशा लगी थी । उन्होंने कृष्ण का प्रेम पाने के लिए सामाजिक मर्यादा की परवाह नहीं की। इसके विपरीत श्रीकृष्ण ने प्रेम की मर्यादा का निर्वाह नहीं किया । इस कारण उद्धव गोपियों के पास जिस उद्देश्य से आए थे, उसमें सफल नहीं हो सके और गोपियां धैर्य नहीं धारण करना चाहती हैं।

**********@@**********@@**********

पाठ-2 तुलसीदास - राम-लक्ष्मण-परशुराम- संवाद

पाठ्य सामग्री एवं प्रश्न-संग्रह

कवि परिचय-

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के महान सन्त कवि थे। इनका जन्म 1532 ई० में उत्तर प्रदेश में हुआ माना जाता है। रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, वैराग्य संदीपनी, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, इत्यादि इनकी रचनाएं हैं। तुलसीदास जी ने अवधी तथा ब्रज दोनों भाषाओं में अपनी काव्यगत रचनाएँ लिखीं। दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि काव्य शैलियों में कवि ने काव्य रचना की है। सभी अलंकारों का प्रयोग करके तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं को अत्यन्त प्रभावशाली बना दिया है। 1623 ई० में काशी, उत्तर प्रदेश में इनका निधन हो गया। रामभक्ति परम्परा में तुलसीदास का स्थान प्रमुख हैं।

राम-लक्ष्मण-परशुराम-संवाद -

यह भाग रामचरितमानस के बाल कांड से लिया गया है। रामचरितमानस अवधी भाषा में है तथा दोहा, चौपाई छंदों का प्रयोग किया गया है। सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव धनुष टूट जाता है। जब परशुराम को धनुष के टूटने की ध्वनि सुनाई देती है तब वे क्रोधित होकर सभा में आ जाते हैं। क्रोध में ही वे धनुष को तोड़ने वाले से सभा से बाहर आने को कहते हैं। लेकिन परशुराम का

यह तरीका लक्ष्मण को पसंद नहीं आता है। फिर परशुराम और लक्ष्मण के बीच जो संवाद होता हैं उसी का यहाँ पर उल्लेख किया जा रहा है।

पद संख्या-1

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥

पहले पद में राम परशुराम से कहते हैं कि शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा। मेरे लिए क्या आदेश है? आप मुझे बताइए। राम की ये बात सुनकर परशुराम क्रोध में बोलते हैं- सेवक तो वो होता है जो सेवा का काम करता है। उसने तो धनुष को तोड़कर शत्रुता का कार्य किया है। हे राम सुनो! जिसने भी शिव धनुष तोडा है वह मेरे लिए सहस्रबाहु के समान शत्रु है। जिसने भी इस धनुष को तोडा है, यह सभा से बाहर आ जाए अन्यथा सभी राजा मारे जाएँगे। मुनि के क्रोध पूर्ण वचन सुनकर लक्ष्मण मुस्काते हैं और परशुराम का अपमान करते हुए कहते हैं कि मैंने बचपन में अनेकों धनुहियाँ तोड़ डाली। तब आपने क्रोध नहीं किया। आपका इतना लगाव इसी धनुष पर क्यों है? लक्ष्मण के वचन सुनकर परशुराम क्रोधित होकर कहते हैं- हे राजपुत्र! तू संभलकर नहीं बोल रहा है। पूरा संसार में प्रसिद्ध यह शिव धनुष क्या धनुही के समान लगता है।

पद संख्या-2

लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥

बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥

दूसरे पद में लक्ष्मण हँसकर कहते हैं-हमारी नजर में सभी धनुष एक जैसे हैं। इस पुराने धनुष के टूटने से न किसी की हानि हुई और न ही किसी का लाभ हुआ। भैया राम ने धनुष को देखा और छुआ, इतने में ही यह टूट गया, इसमें उनका कोई दोष नहीं है। आप तो व्यर्थ में नाराज रहे हो इतना सुनते ही परशुराम अपने फरसे को देखकर लक्ष्मण पर क्रोधित होते हैं और कहते हैं। हे मूर्ख! लगता है तूने मेरे बारे में नहीं सुना है? मैं बालक समझकर तेरा वध नहीं कर रहा हूँ। तू मुझे सामान्य मुनि समझ रहा है। मैं बचपन से बाल ब्रह्मचारी, बहुत क्रोधी और क्षत्रिय कुल का शत्रु हूँ। अपनी भुजाओं के बल पर मैंने कई बार इस भूमि को राजाओं से विहीन कर दिया। मैंने कई बार पृथ्वी को जीतकर ब्राह्मणों को दान की है। राजकुमार इस फरसे को देख लो, इससे मैंने सहस्रबाहु के शरीर को काट डाला था। तू अपने माता-पिता को चिंता में न डाल। मेरा फरसा इतना भयंकर है कि इसके प्रभाव मात्र से ही गर्भ में पलता शिशु भी नष्ट हो जाता है।

पद संख्या-3

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोऊ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।

तीसरे पद में लक्ष्मण हँसकर मीठी वाणी में कहते हैं है मुनि आप तो बहुत बड़े योद्धा निकले। आप बार-बार मुझे फरसा दिखाकर डरा रहे हैं जैसे आप एक फूँक में पहाड़ उड़ाना चाहते हो। यहाँ पर भी कोई कुम्हड़ बतिया (कुम्हड़े के फूल जैसा अर्थात् बहुत कमज़ोर) नहीं है जो तर्जनी उँगली देखकर मर जाएगा। मैंने आपका फरसा, धनुष-बाण देखकर अभिमान में कुछ कह दिया। आपको ब्राह्मण समझकर मैंने क्रोध को सहन कर लिया। हमारे कुल की परम्परा हे देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाते। आप तो ब्राह्मण हैं और मैं आपका वध करूँ, तो मुझे पाप लगेगा। आप अगर मेरा वध भी कर देते हैं, तो मुझे आपके चरणों में झुकना पड़ेगा। यही हमारे कुल की मर्यादा है। फिर आगे लक्ष्मण कहते हैं कि आपके वचन ही किसी वज्र की भाँति कठोर हैं, तो फिर आप को इस कुल्हाड़े और धनुष की क्या ज़रूरत है।

प्रस्तुत पंक्तियों में यह सुनकर ऋषि विश्वामित्र जी ने परशुराम जी से कहा कि हे मुनिवर! यदि इस बालक ने आपका अपमान किया है, आपको कुछ अनाप-शनाप बोला है, तो कृपया इसे क्षमा कर दें। विश्वामित्र की बात सुनकर परशुराम गंभीर स्वर में कहते हैं,

पद संख्या-4

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु। कुटिलु कालबस निज कुल घालकु॥
भानुबंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुसु अबुधु असंकू॥
कालकवलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु॥

चौथे पद में परशुराम कहते हैं- है विश्वामित्र! यह बालक निडर, मूर्ख और अपने कुल को हानि पहुंचाने वाला है। सूर्यवंशी होकर भी यह चंद्रमा के कलंक जैसा है। यह बिल्कुल निरंकुश, अबोध है। मैं इसे अभी क्षण भर में मार डालूँगा फिर कोई दोष न देना। अगर आप इसे बचाना चाहते हो तो इसे मेरी प्रसिद्धि, बल और क्रोध बताकर बचा लो। लक्ष्मण जी कहते है, आपसे अच्छा आपका

सुयश (प्रसिद्धि के बारे में) और कौन बता सकता है? अपने मुंह से आपने कई बार अनेक प्रकार से अपने बारे में बताया है। यदि अब भी संतुष्ट नहीं हुए तो और कुछ कहिए। अपने क्रोध को सहन करके दुख मत सहिए। आप वीर और धैर्यवान हैं। आपके द्वारा गाली देना शोभा नहीं देता है। शूरवीर शत्रु को सामने देखकर अपनी प्रसंशा नहीं करता बल्कि युद्ध करता है। युद्ध भूमि में शत्रु को उपस्थित पाकर कायर ही अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं।

पद संख्या-5

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे॥
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे॥
गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥

पाँचवे पद में लक्ष्मण जी परशुराम से कहते हैं आप तो मृत्यु को मेरे लिए जबरदस्ती बुला रहे हो। इतना सुनते ही मुनि फरसा को सँभालते हुए कहते हैं मुझे कोई दोष न देना, अब यह बालक कड़वे वचनों के कारण वध के योग्य हो गया है। अभी तक बच्चा समझकर मैं इसे बचाता रहा हूँ लेकिन अब सच में यह मरने योग्य हो गया है। तब विश्वामित्र कहते हैं, हे! मुनि साधु लोग बच्चों की गलतियों को माफ़ कर देते हैं। फिर परशुराम बोलते हैं, मैं बहुत ही क्रोधी हूँ, मेरा फरसा भी बहुत ही तेज है। यह बालक मेरे गुरु के सामने जवाब दे रहा है, आपके स्वाभाव के कारण मैं इसे छोड़ रहा हूँ। नहीं तो थोड़े से श्रम में इसे फरसे से मारकर गुरु ऋण से मुक्त हो जाऊँगा । विश्वामित्र मन ही मन हँसकर कह रहे हैं कि मुनि को सब कुछ हरा ही हरा दिखाई दे रहा है। अर्थात् वे सिर्फ स्वयं को ही विजेता मान रहे हैं। जिसे वे गन्ने की खांड समझ रहे हैं वे लोहे की तलवार हैं। अर्थात् राम-लक्ष्मण साधारण नहीं हैं।

पद संख्या-6

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा॥
माता पितहि उरिन भये नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें॥
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा॥
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा॥
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही॥
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे॥
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥

छठवें पद में लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं हे मुनि आपके स्वाभाव से कौन परिचित नहीं है। आप अपने माता-पिता के ऋण से मुक्त हो चुके हो। लेकिन गुरु का ऋण अभी शेष है। यह ऋण लगता है आप मुझसे ही चुकाना चाहते हो? ब्याज भी बहुत हो गया होगा। आप ऐसा करिए किसी हिसाब-किताब करने वाले को बुला लो, मैं तुरंत ही थैली खोल दूँगा। लक्ष्मण के कड़वे वचन सुनते ही परशुराम अपना फरसा संभाल लेते हैं। तो पूरी सभा हाय! हाय! बोल उठती है। लक्ष्मण कहते हैं, हे! मुनि आप बार-बार मुझे फरसा दिखा रहे हो और मैं आपको ब्राहमण समझकर बचा रहा हूँ। हे ब्राहमण देवता! लगता है आपका कभी किसी वीर योद्धा से सामना नहीं हुआ है। आप अपने घर के ही योद्धा हैं। पूरी सभा कह उठती है- यह अनुचित है। राम लक्ष्मण को आँखों से इशारा करके मना करते हैं। लक्ष्मण के वचन परशुराम के क्रोध रूपी आग में घी का काम कर रहे थे। लक्ष्मण और परशुराम के बीच बात बढ़ती देखकर राम अंत में जल के सामान शीतल वचन बोलते हैं।

<u>पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न</u>

1. नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥

प्रश्न 1. राम ने परशुराम से क्या कहा ?

(i). धनुष तोड़ने वाला आपका कोई दास होगा (ii). धनुष तोड़ने वाला आपका कोई शत्रु होगा

(iii). धनुष तोड़ने वाला आपका कोई मित्र होगा (iv). धनुष तोड़ने वाला आपका कोई भाई होगा

उत्तर- (i) धनुष तोड़ने वाला आपका कोई दास होगा

प्रश्न 2. राम कैसे स्वाभाव के हैं ?

(i). शांत (ii). क्रोध (iii). चापलूस (iv). इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (i) शांत

प्रश्न- 3. परशुराम स्वाभाव से कैसे हैं?

(i). शांत (ii). सरल (iii). क्रोधी (iv). इनमें से सभी

उत्तर- (iii) क्रोधी

प्रश्न 4. परशुराम क्रोध में क्यों थे?

(i). ब्रह्मा का धनुष टूटने के कारण (ii). विष्णु का धनुष टूटने के कारण

(iii). अर्जुन का धनुष टूटने के कारण (iv). शिव धनुष टूटने के कारण

उत्तर- (iv) शिव धनुष टूटने के कारण

प्रश्न-5. परशुराम ने राम की बातों का क्या उत्तर दिया ?

(i). सेवक सेवा करने का कार्य करता है (ii). सेवक ने शत्रु जैसा कार्य किया है

(iii). सेवक ने लड़ाई करने का कार्य किया है (iv). सभी उत्तर सही हैं

उत्तर- (iv) सभी उत्तर सही हैं

प्रश्न- 6. परशुराम के वचनों को सुनकर लक्ष्मण क्यों मुसकाए ?

(i). डींग हाँकने के कारण (ii). बड़बोले वचनों के कारण

(iii). खोखलेपन के कारण (iv). सभी उत्तर सही हैं

उत्तर- (iv) सभी उत्तर सही हैं

प्रश्न 7. राम की कौन सी विशेषता नहीं हैं ?

(i). निडर (ii). विनय (iii). सत्य वचन (iv). क्रोध

उत्तर- (iv) क्रोध

प्रश्न 8. परशुराम ने सभा से क्या कहा?

(i). धनुष तोड़ने वाला सभा से बाहर आए (ii). धनुष तोड़ने वाला घर जाए

(iii). धनुष तोड़ने वाला क्षमा माँग ले (iv). धनुष तोड़ने वाला कोई बच्चा है

उत्तर- (i) धनुष तोड़ने वाला सभा से बाहर आए

प्रश्न 9. कौन सा विकल्प लक्ष्मण से सम्बंधित नहीं है?

(i). बचपन में मैंने कोई धनुष नहीं तोड़े (ii). बचपन में मैंने कई धनुष तोड़े

(iii). परशुराम के वचन सुन लक्ष्मण हँसे (iv). इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों

उत्तर- (i) बचपन में मैंने कोई धनुष नहीं तोड़े

प्रश्न-10. राम लक्ष्मण परशुराम संवाद तुलसीदास ने किस भाषा में लिखा है ?

(i). ब्रजभाषा (ii). खड़ीबोली (iii). बुन्देली (iv). अवधी भाषा

उत्तर- (iv) अवधी भाषा

2. लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥

प्रश्न 1. परशुराम ने लक्ष्मण को धमकाते हुए क्या नहीं कहा ?

(i). तुम्हें बच्चा समझकर छोड़ रहा हूँ (ii). मैंने सहस्रबाहु को मार डाला था

(iii). मैं क्षत्रियों का शत्रु हूँ (iv). मैं बचपन से सरल स्वाभाव का हूँ

उत्तर- (iv) मैं बचपन से सरल स्वाभाव का

प्रश्न 2. लक्ष्मण की वाणी का स्वर कैसा है?

(i). शांत और व्यंग्यपूर्ण (ii). व्यंग्य और क्रोधपूर्ण

(iii). क्रोध और शांतपूर्ण (iv). व्यंग्य और झूठवाला

उत्तर- (ii) व्यंग्य और क्रोधपूर्ण

प्रश्न-3. लक्ष्मण ने परशुराम को धनुष टूटने का कौन सा तर्क नहीं दिया ? -

(i) मेरी दृष्टि में सभी धनुष समान हैं।

(ii) इस पुराने धनुष के टूटने से न किसी का लाभ न हानि

(iii) इस धनुष को मेरे छूते ही टूट गया

(iv) भैया राम के हाथ लगते ही धनुष टूट गया

उत्तर- (iii) इस धनुष को मेरे छूते ही टूट गया

प्रश्न-4. परशुराम ने अपने विषय में क्या नहीं कहा है ?

(i). बाल ब्रहमचारी हूँ (ii). क्षत्रियों का शत्रु हूँ (iii). मैं बहुत क्रोधी हूँ (iv). मैं शांत स्वभाव का हैं

उत्तर- (iv) मैं शांत स्वभाव का हूँ

प्रश्न-5. सहस्रबाहु की भुजाओं को किसने काट डाला था ?

(i). लक्ष्मण ने (ii). कृष्ण ने (iii). परशुराम ने (iv). रावण ने

उत्तर- (iii) परशुराम ने

प्रश्न-6. 'भुजबल भूमि भूप बिनु किन्ही' किसका कथन है?

(i). जनक (ii). भरत (iii). परशुराम (iv). लक्ष्मण

उत्तर- (III) परशुराम

प्रश्न-7. कौन बिना कारण के क्रोध कर रहा है?

(i). रावण (ii). परशुराम (iii). लक्ष्मण (iv). शिव

उत्तर- (ii) परशुराम

प्रश्न-8. किसके प्रभाव से गर्भ में पलता शिशु नष्ट हो जाता है ?

(i). लक्ष्मण के तीर से (ii). रावण की गर्जना से

(iii). भरत की तलवार से (iv). परशुराम के फरसा से

उत्तर- (iv) परशुराम के फरसा से

प्रश्न-9. परशुराम किस जगत विख्यात धनुष की बात करते हैं ?

(i). ब्रह्म धनुष की (ii). शिव धनुष की (iii). विष्णु धनुष की (iv). अर्जुन धनुष की

उत्तर- (II) शिव धनुष की

प्रश्न-10. धरती के सारे राजाओं का वध करके पृथ्वी को जीतकर किसने ब्राह्मणों में दान कर दिया

(i). कर्ण ने (ii). राम ने (iii). परशुराम ने (iv). युधिष्ठर ने

उत्तर- (iii) परशुराम ने

3. बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥

इहाँ कुम्हड़बतिया कोऊ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥

देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥

भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी॥

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥

बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।।

कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥

जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।

सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

प्रश्न-1. 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' का भाव क्या है?

(i). विचार का (ii). संज्ञात्मक (iii). संवेदना का (iv). व्यंग्य का

उत्तर- (iv) व्यंग्य का

प्रश्न-2. देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर वीरता दिखाना किसके कुल की परंपरा नहीं है ?

(i). परशुराम के (ii). जनक के (iii). लक्ष्मण के (iv). रावण के

उत्तर- (iii) लक्ष्मण के

प्रश्न-3. लक्ष्मण परशुराम के वचनों को किस कारण सहन कर रहे हैं ?

(i). वैश्य समझकर (ii). शूद्र समझकर (iii). क्षत्रिय समझकर (iv). ब्राह्मण समझकर

उत्तर- (iv) ब्राह्मण समझकर

प्रश्न-4. 'अहो मुनीसु महाभट मानी' यह किसके लिए और किसने कहा है?

(i). राम के लिए परशुराम ने (ii). परशुराम के लिए लक्ष्मण ने

(iii). लक्ष्मण के लिए जनक ने (iv). रावण के लिए राम ने

उत्तर- (ii) परशुराम के लिए लक्ष्मण ने

प्रश्न-5. कौन सा कथन लक्ष्मण का नहीं है ?

(i). बिहसि लखनु बोले मृदु बानी (ii). कोटि कुलिस सम वचनु तुम्हारा

(iii). रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा (iv). पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू

उत्तर- (iii) रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा

प्रश्न-6. लक्ष्मण ने कोमल वाणी में परशुराम पर क्या कहकर व्यंग्य किया ?

(i). आप तो महान दयालु निकले (ii). आप तो बहुत बड़े योद्धा निकले

(iii). आप तो बहुत बड़े दानी निकले (iv). आप तो बड़े शांति स्वभाव के निकले

उत्तर- (ii) आप तो बहुत बड़े योद्धा निकले

प्रश्न-7. लक्ष्मण को अपयश और पाप की संभावना किसके मारने पर है ?

(i). सूपनखा के (ii). मेघनाथ के (iii). कुम्भकर्ण के (iv). परशुराम के

उत्तर- (iv) परशुराम के

प्रश्न-8. 'कुम्हड़बतिया' किसका प्रतीक है?

(i). निर्बल व्यक्ति का (ii). कठोर व्यक्ति का (iii). वीर व्यक्ति का (iv). दानी व्यक्ति का

उत्तर- (I) निर्बल व्यक्ति का

प्रश्न-9. 'व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा' किसके लिए कहा गया है ?

(i). परशुराम (ii). राम (iii). अर्जुन (iv). लक्ष्मण

उत्तर- (1) परशुराम

प्रश्न- 10. किसके वचन करोड़ों वज्रों के समान कठोर हैं?

(i). विश्वामित्र के (ii). परशुराम के (iii). राम के (iv). लक्ष्मण के

उत्तर- (ii) परशुराम के

4. कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु। कुटिलु कालबस निज कुल घालकु॥
भानुबंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुसु अबुधु असंकू॥
कालकवलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहु जौ चाहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥
लखन मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मु कहेउ हु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु॥

प्रश्न 1. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद तुलसीदास कविता कहाँ से ली गई है?

(i). विनयपत्रिका से (ii). कवितावली से (iii). रामचरितमानस से (iv). दोहावली से

उत्तर- (iii) रामचरितमानस से

प्रश्न 2. लक्ष्मण ने शूरवीर की क्या विशेषता नहीं बताई है ?

(i). वह वीरता का प्रदर्शन करता है (ii). वह शत्रु के सामने अपनी डींगे हाँकता

(iii). वह शत्रु को धोखे से मार देता है (iv). वह युद्ध के मैदान में बातें नहीं बनाता

उत्तर- (iii) यह शत्रु को धोखे से मार देता है

प्रश्न 3. 'गारी देत न पावहु सोभा' किसने किसके लिए कहा है ?

(i). राम ने रावण के लिए (ii). लक्ष्मण ने परशुराम के लिए

(iii). विश्वामित्र ने परशुराम के लिए (iv). राम ने लक्ष्मण के लिए

उत्तर- (ii) लक्ष्मण ने परशुराम के लिए

प्रश्न 4. 'कौसिक' किसके लिए संबोधित किया गया है ?

(i). जनक के लिए (ii). दशरथ के लिए (iii). विश्वामित्र के लिए (iv). परशुराम के लिए

उत्तर- (iii) विश्वामित्र के लिए

प्रश्न-5. 'भानुबंस राकेस कलंकू किसको कहा गया है ?

(i). रावण (ii). राम (iii). लक्ष्मण (iv). परशुराम

उत्तर- (III) लक्ष्मण

प्रश्न- 6. लक्ष्मण की किस बात से परशुराम क्रोधित हो गए ?

(i). बड़बोलेपन का मजाक उड़ाने के (ii). उनके वचनों पर व्यंग्य के कारण

(iii). उन्हें सभा में चुनौती देने के कारण (iv). सभी उत्तर सही हैं

उत्तर- (iv) सभी उत्तर सही हैं

प्रश्न 7. कौन अपने मुँह से अपनी कई बार प्रशंसा कर चुका है?

(i). परशुराम (ii). मेघनाथ (iii). राम (iv). लक्ष्मण

उत्तर- (i) परशुराम

प्रश्न 8. परशुराम ने विश्वामित्र से लक्ष्मण के बारे में क्या नहीं कहा है

(i). लक्ष्मण मूर्ख है (ii). लक्ष्मण बहुत ही सरल स्वभाव का है

(iii). लक्ष्मण अपने कुल का कलंक है (iv). लक्ष्मण अज्ञानी, निरंकुश और उद्दंड है

उत्तर- (ii) लक्ष्मण बहुत ही सरल स्वभाव का है

प्रश्न 9. 'रिपु' का अर्थ है: (i). मित्र (ii). शत्रु (iii). पड़ोसी (iv). संबंधी

उत्तर- (ii) शत्रु

प्रश्न-10. यदि तुम इसे बचाना चाहते हो, तो हमारा प्रताप, बल और क्रोध बताकर मरने से रोक लो? किसने किससे कहा

(i) परशुराम ने विश्वामित्र से (ii) लक्ष्मण ने परशुराम से

(iii) राम ने परशुराम से (iv) राम ने लक्ष्मण से

उत्तर- (1) परशुराम ने विश्वामित्र से

पद संख्या-5

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे॥
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे॥
गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।

प्रश्न-1. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' तुलसी दास कृत कविता किस कांड से ली गई है

(i). उत्तर कांड (ii). लंका कांड (iii). बाल कांड (iv). सुंदर कांड

उत्तर- (iii) बाल कांड

प्रश्न- 2. इनमें से कौन सी बात लक्ष्मण ने परशुराम से कही है?

(i). बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा (ii). गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे

(iii). तुम्ह तो कालु हाँक जनु लावा (iv). बाल दोष गुन गनहिं न साधू

उत्तर- (iii) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा

प्रश्न-3. परशुराम को सब हरा ही हरा सूझ रहा है ऐसा मन में हँसकर कौन कह रहा है?

(i). राम (ii). जनक (iii). दशरथ (iv). विश्वामित्र

उत्तर- (iv) विश्वामित्र

प्रश्न- 4. मैं इसे बालक समझकर बहुत बार बचाता रहा हूँ- यह कथन किसका है ?

(i). राम का (ii). परशुराम का (iii). लक्ष्मण का (iv). विश्वामित्र

उत्तर- (ii) परशुराम का

प्रश्न-5. बार-बार फरसा से कौन डरा रहा है ?

(i). लक्ष्मण (ii). परशुराम (iii).विश्वामित्र (iv). राम

उत्तर- (ii) परशुराम

पद संख्या-6

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा॥
माता पितहि उरिन भये नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें॥
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा॥
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा॥
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही॥
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे॥
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥

प्रश्न 1. लक्ष्मण की कड़वी बातें सुनकर पशुराम ने क्या किया

(i). तीर-कमान सँभाल लिया (ii). तलवार सँभाल ली (iii). फरसा सँभाल लिया (iv). इनमें से सभी

उत्तर- (iii) फरसा सँभाल लिया

प्रश्न-2. लक्ष्मण के अनुसार परशुराम अपने माता-पिता के ऋण से कैसे

उऋण (ऋण से मुक्त) हुए थे ?

(i). अपनी माता का वध करके (ii). अपने पिता का वध करके

(iii). अपने मित्र का वध करके (iv). सहस्रबाहु का वध करके

उत्तर- (i) अपनी माता का वध करके

प्रश्न 3. 'लखन उतर आहुति सरसि में कौन - सा अलंकार है?

(i). रूपक (ii). यमक (iii). उत्प्रेक्षा (iv). उपमा

उत्तर- (iv) उपमा

प्रश्न-4. 'भृगु के वंशज' से किसका संबंध है ?

(i). राम का (ii). रावण का (iii). जनक का (iv). परशुराम का

उत्तर- (iv) परशुराम का

प्रश्न-5. तुलसीदास का जन्म और देहावसान (मृत्यु) कब हुआ था?

(i). जन्म सन् 1532, मृत्यु सन् 1623 (ii). जन्म सन् 1333, मृत्यु सन् 1443

(iii). जन्म सन् 1732, मृत्यु सन् 1823 (iv). जन्म सन् 1430, मृत्यु सन् 1518

उत्तर- (i) जन्म सन् 1532, मृत्यु सन् 1623

प्रश्न-6.राम ने लक्ष्मण को कैसे रोका?

(i) हाथ से इशारा किया (ii) जोर देकर (iii) आँखों के संकेत से (iv) बोलकर

उत्तर- (iii) आँखों के संकेत से

प्रश्न-7. परशुराम और लक्ष्मण को शांत करने के लिए राम ने कैसे वचन बोले?

(i). बर्फ के समान (ii). आग के समान भड़काऊ

(iii).जल के समान शीतल (iv). तीर के समान चुभने वाले

उत्तर- (iii) जल के समान शीतल

राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राम-लक्षण-परशुराम संवाद' के रचयिता है

(क) कबीरदास (ख) तुलसीदास (ग) मीराबाई (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'

उत्तरः तुलसीदास

2. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद की भाषा है

(क) अवधी (ख) भोजपुरी (ग) राजस्थान (घ) ब्रज

उत्तर- अवधी

3. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद किस ग्रंथ से लिया गया है?

(क) रामायण से (ख) रामचरितमानस से (ग) कवितासी से (घ) दोहावली से

उत्तर- रामचरितमानस से

4. शिव धनुष कैसे टूट गया?

(क) जोर लगाने से (ख) केवल छूने मात्र से (ग) गिरने से (घ)उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर- केवल छूने मात्र से

5. बेवजह कौन क्रोधित हो रहा है?

(क) राम (ख) लक्ष्मण (ग) परशुराम (घ) विश्वामित्र

उत्तर- परशुराम

6. राम और लक्ष्मण सीता स्वयंवर में किस मुनि के साथ गए?

(क) वशिष्ठ मुनि (ख) नारद मुनि (ग) विश्वामित्र (घ) परशुराम

उत्तर- विश्वामित्र

7. स्वयं को बाल ब्रहाचारी कौन कह रहा है?

(क) राम (ख) लक्ष्मण (ग) जनक। (घ) परशुराम

उत्तर- परशुराम

8. बाल ब्रह्मचारी अति कोही में कौन-सा अलकार है?

(क) यमक (ख) अनुप्रास (ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

उत्तर- अनुप्रास

9. परशुराम ने कौशिक कह कर किसे संबोधित किया है?

(क) राम को (ख) दशरथ को (ग) जनक को (घ) विश्वामित्र को

उत्तर- विश्वामित्र को

10. तुलसीदास जी के आराध्य है

(क) शिव (ख). कृष्ण (ग) राम (घ) हनुमान

उत्तर- राम

11. रामचरितमानस का मुख्य छंद कौन सा है ?

क. कुंडलिया ख. छप्पय ग. सोरठा घ. चौपाई

उत्तर- चीपाई

12. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद रामचरितमानस के किस कोड से लिया गया है?

(i). अरण्यकांड (ii). लंका कांड (iii). बाल कांड (iv). घ. उत्तर कांड

उत्तर- बाल कांड

13. शिवधनुष को खंडित देखकर कौन आपे से बाहर हो जाता है?

क. विश्वामित्र जी ख.परशुराम जी। ग. शंकराचार्य जी घ. वशिष्ठ मुनि जी

उत्तर. परशुराम जी

14.. परशुराम जी के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर व्यंग्य वचनों से किसने दिया?

क. राम ख.. श्रीकृष्णा ग.. विश्वामित्र घ..लक्ष्मण **उत्तर- लक्ष्मण**

15. राम- लक्षण - परशुराम संवाद में परशुराम ने शिव धनुष तोड़नेवाले को अपना शत्रु बलया है और उसकी तुलना किससे को ?

(i). जनक (ii). सहस्त्रबाहु (iii). कौशिक (iv). राकेश

उत्तर- सहस्त्रबाहु

16. सहसबाहु सम सो रिपु मोरा इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है?

(i). अतिशयोक्ति (ii). रूपक (iii). मानवीकरण (iv). उपमा

उत्तर- घ उपमा

17.. परशुराम जी कोशिक संबोधन का प्रयोग किसके लिए करते है?

(i). वशिष्ठ जी (ii). विश्वामित्र जी (iii).श्रीराम जी (iv). जनक जी

उत्तर- विश्वामित्र जी

18. परशुराम जी किस शस्त्र को धारण करते थे जिसके कारण उनका नाम परशुराम पड़ा

(i). धनुष बाण (ii). तलवार (iii). परशु (iv). त्रिशूल

उत्तर- परशु

19.परशुराम ने किसके प्रेम के कारण लक्ष्मण का वध नहीं किया

(क) शिव के (ख) राम के (ग) पिता के (घ) विश्वामित्र के

उत्तर- (घ) विश्वामित्र के

20. परशुराम का स्वभाव कैसा है?

(क) उदार (ख) शील (ग) क्रोधी (घ) चंचल

उत्तर- (ग) क्रोधी

21. सहस्रबाहु की भुजाओं को किसने काट डाला था?

(क) लक्ष्मण ने (ख) परशुराम ने (ग) विष्णु ने (घ) शिव ने

उत्तर- (ख) परशुराम ने

22. परशुराम के वचन किसके समान कठोर हैं?

(क) वज्र के (ख) लोहे के (ग) पत्थर के (घ) लोहे के

उत्तर - (क) वज्र के

23. शूरवीर अपनी वीरता कहाँ दिखाते हैं?

(क) घर में (ख) युद्ध में (ग) बातों में (घ) इनमें से कोई ननही

उत्तर: (ख) युद्ध में

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न</u>

प्रश्न 1. परशुराम ने अपनी किन विशेषताओं के उल्लेख के द्वारा लक्ष्मण को डराने का प्रयास किया?

उत्तर - परशुराम ने लक्ष्मण को डराते हुए सभा में बताया कि मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ और अत्यंत क्रोधी स्वभाव का हूँ। मैं क्षत्रियों के कुल का संहारक हूँ। यह बात इस विश्व में सभी जानते थे कि

मैंने अनेक बार सम्पूर्ण पृथ्वी को राजाओं से विहीन कर दिया है तथा पृथ्वी ब्राहमणों को दान में दे दी है। मेरा फरसा बहुत भयानक है। इसी से मैंने सहस्रबाहु की भुजाओं को काटकर शरीर से अलग कर दिया था। इस फरसे की भयंकरता को देखकर गर्भवती स्त्रियों के बच्चे गर्भ में ही मर जाते हैं।

प्रश्न 2. लक्ष्मण ने धनुष टूटने के किन कारणों की संभावना व्यक्त करते हुए राम को निर्दोष बताया?

उत्तर - लक्ष्मण ने धनुष टूटने के कई कारण बताते हुए राम को निर्दोष बताया। (1) धनुष अत्यंत जीर्ण था जो राम के हाथ लगाते ही टूट गया। (2) हमारे लिए तो सभी धनुष एक समान हैं इस धनुष के टूटने से हमारा क्या लाभ या हानि होगी। (3) राम ने तो इसे नया समझकर छुआ ही था, छूने भर से ही ये टूट गया।

प्रश्न 3. धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' के आधार पर राम की स्वभावगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं। राम अत्यन्त ही विनम्र स्वभाव के व्यक्ति हैं, वे निडर, साहसी, धैर्यवान तथा मृदुभाषी थे, वे बड़ों की आज्ञा का पालन करने वाले थे। उन्हें लक्ष्मण की भाँति क्रोध नहीं आया करता था।

प्रश्न 4.बहु धनुही तोरी लरिकाई-यह किसने कहा और क्यों?

उत्तर -लक्ष्मण ने उक्त कथन कहा-हमने बचपन में ऐसी अनेक धनुहियाँ तोड़ी थी, तब आपने कभी गुस्सा नहीं किया। इस धनुष के टूट जाने पर इतना गुस्सा क्यों? किस कारण धनुष के प्रति इतना स्नेह है?

प्रश्न 5. लक्ष्मण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए हैं?

उत्तर - लक्ष्मण ने शूरवीरों के निम्नलिखित गुण बताए:-

(i) वीर योद्धा रण क्षेत्र में शत्रु के समक्ष पराक्रम दिखाते हैं।
(ii) वे शत्रु के समक्ष अपनी वीरता का बखान नहीं करते

(iii) वे ब्राह्मण, देवता, गाय और प्रभु भक्तों पर पराक्रम नहीं दिखाते हैं।

(iv) वीर क्षोभरहित होते हैं तथा अपशब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं।

प्रश्न 6. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद में परशुराम ने अपने विषय में क्या कहा?

उत्तर: परशुराम ने अपने विषय में ये कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं और क्रोधी स्वभाव के हैं। समस्त विश्व में क्षत्रिय परिवारों के विद्रोही के रुप में विख्यात हैं। उन्होंने अनेक बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर इस पृथ्वी को ब्राह्मणों को दान में दिया है और अपने हाथ में धारण इस फरसे से सहस्रबाहु के बाँहों को काट डाला है। इसलिए हे राज पुत्र! मेरे इस फरसे को भली भाँति देख ले। राजकुमार तू क्यों अपने माता-पिता को सोचने पर विवश कर रहा है। मेरे इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है।

प्रश्न 7. 'गाधिसुत' किसे कहा गया है? वे मुनि की किस बात पर मन ही मन मुस्करा रहे थे?

उत्तर: गाधिसुत मुनि विश्वामित्र को कहा गया है। परशुराम आत्मप्रशंसा में विश्वामित्र जी की ओर देखकर कह रहे थे कि वे उस उद्दंड बालक यानी लक्ष्मण को केवल उनके कारण छोड़ रहे हैं, वरना अपने फरसे से उसका वध करके गुरु के ऋण से उऋण हो जाते यह कथन द्वारा राम-लक्ष्मण के शौर्य से परशुराम की अनभिज्ञता प्रकट होते देखकर ही विश्वामित्र मन-ही-मन मुस्करा रहे थे।

प्रश्न 8.स्वयंवर स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किस प्रकार धमकाया ?

उत्तर: 'स्वयंवर' स्थल पर शिव धनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने धमकाते हुए कहा कि जिसने इस धनुष तोड़ा है वह अब मेरा शत्रु है। सहस्रबाहु के समान अब उसका विनाश निश्चित है। राम के यह कहने पर कि आपके ही किसी दास ने इसे तोड़ा होगा, परशुराम अत्यंत क्रोधित हो कहने लगे कि दास तो वह होता है, जो सेवा करे यह तो शत्रु का काम है। इसलिए अन्य सभी राजा स्वतः ही अलग हो जाएं क्योंकि धनुष तोड़ने वाले को उनसे अब कोई नहीं बचा सकता।

प्रश्न 9. परशुराम की स्वभावगत विशेषताएँ क्या हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: परशुराम के स्वभाव में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं

(i) वे अत्यंत क्रोधी थे। उन्हें हर छोटी-सी बात पर गुस्सा आ जाता था और ये सबके समक्ष अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाते थे।

(ii) ये दृढ़ निश्चयी थे। उन्होंने इस पृथ्वी को अपने दृढ प्रण के कारण अनेक बार क्षत्रिय विहिन कर दिया था।

(iii) वे अत्यंत वीर व शक्तिशाली थे। सभी राजाओं का विनाश करना कोई छोटा कार्य नहीं हो सकता।

(iv) ये बाल ब्रह्मचारी व बड़बोले थे। वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते थे और बढ़-चढ़ कर उसका बखान करते थे।

(v) उनमें विवेक का अभाव था। वे राम-लक्ष्मण को पहचान न सके। अच्छाई और बुराई में अंतर न कर पाए।

प्रश्न 10.. 'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है- इस कथन पर अपने विचार 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' पाठ के आलोक में लिखिए।

उत्तर: साहस और शक्ति दोनों ही मानव के अच्छे गुण हैं विनम्रता भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण गुण है। यदि व्यक्ति में साहस व शक्ति के साथ विनम्रता भी हो, तो सोने पर सुहागा हो जाता है। राम में ये तीनों ही गुण थे, जबकि परशुराम में साहस व शक्ति तो कूट-कूट कर भरी थी पर विनम्रता नहीं थी। कोई भी साहसी व्यक्ति विनम्रता को अपनाकर प्रशंसनीय व सबका प्रिय बन सकता है। लेकिन विनम्रता के अभाव में साहस, दुस्साहस में परिवर्तित हो जाता है। विनम्रता, साहस व शक्ति पर अकुंश लगाकर उसे उद्दंड होने से रोकती है।

प्रश्न 11.. लक्ष्मण और परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं में आप क्या अंतर पाते हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस से लिए गए 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' में परशुराम महाक्रोधी, उग्र एवं अति आत्मप्रशंसक यानी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने वाले मुनि हैं। वे स्वयं को प्रचंड क्रोधी, महापराक्रमी, बाल ब्रह्मचारी एवं क्षत्रिय कुल का घातक बताते हैं। इस बड़बोलेपन के कारण उन्हें अपने बड़प्पन का भी ध्यान नहीं रहता, तभी वे लक्ष्मण से वाद-विवाद कर बैठते हैं, जबकि बड़प्पन की निशानी यही है कि छोटों के प्रति विनम्र रहा जाए। इसके विपरीत लक्ष्मण के चरित्र में वाक्चातुर्य एवं तर्कशीलता जैसे गुण तो हैं, किंतु इनके साथ-साथ उनमें जवान से बड़ों की बराबरी करने का दोष भी है। वे ऐसे-ऐसे व्यंग्य-बाण छोड़ते हैं, जिनसे परशुराम जी

क्रोध में उफन पड़ते हैं। इस प्रसंग के आधार पर यह कहना गलत न होगा कि अगर श्री राम जैसे विनम्र व संयमशील व्यक्ति बीच में न होते और विनम्रता के साथ परशुराम जी से क्षमा-याचना न करते, तो जनक दरबार किसी अप्रिय घटना का साक्षी बन जाता।

प्रश्न 12 'अयमय खाँड़ न ऊखमय' से क्या अभिप्राय है और यह कथन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर: 'अयमय खाँड़ न ऊखमय ' यह कथन मन-ही-मन मुनि विश्वामित्र उस समय सोचते हैं, जब परशुराम बड़बोलेपन में कहते हैं कि वे पलभर में लक्ष्मण को मार डालेंगे। परशुराम की यह कहते देख वे सोचते हैं कि क्रोध में परशुराम जी ने कितनी सरलता से यह कह दिया कि वे अपने फरसे से लक्ष्मण को मार डालेंगे, किंतु उन्होंने यह विचार नहीं किया कि जिस बालक को वे गन्ने के रस की खाँड़ समझ रहे हैं, वह लोहे से बना खाँडा यानी तलवार के समान अस्त्र है, जिसे काट पाना इतना सरल नहीं है।

प्रश्न 13. लक्ष्मण कुम्हड़बतिया' और 'तरजनी' के उदाहरण से अपनी किस बात को सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: लक्ष्मण कुम्हड़वतिया और 'तर्जनी' के उदाहरण से ये स्पष्ट करना चाहते हैं कि वे कद्दू के फूल से बने कोमल फल के समान नहीं हैं जो तर्जनी उँगली के दिखाने से ही मुरझा जाएंगे। ये एक शूरवीर और क्षत्रिय वंशी हैं अतः वे परशुराम के फूँक मारने से उड़ नहीं जाएँगे। वे पर्वत के समान कठोर अडिग और शक्तिशाली हैं। अतः परशुराम व्यर्थ की डींग मारकर उन्हें डराने-धमकाने का प्रयास न करें।

प्रश्न 14: कविता के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: राम के स्वभाव की अनेक विशेषताएं हैं। वे तो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उनकी दो प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) राम बहुत विनम्र स्वभाव के हैं । वे ऋषि परशुराम के समक्ष स्वयं को उनका दास कहते हैं।

(ii) वे अत्यंत धैर्यशील और मृदुभाषी स्वभाव के हैं। ये शांत रहकर परशुराम के क्रोध का सामना करते हैं और उसे सहते हैं, वे लक्ष्मण को भी शांत रहने की आज्ञा देते हैं।

प्रश्न 15. परशुराम के साथ संवाद के संदर्भ में राम और लक्ष्मण में से किसका व्यवहार आपकी दृष्टि में अधिक प्रशंसनीय है और क्यों?

उत्तर: परशुराम के साथ संवाद के संदर्भ में राम और लक्ष्मण में से राम का व्यवहार प्रशंसनीय लगता है क्योंकि राम विनम्र और शांत रहकर ऋषि परशुराम की बातें सुनते हैं, जबकि लक्ष्मण उनकी बातें सुनकर भड़क जाते हैं। लक्ष्मण की बातें परशुराम की क्रोध रूपी अग्नि में घी डालने का काम करती हैं, जबकि राम के शांत वचन और स्वयं को उनका दास बताना अग्नि में पानी डालकर शांत रहने का काम करते हैं। क्रोध किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता है। क्रोधित व्यक्ति अपनी समझ व विवेक खो देता है और आवेश में आकर गलत कदम उठा सकता है जबकि राम के समान धैर्यवान, मृदुभाषी, शांत मर्यादा का पालन करना समस्या को समाधान की तरफ ले जाता है। अतः राम का व्यवहार ही प्रशंसनीय व स्वीकार्य है।

प्रश्न 16. लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा की क्या क्या विशेषताएँ परशुराम में नहीं हैं।

उत्तर: :लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ परशुराम में नहीं है

(i) वीरों के समान परशुराम वीरता का प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं, केवल उसका बखान कर रहे हैं।
(ii) वीर युद्धभूमि में संग्राम कर अपना जौहर दिखाते हैं, न कि सिर्फ डींग हाँकते हैं।
(iii) वीर अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते हैं। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता है।
(iii) वीरों के समान धैर्य व विनयशीलता के गुणों का अभाव भी लक्ष्मण परशुराम में बताते हैं।

प्रश्न 17. परशुराम के क्रोध का मूल कारण क्या था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : परशुराम के क्रोध का मूल कारण शिव धनुष का टूट जाना था वह धनुष स्वयं परशुराम ने राजा जनक को दिया था। सीता स्वयंवर में जब राम ने शिव धनुष तोड़ा तो चारों तरफ उनकी प्रशंसा होने लगी थी, परंतु परशुराम इससे क्रोधित हो गए थे। जब उन्होंने धनुष तोड़ने वाले के विषय में पूछा, तो लक्ष्मण ने उनके क्रोध की आग में घी डालने का काम किया। वे कहते हैं कि उनके लिए तो सभी धनुष एक समान हैं। ऐसा इस धनुष में क्या है? जो आप इतना क्रोधित हो रहे हैं। हमने तो बचपन में अनेक धनुष तोड़े हैं मेरे भाई राम ने तो धनुष पर केवल प्रत्यंचा ही

चढ़ाई थी और हाथ लगते ही यह टूट गया। इसमें विशेष क्या है शिव धनुष के विषय में यह सब सुनकर परशुराम के क्रोध की सीमा नहीं रहती।

प्रश्न 18. लक्ष्मण परशुराम संवाद में तुलनात्मक दृष्टि से इन दोनों में से आपको किसका स्वभाव अच्छा लगता तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

उत्तर:: लक्ष्मण परशुराम संवाद में यद्यपि दोनों ही कुछ स्थलों पर धैर्यवान प्रतीत नहीं होते, किंतु तुलनात्मक दृष्टि से इन दोनों में से हमें लक्ष्मण का स्वभाव ही अच्छा लगता है, क्योंकि व्यंग्य भी करते हैं, तो तभी करते हैं, जब परशुराम अपने बड़बोलेपन में अपनी वीरता का बखान कर उनका वध करने तक की धमकी देने लगते हैं या फिर फरसा दिखाकर डराने लगते हैं। लक्ष्मण इस प्रसंग में धीरता, उत्साह, तर्कशीलता, साहस आदि गुणों से युक्त दिखाई देते हैं वे परशुराम द्वारा दी जाने वाली धमकियों अथवा वीरता के बखान से घबराते नहीं, बल्कि तर्क सहित उनकी बात का खंडन करते हैं। उनका यह ऐसा ओजपूर्ण व्यवहार हम भी किसी के अनुचित व्यवहार को न सहने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न 19. परशुराम के स्वभाव एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि उनमें कौन-सी विशेषताएँ आपको अच्छी लगती हैं?

उत्तर: परशुराम के स्वभाव एवं व्यक्तित्व में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है

I. वे अत्यंत साहसी थे। अपने साहस के बल पर उन्होंने अनेक बार राजाओं को हराया।
II. ये दृढ़ संकल्पी थे। उन्होंने पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करने का जो संकल्प लिया, उसे पूरा किया।
III. वे अत्यंत वीर और शिव भक्त थे।
IV. हमें उनका दृढ़ संकल्पी और वीर व साहसी होना जैसी विशेषताएँ अत्यंत अच्छी लगती हैं। इन गुणों को कोई भी अपने जीवन में उतार कर सफल बन सकता है।

प्रश्न 20. राम- लक्ष्मण एवं परशुराम में से किसका व्यवहार आपको अधिक अच्छा लगता है? क्यों? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: राम- लक्ष्मण एवं परशुराम में से हमें राम का व्यवहार सबसे अच्छा लगता है क्योंकि उनमें निम्नलिखित अनुकरणीय गुण हैं

(i) वे साहसी, शक्तिवान होने के साथ-साथ विनम्र हैं।
(ii) वे आज्ञाकारी और मृदुभाषी हैं। क्रोध उन्हें छूकर तक नहीं गया।
(iii) वे धैर्यवान और संयमी है। परशुराम की सभी बातें धैर्य के साथ सुनते हैं।
(iv) वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। नियम के बाहर कोई कार्य नहीं करते हैं।

प्रश्न 21. 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' के आधार पर लिखिए कि विनम्रता को साहस और शक्ति कैसे कहा जा सकता है।

उत्तर: 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' कविता के अनुसार विनम्रता के साथ ही साहस और शक्ति का महत्त्व होता है। बिना विनम्रता के साहस दुस्साहस बन जाता है और शक्ति निरंकुशता में परिवर्तित हो जाती है। कविता में राम को साहस और शक्ति के साथ विनम्र दिखाया गया है इसलिए वे पूजनीय व श्रेष्ठ हैं, वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन बड़प्पन के लिए नहीं करते। जबकि दूसरी तरफ परशुराम में भी साहस और शक्ति है पर वे विनम्र न होकर क्रोधी हैं, जिस कारण वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए सभा में भय उत्पन्न करते हैं और लक्ष्मण द्वारा व्यंग्य का पात्र बनते हैं।

प्रश्न 22. 'राम-लक्ष्मण - परशुराम संवाद पाठ में राम और लक्ष्मण के स्वभाव में आपको क्या अंतर दिखाई दिया? एक-एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर: 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' में राम और लक्ष्मण के स्वभाव में निम्न भिन्नताएँ नज़र आती हैं। राम स्वभाव से विनयशील एवं कोमल हैं। अपने गुरुजनों का आदर करने वाले हैं। बड़ों की आज्ञा का पालन करना उनके स्वभाव की विशिष्टिता है। वह बहुत ही विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। वीर, साहसी एवं निडर होते हुए भी वह बहुत ही धैर्यवान हैं। जैसे- राम विनम्रता पूर्वक कहते हैं कि हे नाथ, इस धनुष को तोड़ने वाला आप ही का दास है। लक्ष्मण राम से छोटे हैं, परंतु बहुत ही वाचाल हैं। वाक्पटुता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई है। तार्किकता उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है। वह हर बात में परशुराम से तर्क करते हैं। वे बहुत ही बुद्धिमान एवं व्यंग्य में निपुण हैं। हर बात का उत्तर देने के लिए उनकी बुद्धि तत्पर है। वह वीर, निडर एवं साहसी हैं परंतु क्रोध भी उनके व्यक्तित्व का एक अंश है। जैसे- लक्ष्मण द्वारा कहा गया है कि वे कुम्हड़बतिया की तरह कमज़ोर नहीं है।

प्रश्न 23.परशुराम के प्रति लक्ष्मण के व्यवहार पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर- परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। श्री राम उनके क्रोध को शांत करने के लिए शीतल जल के समान शब्दों व आचरण का आश्रय ले रहे थे। इसके विपरीत लक्ष्मण परशुराम की भाँति ही क्रोधी स्वभाव के हैं। निडरता तो जैसे उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी है। इसलिए परशुराम का फरसा व क्रोध उनमें भय उत्पन्न नहीं कर पाता। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ। वे परशुराम के क्रोध को न्यायपूर्ण नहीं मानते। इसलिए परशुराम के अन्याय के विरोध में खड़े हो जाते हैं।

**********@@**********@@**********

पाठ-4 जयशंकर प्रसाद: आत्मा कथ्य

कवि परिचय

जयशंकर प्रसाद के पिताजी का नाम बाबू देवी प्रसाद था। जयशंकर प्रसाद की माताजी का नाम मुन्नी बाई था। काशी के प्रसिद्ध क्वींस कॉलेज में वे पढ़ने गए परन्तु स्थितियाँ अनुकूल न होने के कारण आठवीं से आगे नहीं पढ़ पाए। बाद में घर पर ही संस्कृत, हिंदी, फारसी का अध्ययन किया। छायावादी काव्य प्रवृति के प्रमुख कवियों में ये एक थे। इनकी मृत्यु सन 1937 में हुई।

जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ

जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ भारत के गौरवमय इतिहास व संस्कृति से अनुप्राणित है । कामायनी उनका सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है जिसमें आनन्दवाद की नई संकल्पना समरसता का संदेश निहित है। उनकी प्रमुख रचनाएँ है -झरना, ऑसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक (काव्य) स्कंदगुप्त चंद्रगुप्त, पुवस्वामिनी जन्मेजय का नागयज्ञ राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घूँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र प्रायश्चित सज्जन (नाटक) छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी. इंद्रजाल(कहानी संग्रह) तथा ककाल तितली इरावती (उपन्यास)।

जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली

हमारे देश के सबसे बड़े कवियों में से एक जयशंकर प्रसाद जी ने अपने काव्य लेखन की शुरुआत ब्रजभाषा में की थी। लेकिन धीरे -धीरे वे खड़ी बोली की तरफ भी आते गए और उनको यह भाषा शैली पसंद आती गई। इनकी रचनाओं में मुख्य रूप से भावनात्मक , विचारात्मक , इतिवृत्तात्मक

और चित्रात्मक भाषा शैली का प्रयोग देखने को मिलता है । इनकी शैली अत्यंत मीठी और सरल भाषा में थी जिनको कोई भी आसानी से पढ़ और समझ सकता था ।

आत्मकथ्य कविता का सार

आत्मकथ्य शीर्षक कविता **छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद** द्वारा रचित है।

इसमें कवि अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति करता है। कभी संसार की असारता और निरसता पर विचार करता है। जीवन दुखों से भरा है। इस वातावरण में भला कौन अपनी कथा को कहने का साहस करेगा। कवि का कहना है कि उसके जीवन की गागर तो रीती अर्थात खाली है।
वह भला दूसरों को क्या दे सकता है। कभी अपनी भूलों और दूसरों की रचनाओं को उजागर नहीं करना चाहता इसका कोई लाभ भी नहीं है। यह ठीक है कि कवि ने भी कुछ सुखी क्षण भोगे थे। तब वह मधुर चांदनी में बैठकर प्रियसी के साथ खिलखिलाकर हँसता था। पर वे क्षण कुछ पल ही टिक पाए। सुख उसके निकट आते - आते भाग गया। वह उन क्षणों की प्रतीक्षा करता रह गया। कवि अपने प्रिय के सौंदर्य का भी स्मरण करता है।उसके गालों की लाली उषा के लिए भी ईर्ष्या का विषय थी।पर अब इन सब बातों के कहने का कोई लाभ नहीं है। उसकी कथा में दूसरों को कुछ भी नहीं मिल पाएगा। यही कारण है कि वह अपनी कथा कहने से बचता रहा है।

प्रतिपाद्य

"आत्मपरिचय" कविता का प्रतिपाद्य संसार से प्रेम करना, उसके हित की चिन्ता करना, स्वयं कष्टों में रहकर भी संसार के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करना, किसी भी निन्दा-स्तुति से अप्रभावित रहकर सभी के साथ समान रूप से प्रेम का व्यवहार करना तथा अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना है ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1 कवि का दांपत्य जीवन कैसा है?
(क) क्लेश रहित (ख)सुखी (ग) दुखी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) दुखी

2 कवि ने अब तक कैसा जीवन जीया है?
(क) दुखदायी (ख) सुखी (ग) स्वतंत्र (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (क) दुखदायी

3 मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ किसकी प्रतीक हैं?
(क) खुशियों की (ख) उदासी का (ग) निराशाओं का (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) निराशाओं का

4 कवि के आलिंगन में आते-आते कौन रह गया?
(क) माँ (ख) पुत्री (ग) प्रेमिका (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) प्रेमिका

5 कवि अपने किस स्वभाव को दोष नहीं देना चाहते हैं?
(क) मधुर (ख) उग्र (ग) कोमल (घ) सरल

उत्तर (घ) सरल

6 कवि के जीवन की गागर कैसी है?
(क) रंगीन (ख) खाली (ग) भरी (घ) सुनहरी

उत्तर (ख) खाली

7 कवि के जीवन के सारे दुःख-दर्द और अभाव अब कैसे हैं?
(क) मौन (ख) अधिक (ग) कम (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) मौन

8 कवि अपनी आत्मकथा लिखने के बजाय क्या करना चाहता है?
(क) रोना चाहता है। (ख) खुश रहना चाहता है।
(ग) हँसना चाहता है। (घ) दूसरों की आत्मकथा सुनना चाहता है।

उत्तर (घ) दूसरों की आत्मकथा सुनना चाहता है|

9 कवि के सरल स्वभाव के कारण किसने धोखा दिया है?
(क) प्रेमिका ने (ख) मित्रों ने (ग) संबंधियों ने (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) मित्रों ने

10 कविता में थका हुआ पथिक कौन है?
(क) कवि (ख) कवि के मित्र (ग) कवि की प्रेमिका घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क)कवि

11 कवि ने अपने मन को किसका रूप दिया है?
(क) भँवरे (ख) गीतकार (ग) कोयल (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) भँवरे

12 गहरे नीले आकाश में अनगिनत लोगों ने क्या लिखे हैं?
(क) आत्मकथा (ख) कविता (ग) कहानियाँ (घ) गीत
उत्तर (क) जीवनगाथा
13 कवि ने खाली घड़े से किसकी ओर इशारा किया है?
(क) खाली घर (ख) सूखी नदी (ग) असफल जीवन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) असफल जीवन

14 कवि अपने जीवन के किन अनुभवों को सबसे बाँटना नहीं चाहते?
(क) सार्वजनिक (ख) पारिवारिक (ग) मधुर (घ) निजी
उत्तर (घ) निजी
15 कवि के आलिंगन में आते-आते कौन रह गया?
(क) माँ (ख) पुत्री (ग) प्रेमिका (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) प्रेमिका

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न</u>

1 कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

उत्तर: आत्मकथा लिखने के लिए अपने मन की दुर्बलताओं, कमियों का उल्लेख करना पड़ता है। कवि स्वयं को इतना सामान्य मानता है कि आत्मकथा लिखकर वह खुद को विशेष नहीं बनाना

चाहता है, कवि अपने व्यक्तिगत अनुभवों को दुनिया के समक्ष व्यक्त नहीं करना चाहता। क्योंकि वह अपने व्यक्तिगत जीवन को उपहास का कारण नहीं बनाना चाहता। इन्हीं कारणों से कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है।

2 आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर

कवि को लगता है कि आत्मकथा लिखने का अभी उचित समय नहीं हुआ है। क्योंकि आत्मकथा लिखकर कवि अपने मन में दबे हुए कष्टों को याद करके दु:खी नहीं होना चाहता है, अपनी छोटी से कथा को बड़ा आकार देने में वे असमर्थ हैं, वे अपने अंतर्मन को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना नहीं चाहते हैं। आत्मकथा प्राय: जीवन के उत्तरार्ध में लिखी जाती है। परन्तु अभी जीवन में ऐसा समय नहीं आया है। कवि को ऐसा लगता है कि अभी ऐसी कोई उपलब्धि नहीं मिली है जिसे वह लोगों के सामने प्रेरणा स्वरुप रख सके। इन्हीं कारणों से कवि ऐसा कहते हैं कि अभी आत्मकथा लिखने का समय नहीं हुआ है।

3 स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर

कवि की प्रेयसी उससे दूर हो गई है। कवि के मन-मस्तिष्क पर केवल उसकी स्मृति ही है। इन्हीं स्मृतियों को कवि अपने जीने का संबल अर्थात् सहारा बनाना चाहता है। अत: स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का आशय स्मृति के सहारे से है।

4 भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

उत्तर

कवि कहना चाहता है कि उसे वह सुख नहीं मिल सका जिसकी वह कल्पना कर रहा था। उसे सुख मिलते-मिलते रह गया। अर्थात् इस दुनिया में सुख छलावा मात्र है। हम जिसे सुख समझते हैं वह अधिक समय तक नहीं रहता है, स्वप्न की तरह जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर: कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि नायिका के कपोल अर्थात् गाल में इतनी लालिमा थी कि उषा भी उसमें अपना सुहाग ढूँढती थी। अत: नायिका का सौंदर्य अनुपम था।

5'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' - कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर

कवि यह कहना चाहता है कि अपनी प्रेयसी के साथ बिताए गए क्षणों को वह सबके सामने कैसे प्रकट करे। जीवन के कुछ अनुभवों को गोपनीय रखना ही उचित होता है। ऐसी स्मृतियों को वह सबके सामने प्रस्तुत कर अपनी हँसी नहीं उड़ाना चाहता है। अत: वह अपने जीवन की मधुर स्मृतियों को अपने तक ही सीमित रखना चाहता है।

6 कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

उत्तर

कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे वह अपनी प्रेयसी नायिका के माध्यम से व्यक्त करता है और कहता है कि नायिका स्वप्न में उसके पास आते-जाते मुस्कुरा कर भाग गई। अत: उसे उसका सुख नहीं मिल सका जिसे वह सुख समझता था वह स्वप्न रुपी छलावा थी। जो अस्थाई रुप से उसके जीवन में आई थी।

7"आत्मकथ्य " कविता में कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर

"आत्मा कथ्य " कविता में कवि स्वयं को एक सामान्य मनुष्य कहता है । उसके अनुसार उसका जीवन दुर्बलताओं,विफलताओं,भूलों और कष्टों से भरा हुआ है। इसके अपनों ने उसे धोखा दिया है ।

फिर भी उसने सरलता नहीं छोड़ी,भोलापन नहीं त्यागा ।यदि वह आत्मकथा लिखेगा तो ये सारी बातें अवश्य लिखी जाएँगी ।तब सरलता का मज़ाक उड़ेगा । अपनों की पोल-पट्टी खुलेगी ।प्रेम के सुमधुर क्षणों के बारे में भी बताना पड़ेगा । कवि उन क्षणों को उधेड़ना नहीं चाहता । वह अपनी बातें बताने की बजाय औरों की गाथाएँ सुनना चाहता है ।

8 कवि निजी जीवन के प्रेम के बारे में क्या कहता है ?

उत्तर

कवि निजी जीवन के प्रेम में असफल रहा । उसका जीवन-साथी उसके आलिंगन में नहीं आ सका । **संकेतार्थ** यह है कि उसका दाम्पत्य जीवन लंबे समय तक नहीं चल पाया । यद्यपि उसके जीवन साथी ने उसे मुस्कान भी दी । वह चाँदनी रातों में उसके साथ हँसा भी,खिलखिलाया भी,लेकिन जल्दी ही जीवन से दूर हो गया। अतः प्रेम की वे मधुर यादें ही उसका जीवन का सहारा बनी हुई हैं ।

9 कवि मधुर चाँदनी रातों की उज्ज्वल गाथाएँ क्यों नहीं गाना चाहता ?

उत्तर

कवि मधुर चाँदनी रातों में किए गए प्रेम की मधुर कहानियों को अपनी संपत्ति मानता है । वह उसके बारे में लोगों को कुछ नहीं बताना चाहता । उन पर केवल और केवल उसी का अधिकार है । वह उन्हीं सुमधुर यादों के सहारे शेष जीवन जीना चाहता है ।

10 कवि मधुर चाँदनी रातों की उज्ज्वल गाथाएँ क्यों नहीं गाना चाहता ?

उत्तर

कवि मधुर चाँदनी रातों में किए गए प्रेम की मधुर कहानियों को अपनी संपत्ति मानता है । वह उसके बारे में लोगों को कुछ नहीं बताना चाहता । उन पर केवल और केवल उसी का अधिकार है । वह उन्हीं सुमधुर यादों के सहारे शेष जीवन जीना चाहता है ।

11 " भोली आत्मकथा " के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर

कवि " भोली आत्मकथा " के माध्यम से यह कहना चाहता है कि उसने पूरा जीवन सरलता और भोलेपन

में जिया है । उसके जीवन में छल-कपट,चतुराई और धूर्तता नहीं है । अतः उसके जीवन में संतुष्टि तो है लेकिन किसी को कुछ सीख देने की शक्ति नहीं है ।

12 कवि की सबसे बड़ी त्रासदी क्या है ?

उत्तर

कवि के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी उसकी अपनी प्रेयसी है जो जीवन में क्षणिक रस घोलकर,चाँदनी रातों के बीच खिल-खिलाकर,मुस्कराकर चली गई । जिसके लिए कवि कल्पनाओं के सागर में डूबा हुआ इतरा हुआ था,

महात्व्कांक्षाओं के लिए स्वप्न देख रहा था,वह सब एक क्षण में खत्म हो गया ।

<u>दीर्घत्तरात्मक प्रश्न</u>

1 आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर

कवि को लगता है कि आत्मकथा लिखने का अभी उचित समय नहीं हुआ है। क्योंकि आत्मकथा लिखकर कवि अपने मन में दबे हुए कष्टों को याद करके दु:खी नहीं होना चाहता है, अपनी छोटी से कथा को बड़ा आकार देने में वे असमर्थ हैं, वे अपने अंतर्मन को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना नहीं चाहते हैं। आत्मकथा प्राय: जीवन के उत्तरार्ध में लिखी जाती है। परन्तु अभी जीवन में ऐसा समय नहीं आया है। कवि को ऐसा लगता है कि अभी ऐसी कोई उपलब्धि नहीं मिली है जिसे

वह लोगों के सामने प्रेरणा स्वरुप रख सके। इन्हीं कारणों से कवि ऐसा कहते हैं कि अभी आत्मकथा लिखने का समय नहीं हुआ है।

2 इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर

प्रसाद जी एक सीधे-सादे व्यक्तित्व के इंसान थे। उनके जीवन में दिखावा नहीं था। वे अपने जीवन के सुख-दुख को लोगों पर व्यक्त नहीं करना चाहते थे, अपनी दुर्बलताओं को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। अपनी दुर्बलताओं को समाज में प्रस्तुत कर वे स्वयं को हँसी का पात्र बनाना नहीं चाहते थे। पाठ की कुछ पंक्तियाँ उनके वेदना पूर्ण जीवन को दर्शाती है। इस कविता में एक तरफ़ कवि की यथार्थवादी प्रवृति भी है तथा दूसरी तरफ़ प्रसाद जी की विनम्रता भी है। जिसके कारण वे स्वयं को श्रेष्ठ कवि मानने से इनकार करते हैं।

3 आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखें।

उत्तर-'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(क) इस कविता की भाषा खड़ी बोली है। इसमें तत्सम शब्दों का भरपूर प्रयोग है। उदाहरणार्थ- मधुप, मलिन, उपहास, दुर्बलता, उज्ज्वल, स्मृति आदि।

(ख) इस कविता पर छायावादी काव्यशैली का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है 'उज्जवल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की'(ग) इस कविता की काव्यभाषा में प्रतीकात्मकता का समावेशहै-'मधुप गुनगुनाकर'

(घ) लाक्षणिकता ने कविता को विशिष्टता प्रदान की है- 'मुरझाकर गिर रही

(ङ) इस कविता की काव्यभाषा में अलंकारों का समावेश है। उदाहरणार्थ रूपक- यह गागर रीति (जीवन रूपी गागर), मधुप (मन रूपी भौंरा) अनुप्रास- पथिक की पंथा।

4 आप किन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर

नीचे कुछ महान व्यक्तियों की आत्मकथा का उल्लेख किया गया है। हमें उनकी आत्मकथा पढ़कर उनसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। .

(1) **महात्मा गाँधी की आत्मकथा** - हमें महात्मा गाँधी की आत्मकथा पढ़नी चाहिए। इससे हमें सत्य तथा अहिंसा के महत्व की जानकारी मिलती है।

(2) **भगत सिंह की आत्मकथा** - देशभक्त भगतसिंह की आत्मकथा को पढ़ने से हमें देश भक्ति की प्रेरणा मिलती है।

(3) **महावीर प्रसाद द्विवेदी की आत्मकथा** - प्रसिद्ध साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा है। एक महान साहित्यकार के रुप से हमें उनकी आत्मकथा पढ़नी चाहिए।

आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।
उत्तर
'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) प्रस्तुत कविता में कवि ने खड़ी बोली हिंदी भाषा का प्रयोग किया है -

"यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास।"

(2) अपने मनोभावों को व्यक्त कर उसमें सजीवता लाने के लिए कवि ने कविता में बिम्बों का प्रयोग किया है; जैसे -

"जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।"

(3) प्रस्तुत कविता में कवि ने ललित, सुंदर एवं नवीन शब्दों का प्रयोग किया है

"**यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊ में।**

भूले अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाउँ मैं।"

यहाँ-विडंबना, प्रवंचना जैसे नवीन शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य में सुंदरता आई है।

(4) अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य बढ़ गया है -

खिल-खिलाकर, आते-आते में पुनरुक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है।

अरुण- कपोलों में रुपक अलंकार है।

मेरी मौन, अनुरागी उषा में अनुप्रास अलंकार है।

**********@@**********@@**********

पाठ-5 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': उत्साह

जीवन परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल के महिषादल में सन 1889 में हुआ था। वो मूलतः गढ़ाकोला (जो उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित हैं।) के निवासी थे। निराला जी की प्रारम्भिक शिक्षा महिषादल में ही हुई। उन्हें हिंदी के अलावा संस्कृत, बांग्ला व अंग्रेजी भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। उनकी संगीत और दर्शनशास्त्र में भी गहरी रूचि थी।

निराला जी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के विचारों से प्रेरित थे। निराला का पारिवारिक जीवन दुखों और संघर्षों से भरपूर था। परिजनों के आकस्मिक निधन से उन्हें गहरा आधात लगा साहित्य की सेवा करते हुए सन 1961 में उनका देहांत हो गया।

उनकी रचनाओं में दार्शनिक, विद्रोह, क्रांति, प्रेम की तरलता, प्रकृति का विराट तथा उदार आदि भाव देखने को मिलते है। छायावादी रचनाकारों में सबसे पहले उन्होंने ही मुक्त छंद का प्रयोग किया था।

प्रमुख रचनाएँ

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रमुख रचनाओं में अनामिका, परिमल, गीतिका कुकुरमुत्ता और नए पत्ते हैं। राम की शक्ति पूजा और सरोज स्मृति से कवि को विशेष प्रसिद्धि प्राप्त है। इसके अलावा उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन में भी उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली है।

उत्साहः- कविता का सार

कविता निराला जी के सबसे पसंदीदा विषय बादल पर रचित है। यह कविता बादल के रूप में आये दो अलग तरह के बदलावों को दर्शाती है। इस कविता के माध्यम से निराला जी ने जीवन को एक अलग दिशा देने एवं अपना विश्वास खो चुके लोगों को प्रेरणा देने का प्रयास किया है। कवि बादलों के आने के ज़िक्र के जरिये,

जीवन से निराश व हताश लोगों को यह उम्मीद देना चाहते हैं कि चाहे जो कुछ हो, लेकिन आपके जीवन में भी खुशहाली ज़रूर लौटेगी और आपके अच्छे दिन ज़रूर आयेंगे।

कविता में उन्होंने दूसरा अहम संदेश ये दिया है कि जिस तरह बादल बेजान पौधों में नई जान डाल देते हैं, वैसे ही मनुष्य को सारे दुखों को भूलकर अपने जीवन की नयी शुरुआत करनी चाहिए और ज़िंदगी में हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए। मुख्य रूप से निराला जी ने यह कविता हमारे भीतर सोयी क्रांति को फिर से जगाने के लिए लिखी है।

अट नहीं रही है :- कविता का सार

कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। होली के समय जो महीना होता है, उसे फागुन कहा जाता है। उन्होंने इस कविता में, इस महीने में प्रकृति एवं मानवीय मन में होने वाले बदलाव को बड़े ही सुंदरता से दिखलाया है। फागुन के समय पूरी प्रकृति खिल-सी जाती है। हवाएं मस्ती में बहने लगती हैं, फूल खिल उठते हैं और आसमान में उड़ते पक्षी सबका मन मोह लेते हैं। इस तरह प्रकृति को मस्ती में देखकर मनुष्य भी मस्ती में आ जाता है और फागुन के गीत, होरी, फाग इत्यादि गाने लगता है।

उत्साह

बादल, गरजो!

घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ !

ललित ललित, काले घुंघराले,

बाल कल्पना के -से पाले,

विधुत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले !

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो –

बादल गरजो !

कविता का भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बारिश होने से पहले आकाश में दिखने वाले काले बादलों के गरज़ने और आकाश में बिजली चमकने का अद्भुत वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि बादल धरती के सभी प्राणियों को नया जीवन प्रदान करते हैं और यह हमारे अंदर के सोये हुए साहस को भी जगाते हैं।

आगे कवि बादल से कह रहे हैं कि "हे काले रंग के सुंदर-घुंघराले बादल! तुम पूरे आकाश में फैलकर उसे घेर लो और खूब गरजो। कवि ने यहाँ बादल का मानवीयकरण करते हुए उसकी तुलना एक बच्चे से की है, जो गोल-मटोल होता है और जिसके सिर पर घुंघराले एवं काले बाल होते हैं, जो कवि को बहुत प्यारे और सुन्दर लगते हैं।

आगे कवि बादल की गर्जन में क्रान्ति का संदेश सुनाते हुए कहते हैं कि हे बादल! तुम अपनी चमकती बिजली के प्रकाश से हमारे अंदर साहस भर दो और इस तरह हमारे भीतर एक नये जीवन का संचार करो! बादल में वर्षा की सहायता से धरती पर नया जीवन उत्पन्न करने की शक्ति होती है, इसलिए, कवि बादल को एक कवि की संज्ञा देते हुए उसे एक नई कविता की रचना करने को कहते हैं।

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन !

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो –

बादल, गरजो

कविता का भावार्थ :- कवि बादलों को क्रांति का प्रतीक मानते हुए यह कल्पना कर रहे हैं कि वह हमारे सोये हुए पुरुषार्थ को फिर से जगाकर, हमें एक नया जीवन प्रदान करेगा, हमें जीने की नई आशा देगा। कवि इन पंक्तियों में कहते हैं कि भीषण गर्मी के कारण दुनिया में सभी लोग तड़प रहे थे और तपती गर्मी से राहत पाने के लिए छाँव व ठंडक की तलाश कर रहे थे।

तभी किसी अज्ञात दिशा से घने काले बादल आकर पूरे आकाश को ढक लेते हैं, जिससे तपती धूप धरती तक नहीं पहुँच पाती। फिर बादल घनघोर वर्षा करके गर्मी से तड़पती धरती की प्यास बुझाकर, उसे शीतल एवं

शांत कर देते हैं। धरती के शीतल हो जाने पर सारे लोग भीषण गर्मी के प्रकोप से बच जाते हैं और उनका मन उत्साह से भर जाता है।

इन पंक्तियों में कवि ये संदेश देना चाहते हैं कि जिस तरह धरती के सूख जाने के बाद भी बादलों के आने पर नये पौधे उगने लगते हैं। ठीक उसी तरह अगर आप जीवन की कठिनाइयों के आगे हार ना मानें और अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखकर कड़ी मेहनत करते रहें, तो आपके जीवन का बगीचा भी दोबारा फल-फूल उठेगा। इसलिए हमें अपने जीने की इच्छा को कभी मरने नहीं देना चाहिए और पूरे उत्साह से जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए।

अट नहीं रही है

अट नहीं रही है

आभा फागुन की तन

सट नहीं रही है।

कहीं साँस लेते हो,

घर-घर भर देते हो,

उड़ने को नभ में तुम

पर-पर कर देते हो,

आँख हटाता हूँ तो

हट नहीं रही है।

कविता का भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने फागुन के महीने की सुंदरता का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। होली के वक्त जो मौसम होता है, उसे फागुन कहते हैं। उस समय प्रकृति अपने चरम सौंदर्य पर होती है और मस्ती से इठलाती है। फागुन के समय पेड़ हरियाली से भर जाते हैं और उन पर रंग-बिरंगे सुगन्धित फूल उग जाते हैं। इसी कारण जब हवा चलती है, तो फूलों की ख़ुशबू उसमें घुल जाती है। इस हवा में सारे लोगों पर भी मस्ती छा जाती है, वो आनंद में भरकर मस्ती में झूमने लगते हैं।

घर-घर में उगे हुए पेड़ों पर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। उन फूलों की ख़ुशबू हवा में यूँ बह रही है, मानो फागुन ख़ुद सांस ले रहा हो। इस तरह फागुन का महीना पूरे वातावरण को आनंद से भर देता है। इसी आनंद में झूमते हुए पक्षी आकाश में अपने पंख फैला कर उड़ने लगते हैं। यह मनोरम दृश्य और मस्ती से भरी हवाएं हमारे अंदर भी हलचल पैदा कर देती हैं। यह दृश्य हमें इतना अच्छा लगता है कि हम अपनी आँख इससे हटा ही नहीं पाते।

पत्तों से लदी डाल

कहीं हरी, कहीं लाल,

कहीं पड़ी है उर में

मंद गंध पुष्प माल,

पाट-पाट शोभा श्री

पट नहीं रही है।

कविता का भावार्थ :- कवि के अनुसार फागुन मास में प्रकृति इतनी सुन्दर नजर आती है कि उस पर से नजर हटाने को मन ही नहीं करता। चारों तरफ पेड़ों पर हरे एवं लाल पत्ते दिखाई दे रहे हैं और उनके बीच रंग-बिरंगे फूल ऐसे लग रहे हैं, मानो पेड़ों ने कोई सुंदर, रंग-बिरंगी माला पहन रखी हो। इस सुगन्धित पुष्प माला की ख़ुशबू कवि को बहुत ही अच्छी लग रही है। कवि के अनुसार, फागुन के महीने में यहाँ प्रकृति में होने वाले बदलावों से सभी प्राणी बेहद ख़ुश हो जाते हैं। कविता में कवि स्वयं भी बहुत ही खुश लग रहे हैं।

काव्यगत विशेषताएं:-

"उत्साह" और "अट नहीं रही हैं", दोनों ही कविताओं में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है।

"उत्साह" कविता में कवि ने बादल का मानवीकरण कर उससे "गरज गरज कर बरसने " को कहते हैं। तो दूसरी कविता "अट नहीं रही हैं" में वह फाल्गुन माह का मानवीकरण कर उसकी सुंदरता का बखान करते हैं।

>'उत्साह' कविता में वीर रस तथा 'अट नहीं रही है' कविता में अद्भुत रस मुख्य रुप से दिखाई देता है।

> कविता में अनुप्रास, रूपक, यमक, उपमा आदि अलंकारों का शानदार तरीके से प्रयोग किया गया है।

> कविता को लयबद्ध कर गीत शैली में लिखा गया है।

> दोनों कविताओं में खड़ी हिंदी का प्रयोग हुआ है।

> कविता में तत्सम शब्दों का प्रयोग भी बहुत खूबसूरती से किया गया है।

> "उत्साह" और "अट नहीं रही हैं", दोनों कविताओं में कवि ने प्रकृति का ही चित्रण किया है। और प्रकृति के माध्यम से ही अपने मनोभावों को प्रकट करने की कोशिश की है।

बहुविकल्पीय प्रश्न उत्तर

1. कवि बादल में किसका स्वर सुनता है?

(क) रूदन (ख) क्रांति (ग) वेदना (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (ख) क्रांति

2. बादल अपनी गर्जन-तर्जन से किसे घेर लेता है?

(क) समुद्र को (ख) पृथ्वी को (ग) आकाश को (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(ग) आकाश को

3. 'तप्त धरा' का सांकेतिक अर्थ क्या है?

(क) गर्म धरती (ख) सूखी धरती (ग) दुखों से पीड़ित धरती (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(ग) दुखों से पीड़ित धरती

4.कविता में बादल का मानवीकरण करके उसकी तुलना किससे की गई है?

(क) घोड़े (ख) बगुले (ग) बच्चे से (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर -(ग) बच्चे से

5. किस महीने में चारों तरफ हरियाली छा जाती है?

(क) फागुन (ख) माघ (ग) वैशाख (घ) अषाढ़

उत्तर-(क) फागुन

6.कविता 'अट नहीं रही है' में किस ऋतु के प्राकृतिक सौदर्य का चित्रण किया गया है?

(क)ग्रीष्म ऋतु (ख) वर्षा ऋतु (ग) शरद ऋतु (घ) वसंत ऋतु

उत्तर-(घ) वसंत ऋतु

अति लघु प्रश्न उत्तर

1.उत्साह कविता में कवि ने किसका आह्वान किया है?

उत्तर- बादलों से जोर-जोर से गरजने का आह्वान।

2.घेर घेर घोर गगन" में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर- "घ" वर्ण की आवृति के कारण अनुप्रास अलंकार।

3.कवि ने बादलों की तुलना किससे की है ?

उत्तर- काले घुंघराले बालों से।

4.पूरे आकाश पर छाये हुए घने काले बादल किस दिशा से आये हैं ?

उत्तर- अज्ञात दिशा से।

5.तप्त -धरा" का अर्थ क्या है ?

उत्तर– अत्यधिक गर्मी से तपती धरती।

6.कवि के अनुसार , उन्मन और विकल कौन और क्यों है ?

उत्तर– धरती के सभी प्राणी , भयंकर गर्मी के कारण।

7.."अट नहीं रही है" , कविता में किस मास का वर्णन किया है ?

उत्तर– फाल्गुन मास का।

8..फाल्गुन माह में कौन सी ऋतु आती हैं ?

उत्तर– ऋतुराज वसंत या वसंत ऋतु।

9.फाल्गुन माह में वन -उपवन कैसे लगते हैं ?

उत्तर– हरे -भरे पेड़ -पौधे व रंग -बिरंगे फूल पत्तों से शुशोभित अति सुंदर।

10.कवि की आंख कहाँ से नहीं हट रही है ?

उत्तर– हरे भरे पेड़ पौधे , रंग बिरंगी फूल – पत्तों व प्राकृतिक सुंदरता से।

11.“कहीं साँस लेते हो , घर-घर भर देते हो ” , पंक्ति की क्या विशेषता हैं ?

उत्तर– यहाँ फाल्गुन माह का मानवीकरण किया गया हैं।

12.कवि के अनुसार घर-घर किससे भर जाता है?

उत्तर – फाल्गुन मास में हवा के साथ बहने वाली फूलों की सुगंधित खुशबू से।

लघु प्रश्न उत्तर

1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर- निराला क्रांतिकारी कवि थे। वे समाज में बदलाव लाना चाहते थे इसलिए जनता में चेतना जागृत करने के लिए और जोश जगाने के लिए कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए न कह 'गरजने के लिए कहा है। गरजना शब्द क्रान्ति, बदलाव, विरोध को दर्शाता है।

2.'बाल कल्पना केसे पाले’ पंक्ति का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- उपर्युक्त पंक्ति का भाव है कि जिस प्रकार बच्चों की कल्पनाएँ पलभर में ही बनती और बिगड़ती हैं उसी प्रकार बादल भी अचानक अज्ञात दिशा से आ जाते हैं और पल भर में ही गायब भी होने लगते हैं |

3.कवि ने ‘नवजीवन’ का प्रयोग बादलों के लिए भी किया है। स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- कवि बादलों को कल्याणकारी मानता है। बादल विविध रूपों में जनकल्याण करते हैं। वे अपनी वर्षा से लोगों की बेचैनी दूर करते हैं और तपती धरती का ताप शीतल करके मुरझाई-सी धरती में नया जीवन रोप

देते हैं। वे धरती को फ़सल उगाने योग्य बनाकर लोगों में नवजीवन का संचार करते हैं।

4.कवि निराला बादलों में क्या-क्या संभावनाएँ देखते हैं?
उत्तर- कवि निराला बादलों में निम्नलिखित संभावनाएँ देखते हैं:-
*बादल लोगों को क्रांति लाने योग्य बनाने में समर्थ हैं।
* बादल धरती और धरती के प्राणियों दोनों को नवजीवन प्रदान करते हैं।
* बादल धरती और लोगों का ताप हरकर शीतलता प्रदान करते हैं।

5.कवि ने बादलों के किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है, स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- कवि ने बादलों को 'आज़ात दिशा के घन और 'नवजीवन वाले' जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। कवि उन्हें अज़ात दिशा के घन इसलिए कहा है क्योंकि बादल किस दिशा से आकर आकाश में छा गए, पता नहीं। इसके अलावा वे धरती और प्राणियों को नवजीवन देते हैं।

6.उत्साह' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- कवि ने 'उत्साह' कविता में बादलों का आह्वान करते हुए क्रांति लाने के लिए कहा है। इस कविता में बादलों को क्रांतिदूत मानकर सोए, अलसाए और कर्तव्यविमुख लोगों को क्रांति लाने के लिए प्रेरित किया गया है। लोगों में उत्साह भरना ही 'उत्साह' कविता का उद्देश्य है।

7.अट नहीं रही है' कविता के आधार पर फागुन में उमड़े प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर- फागुन का सौंदर्य अन्य ऋतुओं और महीनों से बढ़कर होता है। इस समय चारों ओर हरियाली छा जाती है। खेतों में कुछ फसलें पकने को तैयार होती हैं। सरसों के पीले फूलों की चादर बिछ जाती है। लताएँ और डालियाँ रंग-बिरंगे फूलों से सज जाती हैं। प्राणियों का मन उल्लासमय हुआ जाता है। ऐसा लगता है कि इस महीने में प्राकृतिक सौंदर्य छलक उठा है।

8.'उड़ने को नभ में तुम पर पर कर देते हो' के आलोक में बताइए कि फागुन लोगों के मन को किस तरह प्रभावित करता है?

उत्तर- 'उड़ने को नभ में तुम पर पर कर देते हो' से ज्ञात होता है कि फागुन में चारों ओर इस तरह सौंदर्य फैल जाता है कि वातावरण मनोरम बन जाता है। रंग-बिरंगे फूलों के खुशबू से हवा में मादकता घुल जाती है। ऐसे में लोगों का मन कल्पनाओं में खोकर उड़ान भरने लगता है।

9.'कहीं साँस लेते हो ऐसा कवि ने किसके लिए कहा है और क्यों?
अथवा
कवि ने फागुन का मानवीकरण कैसे किया है?
उत्तर- फागुन महीने में तेज हवाएँ चलती हैं जिनसे पत्तियों की सरसराहट के बीच साँय-साँय की आवाज़ आती है। इसे सुनकर ऐसा लगता है, मानो फागुन साँस ले रहा है । कवि इन हवाओं में फागुन के साँस लेने की कल्पना कर रहा है। इस तरह कवि ने फागुन का मानवीकरण किया है।

10.फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?
उत्तर- फागुन माह में "ऋतुराज" बसंत का आगमन होता हैं। पतझड़ के समय फूल पत्ते विहीन पेड़ पौधों में फिर से नई कोपल फूटने लगती हैं। बाग़ बगीचों में अनेक प्रकार के फूल खिलने लगते हैं। और उन फूलों की खुशबू से सारा वातावरण महक उठता हैं। प्रकृति की सुंदरता उस समय देखने लायक होती हैं।

**********@@**********@@**********

पाठ-6 नागार्जुन (1911-1998): यह दंतुरित मुसकान/ फसल

कवि - परिचय

प्रगतिवाद के गौरवपूर्ण स्तंभ नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा गाँव में सन् 1911 में हुआ |इनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था |इन्होंने हिंदी,मैथिलि,बांग्ला और संस्कृत में अनेक कविताएँ लिखीं | मातृभाषा मैथिलि में वे 'यात्री' नाम से प्रसिद्ध हैं|हिंदी अकादमी ,दिल्ली का शिखर सम्मान ,उतरप्रदेशका भारत भारती पुरस्कारएवंबिहारका राजेन्द्र प्रसादपुरस्कार इत्यादी केद्वारा इन्हें सम्मानित किया गया |

रचनाएँ-"युगधारा,सतरंगे पंखों वाली, हजार हजार बाहों वाली, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, मैं मिलटरी का बुढा घोडा" इत्यदि|

पाठ - परिचय: यह दंतुरित मुसकान

" यह दंतुरित मुसकान " कविता के कवि नागार्जुन जी हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने उस नन्हे बच्चे की मन को मोह लेने वाली मुस्कान जिसमें कोई छल नहीं है और न ही कोई कपट मात्र है , उस का बहुत खूबसूरती से वर्णन किया है , जिसके अभी - अभी दूध के दांत निकलने शुरू हुए हैं। क्योंकि कवि काफी लम्बे समय के बाद अपने घर लौटे हैं और उनकी मुलाकात उनके 6 से 8 महीने के बच्चे से पहली बार हो रही हैं। इसीलिए कवि अपने उस नन्हे बच्चे की मन को मोह लेने वाली मुस्कान को देखकर वे कहते हैं कि अगर उसकी इस मुस्कान को कोई पत्थर हृदय वाला व्यक्ति भी देख ले तो , वह भी उसे प्यार किए बिना नहीं रह पाएगा और बच्चे की यह मन को मोह लेने वाली मुस्कान जीवन की कठिनाइयों व परेशानियों से निराश - हताश हो चुके व्यक्तियों को भी एक नई प्रेरणा दे सकती हैं। कवि को उस नन्हे बच्चे को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे कमल का फूल किसी तालाब में खिलने के बजाय उसके घर के आंगन में ही खिल आया हो और कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि उसको छू लेने मात्र भर से ही बांस या बबूल के पेड़ से शेफालिका के फूल गिरने लगेंगे। क्योंकि कवि अपने नवजात बच्चे से पहली बार मिल रहे हैं तो बच्चा अपने पिता यानि कवि को पहचान नहीं पाता है लेकिन कवि को इस बात का कोई अफसोस नहीं है। वह उसकी माँ अर्थात अपनी पत्नी और उसे बच्चे को धन्यवाद देते हुए कहते हैं कि अगर तुम्हारी माँ न होती तो तुम इस धरती पर कैसे आते और मैं तुमसे कैसे मिल पाता यानि तुम्हारी माँ ही तुम्हें इस धरती पर लाई और तुम्हारा मुझसे मिलन करवाया। जिसके लिए मैं तुम दोनों को धन्यवाद देता हूँ। कवि अपने काम से अक्सर अपने घर से दूर रहते हैं। इसीलिए बच्चा कवि को अपना पिता न समझ कर एक मेहमान समझ रहा है और पहचानने की कोशिश में उन्हें लगातार देखे जा रहा है। लेकिन कवि उसके मुंह में आये नए - नए दांतों के बीच खिली मुस्कान को देखकर अपने आप को सम्मोहित सा महसूस कर रहे हैं।

फसल: कविता सार

" फसल " कविता के कवि " नागार्जुन " जी हैं। अलग - अलग नदियों का पानी जब भाप बनकर उड़ता है तो वो आकाश में बादल के रूप में परिवर्तित हो जाता है। और फिर वही बादल बरस कर धरती पर पानी के रूप में वापस आ जाते हैं। जिससे फसलों को भरपूर पनपने का

मौका मिलता हैं। फसल को तैयार होने में किन - किन चीज़ों की आवश्यकता होती है , उनका वर्णन कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि एक या दो नहीं बल्कि अनेक नदियों का पानी अपना जादुई असर दिखाता है , तब जाकर फसल पैदा होती हैं। एक नहीं दो नहीं बल्कि लाखों - करोड़ों हाथों के अथक परिश्रम का परिणाम से एक अच्छी फसल तैयार होती है। अर्थात हजारों खेतों पर दुनिया भर के लाखों - करोड़ों किसान दिन रात मेहनत करते हैं। एक या दो नहीं बल्कि हजारों खेतों की उपजाऊ मिट्टी के पोषक तत्व भी इन फसलों के अंदर छुपे हुए हैं। क्योंकि मिट्टी की विशेषताएं भी फसलों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। यानी मिट्टी से मिलने वाले जरूरी पोषक तत्व फसलों के लिए जरूरी होते हैं और अलग - अलग तरह की फसलों को उगाने के लिए अलग - अलग तरह की मिट्टी व उसके गुण आवश्यक होते हैं। किसान की मेहनत के साथ - साथ पानी भी आवश्यक है। साथ में मिट्टी का गुणवत्तापूरक भी जरूरी है। क्योंकि मिट्टी की विशेषताओं के अनुसार ही फसल पैदा होती है। अलग-अलग तरह की मिट्टी में अलग - अलग तरह के पोषक तत्व व गुण पाए जाते हैं जिससे अनुसार अलग-अलग तरह की फसलों को पैदा किया जा सकता है। पौधों को बढ़ने के लिए सूरज की किरणें व कार्बन डाइऑक्साइड गैस भी आवश्यक है क्योंकि सूरज की रोशनी में ही ये पौधे मिट्टी से जरूरी पोषक तत्व , पानी व हवा से कार्बन डाइऑक्साइड गैस लेकर अपना भोजन बनाते हैं। जिसे प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) कहा जाता हैं। कवि पहले तो प्रश्न पूछते हैं कि फसल क्या हैं ? फिर उसी प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि नदियों के पानी का जादू फसल के रूप दिखाई देता हैं क्योंकि बिना पानी के फसल का उगना **नामुमकिन** हैं। करोड़ों किसानों की दिन - रात की मेहनत का नतीजा फसल के रूप में मिलता हैं। भूरी , काली व खुशबूदार हल्की पीली मिट्टी यानि अलग - अलग प्रकार की मिट्टी के पोषक तत्व और सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं। क्योंकि सूरज की रोशनी और हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित कर ही पौधे अपनी पत्तियों के दवारा भोजन बनाते हैं। अच्छी तरह से फसलों को फलने फूलने के लिए किसान की मेहनत के साथ - साथ पानी , मिट्टी का गुणवत्तापूरक , अलग - अलग तरह की मिट्टी में अलग- अलग तरह के पोषक तत्व , पौधों को बढ़ने के लिए सूरज की किरणें व कार्बन डाइऑक्साइड गैस आदि की आवश्यकता होती है। करोड़ों किसानों की दिन- रात की मेहनत , नदियों के पानी का जादू , भूरी , काली व खुशबूदार मिट्टी यानि अलग - अलग प्रकार की मिट्टी के पोषक तत्व और सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं।

प्रश्न- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों में से सही विकल्प छाँटकर लिखिए|

1. शिशु का धूल-धूसरित शरीर कवि को कैसा लगता है?

a. कमल के समान b. तारों के समान c. रुई के समान d. गेंद के समान

2. किसे देखकर कठोर पाषाण जल में परिवर्ति त हो ने की कल्पना की गई है?

a. माँ का करुण रुदन b. शिशु की दंतुरित मुस्कान

c. मनवांछित उपहार d. तेज वर्षा

3. शिशु एकटक कवि की तरफ देख रहा है क्यों कि -

a. कवि हँस रहा है b. सभी विकल्प सही हैं

c. कवि को पहचानना चाह रहा है d. कवि नाच रहा है

4. बच्चे की मुस्कान मुर्दे में भी जान डाल देती है इससे तात्पर्य है-

a. निराश व्यक्ति में आशा का संचार हो जाता है b. इनमें से कोई नहीं

c. कोई व्यक्ति मरता नहीं है d. मुर्दा व्यक्ति जीवित हो जाता है

5. कठिन पाषाण का क्या अर्थ है?

a. कठोर हृदय वाला b. बड़ी चट्टान c. सभी विकल्प सही हैं d. भारी पत्थर

6. यह दंतुरित मुसकान कविता में कविने चिर प्रवासी किसे कहा है?

a. स्वयं को b. बच्चे को c. बच्चे की माता को d. लोगों को

7. नागार्जुन ने "यह दंतुरित मुस्कान" कविता में बच्चे के धूल मिट्टी से सने शरीर के लिए कौन से बिम्ब का प्रयोग किया है ?

a. बबूल के पेड़ का b. कमल के फूल का c. शेफालिका के फूल का d. बांसके पेड़ का

8. यह दंतुरित मुसकान कविता में बच्चे के स्पर्शमात्र से क्या परिवर्तन आया ?

a. शेफालिका के फूल झरने लगे b. कमल के फूल खिलने लगे

c. मल्लिका के फूल झरने लगे d. गुलाब के फूल महक उठे

9. नागार्जुन ने किसमेंजीवन का संदेश माना है ?

a. फसल में b. कमल के फूल में c. बच्चे में d. दंतुरित मुस्कान की सुंदरता में

Solution

1. (a) कमल के समान

2. (b) शिशुकी दंतुरित मुस्कान

3. (c) कवि को पहचानना चाह रहा है

4. (a) निराश व्यक्ति में आशा का संचार हो जाता है

5. (a) कठोर हृदय वाला

6. (a) स्वयं को

7. (b) कमल के फूल का

8. (a) शेफालिका के फूल झरने लगे

9. (d) दंतुरित मुस्कान की सुंदरता में

लघुत्तरिय प्रश्न

1. फसल नदियों के पानी का जादू, हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा तथा मिट्टी का गुण धर्म किस प्रकार है? स्पष्ट कीजिए।

उतर-फसल के लिये पानी बेहद आवश्यक है। नदियाँ अपने साथ जो खनिज बहा कर लाती हैं वे उनके पानी को अमृत बना देते हैं जो किसी जादू कीभाँति फसलों में आकार, रस, गंध, स्वाद आदि की भिन्नता पैदा करते हैं। इसमें अनेक व्यक्तियों के परिश्रम तथा सेवा के साथ-साथ बीज-खादव मिट्टी का भी योगदान होता है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की विशेषताओं के अनुसार फसलों का स्वरूप बनता है। अतःफसल इनसबके सम्मिलित योगदान की महिमा है।

2. यह दंतुरित मुसकान कविता में 'बाँस और बबूल' किसके प्रतीक हैं?

उतर-कविता में बाँस और बबूल के पेड़ कठोर हृदय या रसहीन व्यक्तियों के प्रतीक हैं। ऐसे लोगों पर मानवीय संवेदनाओं का कोई असर नहीं होता है।इन प्रतीकों के माध्यम से कवि कहना चाहता हैं कि मधुर मुस्कान को देखकर कठोर से कठोर हृदय मानव भी सरस हो उठते हैं।

3. बच्चे का परिचय संसार से करवा ने में मुख्य रूप से किसकी भूमिका होती है?

उतर- बच्चे का परिचय संसार से करवा ने में माँ की मुख्य भूमिका होती है। वह नौ माह तक बच्चे को गर्भ में रखकर जन्म तो देती ही है, साथ हीयथा संभव सुविधा यें देकर उसका पालन-पोषण करती और प्यार एवं संस्कार भी देती है। वह संसार से उसका परिचय कराने में माध्यमकी भूमिका निभाती है।

4. कवि ने किसकी मुस्कान का वर्णन किया है ?

उतर-. कवि ने छोटे बच्चे की मुस्कान का वर्णन किया है। बच्चे के मुस्करा ने पर उसके छोटे-छोटे दाँत दिखाई देने से उसकी मुस्कान बड़ी सरल एवंमोहक लगती है जिसे देख कर वह अपने निराशा के समस्त क्षणों को भूल जाता है ।

**********@@**********@@**********

पाठ-9 मंगलेश डबराल: संगतकार

कवि परिचय

जन्म- 16 मई 1948 में।

जन्म स्थान- टिहरी गढ़वाल (उत्तरांचल) के काफलपानी गाँव में।

शिक्षा- दीक्षा- देहरादून में।

व्यवसाय/ संपादन कार्य - दिल्ली आकर हिन्दी पैट्रियट, प्रतिपक्ष और आसपास में काम करने के बाद वे भोपाल में भारत भवन से प्रकाशित पूर्वग्रह में सहायक संपादक रहे। इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित अमृत प्रभात में भी कुछ दिन नौकरी की। सन् 1983 में जनसत्ता अखबार में साहित्य संपादक का पद सँभाला। कुछ समय सहारा समय में संपादन कार्य करने के बाद वह नेशनल बुक ट्रस्ट से जुड़े रहे।

मंगलेश डबराल के प्रकाशित काव्य संग्रह - पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है और नये युग में शत्रु। इसके अतिरिक्त इनके दो गद्य संग्रह लेखक की रोटी और कवि का अकेलापन के साथ ही एक यात्रावृत्त एक बार आयोवा भी प्रकाशित हो चुके हैं। कविता के अतिरिक्त इन्होंने साहित्य, सिनेमा, संचार माध्यम और संस्कृति के विषयों पर भी नियमित लेखन किया है। मंगलेश की कविताओं में सामंती बोध एव पूँजीवादी छल-छद्म दोनों का प्रतिकार है।

पुरस्कार/सम्मान-दिल्ली हिन्दी अकादमी के साहित्यकार सम्मान, कुमार विकल स्मृति पुरस्कार और अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना 'हम जो देखते हैं' के लिए सन् 2000 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मंगलेश डबराल की ख्याति अनुवादक के रूप में भी है। मंगलेश की कविताओं के भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, डच, स्पेनिश, पुर्तगाली, इतालवी, फ़्राँसीसी, पोलिश और बुल्गारियाई भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

भाषा-शैली इनकी भाषा पारदर्शी, सहज एवं सरल है। इनके काव्य में व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

निधन- 9 दिसंबर 2020

संगतकार-कविता का सार

संगतकार कविता के माध्यम से कवि ने उन सहायक गायक कलाकारों के महत्त्व को प्रतिपादित किया है जो मुख्य गायकों के स्वर से अपना स्वर मिलाकर उनके स्वर को गति प्रदान करते हैं

तथा उनके गायन में सहायक बनते हैं लेकिन वे कभी भी अपनी उन्नति का प्रयास नहीं करते। इन सहायक गायक कलाकारों को संगतकार कहा जाता है।

इस कविता में जो मुख्य गायक है उसकी आवाज अत्यधिक मजबूत होती है वह अपनी चट्टान जैसी अर्थात् मजबूत व बहुत अच्छी आवाज में गा रहा है मगर साथ में मुख्य गायक का कोई साथ दे रहा था, उसकी आवाज थोड़ी कमजोर है अर्थात् पीछे से एक आवाज आ रही थी जो थोड़ी सी कमजोर लेकिन काँपती हुई थी। आवाज गायन में धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ता जाता है अर्थात् जो गा रहा है वह या तो मुख्य गायक का छोटा भाई है या शिष्य जिसने अभी संगीत को सीखना शुरू किया है या फिर वह आवाज दूर से पैदल चलकर संगीत सीखने के लिए आने वाले किसी रिश्तेदार की है क्योंकि आवाज मुख्य गायक जैसी ही है लेकिन थोड़ी धीमी है मुख्य गायक से मिली हुई है। मुख्य गायक की ऊँची गंभीर आवाज में अपने स्वर की मधुर गूँज मिलाता है अर्थात् उसके स्वर के भारी होने पर उसे सहायता प्रदान करता है। मुख्य गायक का आत्मविश्वास डगमगाने पर संगतकार उसे धैर्य बँधाता है। वह मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसे जटिल तानों की उलझनों से उभारता है। स्वर से भटकने पर वह अंतर की मुख्य पंक्ति को पकड़कर मुख्य गायक को सँभालता है। मुख्य गायक अपनी इस तरह भूमिका निभाता है कि मानो वह मुख्य गायक के बिखरे या छूटे हुए सामान को समेट रहा हो। उस समय उस मुख्य गायक को अपना बचपन याद आ जाता है जब वह नया - नया गाना सीखता था या नौसिखिया था।

कवि ने बताया है कि जब कभी मुख्य गायक ऊँचे स्वर में गाता है और उसका गला बैठने पर मुख्य गायक की आवाज जवाब दे जाती है तथा वह निराश हो जाता है तब संगतकार उसे निराश नहीं होने देता बल्कि उसके सुर में अपना सुर मिलाकर उसे फिर से गाने की प्रेरणा देता है। उस समय मुख्य गायक का हौसला बढ़ाता है। उस सुंदर आवाज को सुनकर मुख्य गायक फिर नए जोश से गाने लगता है। कभी-कभी संगतकार मुख्य गायक को यह बताने के लिए भी उसके स्वर में अपना स्वर मिलाता है कि वह अकेला नहीं है, कोई है जो उसका साथ हर समय देता है और यह भी बताने के लिए कि जो राग या गाना एक बार गाया जा चुका है, उसे फिर से दोबारा गाया जा सकता है।

कवि कहते हैं कि जब भी संगतकार मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाता है यानी उसके साथ गाना गाता है तो उसकी आवाज में एक हिचक साफ सुनाई देती है और उसकी

हमेशा यही कोशिश रहती है कि उसकी आवाज मुख्य गायक की आवाज से धीमी रहे लेकिन हमें इसे संगतकार की कमजोरी या असफलता नहीं माननी चाहिए क्योंकि वह मुख्य गायक के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए ऐसा करता है। यानी अपना स्वर ऊँचा कर वह मुख्य गायक के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता अर्थात् वह स्वयं को महत्त्व ना देकर मुख्य गायक को ही महत्त्व दिलाना चाहता है। यह उसका मानवीय गुण है। उसकी विफलता ना होकर मनुष्यता है।

पठित काव्यांश आधारित प्रश्न-

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंदर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
यह अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

प्रश्न-1 मुख्य गायक की आवाज़ कैसी होती है ?
(अ) बहुत कमज़ोर (ब) काँपती हुई(स) चट्टान जैसी भारी (द) बहुत धीमी
सही उत्तर: (स) चट्टान जैसी भारी।

प्रश्न-2 प्रस्तुत काव्यांश में मुख्य गायक के भारी-स्वर का साथ कौन देता है ?
(अ) संगीतकार (ब) संगतकार (स) गीतकार (द) तबला वादक
सही उत्तर: (ब) संगतकार

प्रश्न-3 मुख्य गायक के अनहद में पहुँचने पर संगतकार क्या करता है ?
(अ) वह उसका साथ देता है
(ब) संगतकार अपनी आवाज़ से गायकी की कड़ी जोड़कर मुख्य गायक के साथ आवाज मिलाता है
(स) संगतकार धीमी आवाज़ में गाना शुरू कर देता है
(द) संगतकार ही स्थायी को सँभालता है ||
सही उत्तर : (द) संगतकार ही स्थायी को सँभालता है।

प्रश्न-4 नौसिखिया किसे कहा गया है?
(अ) मुख्य गायक को (ब) संगतकार को (स)लेखक को (द)इनमें से कोई नहीं
सही उत्तर:(अ) मुख्य गायक को।

प्रश्न-5 संगतकार मुख्य गायक का साथ क्यों देता है?
(अ)उससे आगे बढ़ने के लिए (ब)उसकी गायन शक्ति बढ़ाने के लिए
(स)उससे सीखने के लिए (द)उसे सिखाने के लिए
सही उत्तर- (ब) उसकी गायन शक्ति बढ़ाने के लिए।

प्रश्न-6 किसकी आवाज सुंदर और काँपती हुई है?
(अ) संगतकार (ब) मुख्य गायक स) गीतकार द) नृत्यकार
सही उत्तर- (अ) संगतकार

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाढस बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है

और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

प्रश्न-1 मुख्य गायक को धीरज बँधाने का काम कौन करता है?
(अ) उसकी माँ (ब) श्रोता (स) संगतकार (द) भाई
सही उत्तर: संगतकार

प्रश्न-2 संगतकार किन विकट परिस्थितियों में मुख्य गायक का साथ देता है ?
(अ) जब मुख्य गायक का गला बैठने लगता है
(ब) जब गीत गाने की प्रेरणा समाप्त होने लगती है और उत्साह मंद पड़ने लगता है
(स) जब उसकी आवाज़ से गंभीरता समाप्त होकर लय राख की तरह ठंडी होने लगती है
(द) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं
सही उत्तर : (द) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं

प्रश्न-3 संगतकार के स्वर में हिचक क्यों सुनाई देती है ?
(अ) वह मुख्य गायक का सम्मान रखने के लिए ऐसा करता है
(ब) वह ऊँचे स्वर में गा नहीं सकता (स) उसका काम केवल साथ देना होता है
(द) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं
उत्तर: (अ) वह मुख्य गायक का मान रखने के लिए ऐसा करता है।

प्रश्न-4 मुख्य गायक को क्या समझाने के लिए संगतकार उसका साथ देता है ?
(अ) वह बताना चाहता है कि वह अकेला नहीं है
(ब) गाए जा चुके राग को पुनः भी गाया जा सकता है
(स) वह उसको ढाँढ़स बँधाता है (द) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं
सही उत्तर: (द) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।

प्रश्न-5 तारसप्तक में गाने के कारण कवि को कैसा अनुभव होता है?

(अ) बहुत ख़ुशी होती है|

(ब) थक जाता है|

(स) उत्साह से भर जाता है|

(द) गाने की इच्छा समाप्त हो जाती है|

सही उत्तर: (स) उत्साह से भर जाता है|

पाठ आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-

प्रश्न-1 मुख्य गायक के गायन की क्या विशेषता होती

(अ) उसका गायन कोयल के समान मधुर होता है

(ब) वह अपने गायन से सबको मधुर कर देता है

(स) उसका स्वर आत्मविश्वास से भरा हुआ चट्टान के समान भारी होता है

(द) उसका गायन सभी को प्रिय लगता है

सही उत्तर: (स) उसका स्वर आत्मविश्वास से भरा हुआ चट्टान के समान भारी होता है

प्रश्न-2 संगतकार की भूमिका क्या होती है ?

(अ) मुख्य गायक के साथ स्वर मिलाकर उसके स्वर को बल प्रदान करना

(ब) मुख्य गायक की सेवा करना

(स) मुख्य गायक की अनुपस्थिति में गायन का समाँ बाँध देना

(द) ढोलक, हारमोनियम आदि वाद्य यंत्रों को उठाकर चलना

सही उत्तर: (अ) मुख्य गायक के साथ स्वर मिलाकर उसके स्वर को बल प्रदान करना

प्रश्न-3 कवि संगतकार द्वारा अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से कम रखने को क्या मानता है?

(अ) समझदारी (ब) ईमानदारी (स)चालाकी (द) मनुष्यता

सही उत्तर: (द) मनुष्यता

प्रश्न-4 मुख्य गायक की गरजदार आवाज में अपनी गूँज मिलाने का काम किसका है?

(अ) संगतकार (ब) कवि (स) गायक का छोटा भाई (द) शिष्य

सही उत्तर: (अ) संगतकार

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न-1 'उसका गला' में उसका किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर- मुख्य गायक के लिए प्रयुक्त हुआ है।

प्रश्न-2 गायक कहाँ खो जाता है?

उत्तर- गायक अंतरी की जटिलताओं के जंगल में खो जाता है।

प्रश्न -3 'कमजोर काँपती' में कौन सा अलंकार है?

उत्तर- अनुप्रास अलंकार

प्रश्न-4 ऊँचे स्वर में गाये गये सरगम को क्या कहते हैं?

उत्तर- तारसप्तक

प्रश्न-5 मुख्य गायक के पीछे - पीछे मुख्य स्वरों को कौन दोहराता है?

उत्तर- संगतकार

लघु उत्तरीय प्रश्नप्रश्न/ मूल्य आधारित प्रश्न

प्रश्न-1 मुख्य गायक तथा संगतकार की आवाजों के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग हुआ है और क्यों?

उत्तर -मुख्य गायक की आवाज के लिए 'गरज' तथा संगतकार की आवाज के लिए 'गूँज' शब्दों का प्रयोग किया गया है क्योंकि मुख्य गायक का स्वर भारी तथा संगतकार का स्वर कोमल होता है साथ ही संगतकार कभी अपने सुर को मुख्य गायक के सुर से ऊँचा नहीं जाने देता।

प्रश्न-2 संगतकार में क्या की उत्कट भावना भरी है- पुष्टि कीजिए

उत्तर- संगतकार में त्याग की भावना इस प्रकार निहित है कि संगतकार मुख्य कलाकार का सहारा बनते हैं, उसे भटकने से बचाते हैं, स्वयं प्रतिभावान होने पर भी उससे आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करते।

प्रश्न-3 संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर -संगतकार के माध्यम से कवि उन व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है जो अन्य व्यक्ति के साथ चलते हैं और उनके सहायक होते हैं। किसी भी व्यक्ति की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जैसे संगीत में गायक के साथ संगतकार महत्त्वपूर्ण होते हैं उसी प्रकार जीवन में साथ चलते लोग भी महत्त्वपूर्ण होते हैं।

प्रश्न-4 मुख्य गायक के साथ संगतकार का होना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर- जिस प्रकार मुख्य गायक को गायन के सुरताल के लिए वाद्य यंत्रों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार गायक को थकान के समय सुर के आरोह अवरोह आदि के लिए संगतकार की आवश्यकता होती है।

प्रश्न-5 संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर- संगतकार विभिन्न रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं; जैसे

1) वे मुख्य गायक की भारी आवाज में अपनी सुंदर और कमज़ोर आवाज़ की गूँज मिलाकर गायन को प्रभावपूर्ण बना देते हैं।
2) तारसप्तक गाते समय संगतकार उसके स्वर में स्वर मिलाकर उसे अकेले होने का अहसास नहीं होने देते हैं।
3) संगतकार मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर ऊँचा न करके उसकी सफलता में बाधक नहीं बनते हैं।

**********@@**********@@**********

पाठ-10 स्वयं प्रकाश नेताजी का चश्मा

- **लेखक परिचय**

  स्वयं प्रकाश जी का जन्म सन 1947 मैं इंदौर (मध्यप्रदेश) में हुआ। मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी करने वाले स्वयं प्रकाश का बचपन और नौकरी का बड़ा हिस्सा राजस्थान में बीता। फ़िलहाल स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद वे भोपाल में रहते हैं और वसुधा पत्रिका के संपादन से जुड़े हैं।

- **प्रमुख रचनाएं**

  इनके तेरह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें **सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी और संधान** उल्लेखनीय हैं। उनके बीच में विनय और ईंधन उपन्यास चर्चित रहे हैं। उन्हें पहल सम्मान, बनमाली पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है।

- **पाठ परिचय एवं सार**

  चारों ओर सीमाओं से घिरे भूभाग का नाम ही देश नहीं होता। देश बनता है उसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़-पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों से और इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी समृद्धि के लिए प्रयास करने का नाम देशभक्ति है। नेताजी का चश्मा कहानी कैप्टन चश्मे वाले के माध्यम से देश के करोड़ों नागरिकों के योगदान को रेखांकित करती है जो इस देश के निर्माण में अपने-अपने तरीके से सहयोग करते हैं। कहानी यह कहती है कि बड़े ही नहीं बच्चे भी इसमें शामिल है।

यह कहानी एक छोटे से कस्बे की है। इस कस्बे की नगरपालिका के किसी प्रशासनिक अधिकारी ने कस्बे के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की मूर्ति बनवाई दी। यह कहानी इसी मूर्ति के इर्द-गिर्द घूमती है।

इस मूर्ति को बनाने का कार्य कस्बे के हाई स्कूल के ड्राइंग मास्टर मोतीलाल जी को सौंपा गया होगा जिन्होंने एक महीने में मूर्ति बनवाने का विश्वास दिलाया।

नेताजी की मूर्ति दो-ढाई फुट की थी और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे और कुछ-कुछ मासूम से मूर्ति को देखते **ही दिल्ली चलो और तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा** याद आने लगता था। उस मूर्ति में बस एक चीज की कमी थी। वह थी नेताजी की आंखों का चश्मा। मूर्ति की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था |

हालदार साहब कंपनी के काम से इसी कस्बे से गुजरते थे। जब हालदार साहब पहली बार इस कस्बे से गुजरे और पान खाने के लिए रूके तभी उन्होंने देखा कि मूर्ति संगमरमर पत्थर की थी लेकिन उस पर चश्मा असली था। हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों की देशभक्ति की भावना का यह प्रयास अच्छा लगा वरना देशभक्ति तो आजकल मजाक की चीज होती जा रही है। हालदार साहब जब भी इस कस्बे से गुजरते चौराहे पर रुकते पान खाते और मूर्ति को ध्यान से देखते उन्हें हर बार मूर्ति का चश्मा बदला हुआ मिलता कभी गोल फ्रेम वाला, तो कभी मोटे फ्रेम वाला, तो कभी चौकोर चश्मा। जब हालदार साहब से नहीं रहा गया तो उन्होंने पान वाले से चश्मे के बदलने का कारण पूछ ही लिया पान वाले ने हंसते हुए कहा कि कैप्टन चश्मे वाला चश्मा चैंज कर देता है।

हालदार साहब को समझ में आ गया कि एक कैप्टन नाम का चश्मे वाला है जिसे बगैर चश्मे के नेता जी की मूर्ति अच्छी नहीं लगती इसलिए वह अपनी छोटी सी दुकान में रखे हुए गिने चुने फ्रेमों में से कोई एक नेता जी की मूर्ति पर लगा देता है। लेकिन जब कोई खरीदार आता है और उससे वैसे ही फ़्रेम की माँग करता है तो वह मूर्ति पर लगा फ्रेम खरीदार को दे देता है और नेता जी से माफी माँगते हुए उन्हें दूसरा फ्रेम पहना देता है।
हालदार साहब को यह सब बड़ा अजीब लग रहा था। एक दिन उन्होंने पानवाले से पूछा क्या कैप्टन चश्मे वाला नेता जी का साथी है या आजाद हिंद फौज का भूतपूर्व सिपाही। पानवाले ने व्यंग में हंस कर कहा वह लंगड़ा क्या जाएगा फौज में, पागल है पागल! वो देखो आ रहा है। हालदार साहब को पान वाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने देखा एक बूढ़ा मरियल- सा व्यक्ति लंगड़ाकर, गांधी टोपी और आंखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में छोटी सी संदूक और दूसरे हाथ में बांस पर टंगे बहुत से चश्मे लिए एक गली से निकल रहा था और एक बंद दुकान के सहारे अपना बांस टिका रहा था। यही था कैप्टन चश्मे वाला जो फेरी लगाता था।

हालदार साहब दो साल तक अपने काम के सिलसिले में इसी कस्बे से गुजरते रहे और नेता जी की मूर्ति पर बदलते हुए चश्मे को देखते रहे। एक बार हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति के चेहरे पर कोई भी चश्मा नहीं था। पानवाले से पूछा तो पता चला कि कैप्टन मर गया है। हालदार साहब बहुत दुखी हो गए और सोचने लगे उस पीढ़ी का क्या होगा जो अपने देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने वालों पर हँसती है और अपने लिए बिकने का मौका ढूंढती है।
एक पखवाड़ा के बाद हालदार साहब दोबारा उसी कस्बे से गुजरे। सोचा कि मूर्ति के पास नहीं रुकेंगे और पान भी आगे ही खा लेंगे पर आदत से मजबूर आँखें चौराहे पर आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई। गाड़ी से उतरकर तेज तेज कदमों से मूर्ति की तरफ आगे बढ़े और उसके सामने जाकर सावधान की स्थिति में खड़े हो गए। उन्होंने देखा कि मूर्ति पर सरकंडे से बना हुआ चश्मा लगा हुआ था। जिसे शायद बच्चों ने बनाकर मूर्ति को पहना दिया था इतनी सी बात पर उनकी आँखें भर आती हैं | .....

प्रश्न-उत्तर

I.निम्नलिखित दिए गए प्रश्नों में से सही विकल्प का चुनाव कीजिए-

प्रश्न 1.नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया होगा?

(i). पानवाले ने (ii). लेखक ने (iii). हवलदार ने **(iv) किसी बच्चे ने**

प्रश्न 2.चश्मेवाले के प्रति पानवाले के मन में कैसी भावना थी?

(क) घृणा (ख) उत्साह **(ग) उपेक्षा।** (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. नेताजी की बगैर चश्मे वाली मूर्ति किसे बुरी लगती थी ?

(क) हालदार को। (ख) क्स्बेवालों को (ग) पानवाले को। **(घ) चश्मे वाले को**

प्रश्न 4. नेताजी का चश्मा' शीर्षक पाठ का मूल भाव क्या है?

(क). **देश भक्ति।** (ख). सामाजिक भाव (ग). राजनीतिक जागृति। (घ). मूर्ति कला की प्रशंसा

प्रश्न 5. वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!'-ये शब्द किसने कहे हैं?

(क). पानवाले ने (ख). हालदार ने (ग).ड्राइवर ने (घ). नगरपालिका के अध्यक्ष ने

प्रश्न 6.ड्राइंग मास्टर का क्या नाम था?

(क). मोतीलाल. (ख). किशनलाल (ग). प्रेमपाल. (घ). सोहनलाल

प्रश्न 7.सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा किस वस्तु की बनी थी?

(क). लोहे की **(ख). संगमरमर की** (ग). मिट्टी की। (घ). काँसे की

प्रश्न 8.तुम मुझे खून दो' नेताजी का यह नारा हमें क्या प्रेरणा देता है?

(क). तरक्की करने की। (ख). खूनदान देने की

(ग). देश के लिए बलिदान देने की। (घ). देश से प्रेम करने की

प्रश्न 9.हालदार साहब किसे देखकर अवाक् रह गए थे?

(क). मूर्ति को (ख). चश्में को (ग). कस्बे को **(घ). कैप्टन चश्मेवाले को**

II. पाठ पर आधारित अति लघूत्तरात्मक प्रश्न -

प्रश्न 10. वाच्य परिवर्तन कीजिए -

(क) पानवाला नया पान खा रहा था। **(कर्मवाच्य)**

उत्तर- पानवाले से नया पान खाया जा रहा था।

(ख)नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।(**कर्तृवाच्य**)

उत्तर- नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

प्रश्न 11.नेताजी की मूर्ति पर लगा सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है ?

उत्तर- नई पीढ़ी में आज भी देशभक्ति का जज्बा है|

III. पाठ पर आधारित लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 12.सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर: चश्मेवाला एक देशभक्त नागरिक था। उसके मन में देश के वीर जवानों के प्रति अत्यंत सम्मान था। इसलिए लोग उसे कैप्टन कहते थे।

प्रश्न 13.हालदार साहब किस उत्सुकता से चौराहे पर रुकते थे ?

उत्तर- हालदार साहब एक जिज्ञासु प्रवृत्ति के आदमी थे। वह यह जानना चाहते थे कि नेता जी की मूर्ति पर आज किस प्रकार का चश्मा होगा !

प्रश्न 14.हालदार साहब ने ड्राइवर से क्या कहा था ?

उत्तर- हालदार साहब ने कहा था कि चौराहे पर गाड़ी मत रोकना, आज बहुत काम है। पान आगे खा लेंगे |

प्रश्न 15. नेताजी को देखकर आपको कौन से नारे याद आते हैं?

उत्तर- (I) "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा |"

(II) "दिल्ली चलो" !

प्रश्न 16. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात नहीं देखा था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा ? अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर- जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात नहीं देखा था तब तक उनके मानस पटल पर कैप्टन की छवि एक लंबे चौड़े इंसान का रहा होगा जो भारी-भरकम मजबूत शरीर वाला तथा लंबी और घनी मूँछें रखने वाला हो। उन्हें लगता था कि फौज में होने के कारण लोग उन्हें कैप्टन कहते हैं।

प्रश्न 17. कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा क्यों लगा देता था ?

उत्तर - कैप्टन द्वारा बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगाना यह प्रकट करता है कि वह देश के लिए प्राण त्याग करने वाले लोगों के प्रति श्रद्धा और सम्मान रखता था। भले ही वह फौजी नहीं था पर फौजी जैसी मनोभावना जरूर रखता था। नेताजी की चश्मा विहीन मूर्ति को देख कर वह सीमित आय होने के बाद भी स्वयं से चश्मा लगा दिया करता था ताकि उनका व्यक्तित्व अधूरा ना रहे।

प्रश्न 18. पान वाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए|

उत्तर पानवाला एक खुशमिजाज स्वभाव वाला, काला तथा मोटा आदमी था| उसके मुँह में हमेशा पान रहता था, हालदार साहब द्वारा कैप्टन चश्मे वाले के बारे में पूछने पर उसका उपहास करता, परंतु उसकी मृत्यु पर वह उदास हो जाता है|

प्रश्न 19. देश प्रेम की भावना किसी भी व्यक्ति में हो सकती है उसके लिए हथियार उठाना जरूरी नहीं है | पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए|

उत्तर- कैप्टन चश्मेवाला बूढ़ा, मरियल, अपाहिज़, गरीब, कभी सेनानी ना होते हुए भी देशभक्ति की भावना से भरा हुआ था| बिना चश्मे की मूर्ति को देख कर उस पर रोज नया चश्मा लगाना उसकी देशभक्ति को दर्शाता है| देश प्रेम की भावना दर्शाने के लिए जरूरी नहीं कि हथियार ही उठाया जाय |देशभक्तों के प्रति हमारे मन में आदर व सम्मान का भाव रखना भी देश भक्ति है|

प्रश्न 20. सार्वजनिक स्थानों पर लगी मूर्ति के प्रति आपका क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए ?

उत्तर-हमारा प्रथम उत्तरदायित्व मूर्ति के प्रति आदर वह सम्मान का है | इसके अतिरिक्त उसका संरक्षण, उसकी देखभाल और उसके आसपास साफ- सफाई बनाए रखना |

प्रश्न 21 'नेताजी का चश्मा" पाठ हमें क्या संदेश देता है ?

उत्तर-पाठ के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहरों से प्रेम करना चाहिए| देश पर मर मिटना ही देशभक्ति नहीं होती बल्कि अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना भी एक प्रकार की देश भक्ति है| हमें देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए|

**********@@**********@@**********

पाठ11 - बालगोबिन भगत (रेखाचित्र)

लेखक- रामवृक्ष बेनीपुरी

लेखक परिचय-

बेनीपुरी जी का जन्म सन् 1902 में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में बेनीपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री फूलचन्द्र एक साधारण किसान थे। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहान्त हो गया और इनका लालन-पालन इनकी मौसी ने किया। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बेनीपुर में हुई और बाद में ये अपनी ननिहाल में पढ़े। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने से पूर्व ही सन् 1920 ई. में इन्होंने अध्ययन छोड़ दिया और गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। पन्द्रह वर्ष की आयु से ही ये पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे थे। देश सेवा के परिणामस्वरूप इनको कई बार जेल भी जाना पड़ा। सन् 1968 में इनका देहान्त हो गया।

रामवृक्ष बेनीपुरी की कृतियाँ

1. रेखाचित्र - (१) माटी की मूरतें, (२) लाल तारा ।
2. संस्मरण - (१) जंजीरें और दीवारें, (२) मील के पत्थर
3. कहानी - चिता के फूल ।

4. उपन्यास - पतितों के देश में।

5. यात्रावृत्त – (1) पैरों में पंख बांधकर (2) उड़ते चलें।

6. नाटक - (1)अम्बपाली (2) सीता की मां (3)रामराज्य

7. निबंध - (1) गेहूँ और गुलाब (2) बंदे वाणी विनायकौ (3) मशाल।

उनकी रचनाओं में स्वाधीनता की चेतना, मनुष्यता की चिंता और इतिहास की युगानुरूप व्याख्या है। बेनीपुरी जी की भाषा सरल एवं व्यावहारिक है। उनके द्वारा प्रयुक्त खड़ी बोली में सरलता, सुबोधता, सजीवता विद्यमान है। उनकी भाषा में भावानुकूल शब्द चयन किया गया है। विशिष्ट शैलीकार होने के कारण उन्हें '**कलम का जादूगर**' कहा जाता है।

बालगोबिन भगत पाठ का उद्देश्य-

बालगोबिन भगत रेखाचित्र के माध्यम से रामवृक्ष बेनीपुरी ने एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया है जो मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है। वेश भूषा या ब्रह्य आडम्बरों से कोई संन्यासी नहीं है, सन्यास का आधार जीवन के मानवीय सरोकार होते हैं. बालगोबिन भगत इसी आधार पर लेखक को सन्यासी लगते हैं । इस पाठ के माध्यम से सामाजिक रुढियों पर भी प्रहार किया गया है, साथ ही हमें ग्रामीण जीवन की झाँकी भी दिखाई गयी है।

बालगोबिन भगत पाठ का सारांश-

बालगोबिन भगत, कबीरपंथी एक गृहस्थ संत थे. उनकी उम्र साठ से ऊपर रही होगी. बाल पके थे. कपडे के नाम पर सिर्फ एक लँगोटी पहनते थे। सर्दी के मौसम में एक काली कमली भी। रामनामी चन्दन और गले में तुलसी की माला पहनते थे।वे एक खेतिहर गृहस्थ थें। उनके घर में एक बेटा और बहु थे। वे झूठ, छल प्रपंच से दूर रहते थे। सबसे दो टूक बाते करते, कबीर को अपना आदर्श मानते थे। उन्ही के गीतों को गाते, अनाज पैदा होने पर कबीर पंथी मठ में ले जाकर दे आते और वहाँ से जो मिलता उसी से अपना गुजर बसर करते। उनका गायन सुनने के लिए गाँव वाले इकट्ठे हो जाते थे।

धान के रोपनी के समय में उनके गीत सुनकर बच्चे झूमने लगते, मेंड पर खड़ी औरतें के होंठ काँप उठते थे. रोपनी करने वाले की अंगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती थी . कार्तिक, भादों, सर्दी, गर्मी हर मौसम में बाल गोबिन सभी को अपने गायन से शीतल करते थे।

बालगोबिन भगत भक्त आदमी थे। उनकी भक्ति साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखने को मिला जिस दिन उनका एक मात्र पुत्र मरा। वे रुदन के बदले उत्सव मनाने को कहते थे। उनका , मानना था कि आत्मा परमात्मा से मिल गयी है। विरहणी अपनी प्रेमी से जा मिली। वे आगे एक समाज सुधारक के रूप में सामने आते हैं। अपनी पतोहू द्वारा अपने बेटे को मुखाग्नि दिलाते हैं। श्राद्ध कर्म के बाद बहु के भाई को बुलाकर

उसकी दूसरी शादी करने को कहते हैं। बहु के बहुत मिन्नतें करने पर भी वे अटल रहते हैं। इस प्रकार वे विधवा विवाह के समर्थक हैं।

बालगोबिन की मृत्यु उन्ही के व्यक्तित्व के अनुरूप शांत रूप से हुई। अपना नित्य क्रिया करने वे गंगा स्नान करने जाते बुखार लम्बे उपवास करके मस्त रहते। लेकिन नेम ब्रत न छोड़ते। दो जून गीत स्नान ध्यान खेती बारी अंत समय बीमार पड़कर वे परंपरा को प्राप्त हुए। भोर में उनका गीत न सुनाई पड़ा। लोगों ने जाकर देखा तो बालगोबिन्द स्वर्ग सिधार गए हैं।

बालगोबिन भगत के चरित्र की विशेषताएँ

बालगोबिन भगत एक गृहस्थ थे परन्तु उनमें साधु कहलाने वाले गुण भी थे -

1. कबीर के आदर्शों पर चलते थे, उन्हीं के गीत गाते थे।
2. कभी झूठ नहीं बोलते थे, खरा व्यवहार रखते थे।
3. किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से झगड़ा करते थे।
4. किसी की चीज़ नहीं छूते थे न ही बिना पूछे व्यवहार में लाते थे।
5. जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे कबीरपंथी मठ जाते, वहाँ से जो कुछ भी भेंट स्वरुप मिलता था उसे प्रसाद स्वरुप घर ले आते थे।
6. उनमें लालच बिल्कुल भी नहीं था।
7. बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु हो गई, तो उन्होंने सामाजिक परम्पराओं के अनुरूप अपने पुत्र का क्रियाकर्म नहीं किया।
8. हमारे समाज में विधवा विवाह को मान्यता नहीं दी गई हैं परन्तु भगत ने इसके विपरीत अपनी पुत्रवधू के पुनर्विवाह का आदेश दिया।
9. भगत अन्य साधुओं की तरह भिक्षा माँगकर खाने के विरोधी थे।

गद्यांश आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. आषाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं कहीं रोपनी हो रही है। धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेड़ पर बैठी हैं। आसमान बादल से घिरा धूप का नाम नहीं ठंडी पुरवाई चल रही है। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर तरंग झंकार सी कर उठी। यह क्या है यह कौन हैं यह पूछना न पड़ेगा। बाल गोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथडे अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अंगुली एक-एक धान के पौधे को पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की

मिट्टी पर खड़े लोगों के कान की ओर बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं वे गुनगुनाने लगती हैं। हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं।

(I) समूचा गाँव खेतों में कब उमड़ पड़ता है?

(क) ठंडी पुरवाई में (ख) कार्तिक की सुहावनी सुबह में

(ग) फागुन की बहार में (घ) आषाढ़ की रिमझिम में

(II) 'औरतें कलेवा लेकर खेत की मेड़ पर बैठी हैं' वाक्य है...

(क) संयुक्त वाक्य (ख) सरल वाक्य(ग) मिश्र वाक्य (घ) प्रश्नवाचक वाक्य

(III) बाल गोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े अपने खेत में क्या कर रहे हैं?

(क) गेहूँ बो रहे हैं (ख) फसल काट रहे हैं

(ग) रोपनी कर रहे हैं (घ) हल चला रहे हैं

(IV) उनके कंठ से स्वर निकलकर कहाँ जा रहा है?

क) संगीत के जीने पर चढ़कर स्वर्ग की ओर ख) धान के पौधों की रोपनी हो रही खेतों की ओर

ग) बच्चों के उछल-कूद कर रहे पैरों की ओर घ) इनमें से की नहीं

(V) हलवाहों के पैर ताल से क्यों उठने लगते हैं?

(क) बाल गोबिन भगत के संगीत के कारण। (ख) बच्चों के खेलकूद करने के कारण।

(ग) औरतों के मेड़ पर खड़ी होने के कारण। (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (I) आषाढ़ की रिमझिम में (II) सरल वाक्य (III) रोपनी कर रहे हैं (IV) संगीत के जीने पर चढ़कर स्वर्ग की ओर (V) बाल गोबिन भगत के संगीत के कारण

2- बालगोबिन भगत की संगीत - साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह ! कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज़्यादा नज़र रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए, क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज़्यादा हकदार होते हैं। बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने । उनका बेटा बीमार है, इसकी

खबर रखने की लोगों को कहाँ फ़ुरसत ! किंतु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं; फूल और तुलसीदल भी ।

(I)बालगोबिन भगत की संगीत - साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देखा गया

(क) जिस दिन वे बीमार थे (ख) जिस दिन उनका बेटा मरा

(ग) जिस दिन वे अकेले थे (घ) जिस दिन उनकी बेटी मरी

(II) बालगोबिन भगत का बेटा कैसा था ?

(क) बहुत तेज (ख) बहुत चालाक (ग) सुस्त और बोदा (घ) बहुत ज्ञानी

(III) बालगोबिन भगत की पतोहू कैसी थी ?

(क) सुभग और सुशील (ख) झगड़ालू (ग) नासमझ (घ) ईमानदार

(IV) बालगोबिन भगत बेटे के मृत शरीर के पास क्या बिखरा दिए थे ?

(क) उसका सामान (ख) फूल और तुलसीदल (ग) सफेद कपड़ा (घ) चिता की लकड़ी

(V) बालगोबिन भगत की बहू ने उनको...

(क) घर से भगा दिया (ख) जिम्मेदारी दे दी

(ग) दुनियादारी से निवृत्त कर दिया (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (I)जिस दिन उनका बेटा मरा (II) सुस्त और बोदा (III) सुभग और सुशील (IV) फूल और तुलसीदल (V) दुनियादारी से निवृत्त कर दिया

पाठ आधारित अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

उत्तर - बालगोबिन भगत खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ थे पर अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे। वह कबीर में सच्ची श्रद्धा रखते थे। वह हमेशा लंगोटी और सर पर कनफटी टोपी पहने रहते थे। वह अपने मस्तक पर रामानंदी चंदन लगाते और गले में तुलसी की माला पहनते थे वह सबसे एक जैसा

व्यवहार रखते थे और किसी से झगड़ा नहीं मोलते थे। वह हमेशा कबीर के पद गुनगुनाते और किसी से झूठ नहीं बोलते थे।

प्रश्न 2- भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?
उत्तर- भगत जी का उनके एकमात्र पुत्र के अलावा और कोई नहीं था जो कि अब मर चुका था और उनकी पतोहू यह बात जानती थी वह जानती थी कि उनके बुढ़ापे में अब उसके अलावा कोई नहीं था। वह चाहती थी कि वह उनके साथ रहकर उनकी सेवा करे।

प्रश्न 3- भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त की?
उत्तर- भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर दुखी होने के बजाय उत्सव मनाने को कहा। उन्होंने अपने बेटे की मृत्यु को ईश्वर की इच्छा बताई। उन्होंने अपने बेटे के शव को सफेद वस्त्र से ढँका और उसे फूलों से सजाया और दीपक जलाया। वे फिर खेजड़ी की ताल पर गाते चले गए।]

प्रश्न 4- भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।
उत्तर- भगत जी गृहस्थ होते हुए भी एक साधु की तरह रहते थे। वे तेली जाति के थे, वे एक गोरे-चिट्टे मँझले कद के आदमी थे। उनकी उमर लगभग साठ वर्ष की होगी। वे कमर में लंगोटी पहने रहते थे और सर पर एक कनफटी टोपी तथा गले में तुलसी की माला धारण किए हुए रहते थे।

प्रश्न 5- बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?
उत्तर- भगत जी की दिनचर्या सबको अचरज में डाल देती थी। इतने बूढ़े होने पर भी सवेरे उठकर दो मील दूर नदी में स्नान करने जाते एवं वापसी के वक्त वे भक्ति की गीत गाते खेतों में अकेले ही खेती करते रहना विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आता था। वे बहुत सरल तथा सादगी से भरे थे। वे कभी किसी से झूठ नहीं बोलते थे और किसी से झगड़ा भी नहीं मोलते थे। वे किसी की चीज़ बिना पूछे छूते भी नहीं थे और बहुत खरा व्यवहार रखते थे। इसी को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

प्रश्न 6- पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर- भगत जी कबीर के गीत गाते थे वे बहुत मस्ती से गाया करते थे।कबीर के पद उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते थे, उनका स्वर बहुत मधुर था। उनके गीत सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे औरतें उस गीत को गुनगुनाने लगतीं थी। उनके गीत का मनमोहक प्रभाव सारे वातावरण में छा जाता था।

प्रश्न 7- कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर- कुछ मार्मिक प्रसंग हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे, जैसे:- बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु हुई, तो उन्होंने सामाजिक परंपरा के अनुसार अपने पुत्र का क्रिया-कर्म नहीं किया बल्कि अपने पुत्र को मुखाग्नि अपनी पुत्रवधू से ही दिलावाई। हमारे समाज में विधवा विवाह का निषेध है, परंतु बालगोबिन भगत ने अपनी पुत्रवधू के भाई को बुलाया और पुत्रवधू को पुनर्विवाह करने का आदेश दे देकर भेज दिया।

प्रश्न 8- धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिए ।

उत्तर- आषाढ़ की रिमझिम में खेतों में धान की रोपाई चल रही है,भगत कीचड़ से लथपथ अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनके हाथ धान की एक एक रोपनी कर रहे है साथ ही उनकी स्वर लहरी समस्त वातावरण में गूंज रही है। बालगोबिन भगत के कंठ से निकलता मधुर संगीत लोगों के मन में झंकार उत्पन्न कर रहा है। हलवाहों के पैर और रोपाई करने वाले लोगों की उँगलियाँ गीत की स्वरलहरी के अनुरूप चलने लगी हैं सुननेवाले भी गुनगुनाने लगे हैं। भगत जी के संगीत का जादू लोगों के सिर चढ़ने लगा है।

प्रश्न 9- 'उनकी सब चीज़ साहब की' थी इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बालगोबिन भगत कबीर को साहब पुकारते थे। उनके अनुसार उनका सब कुछ साहब का था। उनके खेत में जो कुछ भी पैदा होता वे उसे साहब के दरबार में ले जाते और भेंट स्वरूप चढ़ा देते। वहाँ से प्रसाद के रूप में जो भी मिलता उसे स्वीकार कर लेते और घर ले आते। उसी प्रसाद से अपना गुजारा करते थे।

पाठ आधारित मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न 1-बालगोबिन भगत पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर- व्यक्ति का अपने नियमों पर दृढ़ रहना, निजी

आवश्यकताओं को सीमित करना, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील होना तथा मोह-माया के जाल से दूर रहने वाला व्यक्ति ही साधु हो सकता है। बालगोबिन भगत भगवान के निराकार रूप को मानते थे। उनके अनुसार उनका जो भी है वह मालिक की देन है उस पर उसी का अधिकार है।

प्रश्न 2- बालगोबिन भगत के संगीत को जादू क्यों कहा गया है?

उत्तर- बालगोबिन भगत का संगीत हर आयुवर्ग के लोगों पर समान रूप से असर करता था। उनका स्वर अचानक एक मधुर स्वर तरंग झंकृत-सी हो उठती है। उनके मधुर गान को सुनकर बच्चे झूम उठते थे, मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ गुनगुना उठते थे, हलवाहों के पैर ताल से उठने से लगते थे और रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ क्रम से चलने लगती थीं।

**********@@**********@@**********

पाठ-12 लखनवी अंदाज/लेखक- यशपाल

लेखक परिचय- हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकारों, कहानीकारों एवं निबंधकारों में यशपाल जी का नाम उल्लेखनीय है| यशपाल जी का जन्म पंजाब के फिरोजपुर छावनी में सन 1930 ईस्वी में हुआ था| उनकी प्रारंभिक शिक्षा कांगड़ा में हुई, लाहौर में आगे की पढ़ाई करते समय वे क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गए तथा कई बार जेल भी गए| सन 1976 में उनकी मृत्यु हो गई|

प्रमुख रचनाएँ - दिव्या, झूठा सच, ज्ञानदान, अमिता, पिंजरे की उड़ान आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं|

भाषा शैली- उनकी रचनाओं में भाषा की स्वाभाविकता व सजीवता दिखाई देती है| उन्होंने वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक दोनों प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है|

<u>पाठ का सारांश</u>

लखनवी अंदाज पाठ में लेखक ने एक ऐसे नवाब साहब की कहानी का वर्णन किया है जो ट्रेन के सेकंड क्लास में यात्रा करते हुए अपनी अमीरी का प्रदर्शन करने के लिए खीरे में नमक-मिर्च लगाकर उसे खाते नहीं हैं बल्कि सूँघते हैं और ट्रेन की खिड़की से बाहर फेंक देते हैं| लेखक ने बताया है कि इस तरह के लोग जीवन के यथार्थ (सच्चाई) से दूर रहकर कल्पना की दुनिया में जीते हैं और अपनी झूठी अमीरी का झूठा दिखावा करने में अपनी शान समझते हैं|

लेखक ने भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोचने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने का आनंद लेने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया और गाड़ी में बैठे वहां पर उन्होंने देखा कि सामने की बर्थ पर एक लखनवी नवाब पालथी मारकर बैठे हुए हैं | जब लेखक ट्रेन में नवाब साहब के सामने की बर्थ पर बैठता है और नवाब साहब के द्वारा संगति के लिए कोई उत्सुकता नहीं दिखाई देती है तब आत्मसम्मान में वह भी लेखक की ओर से अपनी आंखों को चुरा लेते हैं| |इसके कुछ समय पश्चात नवाब साहब के द्वारा उन खीरों को अच्छी तरह से पानी

से धो कर उन्हें नमक-मिर्च छिड़क कर केवल मुँह तक ले जाकर सूँघने के बाद उनको खिड़की से बाहर फेंक दिया जाता है|

पाठ पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)

प्रश्न 1. ' लखनवी अंदाज़ ' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने खीरा खाने से मना क्यों किया?

उत्तर- लेखक कुछ समय पहले नवाब साहब द्वारा रखे गए खीरे खाने के आमंत्रण को ठुकरा चुके थे,अतः अब आत्मसम्मान निभाना आवश्यक समझने के कारण उन्होंने खीरा खाने से इंकार कर दिया । [सी.बी.एस.ई. SQP अंक योजना 2020-21]

प्रश्न 2. ' लखनवी अंदाज़ ' रचना में नवाब साहब की सनक को आप कहाँ तक उचित ठहराएँगे ?क्यों ? [सी.बी.एस.ई. Delhi Set - I 2020]

उत्तर- ' लखनवी अंदाज़ ' पाठ में नवाब साहब की अपनी नवाबी शान और रईसी का झूठा दिखावा करने की सनक कतई उचित नहीं है , क्योंकि दूसरों को नीचा दिखाना मानवोचित आचरण नहीं कहा जा सकता । पहले नवाब साहब ने अकेले डिब्बे में खीरे खाने के लिए खरीदे थे किन्तु लेखक को सामने देखकर अपनी नवाबी शान का दिखावा करने की कोशिश की। सनक में उन्होंने खीरे बिना खाए ही खिड़की से बाहर फेंक दिए|

प्रश्न 3. ' लखनवी अंदाज़ ' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने यात्रा करने के लिए सेकंड क्लास का टिकट क्यों खरीदा ? [सी.बी.एस.ई. Delhi O.D. Set II , 2019]

उत्तर- i)अधिक दूरी की यात्रा नहीं होने के कारण

ii)भीड़ से बचने के लिए ।

iii)एकांत में नई कहानी के बारे में सोचने के लिए ।

iv) खिड़की से प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने के लिए ।

प्रश्न 4. ' लखनवी अंदाज़ ' के पात्र नवाब साहब के व्यवहार पर अपने विचार लिखिए ।

उत्तर- ' लखनवी अंदाज़ ' के पात्र नवाब साहब ने सफर में समय बिताने के लिए खीरे खरीदे तथा खीरे काफी देर तक तौलिए पर यों ही रखे रहने दिए। फिर उनको सावधानी से छीलकर फाँकों को सजाया और उन फाँकों पर जीरा मिला नमक - मिर्च बुरक दिया और फिर सूँघ - सूँघकर उनको ट्रेन की खिड़की से बाहर फेंक दिया । हमारा विचार है कि उनका यह व्यवहार उनकी नजाकत और लखनवी संस्कृति के साथ ही उनकी जीवन - शैली की कृत्रिमता और दिखावे को भी प्रदर्शित करता

है । यह उनकी खानदानी रईसी दिखाने का भी तरीका था । नवाब साहब सामंती वर्ग के प्रतीक हैं जो आज भी अपनी झूठी शान बनाए रखना चाहता है ।

प्रश्न 5. खीरा काटने में नवाब साहब की विशेषज्ञता का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ।
उत्तर- खीरों को धोना , पोंछना , सिरे काटकर - गोदकर झाग निकालना , फाँकें काटना , तौलिए पर सजाना , जीरा मिला नमक - मिर्च बुरकना आदि । [
सी.बी.एस.ई. अंक योजना , 2019]

प्रश्न 6 . नवाब साहब ने खीरा खाने की पूरी तैयारी की और उसके बाद उसे बिना खाए फेंक दिया । इस नवाबी व्यवहार पर टिप्पणी कीजिए ।
उत्तर. नवाब साहब ने खीरा खाने की पूरी तैयारी की और उसके बाद उसे बिना खाए फेंक दिया । इस घटना के माध्यम से पतनशील सामंती वर्ग (नवाबी परंपरा) की बनावटी जीवनशैली पर व्यंग्य किया गया है । नवाब साहब के मन में अहंकार की भावना थी । उनकी प्रतिक्रिया दिखावे और आडम्बर से परिपूर्ण थी । इस घटना के माध्यम से नवाब साहब स्वयं को खानदानी तहज़ीब , नफासत और नज़ाकत आदि आडम्बरपूर्ण सामंती वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करते हैं ।

प्रश्न.7 यद्यपि लेखक के मुँह में पानी भर आया फिर भी उसने खीरा खाने से इंकार क्यों किया ?
उत्तर- खीरे को देखकर लेखक के मुँह में पानी आ गया था । वह उसे खाने के लिए उत्सुक था परन्तु वह नवाब साहब को मना कर चुका था। अतः अपने आत्मसम्मान को बचाए रखने के लिए उसने खीरा खाने से इंकार किया|

प्रश्न 8. ' लखनवी अंदाज़ ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर संक्षेप में प्रकाश डालिए ।
उत्तर- ' लखनवी अंदाज़ ' कहानी का शीर्षक पूर्णतः सार्थक है क्योंकि पूरा कथानक लखनऊ के रईस नवाब के खानदानी नवाबी अंदाज़ के प्रदर्शन को व्यक्त करता है । आज भी वे लोग नवाबी छिन जाने के बावजूद झूठी शान व तौर - तरीकों का ही दिखावा करते हैं ।

प्रश्न 9. लखनवी अंदाज़ पाठ के अनुसार बताइए कि नवाब साहब ने खीरे किस उद्देश्य से खरीदे थे ? वे कितने खीरे थे और लेखक के उस डिब्बे में दाखिल होते समय वे किस स्थिति में रखे थे ?
उत्तर- नवाब साहब ने खीरे सफर का समय बिताने के लिए खरीदे थे। लेखक के डिब्बे में दाखिल होते समय खीरे तौलिये पर रखे थे । काफी देर तक वे ऐसे ही रखे रहे थे । नवाब साहब को

शायद संकोच हो रहा था । इससे नवाब साहब की नजाकत एवं लखनवी संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है ।

प्रश्न 10. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?
उत्तर- लेखक का मानना है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है अर्थात विचार, घटना और पात्र के बिना कहानी नहीं लिखी जा सकती है। मैं लेखक के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ। वास्तव में कहानी किसी घटना विशेष का वर्णन ही तो है। इसका कारण क्या था, कब घटी, परिणाम क्या रहा तथा इस घटना से कौन-कौन प्रभावित हुए आदि का वर्णन ही कहानी है। अतः किसी कहानी के लिए विचार, घटना और पात्र बहुत ही आवश्यक हैं।

प्रश्न 11. आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?
उत्तर- मैं इस निबंध को दूसरा नाम देना चाहूँगा-'रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई' या नवाबी दिखावा। इसका कारण यह कि नवाब साहब की नवाबी तो कब की छिन चुकी थी पर उनमें अभी नवाबों वाली ठसक और दिखावे की प्रवृत्ति थी।

<u>बहुविकल्पीय प्रश्न</u>

प्रश्न1. लेखक सेकण्ड क्लास डिब्बे में क्यों चढ़ गया ?
(क) डिब्बे को खाली समझकर । (ख) डिब्बे में अपने दोस्तों को देखकर ।
(ग) उसी डिब्बे में उसके बच्चे बैठे थे । (घ) डिब्बे को भरा समझकर ।
उत्तर - विकल्प (क) सही है ।

प्रश्न2. डिब्बे में बैठे सज्जन की कौन - सी विशेषता नहीं है ?
(क) अपने को दूसरों से विशिष्ट समझना । (ख) खानदानी रईसी के गुमान में रहना ।
(ग) नाजुक मिजाज़ी का दिखावा करना । (घ) दूसरों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ।
उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।

प्रश्न3. लेखक ने नवाब साहब को क्या उपमा दी ?
(क) नवाबी कौम के रईसजादे । (ख) नवाबी नस्ल के सफ़ेदपोश सज्जन ।
(ग) नवाबी जाति के लखनवी सज्जन । (घ) नवाबी नस्ल के गंवार सज्जन ।
उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।

प्रश्न4. नवाब साहब का कौन - सा अनुमान गलत सिद्ध हुआ ?

(क) दौड़कर गाड़ी पकड़ लेंगे । (ख) खिड़की के पास बैठ सकेंगे।

(ग) बर्थ आरामदायक होगी । (घ) डिब्बा निर्जन होगा ।

उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।

प्रश्न5 . नवाब साहब के जबड़ों के स्फुरण से क्या पता चला ?

(क) वे खीरा नहीं खाना चाहते हैं । (ख) खीरा कड़वा है ।

(ग) वे खीरा खाना चाहते हैं और उनके मुँह में पानी आ रहा है ।

(घ) खीरा खाने की उनकी इच्छा नहीं है ।

उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।

प्रश्न6.पनियाती फाँकों को देखकर मुँह में पानी ज़रूर आ रहा था । ' इस वाक्य से क्या पता चलता है ?

(क) लेखक खीरा खाना चाहता था । (ख) लेखक दुविधा में था खीरा खाएँ कि न खाएँ ।

(ग) लेखक खीरा नहीं खाना चाहता था । (घ) लेखक को खीरा अच्छा नहीं लगता था ।

उत्तर- विकल्प (क) सही है ।

प्रश्न7.नवाब साहब ने खीरे के रसास्वादन का यह विचित्र तरीका क्यों अपनाया ?

(क) उनके दाँत में दर्द था । (ख) उनके पेट में दर्द था । (ग) खीरे में मिर्च लगी थी ।

(घ) रईसी के कारण खीरा खा नहीं सकते थे तथा बिना स्वाद लिए रह नहीं सकते थे ।

उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।

प्रश्न8- नवाब साहब ने खिड़की से बाहर देखकर दीर्घ निश्वास क्यों लिया ?

(क) खिड़की के बाहर का प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत मनमोहक लगा ।

(ख) वे अभी खिड़की के बाहर खीरा फेंकने वाले थे जिसका उन्हें अफसोस हो रहा था ।

(ग) खिड़की के कर दे । उड़ती धूल - मिट्टी खीरे को खराब न कर दें|

(घ) उन्हें डर था कि लेखक उनकी खीरे की फाँकों को उठाकर बाहर न फेंक दे ।

उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।

प्रश्न9. लेखक ने किसे एब्स्ट्रैक्ट तरीका कहा है ?

(क) खीरा खाकर पेट भरने को (ख) खीरा सूँघकर पेट भरने को

(ग) खीरे को काटकर उस पर नमक - मिर्च बुरकने को
(घ) खीरा धोकर तौलिया से पोंछने के तरीके को ।
उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।

प्रश्न10. लेखक खीरा क्यों नहीं खाना चाहता था ?
(क) नवाब साहब खीरा नहीं खिलाना चाहते थे ।
(ख)नवाब साहब उसे खीरा खिलाने का ढोंग कर रहे थे ।
(ग) लेखक इन्कार कर चुके थे तथा उन्हें आत्मसम्मान बनाए रखना था ।
(घ) लेखक को उसके दोस्तों ने मना कर दिया था ।
उत्तर- विकल्प (ग) सही है ।

गद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प चुनिए (1x5 = 5)

I. मुफस्सिल की पैसेंजर ट्रेन चल पड़ने की उतावली में फूँकार रही थी । आराम से सेकंड क्लास में जाने के लिए दाम अधिक लगते हैं । दूर तो जाना नहीं था । भीड़ से बचकर , एकांत में नयी कहानी के संबंध में सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देख सकने के लिए टिकट सेकंड क्लास का ही ले लिया । गाड़ी छूट रही थी । सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर , ज़रा दौड़कर उसमें चढ़ गए । अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था । एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे । सामने दो ताज़े - चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे । डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया । सोचा, हो सकता है , यह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हों या खीरे - जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हों । [सी.बी.एस.ई. Outside Delhi Set - I , II , III ,Term I ,2020 संशोधित]

1.लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट महंगा होने पर भी क्यों खरीदा ?
(क) प्राकृतिक दृश्यों को निहारने के लिए । (ख) भीड़ से बचने के लिए ।
(ग) एकांत में चिंतन करने के लिए । (घ) ये सभी ।
उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।
व्याख्या - चूंकि लेखक भीड़ से अलग एकांत में खिड़की से बाहर के प्राकृतिक नज़ारों को देखते हुए नई कहानी लिखने के लिए चिंतन करना चाहता था ।

2. नवाब साहब की आँखों में लेखक को क्या दिखाई दिया ?

(क) असंतोष (ख) उत्साह (ग) बेचैनी (घ) आँसू

उत्तर - विकल्प (क) सही है ।

व्याख्या - डिब्बे में नवाब साहब बैठे थे । लेखक को देख कर उन्होंने कोई उत्साह नहीं दिखाया वरन् एकांत में विघ्न पड़ने का असंतोष उनकी आँखों में था ।

3. नवाब साहब के सामने तौलिए पर क्या रखा था ?

(क) रूमाल (ख) पुस्तकें (ग) खीरे (घ) लड्डू

उत्तर - विकल्प (ग) सही है ।

4.कौन - सी बात लेखक के अनुमान के प्रतिकूल थी ?

(क) उस डिब्बे में एक सफेदपोश नवाब बैठे थे ।

(ख) सफेदपोश नवाब ने उन्हें डिब्बे में चढ़ने से रोका

(ग) सेकंड क्लास का डिब्बा खाली नहीं था । (घ) उस डिब्बे में भी बहुत भीड़ थी ।

उत्तर - विकल्प (क) सही है ।

5. ' सफेदपोश ' शब्द से लेखक क्या संकेत कर रहा है ?

(क) वे नवाब से प्रतीत हो रहे थे । (ख) वे सफेद वस्त्र पहने हुए थे ।

(ग) वे सभ्य और भद्र दिख रहे थे । (घ) वे बहुत सुंदर वस्त्र पहने हुए थे ।

उत्तर - विकल्प (ग) सही है ।

II. खाली बैठे ,कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है । नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे । संभव है , नवाब साहब ने बिल्कुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे ।..... अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ ?

हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे । नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे । ' ओह ' , नवाब हब ने सहसा हमें संबोधित किया , 'आदाब अर्जु , जनाव , खीरे का शौक फरमाएँगे ? नवाब साहब का सहसा भाव परिवर्तन अच्छा

नहीं लगा । भाँप लिया आप शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं । जवाब दिया , ' शुक्रिया , किबला शौक फरमाएँ ।

1. लेखक क्या अनुमान करने लगा?
(क)नवाब साहब सेकंड क्लास डिब्बे में क्यों चढ़े होंगे?
(ख)नवाब साहब को क्या संकोच और असुविधा हो रही है?
(ग)नवाब साहब उसके प्रति सम्मान का व्यवहार क्यों नहीं कर रहे हैं?
(घ) उपर्युक्त सभी ।
उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।
व्याख्या - लेखक नवाब साहब की झिझक व नज़ाकत देख अनुमान लगाने लगा कि नवाब साहब को उन्हें सामने देख बहुत असुविधा हो रही होगी ।

2.लेखक की क्या आदत थी ?
(क) कुछ खाते - पीते रहने की
(ख) कुछ न कुछ सोचने की
(ग) अपनी बढ़ाई करने की
(घ) दूसरों की बुराइयाँ ढूँढने की ।
उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।
व्याख्या - लेखक की आदत थी कि वह हर समय कुछ - न - कुछ सोचता विचारता रहता था , कल्पना करता व अनुमान लगाता रहता था ।

3.लेखक नवाब साहब को कनखियों से क्यों देख रहा था ?
(क) नवाब साहब से डरने के कारण
(ख) नवाब साहब के लिहाज़ के कारण
(ग) नवाब साहब का हाल - चाल जानने की इच्छा से
(घ) विनम्रता के कारण ।
उत्तर - विकल्प (ग) सही है ।

4.नवाब साहब द्वारा खीरा खाने के लिए पूछने पर लेखक ने क्या जवाब दिया ?
(क) धन्यवाद , आप खीरा खाइए ।
(ख) धन्यवाद , मैं खीरा नहीं खाता ।
(ग) हाँ जी मैं खीरा खाऊँगा ।
(घ) जी आप पहले खाइए ।
उत्तर - विकल्प (क) सही है ।
व्याख्या - नवाब साहब द्वारा पहले लेखक को अनदेखा करने और फिर अपनी शराफ़त दिखाने के लिए लेखक से खीरा खाने को पूछे जाने पर लेखक ने भी शराफत से जवाब दिया कि आप खाइए|

5. ' लथेड़ लेना ' एक मुहावरा है , जिसका अर्थ है

(क) गन्दा करना (ख) सहयोग करना (ग) शामिल करना (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - विकल्प (ग) सही है ।

III . नवाब साहब ने फिर एक पल खिड़की से बाहर देखकर गौर किया और दृढ़ निश्चय से खीरों के नीचे रखा तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया । सीट के नीचे से लोटा उठाकर दोनों खीरों को खिड़की से बाहर धोया और तौलिये से पोंछ लिया । जेब से चाकू निकाला । दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला । फिर खीरों को बहुत एहतियात से छोलकर फाँकों को करीने से तौलिये पर सजाते गये । लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं । ग्राहक के लिए जीरा मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाज़िर कर देते हैं ।

1.नवाब साहब ने किस प्रकार खीरे को खाने योग्य बनाया ?

(क) पहले खीरों को गंदे पानी से धोया ।

(ख) खीरों के सिरों को चाकू से काटकर उसका निकाला ।

(ग) खीरों को छीला और फाँक काटकर उसके ऊपर नमक, जीरा व लाल मिर्च बुरका ।

(घ) उपर्युक्त से कोई नहीं

उत्तर - विकल्प (ग) सही है ।

2 नवाब साहब ने खीरा खाने के लिए किस प्रकार तैयारी की ?

(क) नवाब साहब ने खीरों के नीचे तौलिया झाड़कर बिछाया ।

(ख) दोनों खीरों को खिड़की के बाहर धोया ।

(ग) धोने के बाद उसे तौलिए से पोंछा । (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।

3.'एहतियात' शब्द का क्या अभिप्राय है ?

(क) सावधानी (ख) असावधानी (ग) तरीके से (घ) सजाना ।

उत्तर - विकल्प (क) सही है ।

4.लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं ?

(क) लखनऊ स्टेशन पर सभी खाने का सामान मिलता है ।

(ख) लखनऊ स्टेशन पर सभी फल मिलते हैं ।

(ग) लखनऊ स्टेशन पर चाय मिलती है ।

(घ) लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले ग्राहकों के लिए जीरा मिला नमक और पिसी मिर्च देते हैं ।

उत्तर - विकल्प (घ) सही है ।

व्याख्या - खीरा पर यदि नमक - मिर्च व जीरा बुरक कर खाएँ तो वह बहुत स्वादिष्ट लगता है इसलिए स्टेशन पर खीरा बेचने वाले इन मसालों की पुड़िया साथ देते हैं ।

5.नवाब साहब ने लोटा कहाँ रखा था ?

(क) सीट के नीचे (ग) गोद में (ख) सीट के ऊपर (घ) इनमें से कोई नहीं ।

उत्तर - विकल्प (क) सही है ।

IV . नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया, मानो कह रहे हों - यह है खानदानी रईसों का तरीका !

नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए ।हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा- यह है खानदानी तहज़ीब , नफासत और नज़ाकत! हम गौर कर रहे थे,खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म , नफ़ीस या एब्सट्रैक्ट तरीका ज़रूर कहा जा सकता है परंतु क्या ऐसे तरीके उदर की तृप्ति भी हो सकती है? नवाब साहब की ओर से भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया, 'खीरा लज़ीज़ होता है लेकिन होता है सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है।

1.'तसलीम ' का अर्थ है-

(क) मजबूरी (ग) सहमति

(ख)सम्मान (घ) हैरानी ।

उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।

2.नवाब साहब द्वारा खीरा इस्तेमाल करने के तरीके के बारे में लेखक ने क्या सोचा ?

(क) यह तरीका खानदानी तहजीब का प्रमाण है ।

(ख) क्या इस तरीके से खीरे के स्वाद की कल्पना से संतुष्ट हुआ जा सकता है ?

(ग) इस तरीके से खीरे की सुगंध का आनंद लिया जा सकता है ।

(घ) खीरा खाने का तरीका केवल दिखावा है ।

उत्तर विकल्प (ख) सही है ।

व्याख्या - नवाब साहब द्वारा खीरे सूचकर स्वाद की कल्पना से आँखें मूंद लेने पर लेखक सोचते हैं कि क्या ऐसे संतुष्ट हुआ जा सकता है ।

3.खीरा लज़ीज़ होता है , लेकिन होता है सकील , नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है । ' नवाब साहब के इस कथन का आशय है -

(क)खीरा स्वादिष्ट होता है, पर आसानी से न पचने वाला होता है इसीलिए मैदे पर बोझ डाल देता है ।

(ख) खीरा कड़ुवा होता है , आसानी से पचने वाला होता है , पर मैदे बोझ डालने वाला होता है|

(ग) खीरा सुगंधित होता है , पर जल्दी नहीं पचता इसलिए मेदे पर बोझ डालने वाला होता है ।

(घ) खीरा मीठा होता है इसीलिए आसानी से पच जाता है और मैदे पर बोझ नहीं डालता ।

उत्तर - विकल्प (क) सही है ।

व्याख्या - आशय है कि यद्यपि खीरा खाने में स्वादिष्ट होता है । लेकिन शीघ्रता से पचता नहीं है जिससे कमजोर मैदे वालों को उसे नहीं खाना चाहिए ।

4.लेखक ने नई कहानी के लेखकों पर क्या व्यंग्य किया है ?

(क) नई कहानी के लेखक नवाब साहब की तरह दिखावा करते हैं ।

(ख) नई कहानी के लेखक अहंकारी हैं ।

(ग) नई कहानी के लेखक कहानियों में जीवन की सच्चाई का वर्णन नहीं करते ।

(घ) नई कहानी के लेखक भी बिना किसी पात्र तथा विचार के नई कहानी लिखने की बात करते हैं ।

उत्तर विकल्प (घ) सही है ।

5.नवाब साहब का खीरा खाने का ढंग किस तरह अलग था ?

(क) नवाब साहब ने नमक - मिर्च लगी खीरे की फाँकों को नहीं उठाया ।

(ख) नवाब साहब ने खीरों को खाने के बजाय सूँघकर रसास्वादन किया ।

(ग) नवाब साहब ने तृप्त न होने का अभिनय किया ।

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर - विकल्प (ख) सही है ।

व्याख्या- साधारणतः लोग खीरा का आनंद लेने के लिए उन्हें खाते हैं लेकिन नवाब साहब का उन्हें केवल सूचकर रसास्वादन करने का तरीका सबसे अलग था ।

**********@@**********@@**********

पाठ-14 एक कहानी यह भी - मन्नू भंडारी

लेखक परिचय

•**जन्म** - २ अप्रैल , १९३१

•**जन्म स्थान** - भानपुर जिला मंदसौर ,मध्य प्रदेश।

•**मृत्यु** - १५ नवंबर, २०२१

•**प्रमुख रचनाएं -**

उपन्यास - आपका बंटी ,महाभोज ।

कहानी संग्रह - एक प्लेट सैलाब,मैं हार गई ,आंखों देखा झूठ, यही सच है, त्रिशंकु।

•**साहित्यिक विशेषताएं -** मन्नू भंडारी ने नयी कहानी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई है। मन्नू भंडारी ने कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं में कलम चलाई हैं।

•**भाषा शैली -** इनकी भाषा शैली सरल ,सहज तथा भाव अभिव्यक्ति में सक्षम हैं। इनकी रचनाओं में बोलचाल की हिंदी भाषा के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेजी,देशज और तत्सम शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है।

सारांश

'एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी द्वारा लिखा आत्मपरक शैली में 'आत्मकथ्य' हैं, जिसमें जिसमें लेखिका ने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है, जिन्होंने उसके लेखकीय जीवन को प्रभावित किया है। इस अंश में लेखिका के किशोर जीवन की घटनाओं के साथ उसके पिताजी और उसके कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का नाम विशेष रूप से उभर कर सामने आया है। इस आत्मकथ्य में लेखिका के उनके पिताजी से वैचारिक मतभेद का भी चित्रण हुआ है। लेखिका द्वारा एक साधारण लड़की के असाधारण बनने के आरंभिक पड़ावों को प्रकट किया गया है। इसके अलावा १९४६ से ४७ की आजादी की लड़ाई में उसकी भागीदारी, ओज, उत्साह ,संगठन क्षमता और विरोध करने के तरीके का भावपूर्ण प्रभावपूर्ण वर्णन है।

गद्यांश १

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए -

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गांव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो- मंज़िला मकान से , जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिता जी का साम्राज्य था, जहां वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली - बिखरी पुस्तकों - पत्रिकाओं और अखबारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर ' डिक्टेशन' देते रहते थे ।नीचे हम सब भाई- बहिनों के साथ रहती थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वविहीन मां... सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिताजी इंदौर में थे जहां उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था।कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज - सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे।शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊंचे-ऊंचे ओहदों पर पहुंचे।

१. मन्नू भंडारी का जन्म कहां हुआ था?

क) राजस्थान के अजमेर नगर में ख) राजस्थान के जयपुर नगर में

ग) मध्यप्रदेश के भानपुरा गांव में घ) मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में

२.लेखिका ने अपनी मां को कैसा बताया है?

क)साधारण ख)चापलूस ग)नासमझ घ)व्यक्तित्वविहीन

३. लेखिका के पिता किस राजनीतिक पार्टी से जुड़े थे?

क) भारतीय जनता पार्टी ख)कांग्रेस ग)आजाद हिंद पार्टी घ) कम्युनिस्ट पार्टी

४. ' भाई-बहिनों' में कौन सा समास है?

क) अव्ययीभाव समास ख) द्विगु समास ग) द्वंद्व समास घ) कर्मधारय समास

५.' बेपढ़ी' शब्द में उपसर्ग,प्रत्यय और मूल शब्द बताइए।

क) बे + पढ़ना ख) बेप+पढ़ ग) बे+पढ़+ई घ) बे+पढ़+इ

गद्यांश २

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए -

आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित,असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहां मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है।बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर इतनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियां लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुंधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे।

१. यहाँ लेखिका किस कल्चर की बात कर रही है?

क)भारतीय-कल्चर ख)आधुनिक-कल्चर ग) पड़ोस-कल्चर घ) पाश्चात्य-कल्चर

२.' पड़ोस-कल्चर' को सबसे अधिक नुकसान किसने पहुंचाया?

क) पाश्चात्य सभ्यता ने ख) महानगरों की फ़्लैट संस्कृति ने

ग) शहरीकरण की प्रक्रिया ने घ) हमारी स्वार्थपरता ने

३. फ़्लैट संस्कृति का क्या परिणाम हुआ ?

क) हम एक-दूसरे से दूर हो गए ख) हम एक-दूसरे के पास आ गए

ग) हम अपने तक ही सीमित रह गए घ) कथन 'क' और 'ग' सत्य हैं

४. लेखिका की कहानियों के पात्र कहां के हैं?

क) उसके घर के ख) उसके राज्य के ग) उसके मोहल्ले के घ) कल्पना लोक के

५. 'असुरक्षित' शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय और मूल शब्द बताइए।

क) असु+ रक्ष+इत ख) अ+सु+रक्षा+इत ग) अ+सु+रक्षित घ) अ+सुरक्ष+इत

उत्तरमाला -

गद्यांश १

१.(ग) मध्यप्रदेश के भानपुरा गांव में, २.(घ) व्यक्तित्वविहीन , ३.(ख)कांग्रेस ,४.(ग)द्वंद्व समास , ५.(ग) बे+पढ़+ई

गद्यांश २

१.(ग) पड़ोस-कल्चर , २.(ख)महानगरों की फ़्लैट संस्कृति ने , ३.(घ)कथन 'क' और 'ग' सत्य हैं, ४.(ग) उसके मोहल्ले के,

५.(ख) अ+सु+रक्षा+इत

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. मन्नू भंडारी की हिंदी प्राध्यापिका का क्या नाम था? उत्तर - शीला अग्रवाल।

प्रश्न २. रसोईघर को ' भटियारखाना ' किसने कहा था? उत्तर - मन्नू भंडारी के पिता ने।

प्रश्न ३.मन्नू भंडारी की बड़ी बहन का क्या नाम था ? उत्तर - सुशीला।

प्रश्न ४.मन्नू भंडारी ने किस से विवाह किया ? उत्तर - राजेंद्र यादव से।

प्रश्न ५. अजमेर आने के बाद लेकर कहां के पिता ने क्या कार्य किया?

उत्तर - शब्दकोश का निर्माण।

प्रश्न ६. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा?

उत्तर - लेखिका के पिताजी और उनकी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल।

प्रश्न ७.आपकी हिंदी की पाठ्यपुस्तक में आप किस कहानी या कविता को इस पाठ से जोड़ सकते है?

उत्तर - ' आत्मकथ्य ' जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न ८.' एक कहानी यह भी' के रचयिता कौन है? उत्तर - मन्नू भंडारी।

प्रश्न ९. एक कहानी यह भी गधे की कौन-सी विधा है? उत्तर - आत्मकथा।

प्रश्न १०. ' भग्नावशेष' शब्द का क्या अर्थ है? उत्तर - टूटा-फूटा शेष।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

मन्नू भंडारी और उसके पिता के बीच मतभेद के दो कारण लिखिए।

उत्तर - लेखिका के पिताजी लेखिका को घर की चारदीवारी में रखकर देश और समाज के प्रति जागरूक तो बनाना चाहते थे, किंतु एक निश्चित सीमा तक। वे नहीं चाहते थे वह आंदोलनों में भाग ले, हड़ताल करे या लड़कों के साथ सड़क पर फिरे।

किंतु लेखिका ने वह सब किया जो पिता जी नहीं चाहते थे । फलस्वरूप वैचारिक टकराहटें बढ़ीं।

लेखिका को अब यह स्वीकार नहीं था कि पिताजी उनकी स्वतंत्रता की सीमाओं को इतना संकुचित कर दें जिसमें घुटन हो।

प्रश्न २.अपनों का विश्वासघात मनुष्य पर क्या प्रभाव डालता है?' एक कहानी यह भी ' के आधार पर लिखिए।

उत्तर - अपनों का विश्वासघात मनुष्य को तोड़कर रख देता है। इससे मनुष्य बहुत शक्की, अहंकारी ,क्रोधी और चिड़चिड़ा हो जाता है। उसका व्यक्तित्व खंडित हो जाता है।

प्रश्न ३. मन्नू भंडारी के पिता की कौन-कौन-सी विशेषताएं अनुकरणीय है?

उत्तर - मन्नू भंडारी के पिता की अनुकरणीय विशेषताएं हैं -

•स्वाभिमानी होना

•स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव रखना

•किसी काम को करने के प्रति दृढ़ संकल्प होना।

•परिस्थितियों के अनुकूल जीवन बिताने की योग्यता।

प्रश्न ४. लेखिका की मां त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थी - फिर भी लेखिका के लिए आदर्श न बन सकी। क्यों?

उत्तर - लेखिका की मां का धैर्य, त्याग और सहिष्णुता लेखिका के स्वभाव के विपरीत था, क्योंकि उनका त्याग, धैर्य,सहिष्णुता विवशता से उत्पन्न गुण थे या बच्चों के प्रति सहानुभूति से उत्पन्न गुण थे। उनके चरित्र में जो कुछ था निरीहता का परिणाम था जो लेखिका के लिए रुचिकर नहीं था ।दूसरा कारण यह भी था - मां बेपढ़ी-लिखी इच्छा रहित थी अतः निहायत असहाय मजबूरी से लिप्त उनका त्याग लेखिका के लिए आदर्श नहीं बन सका।

प्रश्न ५. ' एक कहानी यह भी' नामक पाठ की लेखिका मन्नू भंडारी का साहित्य की अच्छी पुस्तकों से परिचय कैसे हुआ? उत्तर - कॉलेज में लेखिका मन्नू भंडारी हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के संपर्क में आने के बाद साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें पढ़ने लगी। देखते-ही-देखते लेखिका का साहित्यिक दायरा शरतचंद्र, प्रेमचंद जी से बढ़ते-बढ़ते जैनेंद्र, अज्ञेय ,यशपाल ,भगवतीचरण वर्मा से भी आगे बढ़ता गया।

प्रश्न ६. मन्नू भंडारी की ऐसी कौन- सी खुशी थी जो 15 अगस्त 1947 की खुशी में समाकर रह गई ?

उत्तर - मन्नू भंडारी और उसकी दो सहेलियों के लगातार आंदोलन और विरोध के कारण कॉलेज प्रबंधन को थर्ड ईयर की कक्षाएं पुनः शुरू करनी पड़ीं और इन लड़कियों का निलंबन रद्द करना पड़ा।लेखिका के लिए यह बहुत बड़ी खुशी थी ,पर वह देश को आज़ादी मिलने की खुशी में दबकर रह गई।

प्रश्न ७. मन्नू भंडारी की मां धैर्य और सहनशक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं - ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर - मन्नू भंडारी की मां को धैर्य और सहनशक्ति में धरती से ज्यादा इसलिए कहा गया है कि वे दिनभर पति और बच्चों की हर उचित-अनुचित इच्छापूर्ति के लिए संघर्ष करती रहती थीं। पति की आज्ञाओं को वे अपना प्राप्य मानकर सहर्ष स्वीकार करती थीं। कभी विरोध और शिकायत नहीं करती थीं।

प्रश्न ८. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए ।

उत्तर - स्वाधीनता आंदोलन के समय लोगों में इतना उत्साह था कि ऐसे माहौल में घर में बैठना संभव नहीं हो रहा था। इसी समय प्राध्यापिका शीला अग्रवाल की जोशीली बातों से लेखिका को प्रेरणा मिली। देश-प्रेम की भावनाओं ने जो पिताजी की भागीदारी से स्थान बना लिया था वो भावनाएं फूट पड़ी और लेखिका उसी आंदोलन की राह पर चल पड़ी। सभी कॉलेजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान किया। जगह-जगह भाषण देना,हाथ उठाकर नारे लगवाना, हड़तालें करवाना आदि में लेखिका अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही थी।

**********@@**********@@**********

पाठ-16 यतींद्र मिश्र: नौबतखाने में इबादत

लेखक का संक्षिप्त परिचय : जन्म : 12/4/1977, अयोध्या, उत्तर प्रदेश। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1999 में साहित्य और कलाओं के सम्वर्द्धन और अनुशलीन के लिए एक सांस्कृतिक न्यास 'विमला देवी फाउंडेशन' का संचालन भी कर रहे हैं।

भाषा और शैली : यतींद्र मिश्र की भाषा-शैली कुछ इस प्रकार है–

भाषा : मिश्र जी हिंदी खड़ी बोली के लेखक हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यावहारिक और सरल भाषा का प्रयोग किया है। वे विषय के अनुसार भाषा बदलते रहते हैं। आपने तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी शब्दों का चुतराई से प्रयोग किया है। सरलता और सरसता आपकी भाषा की विशेषता है। आपकी भाषा बोझिल नहीं है। आपकी भाषा पाठक को पूरे समय तक बांधे रखती है।

शैली : मिश्र जी की शैली के विविध रूप कुछ इस प्रकार हैं। वर्णात्मक शैली का प्रयोग, भावात्मक शैली का प्रयोग, संश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग, विवेचनात्मक शैली का प्रयोग।

मुख्य कृतियां : कविता संग्रह, ड्योढी पर आलाप, यदाकदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएं।

संगीत ग्रंथ : गिरीजा, देवप्रिया, सूर की बारादरी।

संपादन : कुँवर नारायण का संसार, यार जुलाहे, द्विजदेव ग्रंथावली।

सम्मान : ऋतुराज सम्मान, राजीव गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार, हेमंद स्मृति कविता पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद युवा पुरस्कार, रजा पुरस्कार।

पाठ का सारांश

प्रस्तुत लेख यतींद्र मिश्र द्वारा रचित व्यक्ति-चित्रलेखा हैं। 'नौबतखाने में इबादत' में लेखक ने प्रसिद्ध वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के व्यक्तिगत परिचय देने के लिए। साथ ही उनकी रुचियां, उनके अंतर्मन की बनावट, संगीत साधना एवं लग्न का मार्मिक एवं सजीव चित्रण किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि संगीत एक साधना है। इसका अपना विधि-विधान और शास्त्र है। इस शास्त्र परिचय के साथ ही अभ्यास भी आवश्यक है। यहां बिस्मिल्लाह खां की लग्न एवं धैर्य के माध्यम से बताया गया है कि संगीत के अभ्यास के लिए पूर्ण तन्यमता, धैर्य एवं मंथन के अलावा गुरु शिष्य परंपरा का निर्वाह भी जरूरी है। यहां दो संप्रदायों के एक होने की भी प्रेरणा दी गई है।

अम्मीरुद्दीन उर्फ़ बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख़्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पांच-छह वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहां उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबक्श तथा नाना रहते थे जो की जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बाला जी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे।

ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्लाह खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहां जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया की बचपन में इनलोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी। भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र ना मिलता हो परन्तु मंगल कार्यों में इसका उपयोग प्रतिष्ठित करता है अर्थात यह मंगल ध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्लाह खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के वाबजूद हमेशा पाँचो वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्लाह खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दुरी तक भींगी आँखों से नोहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिंगो देते।

शब्दार्थ

ड्योढ़ी- दहलीज़

नौबतखाना- प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान

राग - विशेष सुर - लय से युक्त ध्वनि - समूह

भीमपलासी , मुलतानी - रागों के नाम

वाज़िब - उचित

लिहाज - ख़याल

गोया- मानो / जैसे

मामाद्वय - दोनों मामा

रियासत - राज / शासन

रोज़नामचे - हर दिन का ब्यौरा लिखने वाली नोटबुक

विग्रह - मूर्ति

पेशा- व्यवसाय

ननिहाल - नाना का घर

रीड - वाद्ययंत्र की नाड़ी जिससे आवाज़ निकलती है

पोली - खोखली

वाद्य - साज़ / बाजा

साहबजादा- पुत्र

मसलन- उदाहरणस्वरूप

रियाज़ - अभ्यास

बोल - बनाव - शब्दों को विभिन्न सुरों में गाना या बजाना

मार्फ़त - द्वारा

आसक्ति - लगाव

अबोध - बोधरहित / छोटी

उकेरना- खींचना

वैदिक- वेद से संबद्ध

शास्त्रांतर्गत - शास्त्र के अंतर्गत

सुषिर- वाद्य - फूँककर बजाए जाने वाला वाद्ययंत्र

श्रृंगी - सींग से निर्मित एक साज़

मुरछंग - एक लोक बाजा / प्रभामंडल

संपूरक - अच्छी तरह भर लेने वाला

नेमत- ईश्वरीय देन / धन - दौलत

सज़दा - ईश्वर के सामने सिर झुकाना

इबादत - उपासना

बख्शना - दान देना

तासीर - प्रभाव / गुण

अनगढ़ - बिना गढ़ा हुआ / उजहड

मेहरबान - कृपालु

मुराद - चाह / माँग

ऊहापोह - उलझन

शरण- आश्रय

तिलिस्म - जादू

गमक - सुगंध

तमीज़ - अदब

सलीका - ढंग / शऊर

शिरकत - भाग लेना

नौहा- करबला के शहीदों पर केंद्रित शोक गीत

शहादत - शहीदी

गमज़दा - दुःखपूर्ण

सुकून - चैन

जुनून - उन्माद

बदस्तूर - यथावत / तरीके से

कायम - विद्यमान

ज़िक्र- उल्लेख

नैसर्गिक - स्वाभाविक

खारिज़ - रद्द करना

सम - जहाँ संगीत में लय का अंत हो

दाद - शाबाशी

हासिल - प्राप्त

मेहनताना - पारिश्रमिक

आरोह - अवरोह - संगीत में सुरों का उतार - चढ़ाव

रियाज़ी - अभ्यासी

स्वादी - खाने के प्रिय

अद्भुत - अनोखा

उत्कृष्ट- उम्दा

मज़हब - धर्म

इस्तेमाल - प्रयोग

अकसर - प्राय

पुश्त - पीढ़ी

तालीम - शिक्षा

अदब - शिष्टाचार

जन्नत - स्वर्ग

आनंदकानन - सुख का वन

रसिक - प्रेमी

उपकृत - एहसानमंद

तहज़ीब - शिष्टता

सेहरा - बन्ना - सेहरा के समय गाया जाने वाला गीत

सिर चढ़कर बोलना - अत्यधिक प्रभावित करना

सरगम - सुरीली ध्वनियों का समूह

बेताला - लयरहित

परवरदिगार - ईश्वर

नसीहत- राय

सुबहान अल्लाह - पाक है ईश्वर

अलहमदुलिल्लाह- तमाम तारीफ़ ईश्वर के लिए

उपज - नई तान

करतब - कौशल

अज़ान - नमाज़

सतक - सप्तक / सात स्वरों की श्रृंखला

तहमद - लुंगी / एक वस्त्र

दुआ- प्रार्थना

शिद्दत - प्रबलता

खलना - खटकना

संगतिया - गाने - बजाने वालों की मंडली में शामिल व्यक्ति

अफसोस - पछतावा

लुप्त- गायब

थाप - तबले आदि पर हथेली से निकाला गया ' थप्प ' का स्वर

मरण - मृत्यु

नायाब - दुर्लभ

कौम - वंश / जाति

अलंकृत- सुशोभित

अजेय - सदा विजयी

जिजीविषा - जीने की इच्छा

प्रश्नोत्तरी

प्र०1. शहनाई की दुनिया में डुमरांव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर:- शहनाई की दुनिया में डुमरांव को इसलिए याद किया जाता है, क्योंकि शहनाई और डुमरांव एक-दूसरे का बहुत ही गहरा संबंध है। शहनाई बजाने के लिए रीड या नरकट नामक घास से बनाई जाती है। यह रीड अंदर से गीली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। यह रीड या नरकट घास डुमरांव में विशेष रूप से सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खा का जन्म स्थान डुमरांव ही है। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खां भी डुमरांव के ही रहने वाले थे।

प्र०2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर:- बिस्मिल्ला ख़ाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा जाता है, क्योंकि वे अपनी 80 वर्ष के अंतिम पड़ाव में भी सच्चे सूर के लिए खुदा से प्रार्थना करते हैं तथा प्रतिदिन की अपनी प्रत्येक नमाज में इसी सुर को प्राप्त करने की प्रार्थना करते। उनकी यही हार्दिक इच्छा रहती थी कि लोगों के मांगलिक कार्यक्रमों में उनकी शहनाई की धुन बजती रहे। वे चाहते थे कि चाहे किसी भी कार्यक्रम का आयोजन हो उसमें उनकी ही शहनाई की धुन प्रसिद्ध हो।

प्र०3. सुषिर - वाघो से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिरवाघो में शाह ' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

उत्तर:- ' सुषिर - वाद्य ' उन्हें कहा जाता है जिनको फूंक बजाया जाता है। वैदिक इतिहास में शहनाई का उल्लेख नहीं मिलता। अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी होती है, उसे 'नय' कहते हैं। सुषिर - वाद्य में शहनाई, मुरली, वंशी, श्रृंगी, मूर्छित आदि आते हैं। इनमें शहनाई को मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला वाघ माना गया है। इसी आधार पर शहनाई को 'सुषिर - वाघो में शाह ' की उपाधि दी गई है।

प्र०4. आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'फटा सुर न बख्शें, लुंगिया का क्या है, आज फटी है तो कल सी जाएगी।'

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि बिस्मिल्ला खां ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी लूंगी भले ही फट जाए परंतु शहनाई का स्वर कभी न फटे, वह सदैव पूर्ण एवं सच्चा बना रहे। लुंगी का क्या है वह फट जाए तो दोबारा सील जाएगी परंतु सुर फटने के बाद उसमें सुधार नहीं किया जा सकता। सुर अच्छा होगा तो लोगों के दिल में भी अच्छी जगह होगी, लूंगी फटेगी तो आज नहीं तो कल मिल ही जाएगी।

(ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आंखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आए।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कहने का आशय यह है कि बिस्मिल्ला खाँ 80 वर्ष की अवस्था में भी पांचों वक्त नमाज पढ़ते और खुदा से सच्चे सुर को प्राप्त करने की प्रार्थना करते थे। वे अपने सुर

में ऐसा प्रभाव पाना चाहते थे कि उसके प्रभाव से भाव - विभोर होकर प्रत्येक आंख से सच्चे मोतियों की तरह चमकते आंसू बहने लगे।

प्र०5. काशी में हो रहे कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर:- काशी जो संगीत, साहित्य और आदर सम्मान की परंपराओं के लिए प्रसिद्ध थी। आज वहां की परंपराओं में परिवर्तन आ गया है। गायकों के मन में अपने संगीतकारों की कोई चिंता नहीं रही और न आदर रहा, घंटो किए जाने वाले रियाज को कोई नहीं पूछता। संगीत, साहित्य आदर की अधिकतम परंपराएं प्राय: लुप्त हो गई थी। वहां से मलाई - बर्फ बेचने वाले भी जा चुके हैं। देसी घी की बनी कचौड़ी अब वहां नहीं मिलती। इन सब को देख कर बिस्मिल्ला ख़ाँ व्यथित हो उठे थे।

प्र०6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि-
(क) बिस्मिल्ला खां मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

उत्तर:- वे एक शिया मुसलमान के बेटे थे। अपने धर्म के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्लाह खां की अपार श्रद्धा एवं अटूट विश्वास भगवान विश्वनाथ जी, बालाजी एवं गंगा जी के प्रति भी थी। वह अल्लाह की इबादत भैरवी में करते थे। नाम अल्लाह का है राग तो भैरव है। वे इन दोनों को एक मान व जान कर ही साधते थे। उन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खां मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

उत्तर:-1. बिस्मिल्ला खां ने अपने हुनर को हमेशा भगवान की देन माना और अपने शहनाई बजाने को उन्होंने बाजार में नहीं भुनाया।
2. हवाई जहाज से यात्रा करना पसंद नहीं करते थे।
3. पांच सितारा होटल में रह नहीं पाते थे।
4.शहनाई बजाने की फीस उतनी ही लेते थे जितने कि उन्हें आवश्यकता होती थी।
5.उन्हें काशी से बहुत लगाव था। वे कहते थे यहां हमारी कई पुश्तों ने शहनाई बजाई है। जैसी निष्ठा उनकी शहनाई वादन के प्रति थी वैसी ही काशी के प्रति भी।
6. वे काशी से बढ़कर किसी जन्नत को इस धरती पर नहीं मानते थे। अतः वह हृदय के स्वामी वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।
7.वह देख-रेख के दिखावे में नहीं आते थे।

प्र०7. बिस्मिल्ला खां के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया?

उत्तर:- बिस्मिल्ला खां की संगीत साधना को जिन व्यक्तियों ने समृद्ध किया, वे है-

बालाजी के मंदिर के रास्ते में रसूलन बाई और बतूलनबाई नामक दो बहने- जिन्होंने बिस्मिल्ला खां के जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति भर दी थी। अमीरुद्दीन के नाना भी एक प्रसिद्ध शहनाई वादक थे, वे छिपकर सुनते थे और बाद में शहनाई के ढेर में से उस शहनाई को ढूंढते जो नाना के बजाने पर मीठी धुन छेड़ती थी। उस्ताद के मामा अली बख्श खां जब शहनाई बजाते थे तो बिस्मिल्ला ख़ां खुश होकर जमीन पर पत्थर मारते थे। उनका जमीन पर पत्थर मारना खुशी का कारण था।

प्र०8. बिस्मिल्ला खां के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर:- बिस्मिल्ला खां के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएं हैं जिन्होंने हमें प्रभावित किया है:
1. सर्वप्रथम हमें उनके अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना ने प्रभावित किया है।
2.उन्होंने अपने जीवन में संगीत को ही वरीयता दी तथा अन्य बातों को गौण रखा।
3.शहनाई वादक के रूप में प्रसिद्धि पाने व भारतरत्न जैसे पुरस्कारों से पुरस्कृत होने के बाद भी किसी तरह की कोई बाहरी दिखावा न करके वे बहुत ही सादे कपड़ों में रहते।
4.उनका सहज प्रवृत्ति ही दिखाई देता।
5.उनके हृदय में हिंदू मुस्लिम संप्रदाय में एकता बनाए रखने की भावना भी प्रबल रूप से विद्यमान थी।
6. उन्होंने हमेशा प्रेम व भाईचारे की भावना को मजबूत किया।
7. वे किसी से भी किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करते थे।
8. वह एकदम सादगी भरा जीवन जीते थे, किसी से किसी भी प्रकार का मनमुटाव नहीं रखते थे।
9. हमेशा खुश और संतुष्ट रहते थे तथा अपने शहनाई की धुन के प्रसिद्ध होने का ख्वाब देखते थे।

प्र०9. मुहर्रम से बिस्मिल्ला खां के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- 'मुहर्रम' बिस्मिल्ला खां तथा शहनाई के साथ जुड़ा हुआ एक मुस्लिम पर्व है। मुहर्रम के महीने में शिया मुसलमान हजरत इमाम हुसैन तथा उनके वसंजो के प्रति मातम मनाते हैं। पूरे 10 दिनों तक चलने वाले इस मातम के दौरान किसी तरह का कोई संगीत कार्यक्रम आयोजित नहीं किया जाता है। आठवें दिन बिस्मिल्ला खां खड़े होकर शहनाई बजाते थे तथा दालमंडी में

फातमान के करीब 8 किलोमीटर दूर पैदल रोते हुए, शोक की धुन बजाते हुए जाते थे। वे इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की कुर्बानी में रोते रहते। मुहर्रम के इस गमगीन माहौल से बिस्मिल्ला खां का विशेष लगाव था।

प्र०10. बिस्मिल्ला खां कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर:- बिस्मिल्ला खां 80 वर्ष की अवस्था में भी सच्चे सुर को पाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते रहे। वे कई घंटे तक शहनाई बजाने का रियाज करते रहते थे। वे संगीत कला की उपासना में लगे रहते थे। उन्हें कुलसुम हलवाइन की देसी घी की कचौड़ी संगीतमय लगती थी। जब कचौड़ी घी में डाली जाती थी, उस समय छन्न्न से उठने वाली आवाज में भी उन्हें सारे आरोह- अवरोह दिख जाते थे।

प्र०11. बिस्मिल्ला खां जीवन भर ईश्वर से क्या मांगते रहे और क्यों ? इससे उनकी किन विशेषता का पता चलता है?

उत्तर :- बिस्मिल्ला खां जीवन भर सच्चे सुर की नेमत मांगते रहे क्योंकि वे एक सच्चे कलाकार थे। हमेशा सिखते रहते थे एवं पूर्णत: पाने की ललक या इच्छा रहती थी।

इससे उनकी विनम्रता, ईश्वर पर आस्था, सच्चे संगीत के साधक होने का पता चलता है।

प्र०12. बिस्मिल्ला खां काशी क्यों नहीं छोड़ना चाहते हैं? कोई दो कारण लिखिए।

उत्तर :- बिस्मिल्ला खां निम्नलिखित अगाध श्रद्धा के कारण काशी को नहीं छोड़ना चाहते हैं-
अपनी खानदान की कई पुस्तों द्वारा यहां शहनाई बजाने के कारण
काशी से ही उन्हें अदब और तालीम प्राप्त होने के कारण
काशी के लोगों से अपार स्नेह प्राप्त होने के कारण

प्र०13. कैसे कहा जा सकता है कि बिस्मिल्ला खां साहब सच्चे अर्थों में भारत रत्न थे?

उत्तर :- बिस्मिल्ला खां साहब शास्त्रीय संगीत और शहनाई को विश्व भर में नयी पहचान दिलाई। उनका सभी धर्मों के प्रति आदर, व्यक्तित्व सरलता और सादगी भारतीय गंगा-जमुना संस्कृति का प्रमाण है। इन सभी कारणों से ही बिस्मिल्ला खां साहब सच्चे अर्थों में भारत रत्न थे।

प्र०14. एक संगीतज्ञ के रूप में खां साहब का जीवन हमें विद्यार्थी जीवन के लिए किन मूल्यों की शिक्षा देता है?

उत्तर :- संगीतज्ञ खां साहब का जीवन विद्यार्थियों के लिए आदर्श है। सच्ची लगन, बनाव-श्रृंगार की अपेक्षा सादगी, समर्पण, अहंकारहीनता, सांप्रदायिक सौहार्द्र, समन्वयवादी दृष्टि आदि मूल्य विद्यार्थी जीवन के लिए शिक्षा देता है।

अर्थबोध संबंधी प्रश्न

अमीरुद्दीन अभी सिर्फ छः साल का है और बड़ा भाई शम्सुद्दीन नौ साल का। अमीरुद्दीन को पता नहीं है कि राग किस चिड़िया को कहते हैं। और ये लोग हैं मामूजान वगैरह जो बात-बात पर भीमपलासी और मुलतानी कहते रहते हैं। क्या वाजिब मतलब हो सकता है इन शब्दों का, इस लिहाज से अभी उम्र नहीं है अमीरुद्दीन की, जान सके इन भारी शब्दों का वजन कितना होगा।

गोया, इतना जरूर है कि अमीरुद्दीन व शम्सुद्दीन के मामाद्वय सादिक हुसैन तथा अलीबख्श देश के जाने-माने शहनाई वादक हैं। विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने जाते रहते है। रोज़नामचे में बालाजी का मंदिर सबसे ऊपर आता है। हर दिन की शुरुआत वहीं ड्योढ़ी पर होती है।

मंदिर के विग्रहों को पता नहीं कितनी समझ है, जो रोज बदल-बदलकर मुलतानी, कल्याण ललित और कभी भैरव रागों को सुनते रहते हैं। ये खानदानी पेशा है अलीबखा के घर का। उनके अब्बाजान भी यहीं ड्योढ़ी पर शहनाई बजाते रहते हैं।

प्रश्न 1. अमीरुद्दीन कौन है ?
उत्तर : अमौरुद्दीन उस्ताद बिस्मिाला खाँ के बचपन का नाम हैं। बिस्मिल्ला खाँ ही अमीरुद्दीन है, एक प्रसिद्ध शहनाई वादक।

प्रश्न 2. अमीरुद्दीन के मामा क्या करते हैं ?
उत्तर : अमीरुद्दीन के मामा सादिक हुसैन और अलीबख्श विभिन्न रियासतों के दरबार में शहनाई बजाते हैं। ये दोनों देश के जाने-माने शहनाई वादक हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

1. देश
2. राग।

उत्तर : विलोम शब्द :

1. देश × विदेश
2. राग × विराग

प्रश्न4. शहनाई और डुमराँव एकदूसरे के पूरक किस तरह हैं?

उत्तर: डुमराँव गाँव के आसपास सोननदी के किनारों पर नरकट रीड पाई जाती है। इस रोड का इस्तेमाल शहनाई में किया जाता है। इसलिए शहनाई और डुमरांव एकदूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ के माता-पिता का नाम क्या है?

उत्तर : बिस्मिल्ला खां के पिता का नाम उस्ताद पैगंबरबख्श और माँ का नाम मिट्ठन था।

**********@@**********@@**********

पाठ 17 - संस्कृति -भदंत आनंद कौसल्यायन

लेखक परिचय

बौद्ध भिक्षु भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म 1905 में अंबाला जिले के सोहाना गाँव में हुआ। उन्होंने देश-विदेश में काफ़ी यात्राएँ कीं। वे गांधी जी से विशेष प्रभावित थे तथा लंबे अर्से तक उनके साथ रहे। वे हिंदी के अन्यतम सेवक थे। हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग तथा राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के माध्यम से उन्होंने हिंदी के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। वर्ष 1988 में उनका देहांत हो गया। भदंत आनंद कौसल्यायन की 20 से भी अधिक पुस्तकें हैं, जिनमें से प्रमुख - भिक्षु के पत्र, जो भूल न सका, कहाँ क्या देखा, यदि बाबा न होते तथा आह! ऐसी दरिद्रता। उन्होंने कई ग्रंथों का अनुवाद भी किया है। सहजता और सरलता उनकी भाषा का सबसे बड़ा गुण है। सरल, सहज और बोलचाल की भाषा में लिखे गए उनके निबंध, संस्करण और यात्रा वृतांत बड़े चर्चित रहे हैं।

पाठ का सार

- लेखक कहते हैं की सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हे समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है तो कभी अलग। आखिर ये दोनों एक हैं या अलग। लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार का उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

- अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोजकर आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नही जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते है लेकिन हम इन्हे अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नही कह सकते।

- मानव हित में काम न करने वाली संस्कृति का नाम असंस्कृति है। इसे संस्कृति नही कहा जा सकता। यह निश्चित ही असभ्यता को जन्म देती है। मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का ही नाम संस्कृति है।

गद्यांश संबंधी परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

गद्यांश I. (पृष्ठ- 129) एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नये तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भांति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का अविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है; जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम

आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

1. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कौन हैं?

(क) जिसने नए तथ्य के दर्शन किए हों। (ख) जिसको कोई चीज अनायास प्राप्त हो गई हो।

(ग) जिसे पूर्वज से चीज प्राप्त हो गई हो। (घ) दिमाग वाला

2. गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत किसने खोजा?

(क) जॉनसन ने (ख) न्यूटन (ग) म्यूटन ने (घ) प्रकृति

3. 'भौतिक' शब्द में किए प्रत्यय का प्रयोग है?

(क) भूत (ख) तिक (ग) इक (घ) क

4. 'अनायास' शब्द का सही अर्थ है।

(क) बिना प्रयास के (ख) प्रयास से (ग) जिसकी अमंशा हो (घ) जिसमें निराशा हो

5. इस पाठ के लेखक कौन है?

(क) आनंद (ख) भदंत आनंद कौसल्यायन (ग) भदन्त स्वामी (घ) वंशी घर

उत्तर- 1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5. (ख)।

<u>गद्यांश II.</u> (पृष्ठ-130) हमारी समझ में मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है; वह भी संस्कृति है जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है, वह भी है; और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह भी संस्कृति है। और सभ्यता ? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे गमनागमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का अविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा

तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा ?

1. संस्कृति क्या है?

(क) जो योग्यता सुई-धागे का आविष्कार कराती है।

(ख) जो योग्यता तारों की जानकारी देती है।

(ग) जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है।

(घ) उपर्युक्त सभी

2. सभ्यता क्या है?

(क) संस्कृति का परिणाम (ख) ओढ़ने पहनने का तरीका

(ग) दूसरों को बताना (घ) उपर्युक्त सभी

3. कौन-सी बात सभ्यता के अंतर्गत आती है?

(क) खान-पीने का तरीका (ख) ओढ़ने पहनने का तरीक़ा

(ग) हमारे गमनागमन के साधन (घ) उपर्युक्त सभी

4. किसे असभ्यता समझा जाना चाहिए?

(क) आत्म विनाश के साधन जुटाना (ख) धन कमाना

(ग) दूसरों का कल्याण करना (घ) अन्य उपाय

5. 'असंस्कृति' में 'अ' क्या है?

(क) उपसर्ग (ख) प्रत्यय (ग) मूलशब्द (घ) कुछ नही

उत्तर- 1. (घ), 2. (क), 3. (घ), 4. (क), 5. (क) ।

पाठ्य पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर - लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ न बन पाने का कारण यही है कि इन शब्दों का प्रयोग तो बहुत अधिक होता है, लेकिन इनके अर्थों को जानने के लिए हम गंभीरतापूर्वक विचार नहीं करते। इस पर भी कई प्रकार के विशेषण जैसे कि 'भौतिक सभ्यता', 'आध्यात्मिक सभ्यता' या 'हिंदू संस्कृति' अथवा 'मुस्लिम संस्कृति' आदि का प्रयोग करके इन्हें और भी उलझा दिया जाता है और बात समझ से बिल्कुल बाहर हो जाती है।

2. आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है ? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे ?

उत्तर- आग की खोज को एक बहुत बड़ी खोज माने जाने का कारण यह है कि इसने मानव-सभ्यता का स्वरूप ही बदल दिया। आग की खोज से पूर्व आदि मानव फल, अनाज या मांस को कच्चा ही खाता रहा था। आग की खोज ने भोजन पकाने ही नहीं, धातुओं को ढालने, बर्तन और हथियार बनाने जैसी विधियों का विकास भी किया, जो आधुनिक सभ्यता के विकास का आधार बना। इस खोज के पीछे की मुख्य प्रेरणा तो वक्त-बेवक्त भोजन का प्रबंध कर पाने की क्षमता प्राप्त करना ही रहा होगा। लेकिन इसने मानव समाज की दशा और प्रगति की दिशा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

3. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है ?

उत्तर- जो व्यक्ति केवल अपना पेट भरने या तन ढँकने तक ही अपनी योग्यताओं को सीमित नहीं रखता, वही वास्तविक अर्थों में एक संस्कृत व्यक्ति है। जो व्यक्ति अपनी बुद्धि और क्षमताओं का प्रयोग अज्ञात को जान लेने की दिशा में करने वाला हो तथा जाने हुए को मानव मात्र के कल्याण के लिए लगा देने का प्रयास करने वाला हो, सही अर्थों में संस्कृत है। संस्कृति का आधार ही मानव कल्याण है। जो व्यक्ति मानव मात्र के कल्याण से हटकर निजि हितों का पोषण करने की भावना से प्रेरित है, उसे संस्कृत नहीं कहा जा सकता, भले ही वह कितना ही बड़ा ज्ञानी या सभ्य (सुविधासंपन्न) क्यों न हो।

4.. न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन-से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित

सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों ?

उत्तर- लेखक के अनुसार न्यूटन एक संस्कृत मानव था। क्योंकि उसकी जिज्ञासा बड़ी तीव्र थी। न्यूटन से पूर्व भी चीजें - धरती पर ही गिरती थीं, लेकिन इस विषय के बारे में जानने की बेचैनी न्यूटन को ही हुई थी। यह इतनी तीव्र थी कि उसने उसे गुरुत्वाकर्षण शक्ति के सिद्धांत की खोज के लिए प्रेरित किया। न्यूटन ने प्राप्त ज्ञान को अपने तक ही सीमित न रखकर सबको बांट दिया उसके सिद्धांत मानव सभ्यता को प्रगति के पथ पर ले गए। यदि लेखक यह कहता है कि न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते तो उसका अभिप्राय यही है कि उनके कार्य उस महान भावना से प्रेरित नहीं है, जिसे न्यूटन को प्रेरित किया था। दूसरे न्यूटन ने यह कार्य साधनों के अभाव में बिना किसी पूर्व मार्गदर्शन के किया था।

5. किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का अविष्कार हुआ होगा ?

उत्तर- सुई-धागे के अविष्कार के पीछे दो मुख्य प्रवृत्तियाँ रही होंगी सर्दी तथा गर्मी के प्रभाव से बचने के लिए वस्त्रों को शरीर पर भली भांति बाँध लेने की आवश्यकता। दूसरे इसमें कहीं सजने-संवरने की प्रवृत्ति ने भी प्रेरक की भूमिका निभाई होगी।

6. " मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।" - किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए, जब

(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गई।

उत्तर- लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन मानव संस्कृति को एक अविभाज्य वस्तु मानते हैं। लेकिन इतिहास गवाह है कि इस प्रकार की चेष्टाएँ होती रहती हैं, जब यह सांस्कृतिक एकता पर विभाजित होने लगती है। हिटलर ने नस्लवादी श्रेष्ठता को आधार बनाकर यूरोप में हज़ारों निरपराधों को मौत के घाट उतार दिया। यह मानव संस्कृति को विभाजित करने की एक चेष्टा थी। इसी प्रकार 'हिंदू संस्कृति' तथा 'मुस्लिम संस्कृति' के आधार पर अनेक प्रकार के विभाजन के प्रयास हमारे देश में होते ही रहते हैं।

(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

उत्तर- मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण अनेको बार दिया है। लेखक ने दो मूल बातों का उल्लेख किया है- एक तो अग्नि का तथा दूसरे सुई-धागे का अविष्कार। ये दो ऐसी चीजें हैं जो मानव मात्र के कल्याण से जुड़ी हैं, विश्व के हर कोने में इनका प्रयोग होता है।

7. आशय स्पष्ट कीजिए-

मानव की जो योग्यता उससे आत्म विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ?

उत्तर- लेखक का यह सुनिश्चित मत है कि संस्कृति वह योग्यता है, जो मनुष्य से किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए साधन का अविष्कार करवा लेती है। ऐसी क्षमताओं से संपन्न व्यक्ति संस्कृत है, किंतु इसमें भी यह आवश्यक है कि जो भी अनुसंधान या अविष्कार वह करे, उसमें मानव मात्र के कल्याण की भावना निहित हो। यदि हम हथियारों का निर्माण करके विनाश के साधन खोज रहे हैं तो वह संस्कृति नहीं बल्कि असंस्कृति है क्योंकि इसमें सबके कल्याण नहीं, अपितु अकल्याण का भाव निहित है। लेखक के अनुसार 'सर्वे भवंतु सुखिना' का भाव ही संस्कृति है।

<u>रचना और अभिव्यक्ति :</u>

8. लेखक ने अपने दृष्टिकोण से सभ्यता और संस्कृति की एक परिभाषा दी है। आप सभ्यता और संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं, लिखिए।

उत्तर - दूसरे धर्म, जाति एवं समाज के प्रति सम्मान का भाव तथा अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति का विकास करना सच्ची सभ्यता एवं संस्कृति है। समानता का भाव एवं सभी का कल्याण करना हमारी दृष्टि से संस्कृति का सर्वोत्तम रूप होता है। वास्तव में उसी सभ्यता का प्रसार सर्वाधिक हुआ है जिसका मूल उद्देश्य सबकी मंगलकामना रही है।

परीक्षापयोगी अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. सभ्यता और संस्कृति जैसे शब्द और भी भ्रामक कब बन जाते हैं?

उत्तर- सभ्यता और संस्कृति जैसे शब्द तब और भी भ्रामक बन जाते हैं जब इन शब्दों के साथ

आध्यात्मिक, भौतिक विशेषण आदि जुड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति इनका अर्थ गलत-सलत हो जाता है।

प्रश्न 2. आग के आविष्कारक को बड़ा आविष्कर्ता क्यों कहा गया है?

उत्तर- आग के आविष्कारक को बड़ा आविष्कारकर्ता इसलिए कहा गया है क्योंकि आग के आविष्कार ने मनुष्य को सभ्य बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इससे एक ओर मनुष्य के पेट की ज्वाला शांत हुई तो दूसरी ओर उसे प्रकाश और ऊष्मा भी मिली।

प्रश्न 3. संस्कृति और सभ्यता क्या हैं?

उत्तर- संस्कृति एक संस्कृत मनुष्य की वह योग्यता प्रेरणा अथवा प्रवृत्ति है जिसके बल पर वह किसी नए तथ्य का दर्शन करता है। इस संस्कृति के द्वारा समाज के लिए कल्याणकारी आविष्कार कर जाता है जो मनुष्य को सभ्य बनने में सहायता करता है वही सभ्यता है।

प्रश्न 4. एक संस्कृत मानव और सभ्य मानव में क्या अंतर है?

उत्तर- एक संस्कृत मानव वह है जो अपने ज्ञान एवं बुधि-विवेक से किसी नए तथ्य का दर्शन और आविष्कार करता है। इसके विपरीत सभ्य मानवे वह है जो इन आविष्कारों का उपयोग करके अपना रहना-सुधारता है और सभ्य बनता है।

प्रश्न 5. न्यूटन से भी अधिक ज्ञान रखने वाले और उन्नत जीवन शैली अपनाने वाले को संस्कृत कहेंगे या सभ्य और क्यों?

उत्तर- न्यूटन से भी अधिक ज्ञान रखने वाले और उन्नत जीवन शैली अपनाने वाले व्यक्ति को सभ्य कहा जाएगा क्योंकि ऐसा व्यक्ति न्यूटन द्वारा आविष्कृत गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के अलावा भले ही बहुत कुछ जानता हो पर उसने किसी नए तथ्य का आविष्कार नहीं किया है, बल्कि दूसरों के आविष्कारों का प्रयोग करते-करते सभ्य बन गया है।

प्रश्न 6. संस्कृत व्यक्तियों के लिए भौतिक प्रेरणा का क्या महत्त्व है, उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- संस्कृत व्यक्तियों का सदा यही प्रयास रहता है कि वे अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नए तथ्य की खोज करें। इसमें भौतिक प्रेरणाओं का बहुत योगदान होता है। ऐसा व्यक्ति तन बँका और पेट भरा होने पर भी खाली नहीं बैठता है और भौतिक प्रेरणाओं के प्रति जिज्ञासु बना रहता है और इस जिज्ञासा को शांत करने में प्रयासरत रहता है।

प्रश्न 7. सिद्धार्थ ने मानव संस्कृति में किस तरह योगदान दिया?

उत्तर- सिद्धार्थ राजा शुद्धोदन के पुत्र थे, जिनके पास सुख-सुविधाओं का विशाल भंडार था पर सिद्धार्थ को मानवता का दुख दुखी कर रहा था। उन्होंने इस दुखी मानवता के दुख के निवारणार्थ अपने सुख को ठोकर मारकर ज्ञान की प्राप्ति हेतु निकल पड़े जिसका लाभ उठाकर मनुष्य दुखों से छुटकारा पा सके।

प्रश्न 8. संस्कृति के असंस्कृति बनने का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए बताइए इस असंस्कृति का परिणाम क्या होगा?

उत्तर- संस्कृति मनुष्य का सदा कल्याण करती है। जब संस्कृति से कल्याण की भावना समाप्त होती है तो वह असंस्कृति बन जाती है। संस्कृति मनुष्य को सभ्य बनाती है परंतु इस असंस्कृति का परिणाम यह होगा कि सर्वत्र असभ्यता का बोलबाला होगा जिससे मनुष्यता के लिए खतरा पैदा हो जाएगा।

प्रश्न 9. संस्कृति का कूड़ा-करकट' किसे कहा गया है?

उत्तर- संस्कृति का कूड़ा-करकट उन सड़ी गली परंपराओं और कुरीतियों को कहा गया है जो समाज के विकास में बाधक सिद्ध होने के साथ ही मानवता हेतु अकल्याणकारी सिद्ध होती है तथा कुछ लोगों को दबाने का प्रयास करती हैं।

प्रश्न 10. 'संस्कृति' पाठ का उद्देश्य या उसमें निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'संस्कृति' पाठ से स्पष्ट होता है कि ज्ञानी एवं बुद्धिमान लोगों द्वारा नए-नए आविष्कार करने की प्रेरणा उसकी संस्कृति है जिससे मानवता का कल्याण होता है। इसी संस्कृति का परिणाम सभ्यता है। संस्कृति के मूल में कल्याण की भावना समाई होती है। मनुष्य को अपने कार्यों से

कल्याण की भावना में कमी नहीं आने देना चाहिए। मनुष्य का सदा यही प्रयास होना चाहिए कि उसकी सभ्यता असभ्यता न बनने पाए।

प्रश्न 11. ऐसे कौन से दो शब्द हैं, जो सबसे अधिक उपयोग में आने पर भी सबसे कम समझ में आते हैं? ऐसा क्यों है ?

उत्तर - सभ्यता और संस्कृति ही वे दो शब्द हैं जिनका उपयोग सबसे अधिक होता है, लेकिन ये ही सबसे कम समझ में आते हैं। इसका कारण यह है कि हम इनके अर्थों पर गंभीरतापूर्वक विचार ही नहीं करते। जब जैसा जी चाहे इनका इच्छानुसार मन चाहे अर्थों में प्रयोग कर लेते हैं। जिस कारण से इनके बारे में जो कुछ थोड़ा-बहुत समझ पाने की संभावना होती भी है, वह भी समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 12. सभ्यता और संस्कृति परस्पर संबद्ध होने पर भी भिन्न हैं, कैसे ?

उत्तर - सभ्यता और संस्कृति परस्पर संबंद्ध होने पर भी भिन्न हैं। सभ्यता संस्कृति का ही फल है, अतः ये परस्पर संबद्ध हैं, लेकिन ये दोनों एक ही चीज न होकर अलग-अलग हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे पेड़ और उसका फल एक ही चीज़ नहीं होते। संस्कृति का अर्थ है- कल्याण के उद्देश्य से कर्म करने की योग्यता, जबकि सभ्यता का अर्थ है- समाज का - व्यवहार, खाने-पीने, ओढ़ने बिछाने व बोल-चाल के तौर-तरीके।

प्रश्न 13. हम कैसे कह सकते हैं कि लेनिन और कार्लमार्क्स संस्कृत थे?

उत्तर - इतिहास इस बात का गवाह है कि लेनिन के मन में अपने साथियों और सहयोगियों के लिए सहानुभूति और - अपनेपन का भाव था। वे अपने हिस्से की रोटी भी अपने साथियों को खिला देते थे। कार्लमार्क्स भी जीवन भर इसलिए कष्ट उठाते रहे क्योंकि मजदूरों की जिंदगी में सुख आ सके। इस प्रकार ये दोनों व्यक्ति अपने लिए न जी कर औरों के लिए जीते थे। उनमें औरों के कल्याण के लिए कष्ट सहने की क्षमता थी, इसलिए हम कह सकते हैं कि लेनिन और कार्लमार्क्स वे संस्कृत अर्थात लोक-कल्याण की चेतना से संपन्न व्यक्ति थे।

प्रश्न 14. लेखक के अनुसार संस्कृति क्या है,वह किसे सांस्कृतिक चेतना मानने को तैयार नहीं ?

उत्तर - लेखक के अनुसार संस्कृति मानव के मन की वह क्षमता है, जो उसे किसी समस्या का

समाधान ढूंढ़ने के लिए - प्रेरित करती है और फिर उस समाधान को लोक कल्याण के लिए प्रयोग में लाने के लिए प्रेरित करती है। वह क्षमता या योग्यता जो मनुष्य को विनाश के साधनों जैसे बंब या नशीले पदार्थों की खोज के लिए प्रेरित करती है, वह सांस्कृतिक चेतना नहीं हो सकती।

**********@@**********@@**********

कक्षा दसवीं कृतिका भाग-2

पाठ-1 माता का अँचल: -शिव पूजन सहाय

लेखक परिचय

लेखक का नाम : शिव पूजन सहाय

शिव पूजन सहाय का जन्म -- 1893 ई

शिव पूजन सहाय का जन्म स्थान -- उनवास गांव, जिला भोजपुर, बिहार।

शिव पूजन सहाय का देहांत -- 1963 ई।

शिव पूजन सहाय के बचपन का नाम -- भोलानाथ

इन्होंने दसवीं की परीक्षा पास कर बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी कर ली। बाद में अध्यापक बन गये। असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। शिव पूजन सहाय अपने लेखन से हिन्दी साहित्य में बहुत सम्मानित और प्रभावी , और लोकप्रिय थे।

इन्होंने जागरण, हिमालय, माधुरी, बालक आदि प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। प्रतिष्ठित पत्रिका मतवाला के संपादक मंडल में भी शिव पूजन सहाय का स्थान था। शिव पूजन सहाय मुख्यतया गद्य लेखक थे। देहाती दुनिया, ग्राम सुधार, वे दिन वे लोग, स्मृति शेष जैसी रचनाएं उन्होंने हिन्दी साहित्य को प्रदान किया है। शिव पूजन रचनावली के नाम से चार खंडों में उनकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

पाठ का सार

'माता का अंचल' एक वात्सल्य रस का पाठ है। इसमें लेखक ने अपने बचपन के समय के खेल-तमाशों, रुचियों-अरुचियों और शरारतों का सुन्दर वर्णन किया है। यह पाठ वात्सल्य प्रेम का एक अनूठा उदाहरण भी है। यह कहानी हमें बताती है कि एक छोटे बच्चे को दुनिया की सारी खुशियां व सुरक्षा और शांति उसे सिर्फ माँ के अँचल में ही मिलती है।

पार्ट-1

पाठ का सार कुछ इस प्रकार है- लेखक शिवपूजन सहाय के बचपन का नाम 'तारकेश्वरनाथ' था। मगर घर में उन्हें 'भोलानाथ' कहकर बुलाया जाता था। भोलानाथ अपने पिता को 'बाबूजी' व माँ को 'मइयाँ' कहा करते थे। बचपन में भोलानाथ का अधिकतर समय अपने पिता के साथ ही गुजरता था। वो अपने पिता के साथ ही सोते, सुबह जल्दी उठकर, नहा-धोकर पूजा करने बैठ जाया करते थे।

पार्ट-2

लेखक अपने बाबूजी से अपने माथे पर तिलक लगाकर खूब खुश होते थे। जब बाबूजी रामायण पाठ करते थे तो लेखक उनकी बगल में बैठकर शीशे में अपना मुँह देखा करते थे। जब उनके पिताजी उनको देख लेते थे, तब वे शरमा जाते थे। उनकी इस बात पर उनके पिता भी हँस देते थे ।

पूजा अर्चना करने के बाद पिताजी अपनी रामनामा बही पर हजार राम-नाम लिख देते थे। उसके बाद कागज के टुकड़ों पर 500 बार राम नाम लिखी कागज की पर्चियों को आटे की छोटी गोलियों में रखकर अपने के कंधे पर बैठकर गंगा जी के पास जाते थे। और वहाँ उन आटे की गोलियां मछलियों को खिला देते थे। कभी-कभी लेखक अपने बाबूजी के साथ कुश्ती भी लड़ते थे। पिताजी जानबूझकर हार जाते थे तो लेखक खूब खुश होते थे।

पार्ट-3

जब वे अपने पिताजी के साथ घर में खाना खाते थे। तो भोलानाथ की माँ उन्हें अनेक पक्षियों के नाम से निवाले बनाकर बड़े प्यार से खिलाती थी। भोलानाथ की माँ उनको बहुत लाड -प्यार करती थी। वह कभी उन्हें अपनी बाहों में भर लेती, तो कभी-कभी उन्हें जबरदस्ती पकड़ कर उनके सिर पर कड़वे तेल (सरसों का तेल) से मालिश कर देती थी। तो लेखक रोता था। इस पर बाबूजी भोलानाथ की माँ से नाराज हो जाते थे। लेकिन उसकी माँ उसके माथे पर बिंदी और चोटी बनाकर, फूलदार लट्टू बनाकर भोलानाथ को रंगीन कुर्ता व टोपी पहना कर उन्हें 'कन्हैया' जैसा सजा देती थी।

जब वह अपने साथियों के साथ मिल जाता था तब खूब मौजमस्ती करता था। इन तमाशों में तरह-तरह के नाटक शामिल होते थे। कभी चबूतरे का एक कोना ही उनका नाटक घर बन जाता तो, कभी बाबूजी की नहाने वाली चौकी को ही रंगमंच बना लेते थे। उस रंगमंच पर मिठाइयों की दुकान लगा लेते जिसमें लड्डू, बताशे, जलेबियाँ आदि सजा दिये जाते थे। और फिर जस्ते के छोटे-छोटे टुकड़ों के बने पैसों से बच्चे उन मिठाइयों को खरीदने का नाटक करते थे। भोलानाथ के पिताजी भी कभी-कभी वहाँ से खरीदारी कर लिया करते थे।

पार्ट-4

थोड़ी देर में ऐसे ही नाटक में कभी घरोंदा बना दिया जाता था जिसमें घर की पूरी सामग्री रखी हुई नजर आती थी। तो कभी-कभी बच्चे बारात का भी जुलूस निकालते थे। जिसमें तंबूरा और शहनाई भी बजाई जाती थी। दुल्हन को भी विदा कर लाया जाता था। जैसे ही बाबूजी दुल्हन का मुँह देखने पहुँचते, सब बच्चे हँसकर भाग जाते थे। लेखक के पिताजी भी बच्चों के खेलों में भाग लेकर उनका आनंद उठाते थे। बस इसी हँसी खुशी में भोलानाथ का पूरा बचपन मजे से बीत रहा था।

एक दिन सारे बच्चे आम के बाग़ में खेल रहे थे। तभी आँधी के बाद जोर से बारिस हुई । जब बारिश बंद हुई तो वहाँ बहुत सारे बिच्छू निकल आए जिन्हें देखकर सारे बच्चे डर के मारे भागने लगे। संयोग से उन्हें रास्ते में बूढ़ा मूसन तिवारी मिल गया। भोलानाथ और उसके दोस्त बैजू ने उन्हें चिढ़ाया। फिर क्या था बैजू की देखा देखी सारे बच्चे मूसन तिवारी को चिढ़ाने लगे। मूसन तिवारी ने बच्चों को दौड़ा लिया। और उनका पीछा करते हुए पाठशाला में पहुँच गए। मूसन तिवारी ने उनकी शिकायत गुरु जी से कर दी। गुरु जी ने बैजू और भोलानाथ को पकड़ लाने के लिए कहा। दोनों को पकड़कर स्कूल लाया जाता है। बैजू भाग जाता है। और भोला नाथ की गुरूजी खबर लेते हैं ।

पार्ट-5

लेखक के पिताजी को जब पता चलता है, तो वे स्कूल जाते हैं। जैसे ही भोलानाथ ने अपने बाबूजी को देखा तो वो दौड़कर बाबूजी की गोद में चढ़ गए। और रोते-रोते उनका कंधा अपने आंसुओं से गीला कर देते हैं। वे उसे खूब पुचकारते हैं। बाबूजी गुरूजी से मिनती कर भोलानाथ को घर लेकर चल देते हैं। रास्ते में उसे अपनी मित्र मंडली मिल जाती है। उनको देखते ही रोना भूलकर मित्र मंडली में शामिल हो जाता है। मित्र मंडली उस समय चिड़ियों को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। भोलानाथ भी चिड़ियों को पकड़ने लगता है। चिड़ियाँ उनके हाथ नहीं आती हैं। अचानक सब एक टीले पर जाकर चूहों के बिल में पानी डालना शुरू कर देते हैं। तभी वहाँ से एक सांप निकल आता है। सब बच्चे डर के मारे भागते हैं। कोई औंधा गिरता, कोई चित्त। किसी का सिर फूटा, किसी के दाँत टूटे । सभी गिरते-पड़ते जैसे-तैसे घर पहुँचते हैं। भोलानाथ दौड़ता हुआ आता है और घर में घुस जाता है। बाबूजी बरामदे में बैठकर हुक्का पी रहे थे। उन्होंने बुलाया लेकिन वह माता की गोद जाकर छिप जाता है। भोलानाथ अधिकतर समय अपने बाबूजी के साथ बिताता था, लेकिन उस समय बाबूजी के पास नहीं गया।

पार्ट-6

बच्चे को काँपता हुआ देखकर माँ रोने लगती है और उसे चूमने लगती है। वह जल्दी हल्दी पीसकर घावों को पोछकर लगाती है। माँ उसे गले से लगा लेती है। बाबूजी उसे गोद लेने की कोशिश करते हैं परन्तु वह माँ का आंचल नहीं छोड़ता है ।

धन्यवाद!

माता के अँचल पाठ का उद्देश्य

इस रचना के माध्यम से लेखक ने हमें यह बताने का प्रयास किया है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव भी क्यों न हो लेकिन छोटा बच्चा विपदा के समय हमेशा माँ के ही पास जाता है।

अपने इस लेख से लेखक हमें एक बच्चे की ओर उसकी माँ के बीच के प्यार के बंधन को दिखाना चाहते हैं। लेखक के अनुसार बच्चे चाहे पिता के साथ कितना ही घुल-मिले क्यों न हो। उनसे कितना ही लगाव क्यों न रखते हो। लेकिन जब विपदा की घड़ी आती है, तो बच्चे अपनी माँ की अँचल में खुद को सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ

- अंचल - गोद, अँचल
- मृदंग - ढोलक जैसा एक वाद्ययंत्र
- तड़के-सबेरा

- निबट-शौच आदि क्रिया करना
- भभूत- राख
- लिलार- ललाट,माथा

- त्रिपुंड करना - एक प्रकार का तिलक लगाना
- विराजमान-उपस्थित होना
- शिथिल-ढीला
- गोरस-दूध

- भात-चाँवल
- अफर जाना -भरपेट भोजन करना
- हठ-जिद
- ठौर-जगह
- महतारी-माता
- मरदुए-नर,आदमी
- कडुआ तेल - सरसों का तेल
- बोथना -सराबोर करना (ज्यादा लगाना)
- उबटना-उबटन लगाना(हल्दी,बेसन का लेप)
- बाट जोहना - प्रतीक्षा करना
- सरकंडा-एक तरह की नुकीली घास
- आचमनी - छोटी चम्मच
- ठीकरा- मिट्टी का टुकड़ा
- तम्बूरा-एक वाद्य यन्त्र
- अमोला-आम का उगता हुआ पौधा
- कुल्हिए-मिट्टी का लोटा
- खटोली- छोटी सी खाट
- ओहार-परदे के लिए डाला कपड़ा
- उघारना -हटाना
- जुआठा-बैल को हल में जोतना
- बटोही-राही,पथिक
- रहरी-अरहर (दाल)
- बिलाई-घुल गई
- अन्ठई-कुत्ते के शरीरसे चिपके रहने वाले कीड़े
- चिरौरी- याचना,दीनता से की गई प्रार्थना
- मृदंग - एक प्रकार का वाद्य-यंत्र
- तड़के - सुबह

- लिलार – ललाट, माथा
- त्रिपुंड -एक प्रकार का तिलक जिसमें माथे पर तीन आड़ी या अर्धचंद्र के आकार की रेखाएँ बनाई जाती हैं
- जटाएँ - बाल
- भभूत - राख
- विराजमान - स्थापित,
- उतान - पीठ के बल लेटना
- सामकर - मिलाकर
- अफ़र जाते – भरपेट खा लेते
- ठौर – स्थान
- कड़वा तेल – सरसों का तेल
- बोथकर – सराबोर कर देना
- चंदोआ - छोटा शमियाना
- ज्योनार – भोज, दावत
- जीमने – भोजन करना
- कनस्तर – टीन का एक बर्तन
- ओहार - परदे के लिए डाला हुआ कपड़ा
- अमोले - आम का उगता हुआ पौधा
- कसोरे - मिट्टी का बना छिछला कटोरा
- रहरी- अरहर
- चिरौरी – विनती
- मइयाँ - माँ
- महतारी – माँ
- अमनिया – शुद्ध
- ओसारे में – बरामदे में

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भोलानाथ किसको देखकर सिसकना भूल जाते थे ?

(क) अपनी माँ को (ख) अपने पिता को (ग) अपने भाई को (घ) खेल के साथियों को

उत्तर: (घ) खेल के साथियों को।

2. भोलानाथ और उसके साथी अपने घरौंदे के किवाड़ किस चीज से बनाते थे ?

(क) पेड़ के पत्तों से (ख) दियासलाई की डिबिया से

(ग) उत्तर पुस्तिका के गत्ते से (घ) टीन के टुकड़े से

उत्तर: (ख) दियासलाई की डिबिया से।

3. भोलानाथ और उसके साथी निम्न में से कौन-सा खेल नहीं खेलते थे ?

(क) मिठाई की दुकान सजाना (ख) खेती करना

(ग) बारात का जुलूस निकालना (घ) क्रिकेट खेलना

उत्तर: (घ) क्रिकेट खेलना

4.दो लड़के बैल बनकर क्या खींचते थे ?

(क) मोट खींचते थे (ख) हल खींचते थे (ग) बैलगाड़ी खींचते थे (घ) आपस में लड़ते थे

उत्तर: (क) मोट खींचते थे।

5.'बुढ़वा बेईमान माँगे करेला का चोखा' कहकर बच्चों ने किसको चिढ़ाया था?

(क) बूढ़े दूल्हे को (ख) स्कूल के हेडमास्टर को (ग) मूसन तिवारी को (घ) पाधा जी को

उत्तर: (ग) मूसन तिवारी को।

6.मकई के खेत में किनका झुंड चर रहा था ?

(क) बकरियों का (ख) भैसों का (ग) चिड़ियों का (घ) भेड़ों का

उत्तर: (ग) चिड़ियों का।

7.लड़के और ..... पराई पीर नहीं समझते?

(क) लंगूर (ख) गधे (ग) बंदर (घ) घोड़े

उत्तर: (ग) बंदर।

8.जब भोलानाथ चूहे के बिल में पानी डालकर आया उस समय उसकी माँ क्या कर रही थी ?

(क) दाल बना रही थी (ख) चावल साफ कर रही थी (ग) सो रही थी (घ) कढ़ाई का कार्य कर रही थी

उत्तर: (ख) चावल साफ कर रही थी।

9.माँ ने भोलानाथ के घावों पर क्या लगाया ?

(क) मरहम (ख) नीम के पत्ते (ग) घास वेल (घ) पिसी हुई हल्दी

उत्तर: (घ) पिसी हुई हल्दी।

10.भोलेनाथ को कौन-सी शरारत महँगी पड़ी?

(क) चूहों के बिल में पानी डालना (ख) गुल्ली-डंडा खेलना

(ग) दोस्तों के साथ स्कूल बंक करना (घ) बारातियों को चिढ़ाना

उत्तर: (क) चूहों के बिल में पानी डालना

11.चूहों के बिल में पानी डालने से बिल से क्या निकला ?

(क) चूहा (ख) छडूंदर (ग) नेवला (घ) साँप

उत्तर: (घ) साँप

12.साँप से डरकर भोलानाथ ने कहाँ शरण ली ?

(क) पिता जी के पास (ख) माता के अँचल में (ग) मित्र के घर (घ) विद्यालय में

उत्तर: (ख) माता के अँचल में

13.'माता के अँचल' उपन्यास में कब का घटनाक्रम अंकित है ?

(क) उन्नीस सौ तीस के दशक का (ख) उन्नीस सौ चालीस के दशक का

(ग) उन्नीस सौ पचास के दशक का (घ) उन्नीस सौ बीस के दशक का

उत्तर: (क) उन्नीस सौ तीस के दशक का

14. लेखक को उनके पिता क्या कहकर पुकारते थे ?

(क) भोलानाथ (ख) तारकेश्वरनाथ (ग) शिवपूजन (घ) हरिनंदन

उत्तर: (क) भोलेनाथ।

15.लेखक का असल का नाम क्या था ?

(क) शिवपूजन सहाय (ख) तारकेश्वरनाथ (ग) रामनाथ (घ) भोलानाथ
उत्तर: (ख) तारकेश्वरनाथ।

16. मृदंग कब बजती है ?
(क) जब बूढ़ों का संग होता है (ख) जब विद्वानों का संग होता है
(ग) जब लड़कों का संग हो । (घ) जब एकांत हो
उत्तर: (ग) जब लड़कों का संग हो।

17. लेखक बचपन से ही किसके गले लग गए थे ?
(क) माता के (ख) भाई के (ग) बुआ के (घ) पिता के
उत्तर: (घ) पिता के।

18.लेखक (भोलानाथ) के पिता रामनामी बही में कितनी बार राम-राम लिखते थे ?
(क) एक हजार (ख) ग्यारह सौ (ग) एक सौ आठ बार (घ) एक हजार आठ बार
उत्तर: (क) एक हजार

19.लेखक के पिता आटे की गोलियाँ किसे खिलाते थे?
(क) गाय को (ख) चिड़ियों को (ग) बत्तख को (घ) मछलियों को
उत्तर: (घ) मछलियों को।

पाठ्य पुस्तक प्रश्न

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी, अत्यधिक ममता और माँ की गोदी की जरूरत थी। उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती

थी, उतनी पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी याद आती है, बाप या नाना नहीं। माँ का लाड़ घाव को भरने वाले मरहम का काम करता है।

प्रश्न 2. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?
उत्तर- शिशु अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रुचि लेता है। उनके साथ खेलना अच्छा लगता है। अपनी उम्र के साथ जिस रुचि से खेलता है वह रुचि बड़ों के साथ नहीं होती है। दूसरा कारण मनोवैज्ञानिक भी है-बच्चे को अपने साथियों के बीच सिसकने या रोने में हीनता का अनुभव होता है। यही कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 3.भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर-भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री से हमारे खेल और खेल सामग्रियों में कल्पना से अधिक अंतर आ गया है। भोलानाथ के समय में परिवार से लेकर दूर पड़ोस तक आत्मीय संबंध थे, जिससे खेलने की स्वच्छंदता थी। बाहरी घटनाओं-अपहरण आदि का भय नहीं था। खेल की सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी, जिससे किसी प्रकार ही हानि की संभावना नहीं थी। धूल- मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी। न कोई रोक, न कोई डर, न किसी का निर्देशन । जो था वह सब सामूहिक बुधि की उपज थी। आज भोलानाथ के समय से सर्वथा भिन्न खेल और खेल सामग्री और ऊपर से बड़ों का निर्देशन और सुरक्षा हर समय सिर पर हावी रहता है। आज खेल सामग्री स्वनिर्मित न होकर बाज़ार से खरीदी हुई होती है। खेलने की समय-सीमा भी तय कर दी जाती है। अतः स्वच्छंदता नहीं होती है। धूल-मिट्टी से बच्चों का परिचय ही नहीं होता है।

प्रश्न 4.पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?
उत्तर-पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब एक साँप सब बच्चों के पीछे पड़ जाता है। तब वे बच्चे किस प्रकार गिरते-पड़ते भागते हैं और माँ की गोद में छिपकर सहारा लेते हैं-यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है।| इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष रूप से बच्चे के पिता का मित्रतापूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का

पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

प्रश्न 5.इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर-आज की ग्रामीण संस्कृति को देखकर और इस उपन्यास के अंश को पढ़कर ऐसा लगता है कि कैसी अच्छी रही होगी वह समूह-संस्कृति, जो आत्मीय स्नेह और समूह में रहने का बोध कराती थी। आज ऐसे दृश्य दिखाई नहीं देते हैं। पुरुषों की सामूहिक-कार्य प्रणाली भी समाप्त हो गई है। अतः ग्रामीण संस्कृति में आए परिवर्तन के कारण वे दृश्य नहीं दिखाई देते हैं जो तीस के दशक में रहे होंगे- आज घर सिमट गए हैं। घरों के आगे चबूतरों का प्रचलन समाप्त हो गया है। आज परिवारों में एकल संस्कृति ने जन्म ले लिया, जिससे समूह में बच्चे अब दिखाई नहीं देते। आज बच्चों के खेलने की सामग्री और खेल बदल चुके हैं। खेल खर्चीले हो गए हैं। जो परिवार खर्च नहीं कर पाते हैं वे बच्चों को हीन-भावना से बचाने के लिए समूह में जाने से रोकते हैं। आज की नई संस्कृति बच्चों को धूल-मिट्टी से बचना चाहती है। घरों के बाहर पर्याप्त मैदान भी नहीं रहे, लोग स्वयं डिब्बों जैसे घरों में रहने लगे हैं।

प्रश्न 6. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-पिता का अपने साथ शिशु को नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना, माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठाकर झूला झुलाना कितना मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है।

पिता के साथ कुश्ती लड़ना, बच्चे के गालों का चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा पूँछे पकड़ने पर बनावटी रोना रोने का नाटक और शिशु को हँस पड़ना अत्यंत जीवंत लगता है।

माँ के द्वारा गोरस-भात, तोता-मैना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना, शिशु का शृंगार करना और शिशु का सिसकना, बच्चों की टोली को देख सिसकना बंद कर विविध प्रकार के खेल खेलना और मूसन तिवारी को चिढ़ाना आदि अद्‌भुत दृश्य उकेरे गए हैं। ये सभी दृश्य अपने शैशव की याद दिलाते हैं।

प्रश्न 7 . माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर-इस पाठ के लिए माता का अँचल' शीर्षक उपयुक्त नहीं है। इसमें लेखक के शैशव की तीन विशेषताओं का वर्णन हुआ है-
बच्चे का पिता के साथ लगाव
शैशव की मस्त क्रीड़ाएँ।
माँ का वात्सल्य
'माता का अँचल' इन तीनों में से केवल अंतिम को ही व्यक्त करता है। अत: यह एकांगी और अधूरा शीर्षक है। इसका अन्य शीर्षक हो सकता है
मेरा शैशव
कोई लौटा दे मेरे रस-भरे दिन!

प्रश्न 8 .बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?
उत्तर-शिशु की जिद में भी प्रेम का प्रकटीकरण है। शिशु और माता-पिता के सानिध्य में यह स्पष्ट करना कठिन होता है कि माता-पिता का स्नेह शिशु के प्रति है या शिशु का माता-पिता के प्रति दोनों एक ही प्रेम के सम्पूरक होते हैं। शिशु की मुस्कराहट, शिशु को उनकी गोद में जाने की ललक उनके साथ विविध | क्रीड़ाएँ करके अपने प्रेम के प्रकटीकरण करते हैं।
माता-पिता की गोद में जाने के लिए मचलना उसका प्रेम ही होता है। इस प्रकार माता-पिता के प्रति शिशु के प्रेम को शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है।

प्रश्न 9.इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?
उत्तर-हमारा बचपन इस पाठ में वर्णित बचपन से पूरी तरह भिन्न है। हमें अपने पिता का ऐसा लाड़ नहीं मिला। मेरे पिता प्रायः अपने काम में व्यस्त रहते हैं। प्रायः वे रात को थककर ऑफिस से आते हैं। वे आते ही खा-पीकर सो जाते हैं। वे मुझसे प्यार-भरी कुछ बातें जरूर करते हैं। मेरे लिए मिठाई, चाकलेट, खिलौने भी ले आते हैं। कभी-कभी स्कूटर पर बिठाकर घुमा भी आते हैं, किंतु मेरे खेलों में इस तरह रुचि नहीं लेते। वे हमें नंग-धडंग तो रहने ही नहीं देते। उन्हें मानो मुझे कपड़े से ढकने और सजाने का बेहद शौक है। मुझे बचपन में ए-एप्पल, सी-कैट रटाई गई। हर किसी को नमस्ते करनी सिखाई गई। दो ढाई साल की उम्र में मुझे स्कूल भेजने का प्रबंध

किया गया। तीन साल के बाद मेरे जीवन से मस्ती गायब हो गई। मुझे मेरी मैडम, स्कूल-ड्रेस और स्कूल के काम की चिंता सताने लगी।

तब से लेकर आज तक मैं 90% अंक लेने के चक्कर में अपनी मस्ती को अपने ही पाँवों के नीचे रौंदता चला आ रहा हूँ। मुझे हो-हुल्लड़ करने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। शायद मेरा बचपन बुढ़ापे में आए? या शायद मैं अपने बच्चों या पोतों के साथ खेल कर सकें।

अतिलघुत्तरी प्रश्न

1. भोलानाथ और उसके साथी मूसलाधार बारिश में पेड़ की जड़ से किस प्रकार चिपक गए थे ?

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथी इस प्रकार पेड़ से चिपके जिस प्रकार कुत्ते के कान में अठई (चिचड़ी) चिपक जाती है |

2. लेखक का बचपन में किससे अधिक जुड़ाव था ?

उत्तर : लेखक का बचपन में अपने पिता से अधिक जुड़ाव था |

3. लेखक बचपन में अपने पिता जी के साथ कौन-सा खेल खेलता था ?

उत्तर: लेखक बचपन में अपने पिता के साथ कुश्ती का खेल खेलते थे ।

4 विपदा के समय बालक माता के पास ही क्यों शरण लेता है ?

उत्तर: माता का अँचल प्यार और शांति देने वाला होता है, इसलिए विपदा के समय बालक माता के पास शरण लेता है |

5. अमोला किसे कहते हैं ?

उत्तर: आम का उगता हुआ पौधा को अमोला कहते है |

6. भोलानाथ पूजा के समय मस्तक पर कैसा तिलक लगाते थे ?

उत्तर: भोलानाथ पूजा के समय भभूत का तिलक लगता था |

लघुत्तरी प्रश्न

प्रश्न 1-.बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर: बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके साथ रहकर, उनकी सिखाई हुई बातों में रुचि लेकर, उनके साथ खेल करके, उन्हें चूमकर, उनकी गोद में या कंधे पर बैठकर प्रकट करते हैं।

प्रश्न 2 - मां किस प्रकार लेखक को अच्छा-खासा कन्हैया बना दिया करती थी?

उत्तर- लेखक की इच्छा के विरुद्ध मां उसे पकड़ कर उसकी शारीरिक स्वच्छता और विकास के उद्देश्य से उसके सिर में सरसों का तेल लगाती, उसकी नाभी और माथे पर काजल की बिंदी लगाती |

प्रश्न 3 - सांप देख लेने के पश्चात् मां के अँचल में छिपे हुए लेखक की दशा कैसी थी?

उत्तर - सांप देख लेने के पश्चात् मां के अँचल में छिपा हुआ लेखक अत्यंत भयभीत था। वह धीमे स्वर में "सा... .स. ..सां" कहते हुए अपनी मां के अँचल में छिप जाता था।

प्रश्न 4 - माता के अँचल पाठ के आधार पर भोलानाथ की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर- भोलानाथ की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(i) भोलानाथ अत्यंत चंचल बालक है। (ii) उसे अपने माता-पिता से अत्यधिक प्रेम है।

(iii) उसे लोक संस्कृति, लोक-खेल तथा अपने मित्रों से अत्यधिक लगाव है।

प्रश्न 5 - मरदुए क्या जाने कि बच्चों को कैसे खिलाना चाहिए। यह कथन किसने और कब कहा?

उत्तर- मरदुए क्या जाने कि बच्चों को कैसे खिलाना चाहिए-यह कथन लेखक की माता ने लेखक के पिता से उस प्रसंग में कहा है जब वे अपने पुत्र भोलानाथ को ठीक से खाना नहीं खिला पाते।

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर: बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव हो, तो भी वह अपनी माँ के अँचल में खुद को ज्यादा अच्छा महसूस करता है। माँ का स्नेह उसके मन में बैठे डर को दूर कर देता है। भोलानाथ का अपने पिता जी से बहुत स्नेह था। पर जब उस पर विपदा आई, तो उसे जो शांति और प्रेम माँ की गोद में जाकर महसूस हुआ, वह शायद पिता के साथ नहीं हो पाता।

प्रश्न 2. आपके अनुसार भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?
उत्तर: भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है क्योंकि जब भोलानाथ अपने मित्रों को मज़े से खेलते हुए देखता है, तो खुद को नहीं रोक पाता और रोना भूलकर अपने साथियों के साथ खेलने लगता है।

प्रश्न 3. आपने देखा होगा कि भोलानाथ और उसके साथी जब-तब खेलते-खाते समय किसी न किसी प्रकार की तुकबंदी करते हैं। आपको यदि अपने खेलों आदि से जुड़ी तुकबंदी याद हो तो लिखिए।
उत्तर: मुझे अपने बचपन के कुछ खेलों से जुड़ी तुकबन्दियाँ याद हैं-
1. अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ। 2. पोषम पा भई पोषम पा, डाकिये ने क्या किया।
3. आदा पादा किसने पादा।

प्रश्न 4. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री कुछ इस प्रकार से है, वे आँगन या खेतों में खेला करते थे। उनके खेल की सामग्री मिट्टी के बर्तन, पत्थर, पेड़ों के फल, गीली मिट्टी, घर पर पड़े छोटे-मोटे सामान आदि होती थी।आज के समय में बच्चे घर पर ही खेलते हैं। हमारे समय के बच्चे जो खेल खेलते हैं, वे इनसे अलग है। इनके खेलने के लिए क्रिकेट, फुटबॉल, किचन सेट, डॉक्टर सेट, वीडियो गेम्स आदि बहुत सी चीजें हैं। अब के बच्चे ज्यादा शारीरिक श्रम वाले खेल नहीं खेलते।

प्रश्न 5. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर: यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, वह इस प्रकार है-

पिता का अपने बच्चे को नहलाना-धुलाना, पूजा में साथ बैठाना, माथे पर तिलक लगाना और बच्चे को कंधे पर बैठाकर गंगा घाट तक ले जाना इत्यादि प्रसंगों में पिता द्वारा वात्सल्य व्यक्त हुआ है। माँ का अपने बच्चे को दुलार करना, तोता-मैना आदि के बनावटी नाम से निवाला बनाकर खिलाना, बच्चे को काला टिका लगाना, उसकी चोटी बनाना, फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुर्ता-टोपी पहनाना इत्यादि प्रसंगों में माँ का वात्सल्य व्यक्त हुआ है।

प्रश्न 6. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?
उत्तर: इस पाठ में बच्चों की दुनिया बेहद मजेदार लगती है। उन्हें अपने भविष्य की कोई चिंता नहीं है। आजकल के बच्चों पर स्कूल, परिवार और समाज की ओर से दवाब बनाया जाता है। बच्चे सुबह स्कूल जाते हैं, उसके बाद घर आकर टयूशन जाते हैं। फिर जो समय बचता है, उसमें कुछ बच्चे मैदान में खेलते हैं और कुछ लैपटॉप या मोबाइल पर गेम्स खेलते हैं।

मूल्य परख प्रश्न

प्रश्न 1. आजकल बच्चे घरों में अकेले खेलते हैं, पर भोलानाथ और उसके साथी मिल-जुलकर खेलते थे। इनमें से आप भावी जीवन के लिए किसे उपयुक्त मानते हैं और क्यों?
उत्तर- यह सत्य है कि आजकल के बच्चे कंप्यूटर पर गेम, वीडियो गेम, टेलीविज़न पर कार्टून देखते हुए अकेले समय बिताते हैं, परंतु भोलानाथ का समय साथियों के साथ खेलते हुए बीतता था। खेत में चिड़ियाँ उड़ाना हो या चूहे के बिल में पानी डालना या खेती करना, बारात निकालना आदि खेल ऐसे थे जिनमें बच्चों का एक साथ खेलना आवश्यक था। मैं मिलजुलकर खेलने को भावी जीवन के लिए उपयुक्त मानता हूँ, क्योंकि- इससे सामूहिकता की भावना पनपती है। इस प्रकार के खेलों से सहयोग की भावना विकसित होती है। मिल-जुलकर खेलने से सभी बच्चे अपना-अपना योगदान देते हैं, जिससे सक्रिय सहभागिता की भावना का उदय होता है। मिल-जुलकर खेलने से बच्चों में हार-जीत को समान रूप से अपनाने की प्रेरणा मिलती है जिनका भावी जीवन में बड़ी उपयोगिता होती है।

प्रश्न 2. भोलानाथ के पिता भोलानाथ को पूजा-पाठ में शामिल करते, उसे गंगा तट पर ले जाते तथा लौटते हुए पेड़ की डाल पर झुलाते। उनका ऐसा करना किन-किन मूल्यों को उभारने में सहायक है?

उत्तर- भोलानाथ के पिता उसको अपने साथ पूजा पर बैठाते। पूजा के बाद आटे की गोलियाँ लिए हुए गंगातट जाते। मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाते, वहाँ से लौटते हुए उसे पेड़ की झुकी डाल पर झुलाते। उनके इस कार्यव्यवहार से भोलानाथ में कई मानवीय मूल्यों का उदय एवं विकास होगा। ये मानवीय मूल्य हैं-भोलानाथ द्वारा अपने पिता के साथ पूजा-पाठ में शामिल होने से उसमें धार्मिक भावना का उदय होगा। प्रकृति से लगाव उत्पन्न होने के लिए प्रकृति का सान्निध्य आवश्यक है। भोलानाथ को अपने पिता के साथ प्रकृति के निकट आने का अवसर मिलता है। ऐसे में उसमें प्रकृति से लगाव की भावना उत्पन्न होगी। मछलियों को निकट से देखने एवं उन्हें आटे की गोलियाँ खिलाने से भोलानाथ में जीव-जन्तुओं के प्रति लगाव एवं दया भाव उत्पन्न होगा। नदियों के निकट जाने से भोलानाथ के मन में नदियों को प्रदूषण मुक्त रखने की भावना का उदय एवं विकास होगा। वृक्षों से निकटता होने तथा उनकी शाखाओं पर झूला झूलने से भोलानाथ में पेड़ों के संरक्षण की भावना विकसित होगी।

प्रश्न 3. वर्तमान समय में संतान द्वारा माँ-बाप के प्रति उपेक्षा का भाव दर्शाया जाने लगा है जिससे वृद्धों की समस्याएँ बढ़ी हैं तथा समाज में वृद्धाश्रमों की जरूरत बढ़ गई है। माता का अँचल' पाठ उन मूल्यों को उभारने में कितना सहायक है जिससे इस समस्या पर नियंत्रण करने में मदद मिलती हो।
उत्तर- वर्तमान समय में भौतिकवाद का प्रभाव है। अधिकाधिकथन कमाने एवं सुख पाने की चाहत ने मनुष्य को मशीन बनाकर रख दिया है। ऐसे में संतान के पास बैठने, उसके साथ खेलने और घूमने-फिरने का माता-पिता के पास समय नहीं हैं। इस कारण एक ओर माता-पिता बूढ़े होने पर उपेक्षा का शिकार होते हैं तो दूसरी ओर वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ रही है। 'माता का अंचल' पाठ में भोलानाथ का अधिकांश समय अपने पिता के साथ बीतता था। वह अपने पिता के साथ पूजा में शामिल होता था तो पिता जी भी मनोविनोद के लिए उसके साथ खेलों में शामिल होते थे। इससे भोलानाथ में अपने माता-पिता से अत्यधिक लगाव, सहानुभूति, मिल-जुलकर साथ रहने की भावना, माता-पिता के प्रति दृष्टिकोण में व्यापकता, माता-पिता के प्रति उत्तरदायित्व, सामाजिक सरोकारों में प्रगाढ़ता, आएगी जिससे वृद्धों की उपेक्षा एवं वृद्धाश्रम की बढ़ती आवश्यकता पर रोक लगाने में सहायता मिलेगी।

**********@@**********@@**********

पाठ-3 साना - साना हाथ जोड़ी:: मधु कांकरिया

जीवन परिचय

मधु कांकरिया का जन्म सन 1957 में कोलकाता में हुआ | उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए किया साथ में कंप्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी किया |

प्रमुख रचनाएं

उपन्यास - पताखोर

कहानी संग्रह - सलाम आखिरी , खुले गगन के लाल सितारे , बीते हुए , अंत में यीशु

उन्होंने कई सुंदर यात्रा वृतांत भी लिखे हैं मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता मिलती है |समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएं जैसे - अब संस्कृति , महानगर की घुटन और सुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत , लालबत्ती इलाकों की पीड़ा आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं |

पाठ का सारांश

साना साना हाथ जोड़ी की लेखिका मधु कांकरिया जी ने अपने यात्रा वृतांत के बारे में इसमें बताया है |यह यात्रा सिक्किम की राजधानी गंगतोक और यूथनांक के बीच थी| लेखिका इस शहर में उतरी तो वह हैरान हो गई उनका हैरान होने का कारण सितारों की झिलमिलाहट में जगमगाता इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाओ का शहर गंतोक की सुंदरता थी |इस सुंदरता ने लेखिका के मन के भीतर बाहर शून्य स्थापित कर दिया था |इस यात्रा के दौरान एक नेपाली युवती से प्रार्थना के बोल "साना - साना हाथ जोड़ी गर्दहु प्रार्थना" जिसका अर्थ था छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूं कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो | लेखिका ने अगले दिन यूथनांक जाने का निश्चय किया था | जैसे प्रातः काल में उनकी नींद खुली वह बालकनी की ओर दौड़ी क्योंकि वहां के लोगों ने बताया था कि मौसम साफ होने पर कंचनजंगा साफ दिखाई देती है| कंचनजंगा तो ना देखी परंतु इतने सारे फूल देखे कि वह लिखती है "मानो ऐसा लगा कि फूलों के बाग में आ गई हूं|" यूथनांक गंगटोक 149 किलोमीटर की दूरी पर था वहां जाने के लिए ड्राइवर कम गाइड जितेंद्र नार्गे के साथ निकलती है | लेखिका जब आ रही थी तब उन्हें गदराएं पाईन , नुकीले पेड़ , पहाड़ दिखे इसके साथ ही दिखी सफेद बौद्ध पताकाएं जोकि शांति व अहिंसा के प्रतीक होती है और बुध की मान्यता के अनुसार जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तब एक सौ आठ श्वेत पताकाएं लहराई जाती है जिन पर मंत्र लिखे होते हैं कई बार नए कार्य के प्रारंभ में भी पताकाएं फहरा दी जाती है परंतु वह रंगीन होती है अब गाइड नार्गे के साथ लेखिका की जीप उस जगह पहुंची जहां गाइड़ फिल्म की शूटिंग हुई थी यह की जगह कभी लॉन्ग स्टांक उन्हीं रास्तों के भीतर लेखिका मधु जी की कुटिया की तरफ नजर पड़ी जहां उन्होंने धर्म चक्र को घूमते देखा इस प्रेयर व्हील के बारे में नांवें बताया कि इसको घूमाने से सारे पाप धुल जाते हैं ऐसा माना जाता है कि आप पर्वतों , घाटियों , नदियों की सुंदरता से आगे बढ़कर लेखिका ने फेन उगलता झरना देखा जिसका नाम सेवेन सिस्टर्स वाटरफॉल था | लेखिका लिखती है पहली बार एहसास हुआ जीवन का आनंद है यही चलायमान

सौंदर्य | वहां उन्होंने पहाड़ तोड़ती तथा बच्चे को पीठ पर बांधकर पत्ते विनती महिलाओं को देखा वापस लौटते समय भी जीप में नार्वे ने कई जानकारियां दी उसने गुरु नानक के फुटप्रिंट और खेदुम एक पवित्र स्थल के बारे में बताया तभी लेखिका ने कहा गंगटोक बहुत सुंदर है तब नार्गे ने कहा मैडम गंतोक कहिए जिसका अर्थ पहाड़ होता है |

(I) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1. साना साना हाथ जोड़ी नामक पाठ के रचयिता का क्या नाम है ?

(i). महादेवी वर्मा (ii). मधु कांकरिया (iii). कमलेश्वर)iv). शिवपूजन सहाय

उत्तर – (ii) मधु कांकरिया

2. गंगटोक नगर किस राज्य की राजधानी है ?

(i). सिक्किम (ii). अरुणाचल (iii). आसाम (iv). बंगाल
उत्तर – सिक्किम

3. लेखिका ने गंगटोक को किन लोगों का शहर बताया है ?

(i). मेहनतकश बादशाहो का (ii). गरीबों का (iii). नवाबों का (iv). राजाओं का

उत्तर – मेहनतकश बादशाहो का

4. साना - साना हाथ जोड़ी प्रार्थना लेखिका ने किस देश की युवती से सीखी थी ?

(i). वर्मा की (ii). श्रीलंका की (iii). नेपाल की (iv). चीन की
उत्तर – नेपाल की

5. कंचनजंगा किस पर्वत की चोटी का नाम है ?

(i). हिमालय पर्वत (ii). कंचन पर्वत (iii). सुमेरु पर्वत (iv). नीलमणि पर्वत
उत्तर – हिमालय पर्वत

6. बौद्ध धर्म में किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर उसकी आत्मा की शांति के लिए कितनी पताकाएं फहराई जाती है ?

(i). 130 (ii). 140 (iii). 150 (iv). 108
उत्तर – 108

7. सिलीगुड़ी के पास लेखिका को कौन सी नदी दिखाई दी थी ?

(i). गंगा (ii). यमुना (iii). तीस्ता (iv). ब्यास
उत्तर – तिस्ता

8. प्रकृति के विराट रूप को देखकर लेखिका को क्या प्रेरणा मिलती है ?

(i). सदा काम में लगा रहना चाहिए (ii). सदा मुस्कुराते रहना चाहिए
(iii). चिंता नहीं करनी चाहिए (iv). लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए
उत्तर – सदा मुस्कुराते रहना चाहिए

9. कटाओ को हिंदुस्तान का क्या कहा जाता है ?

(i). इंग्लैंड (ii). अमेरिका (iii). स्वीटजरलैंड (iv). जर्मनी
उत्तर – स्वीटजरलैंड

10. कटाओ लायुंग से कितनी ऊंचाई पर स्थित है ?

(i). 500 फीट (ii). 400 फीट (iii). 300 फीट (iv). 200 फीट
उत्तर – 500 फीट

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए |

1) 'साना - साना हाथ जोड़ी' के आधार तार्किक उत्तर दीजिए कि अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने में आप किस प्रकार योगदान कर सकते हैं ?

उत्तर - हम अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए स्वयं संकल्प ले सकते हैं | जैसे खेदुम नामक एक किलोमीटर के क्षेत्र में ऐसा माना जाता है कि जो भी यहां गंदगी मचाएगा वह मर जाएगा |इसलिए वहां के लोग किसी भी सूरत में गंदगी नहीं रहने देते इसी प्रकार हम भी यदि अपने नगर गांव के बारे में ऐसा संकल्प कर ले कि यहां कोई गंदगी नहीं मचाएगा तो हमारे नगर गांव अपने - आप स्वच्छ हो जाएंगे ।

2) भारत का स्विट्जरलैंड किसे कहते हैं और क्यों ? वह स्थल हमें किस तरह प्रेरित करता है ? पठित पाठ साना - साना हाथ जोड़ी के आधार पर लिखिए |

उत्तर - कटाओ की पहाड़ी को भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है ।

क्यों - यह हमारे समुद्र तल से 14500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है यहां बर्फ , धुंध और बारिश का साम्राज्य है । यहां की खूबसूरती अवर्णनीय है । यह स्थल हमें प्रकृति सौंदर्य को पास से निहारने की प्रेरणा देता है ।

3) झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था ?

उत्तर - झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका के मन में सम्मोहन जगा रहा था इस सुंदरता ने उस पर ऐसा जादू सा कर दिया था कि उसे सब कुछ ठहरा हुआ सा और अर्थहीन सा लग रहा था उसके भीतर बाहर जैसे एक शून्य सा व्याप्त हो गया था

4) लोंग स्टॉक में घूमते हुए चित्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक -सी क्यों दिखाई दी ?

उत्तर - लोंग स्टाक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला यह धर्म चक्र है इसे घूमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है उसे लगा पूरे भारत की आत्मा एक - सी है सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनकी आस्थाएं अंधविश्वास और पाप पुण्य की अवधारणाएं एक - सी है |

5) कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओ का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर - श्वेत पताकाएं किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती है किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए नगर से बाहर किसी भी वीरान स्थान पर मंत्र लिखी एक सौ आठ पताकाएं फहराई जाती है जिन्हें उतारा नहीं जाता वह धीरे-धीरे अपने आप नष्ट हो जाती हैं किसी शुभ कार्य को आरंभ करने पर रंगीन पत्रकाएं फहराई जाती है |

6) 'मैं इंडियन हूं' सिक्किम की युवती द्वारा यह कहे जाने से स्पष्ट होता है कि अपनी जाति धर्म क्षेत्र और संप्रदाय से अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र है |आप किस प्रकार राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य निभाकर देश के प्रति अपना प्रेम प्रकट कर सकते हैं ?

उत्तर - सिक्किम की युवती ने अपने परिचय में स्वयं को सिक्किम न कहकर इंडियन कहा इससे पता चलता है कि उसमें राष्ट्रभक्ति प्रमुख थी हम भी अपने हर कार्य में राष्ट्र के मान सम्मान का ध्यान रखें तो राष्ट्रप्रेम प्रकट कर सकते हैं हम अपना परिचय भारतीय के रूप में दे हर प्रांत को अपना प्रांत माने तभी राष्ट्रप्रेम सुदृढ़ हो सकता है |

7) प्रकृति के साथ हो रहे खिलवाड़ को कैसे रोका जा सकता है ?

उत्तर - आज की पीढ़ी पहाड़ी स्थलों को अपना विहार स्थल बना रही है वहां भोग के नए नए साधन पैदा किए जा रहे हैं इसलिए जहां एक ओर गंदगी बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर तापमान में वृद्धि हो रही है परिणामस्वरूप पर्वत अपनी स्वाभाविक सुंदरता खो रहे हैं इसे इसे रोकने में हमें सचेत होना चाहिए हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे पहाड़ों का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो , गंदगी फैले और तापमान में वृद्धि हो |

8) हिमशिखरों का परोपकारी रूप हमें उनकी किस व्यवस्था से ज्ञात होता है मानव को उनके इस रूप से क्या शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए | 'साना साना हाथ जोड़ी' पाठ के आधार पर लिखिए ?

उत्तर - हिमशिखर हिम के स्तंभ है ये सर्दियों में अपने भीतर जल के भंडार को संजोकर रखते हैं गर्मियों में जब लोग जल के लिए त्राहि-त्राहि मचाते हैं तो ये हिमशिखर ही हैं सब की प्यास को तृप्त करते हैं इस प्रकार

हिमशिखर परोपकारी रूप धारण करते हैं मानव को भी इनसे यही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए उन्हें अपनी धन संपत्ति किसी विपदा के समय सबमें बांट देनी चाहिए |

9) 'सेवेन सिस्टर्स वाटर फॉल' को देखकर लेखिका ने अपनी भावनाओं को कैसे अभिव्यक्त किया है ?

साना - साना हाथ जोड़ी पाठ के आधार पर लिखिए |

उत्तर - सेवन सिस्टम वाटर फॉल को देखकर लेखिका का मन सौंदर्य में डूब गया हृदय काव्यमय हो गया उसे सत्य और सौंदर्य ने छू लिया उसे यो लगा जैसे वह देश काल से दूर बहती जलधारा बन गई हो और भीतर की सारी वासनाएं मुक्त हो गई हो |

10) 'साना - साना हाथ जोड़ी' पाठ के आलोक में पहाड़ों की प्राकृतिक संपदा के रक्षण की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए |

उत्तर - सिक्किम प्राकृतिक प्रदेश है जो पहाड़ पहले बर्फ से ढके रहते थे अब पर्यटकों की आवाजाही के कारण प्रदूषित हो गए हैं इस कारण अब वहां हिमपात नहीं होता यह देखकर हमें ज्ञात होता है कि हमें पहाड़ों की प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखना चाहिए वह अत्यधिक पर्यटन को बढ़ावा नहीं देना चाहिए वरना उसका सौंदर्य नष्ट हो जाएगा |

11) ' साना - साना हाथ जोड़ी' की लेखिका को पहाड़ के सौंदर्य के किन दृश्यों ने चौका दिया इन दृश्यों से उन्हें और क्या-क्या याद आने लगा ?

उत्तर - कहीं आसमान छूते पर्वत पर कहीं दूध की धार के समान श्वेत झड़ने कही चांदी की तरफ कौंध मारती तिस्ता नदी यह सौंदर्य देखकर लेखिका भौचक्की रह गई इस इन दृश्यों को देखकर लेखिका को लगने लगा कि जैसे वह भी इस जलधारा और प्रकृति की अभिन्न अंग है |

12) ' साना - साना हाथ जोड़ी' पाठ के आधार पर लायुंग की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन कीजिए और यह भी बताइए कि यह सुंदरता कैसे बची हुई है ?

उत्तर - लायुंग के पहाड़ों पर मनोरम शांति थी अनेक झरने ऊपर चोटियों से बहते हुए नीचे तिस्ता नदी में मिल रहे थे मंद मंद हवा बह रही थी पेड़ पौधे झूम रहे थे आकाश में बादलों का जमघट था जिनके कारण चांद छिप गया था चारों और बोधिसत्व सी शांति थी यहां के निवासी पहाड़ों पर गंदगी मचाना पाप समझते हैं वे नदी झरनों और पहाड़ों की पूजा करते हैं इस प्रकार उन्होंने पहाड़ी सुंदरता को बचा कर रखा है |

**********@@**********@@**********

पाठ-5 : मैं क्यों लिखता हूँ? लेखक : अज्ञेय

लेखक परिचय :

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (7 मार्च, 1911 - 4 अप्रैल, 1987) को कवि, शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित-निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कसया, पुरातत्व-खुदाई शिविर में हुआ। अज्ञेय आधुनिकता की ध्वनि है और अहंवादी प्रवृत्ति है। इसके अतिरिक्त बौद्धिक चेतना अथवा बौद्धिकता इनकी काव्य-वस्तु की विशिष्टता है।" वे उन प्रयोगवादी कवियों में हैं जो मध्यवर्ग की पीड़ा को अच्छी तरह पहचानते हैं। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है जिसमें छंद के साथ-साथ छंद मुक्तकता भी है उनकी भाषा में नए बिम्बों और नए प्रतीकों का भी प्रयोग मिलता है | अत्यंत महत्त्वपूर्ण कथाकार अज्ञेय के प्रस्तुत संकलन में वरिष्ठ आलोचक डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल ने जिन दस कहानियों को प्रस्तुत किया है, वे हैं : 'मेजर चौधरी की वापसी', 'गैंग्रीन (रोज़)', 'नगा पर्वत की एक घटना', 'हीली-बोन् की बत्तखें', 'पठार का धीरज', 'जयदोल', 'विवेक से बढ़कर', 'साँप' तथा 'शरणदाता' .

सारांश :

मैं क्यों लिखता हूँ पाठ में लेखक ने अपने लिखने के कारणों के साथ-साथ एक लेखक के प्रेरणा स्रोतों पर भी प्रकाश डाला है | लेखक के अनुसार लिखे बिना लिखने के कारणों को नहीं जाना जा सकता वह अपनी आंतरिक व्याकुलता से मुक्ति पाने तथा तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखता है| प्रायः प्रत्येक रचनाकार की आत्मानुभूति कि उसे लेखन कार्य के लिए प्रेरित करती है किंतु कुछ बाहरी दबाव भी होते हैं | ये बाहरी दबाव कई बार रचनाकार को लिखने के लिए बाध्य करते हैं | इन बाहरी दबाव में संपादकों का आग्रह प्रकाश का तकाजा तथा आर्थिक आवश्यकता आदि प्रमुख हैं लेखक का मत है कि वह बाहरी दबावों से कम प्रभावित होता है उसे तो इसकी भीतरी व्यवस्था ही लिखने की ओर प्रेरित करती है | उसका मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है | एक रचनाकार को अनुभव, सामने घटित घटना को देखकर होता है किंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के द्वारा उस सत्य को भी ग्रहण कर लेती है जो रचनाकार के सामने घटित नहीं हुआ फिर वह सत्य आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है और रचनाकारों का वर्णन करता है|

लेखक बताता है कि उसके द्वारा लिखी हिरोशिमा नामक कविता भी ऐसी ही है एक बार जब वह जापान गया तो वहाँ हिरोशिमा में उसने देखा कि एक पत्थर बुरी तरह झुलसा हुआ है और उस पर एक व्यक्ति की लंबी उजली छाया है | विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण उसे रेडियोधर्मी प्रभावों की जानकारी थी | उसे देखकर उसने अनुमान लगाया कि जब हिरोशिमा पर बम गिराया गया होगा तो उस समय वह व्यक्ति इस पत्थर के पास खड़ा होगा | अणु-बम के प्रभाव से वह भाप बनकर उड़ गया किंतु उसकी छाया उस पत्थर पर ही रह गई | लेखक को उस झुलसे हुए पत्थर ने झकझोर कर रख दिया | हिरोशिमा पर गिराए गए अणु-बम की भयानकता की कल्पना करके बहुत दुखी हुआ | उस समय उसे ऐसे लगा, मानो वह दुखद घटना के समय वहाँ मौजूद रहा हो | इस त्रासदी से उसके भीतर जो व्याकुलता पैदा हुई उसी का परिणाम उसके द्वारा हिरोशिमा

पर लिखी कविता थी | लेखक कहता है कि यह कविता 'हिरोशिमा" जैसी भी हो, वह उसकी अनुभूति से पैदा हुई थी| यही उसके लिए महत्वपूर्ण था |

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास (3 अंक का प्रश्न)

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?

उत्तर- लेखक की मान्यता है कि सच्चा लेखन भीतरी विवशता से पैदा होता है। यह विवशता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से जागती है, बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागती। जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता और उसमें अभिव्यक्त होने की पीड़ा बेचैन नहीं करती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

प्रश्न 2. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर - लेखक हिरोशिमा के बम विस्फोट के परिणामों को अखबारों में पढ़ चुका था। अणु-बम के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा था और देखकर भी अनुभूति न हुई इसलिए भोक्ता नहीं बन सका। फिर एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया देखी। उसे देखकर लेखक सोचने लगा कि विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध हो गई होंगी और उसआदमी को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची ट्रेजडी जैसे पत्थर पर लिखी गई है। इस प्रकार लेखक हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।

प्रश्न 3. मैं क्यों लिखता हूँ? के आधार पर बताइए कि- लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं? किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

उत्तर- लेखक को यह जानने की प्रेरणा लिखने के लिए प्रेरित करती है कि वह आखिर लिखता क्यों है। यह उसकी पहली प्रेरणा है। स्पष्ट रूप से समझना हो तो लेखक दो कारणों से लिखता है- भीतरी विवशता से। कभी-कभी कवि के मन में ऐसी अनुभूति जाग उठती है कि वह उसे अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल हो उठता है। कभी-कभी वह संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजों से तथा आर्थिक लाभ के लिए भी लिखता है। परंतु दूसरा कारण उसके लिए जरूरी नहीं है। पहला कारण अर्थात् मन की व्याकुलता ही उसके लेखन का मूल कारण बनती है।

प्रश्न 5. क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

उत्तर- बाहरी दबाव सभी प्रकार के कलाकारों को प्रेरित करते हैं। उदाहरणतया अधिकतर अभिनेता, गायक, नर्तक, कलाकार अपने दर्शकों, आयोजकों, श्रोताओं की माँग पर कला-प्रदर्शन करते हैं। अमिताभ बच्चन को बड़े-बड़े निर्माता-निर्देशक अभिनय करने का आग्रह न करें तो शायद अब वे आराम

करना चाहें। इसी प्रकार लता मंगेशकर भी 50 साल से गाते-गाते थक चुकी होंगी, अब फिल्म-निर्माता, संगीतकार और प्रशंसक ही उन्हें गाने के लिए बाध्य करते होंगे।

प्रश्न 6. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर- कवि ने हिरोशिमा के भयंकर रूप को देखा था, आहत लोगों को देखा था। उसे देखकर लेखक के मन में उनके प्रति सहानुभूति तो उत्पन्न हुई होगी। किंतु उनकी व्यक्तिगत त्रासदी नहीं बनी। जब पत्थर पर मनुष्य की काली छाया को देखा तो उन्हें अपने हृदय से अणु-बम के विस्फोट का प्रतिरूप त्रासदी बनकर मन में समाने लगा। वही त्रासदी जीवंत होकर कविता में परिवर्तित हो गई। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता अंतः दबाव का परिणाम था ।

प्रश्न 7. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ किस तरह से हो रहा है।

उत्तर- आजकल विज्ञान का दुरुपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसार-भर में मनचाहे विस्फोट कर रहे हैं। कहीं अमरीकी टावरों को गिराया जा रहा है। कहीं मुंबई बम-विस्फोट किए जा रहे हैं। विज्ञान के दुरुपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़ककर अपनी फसलों को बढ़ा रहे हैं। इससे लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के उपकरणों के कारण ही वातावरण में गर्मी बढ़ रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है, बर्फ पिघलने का खतरा बढ़ रहा है तथा रोज-रोज भयंकर दुर्घटनाएँ हो रही हैं।

प्रश्न 8. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

उत्तर- एक संवेदनशील युवा नागरिक होने के कारण विज्ञान का दुरुपयोग रोकने के लिए हमारी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए निम्नलिखित कार्य करते हुए मैं अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकती हूँ- प्रदूषण फैलाने तथा बढ़ाने वाले उत्तरदायी कारकों प्लास्टिक, कूड़ा-कचरा आदि के बारे में लोगों को जागरूक बनाने के साथ-साथ लोगों से अनुरोध करूंगी कि पर्यावरण के लिए हानिकारक वस्तुओं का उपयोग न करें । विज्ञान के बनाए हथियारों का प्रयोग यथासंभव मानवता की भलाई के लिए ही करें, मनुष्यों के विनाश के लिए नहीं। विज्ञान अच्छा सेवक किंतु बुरा स्वामी है। यह बात लोगों तक फैलाकर इसके दुरुपयोग के परिणामों को बताने का प्रयत्न करूँगी ।

<u>अन्य अभ्यास प्रश्न :</u>

प्रश्न 1. 'मैं क्यों लिखता हूँ।' प्रश्न के उत्तर में अज्ञेय ने क्या कहा है? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर- लेखक 'अज्ञेय' जी ने 'मैं क्यों लिखता हूँ? के उत्तर में कहा है कि वह अपने मन की विवशता को पहचानते हैं। अतः वह लिखकर उससे मुक्ति पाना चाहते हैं। वह इसलिए भी लिखना चाहते हैं, ताकि स्वयं को जान और पहचान सकें। उनके मन में जो विचारों की छटपटाहट व बेचैनी होती है। उससे मुक्ति पाने के लिए वे लिखना चाहते हैं। वे स्वयं की पहचान करके व अपने विचारों को तटस्थ रखकर सबके समक्ष प्रस्तुत करने व आत्मसंतुष्टि के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 2. लेखक की आभ्यंतर विवशता क्या होती है? 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए।

उत्तर: लेखक की आभ्यंतर विवशता यह है कि वह स्वयं को पहचानने के लिए लिखता है। लेखक लिखकर अपने मन के अंदर की विवशता को जानना चाहता है। जो विचार उसके अंदर छटपटाहट पैदा कर रहे हैं, उन्हें जानने के लिए लिखता है। लेखक मानता है कि कई बार बाहरी तत्वों जैसे- आर्थिक विवशता, संपादक का आग्रह प्रसिद्धि पाने या बनाए रखने के लिए भी लिखा जाता है। परंतु लेखक तटस्थ रहकर, आंतरिक विचारों से मुक्ति पाने के लिए अपनी अनुभूति के आधार पर लिखता है।

प्रश्न 3. 'मैं क्यों लिखता हूँ।' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक को लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त होती है।

उत्तर: मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में अज्ञेय जी को लिखने की प्रेरणा आंतरिक विवशता से मिलती है जिसे प्रकट करने के लिए वे लिखते हैं। वे तटस्थ होकर यह देखना चाहते हैं कि उनका मन क्या सोचता है। वे लिखकर मन की बेचैनी और उसकी छटपटाहट से मुक्ति पाने के लिए लिखते हैं। वे स्वयं को जानने और समझने व पहचानने के लिए लिखते हैं। वे यह भी मानते हैं कि कई बार कुछ लेखक आर्थिक कारणों से भी लिखते हैं या कुछ संपादक के दवाव और प्रसिद्धि की कामना के लिए भी लिखते हैं।

प्रश्न 4. लेखक को कौन-सा प्रश्न सरल दिखाई देते हुए भी कठिन लगता है? और क्यों?

उत्तर- लेखक के लिए आसान-सा लगने वाला यह प्रश्न 'मैं क्यों लिखता हूँ' कठिन लगता है क्योंकि इसका उत्तर इतना संक्षिप्त नहीं है कि एक या दो वाक्यों में बाँधकर सरलता से दिया जा सके। इसका कारण यह है कि इस प्रश्न का सच्चा उत्तर लेखक के आंतरिक जीवन के स्तरों से संबंध रखता है।

प्रश्न 5. उन तथ्यों का उल्लेख कीजिए जो लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करते हैं?

उत्तर- लेखक को कुछ लिखने के लिए प्रेरित करने वाले तथ्य निम्नलिखित हैं- अपनी भीतरी प्रेरणा और विवशता जानने के लिए लेखक लिखता है। किस बात ने लिखने के लिए उसे प्रेरित और विवश किया, यह जानने के लिए। मन के दबाव से मुक्त होने के लिए लेखक लिखता है।

मूल्यपरक प्रश्न :

प्रश्न 1. हिरोशिमा में विज्ञान का जिस तरह दुरुपयोग हुआ वह मानवता के लिए खतरे का संकेत था। वर्तमान में यह खतरा और भी बढ़ गया है। भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो इस संबंध में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हिरोशिमा में जिस तरह विज्ञान का दुरुपयोग हुआ वह मानवता के इतिहास में काला दिन होने के साथ-साथ मनुष्यता के लिए कलंक भी था। विज्ञान की उत्तरोत्तर प्रगति के कारण यह खतरा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। यदि विज्ञान का दुरुपयोग न रोका गया तो यह मानवता के अस्तित्व

के लिए खतरा बन सकता है। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए विश्व के विकसित एवं परमाणु शक्ति संपन्न देशों को आगे आना चाहिए और इसका दुरुपयोग रोकने के लिए सशक्त जनमत बनाना चाहिए। इन देशों द्वारा उन देशों पर तुरंत नियंत्रण लगाया जाना चाहिए जो परमाणु बम बनाने के लिए आतुर हैं, या जो अपनी परमाणु शक्ति का धौंस अन्य छोटे देशों को दिखाते हैं। यदि ये देश इसके लिए तैयार नहीं होते हैं तो उनके साथ आर्थिक और व्यापारिक संबंध समाप्त कर देना चाहिए।

**********@@**********@@**********

व्याकरण

वाच्य भेद

वाच्य की परिभाषा

- वाच्य का अर्थ है – बोलने का विषय ।
- क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है,कर्म है अथवा भाव है,उसे वाच्य कहते है|

उदाहरण

- नेताजी सुंदर लग रहे थे ।(इस वाक्य में नेताजी कर्ता को दर्शाते हैं ।)
- बालगोबिन भगत खेतीबाड़ी कर रहे हैं ।(इस वाक्य में खेतीबाड़ीकर्म को दर्शाती है।)
- उससे रोया नहीं जाता ।(इस वाक्य में रोया भाव को दर्शाया है ।)

वाच्य के भेद

वाच्य के मुख्यतया दो भेद होते हैं –कर्तृवाच्य और अकर्तृवाच्य । अकर्तृवाच्य के भी दो भेद होते हैं । जिन्हें कर्मवाच्य और भाववाच्य के नाम से जाना जाता हैं ।

वाच्य: कर्तृवाच्य अकर्तृवाच्य

अकर्तृवाच्य : कर्मवाच्य भाववाच्य

कर्तृवाच्य

क्रिया के रूपांतर से जब वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है ।
क्रिया के लिंग,वचन तथा पुरूष भी कर्ता के अनुसार ही लगाए जाते हैं ।
जैसे –

- बालक सोता है ।
- बच्चे खेलते हैं ।
- गीता खाती है ।

अकर्तृवाच्य

क्रिया के रूपांतर से जब वाक्य में कर्ता की प्रधानता नहीं होती,तो इस प्रकार के वाच्य को अकर्तृवाच्य कहते हैं । अकर्तृवाच्यके दो भेद होते हैं ।

- **कर्मवाच्य**

क्रिया के जिस रूपांतर से वाक्य में कर्म की प्रधानताका बोध हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं ।
वाक्य में कर्म की प्रधानता होने पर क्रिया के लिंग,वचन एवं पुरुष कर्म के अनुसार ही होते हैं अर्थात जब क्रिया का संबंध कर्म से हो, तो वह वाक्य कर्मवाच्य होता है ।
जैसे –

- रोगी को दवाई दे दी गई है ।

 छात्र द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है ।
 पतंग उड़ रही है ।

भाववाच्य

क्रिया के जिस रूपांतर से वाक्य में कर्ता या कर्म के बदले क्रिया या भाव की प्रधानता होती है , उसे भाववाच्य कहते हैं । ऐसे वाक्यों में पुल्लिंग , एकवचन तथा अन्य पुरुष का रूप सामने आता है। क्रिया की निर्भरता भाव पर रहती है ।

जैसे -

 सोहन से चला नहीं जाता ।
 अब मुझसे सहा नहीं जाता ।
 बच्चों से लिखा नहीं जाता है ।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन

 कर्ता के साथ " से ","के द्वारा" अथवा " द्वारा" विभक्ति लगाकर कर्मवाच्य वाक्य बनाया जा सकता है ।
 परिवर्तन करते समय क्रिया के काल में परिवर्तन नहीं होता ।
 कर्तृवाच्य की प्रधान क्रिया में " जाना" क्रिया के उचित रूप को स्थान दिया जाता है ।

कर्तृवाच्य

 सीता खाना खाती है ।
 जवानों ने आतंकवदियों को मारा ।
 तुम फूल तोड़ोगे ।

कर्मवाच्य

 सीता के द्वारा खाना खाया जाता है ।
 जवानों द्वारा आतंकवादी मारे गए ।
 तुम्हारे द्वारा फूल तोड़ा जाएगा ।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन

भाववाच्य में अकर्मक क्रियाएँ होती हैं अर्थात ऐसे वाक्यों में कर्म नहीं होता ।
 कर्ता के साथ " से ", " के द्वारा " अथवा " द्वारा " विभक्ति लगाकर भाववाच्य वाक्य बनाया जा सकता है ।
 कर्तृवाच्य में वाक्य की क्रिया को ही वाक्य का कर्ता बना दिया जाता है ।
 जाना – क्रिया के रूप कर्तृवाच्य के काल भाद के अनुसार जुड़कर भाववाच्य वाक्य का निर्माण करते हैं ।
 भाववाच्य – वाक्यों में क्रिया सदा अन्य पुरुष,पुल्लिंग तथा एकवचन में रहती है|

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
युवराज पढ़ रहा है ।	युवराज द्वारा पढ़ा जा रहा है ।

 मैं अब नहीं चल पाता । मुझसे अब नहीं चला जाता ।
 पानवाला नया पान खा रा था । पानवाले द्वारा नया पान खाया जा कहा था ।

अभ्यास

निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए ।

1)गीता नहीं लिखती ।(कर्मवाच्य में)
उत्तर – गीता के द्वारा लिखा नहीं जाता।

2)माँ द्वारा भिखारी को भोजन दिया गया ।(कर्तृवाच्य में)
उत्तर - माँ ने भिखारी को भोजन दिया ।

3)सर्दियों में गर्म पानी से नहाते है ।(भाववाच्य में)
उत्तर - सर्दियों में गर्म पानी से नहाया जाता है ।

4)नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया ।(कर्मवाच्य में)
उत्तर - नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

5)हम इतने कष्टों को सहन नहीं करेंगे ।(कर्मवाच्य में)
उत्तर –हमारे द्वारा इतने कष्ट सहन नहीं किए जाएँगे ।

6)विद्यार्थीयों द्वारा परीक्षा दी गई ।(कर्तृवाच्य में)
उत्तर - विद्यार्थीयों द्वारा परीक्षा दी ।

7)पक्षियों द्वारा संगीत का अभ्यास किया जाता हैं ।(कर्तृवाच्य में)
उत्तर - पक्षी संगीत का अभ्यास करते हैं ।

8)बीमार युवक चल नहीं पा रहा ।(भाववाच्य में)
उत्तर - बीमार युवक से चला नहीं पाता ।

9)मच्छरों के कारण हम रात भर सो नहीं पा रहा ।(भाववाच्य में)
उत्तर - मच्छरों के कारण हमसे रात भर सोया नहीं गया ।

10)दर्द के कारण उससे चला नहीं जाता ।(कर्तृवाच्य में)
उत्तर - दर्द के कारण वह चल नहीं सकती।

11)हम स्वामी जी को नहीं भूल सकते ।(कर्मवाच्य में)

उत्तर – हमारे द्वारा स्वामी जी को नहीं भुलायाजा सकता ।

12)माँ के द्वारा बचपन में ही घोषित कर दिया गया था ।(कर्तृवाच्य में)
उत्तर – माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था ।

13)बालगोबिन भगत प्रभातियाँ गाते थे ।(कर्मवाच्य में)
उत्तर – बालगोबिन भगत के द्वारा प्रभातियाँ गाई गई ।

14)खबर सुनकर वह चल भी नहीं पा रही थी ।(भाववाच्य में)
उत्तर – खबर सुनकर उससे चला भी नहीं पा रहा था ।

15)हर्षिता पैदल चल नहीं सकती ।(भाववाच्य में)
उत्तर - हर्षिता से पैदल चला नहीं जाता ।
**********@@**********@@**********

वाक्य भेद

वाक्य - सार्थक शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह जो पूरा आशय प्रकट करता है, उसे वाक्य कहते हैं।
हम मन के भाव-विचार प्रकट करने के लिए भाषा का सहारा लेते हैं तो शब्दों का प्रयोग करते हैं। उन शब्दों को वाक्यों के रूप में बोलते या लिखते हैं। अतः अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए इन शब्दों को एक व्यवस्थित क्रम में रखा जाता है।
 वाक्य सार्थक शब्दों (पदों) के मेल से वाक्य बनते हैं।
 वाक्य पूर्ण और स्वतंत्र होते हैं।
 वाक्य वक्ता की कही बातों का आशय स्पष्ट करते हैं।

 हिंदी के शब्दों को एक निश्चित क्रम में लिखा जाता हैं-
कर्ता + कर्म + पूरक + क्रिया। जैसे-
i. बालक पुस्तक पढ़ता है।
ii. प्राचार्य ने छात्रों को पुस्कार दिया।
iii. राम अच्छा लड़का है।

वाक्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं –
1. अर्थ के आधार पर
2. रचना के आधार पर
रचना के आधार पर -

1. **सरल वाक्य** - सरल वाक्य एक कर्ता तथा एक क्रिया के मेल से बनता है। इसमें कोई उपवाक्य नहीं जुड़ता है। जैसे-
1. राम ने रावण को हरा दिया।
2. छात्र ने समय पर गृहकार्य पूरा कर लिया।
3. ड्राइवर समय से बस लेकर नहीं आया।
4. पक्षी शाम होते ही घोंसले की ओर लौट आते हैं।

सरल वाक्यों की रचना –
सरल वाक्यों की रचना मुख्यतया दो घटकों से होती है –
(i) उद्देश्य (ii) विधेय
(i) उद्देश्य-वाक्य में जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहा जाता है तथा कर्ता भी कहा जाता है।

उद्देश्य कभी एक शब्द का होता है तो कभी इसकी विशेषता बताने वाले शब्द इसमेंजुड़ जाते हैं तब यह कई शब्दों के मेल से बनता है, जैसे-
(क) छात्र पढ़ने लगे हैं।
(ख) छोटे-बड़े सभी बालक पढ़ने लगे हैं।
इन वाक्यों में छात्र, छोटे-बड़े और सभी बालक उद्देश्य हैं, क्योंकि वाक्य का शेष अंश इनके ही बारे में कुछ बता रहा है।

(ii) विधेय- वाक्य में जिस अंश द्वारा अपने उद्देश्य के बारे में कुछ बताया जाता है, उसे विधेय कहते हैं।
विधेय एक शब्द का हो सकता है या पूरकों के साथ मिलकर कई शब्दों के मेल से बन सकता है, जैसे –
1. बालक गया।
2. बालक घर गया।
3. छात्र कालांश समाप्त होते ही श्यामपट्ट से लिखकर घर गया।
इन वाक्यों में घर गया और श्यामपट्ट से लिखकर घर गया। ये विधेय हैं।
कुछ अन्य उदाहरण

2. संयुक्त वाक्य - जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य किसी योजक (समुच्चयबोधक अव्यय) द्वारा जुड़े होते हैं तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।
संयुक्त वाक्य की विशेषताएँ –
संयुक्त वाक्य के उपवाक्य आपस में योजकों- या, वा, अथवा, इसलिए, और, किंतु, परंतु, लेकिन, तथा, एवं आदि से जुड़े होते हैं।
 इनमें प्रयुक्त उपवाक्य स्वतंत्र अर्थ का बोध कराते हैं।
 इनमें प्रयुक्त उपवाक्य समान स्तर के होते हैं।

इन्हें समानाधिकृत उपवाक्य अथवा समानाधिकरण उपवाक्य भी कहते हैं। उदाहरण -
I. लोगों द्वारा नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाना देशभक्ति और देश प्रेम की भावना उत्पन्न होती है।
II. पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला–साहब! कैप्टन मर गया।
III. देशप्रेम अत्यंत उच्चकोटि का और अनुकरणीय होता है।
IV. वृक्ष लगाना पर्यावरण तथा अपने आसपास की सफ़ाई रखना जरूरी है।
V. बादल घिरे किंतु बरसात न हुई।
VI. वह दिन भर काम करता रहा परंतु पूरा न हो सका।
VII. बाज़ार से कलम लाना तथा पेंसिल अवश्य लाना।

VIII. उसने चाय एवं कॉफी का आनंद लिया।
IX. कैप्टन चश्मेवाले में नेताजी के प्रति अगाध लगाव एवं श्रद्धा भाव था।
X. मूर्तिवाला फ्रेम दे देता है और मूर्ति पर दूसरा फ्रेम लगा देता है।
XI. वह मूर्ति की कमी और नेताजी के व्यक्तित्व की अपूर्णता को भरने का प्रयास करता था।
XII. बालगोविन भगत अत्यंत सादगी, सरलता और नि:स्वार्थ भाव से जीवन जीते थे।

3. मिश्रवाक्य- जिस वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य जुड़े हो, परंतु उनमें एक प्रधान उपवाक्य हो तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्रवाक्य कहते हैं।
मिश्रवाक्य में आश्रित या गौण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होते हैं। मिश्रवाक्य व्यधिकरण योजकों के युग्म-जैसा-वैसा, जो-सो, जिसकी-उसकी, जहाँ-वहाँ, जब-तब, जैसी-वैसी, यदि-तो, – जब- तब, जिन्हें-उन्हें आदि से जुड़े होते हैं। स्वतंत्र उपवाक्य को प्रधान उपवाक्य भी कहा जाता है।
उदाहरण
i. माँ ने कहा कि शाम को जल्दी लौट आना।
ii. जब मैं घर पहुँचा तब वर्षा शुरू हो चुकी थी।
iii. जैसे ही बादल घिरे वैसे ही बिजली चमकने लगी।
iv. जैसे ही मैं विद्यालय पहुँचा वैसे ही घंटी बज चुकी थी।
v. जब-जब धरती पर अधर्म बढ़ा है, तब-तब ईश्वर धरती पर अवतरित हुए हैं।
vi. जहाँ-जहाँ सिंचाई की व्यवस्था है, वहाँ-वहाँ फसलें खूब पैदा होती हैं।
vii. यदि तुम मेहनत करोंगे तो अच्छे अंक से उत्तीर्ण हो जाओंगे।

यद्यपि हम वहाँ नहीं गए, तथापि उनका काम हो गया । मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्य वाक्य के आरंभ, मध्य या अंत में कहीं भी आ सकते हैं, जैसे –

आरंभ में –
i. जो अपने आस-पास सफ़ाई रखते हैं, वे सदा स्वस्थ रहते हैं।
ii. जिस लड़के ने सबसे ज्यादा पौधे लगाए हैं उसे पुरस्कृत किया जाएगा।
मध्य में –
i. वे, जो अपने आस-पास सफ़ाई रखते हैं, सदा स्वस्थ रहते हैं।
ii. वह लड़का, जिसने सबसे ज्यादा पौधे लगाए हैं, पुरस्कृत किया जाएगा।
अंत में –
i. वे सदा स्वस्थ रहते हैं जो अपने आस-पास सफ़ाई रखते हैं।
ii. उस लड़के को पुरस्कृत किया जाएगा जिसने सबसे ज्यादा पौधे लगाए हैं।
iii. जो कुछ प्रसाद रूप में मिलता था उसी में परिवार का निर्वाह करते थे।

आश्रित उपवाक्य के भेद –

 संज्ञा उपवाक्य
 विशेषण उपवाक्य
 क्रियाविशेषण उपवाक्य

1. संज्ञा उपवाक्य - किसी उपवाक्य में जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की संज्ञा के स्थान पर आते हैं, उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं; जैसे –
प्राचार्य ने कहा कि कल विद्यालय बन्द रहेगा।

प्रधान उपवाक्य समुच्चय बोधक

अव्यय

संज्ञा उपवाक्य

i. केवट ने कहा कि बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा।
ii. मैं जानता था कि तुम अवश्य आओंगे।

iii. अध्यापक ने कहा कि अपने आसपास सफ़ाई रखो।
iv. आज मेरा जन्मदिन है, राधा ने कहा कि कहा।

इन वाक्यों में प्रयुक्त उपवाक्य 'बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा', 'तुम अवश्य आओंगे ', 'अपने आस-पास सफ़ाई रखो' संज्ञा उपवाक्य हैं।
माली ने बच्चों को समझाया कि फूल तोड़ना मना है।
फल वाले ने कहा कि मैं ताजे फल ही बेचता हूँ।

संज्ञा उपवाक्यों की पहचान इनके आरंभ में लगे 'कि' को देखकर पहचान की जा सकती है। ये उपवाक्य 'कि' के द्वारा मुख्य (प्रधान) उपवाक्य से जुड़े होते हैं। 'कि' का प्रयोग उस दशा में नहीं होता-जब संज्ञा उपवाक्य प्रधान उपवाक्य से पहले आ जाए या कभी-कभी 'कि' का लोप कर दिया जाए; जैसे –
तुम मेरी मदद करोगे, मुझे पता था।
वह त्याग पत्र नहीं देता, उसने घर वालों को बता दिया था।
राजेश को पता था, वेंकट आने वालों में नहीं है।
मरीज को लगने लगा, अब वह ठीक हो जाएगा।
इन वाक्यों में रेखांकित अंश संज्ञा उपवाक्य हैं जिनके पहले 'कि' का लोप है।

2.विशेषण उपवाक्य – विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण उपवाक्य कहते हैं; जैसे
 वे छात्र सफल हो गए जो मेहनत कर रहे थे।

प्रधान उपवाक्य विशेषण उपवाक्य
1. ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।
2. विपत्ति का सामना वही कर पाते हैं जो धैर्य बनाए रखते हैं।
3. जो दवाएँ तुमने मुझे कल दी थीं वे नकली हैं।
4. जिस मरीज का आपरेशन हुआ था, वह अब चलने लगा है।
पहचान- उपवाक्य जो, जिसे, जिसने, जिन्होंने, जिस, जिसको आदि 'जो' के विभिन्न रूपों से शुरू होते हैं।

i. जो फल तुम लाए थे, वे बहुत ही मीठे हैं।
ii. जिस छात्र ने सबसे अधिक परिश्रम किया था, वही प्रथम आया है।
iii. जिन्होंने दुखियों की मदद की है उनका नाम अमर हो गया।

3. क्रियाविशेषण उपवाक्य – प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताने वाले आश्रित उपवाक्यों को क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं; जैसे –
जहाँ पहले मैं पढ़ा था,यह वही विद्यालय है।
जहाँ पहले मैं पढ़ा था, यह वही विद्यालय है।

क्रिया विशेषण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य
1. जब मैं जागता हूँ, तब टहलने जाता हूँ।
2. जैसे ही अलार्म बजा वैसे ही वह उठ बैठा।
3. जहाँ साफ़-सफ़ाई होती है वहाँ ईश्वर का वास होता है।

क्रियाविशेषण उपवाक्य के भेद – क्रियाविशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया का काल, रीति, स्थान, परिमाण, कार्य का कारण आदि का बोध कराते हैं। इस आधार पर क्रियाविशेषण उपवाक्य के पाँच भेद होते हैं –

(i) कालवाचक उपवाक्य –
1. जब सूरज उगता है तब अँधेरा दूर हो जाता है।
2. जैसे ही मैं विद्यालय पहुँचा वैसे ही वर्षा होने लगी।
3. ज्यों ही वर्षा शुरू हुई मोर नाचने लगे।

(ii) रीतिवाचक उपवाक्य –
जैसा वह कहता है, वैसा ही काम करो।
1. जैसा सचिन तेंदुलकर बल्लेबाजी करते थे, वैसा दूसरा नहीं।

2. जिस तरह गुरु ने समझाया था, शिष्य उसी तरह का आचरण किया।
3. जैसे-जैसे आगे बढ़ते जाओंगे, मंज़िल निकट आती जाएगी।

(iii) स्थानवाचक उपवाक्य –
1. जहाँ आग होती है वहाँ धुआँ होता है।
2. जहाँ संत निवास करते हैं वह स्थान स्वर्ग तुल्य होता है।
3. जहाँ-जहाँ सरदार पटेल गए उनका भव्य स्वागत हुआ।

(iv) परिमाणवाचक उपवाक्य –

 वह उतना ही अधिक पढ़ेगा, जितना अंक लाएँगा।
 जितना आप पढ़ सकते हो, उतना पढ़ लो।
1. जितनी ही वर्षा होगी उतनी ही फसल अच्छी होगी।
2. जितना पचा सको उतना ही खाओ।
3. जितनी बरफ़ पड़ेगी सरदी उतनी ही बढ़ती जाएगी।

(v) परिणामवाचक उपवाक्य –
1. यदि तुमने मन लगाकर पढ़ाई की होती तो यह दिन न देखना पड़ता।
2. वह आज इसलिए विद्यालय जाएगा क्योंकि आज पैसे बँटेंगे।
3. यदि कबूतर लालच न करते तो जाल में न फंसते।
वाक्य रचनांतरण या रूपांतरण
किसी वाक्य से दूसरे वाक्य में इस तरह बदलना कि उसका मूलभाव अपरिवर्तित रहे, वाक्य रचनांतरण या रूपांतरण कहलाता है। वाक्य रूपांतरण के अंतर्गत सरल वाक्यों को संयुक्त और मिश्र में, संयुक्त वालों को सरल और मिश्रवाक्य में तथा मिश्रवाक्य को सरल और संयुक्त वाक्य में बदला जाता है; जैसे –

1. धमाका होते ही लोग घरों से बाहर निकल आए। (सरल वाक्य)
2. धमाका हुआ और लोग घरों से बाहर निकल आए। (संयुक्त वाक्य)
3. जैसे ही धमाका हुआ लोग घरों से बाहर निकल आए। (मिश्र वाक्य)
 अध्यापकः बोले कि कल सभी को 9 बजे तक आना है और परीक्षा लिखना है।

अध्यापकः बोले कि कल सभी को 9 बजे तक आना है और परीक्षा लिखना है। प्रधान आश्रित स्वतंत्र

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न / उत्तर

1. निम्नलिखित वाक्यों को रचना के आधार पर वाक्य पहचानकर लिखिए –

i. वह बाज़ार गई और स्वेटर लाई।	संयुक्त वाक्य
ii. घंटी बजते ही छात्र कक्षाओं में चले गए।	सरल वाक्य
iii. यद्यपि वह ईमानदार है फिर भी काम से जी चुराता है।	मिश्र वाक्य
iv. बुढ़िया रो रही थी इसलिए मैंने उससे रोने का कारण पूछा।	संयुक्त वाक्य
v. जब हेलीकॉप्टर से खाना गिराया गया तब लोगों को भोजन मिला।	मिश्र वाक्य
vi. बिजली आई परंतु टीवी न चली।	संयुक्त वाक्य
vii. दोनों देश के सैनिक घमासान युद्ध कर रहे थे।	सरल वाक्य
viii. वर्षा रुकी और खेल शुरू हो गया।	संयुक्त वाक्य

प्रश्न 2.नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए –

i. सवेरा होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगी। (संयुक्त वाक्य)

उत्तर: सवेरा हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगी।

ii. जब थाने में शिकायत की गई तब लाउडस्पीकर का शोर बंद हुआ। (मिश्र वाक्य)

थाने में शिकायत करने पर लाउडस्पीकर का शोर बंद हुआ।

iii. परिश्रमी लोगों के लिए कोई काम असंभव नहीं होता। (संयुक्त वाक्य)

जो लोग परिश्रमी होते हैं उनके लिए कोई काम असंभव नहीं होता है।

iv. आकाश में बादल छाते ही शीतल हवा बहने लगी। (मिश्र वाक्य)

आकाश में बादल छाए और शीतल हवा बहने लगी।

v. अध्यापक कक्षा में आए और पढ़ाने लगे। (मिश्र वाक्य)

जब अध्यापक कक्षा में आए तब वे पढ़ाने लगे।

vi. अभिनेता अमिताभ बच्चन को सदी का महानायक कहा जाता है। (मिश्र वाक्य)

अमिताभ बच्चन वही अभिनेता हैं जिन्हें सदी का महानायक कहा जाता है।

vii. परिश्रम करो और सफ़लता प्राप्त करो। (सरल वाक्य)

परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित अंशों को देखकर आश्रित उपवाक्य भेद पहचानिए –

i. अध्यापक ने उस छात्र पर जुर्माना लगाया जिसने प्रयोगशाला में उपकरण तोड़े थे। . **विशेषण उपवाक्य**

ii. राम ने सुमंत से कहा कि अब अयोध्या वापस लौट जाओ।	**संज्ञा उपवाक्य**
iii. जब बारिश हो रही थी तब बच्चे नहा रहे थे।	**क्रियाविशेषण उपवाक्य**
iv. कृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि पांडवों को आधा राज्य दे दे।	**संज्ञा उपवाक्य**

v. जो गरीबों की मदद करते हैं वे दीनबंधु कहलाते हैं। **विशेषण उपवाक्य**
vi. यदि मन लगाकर पढ़ते तो फेल न होते। **क्रियाविशेषण उपवाक्य**
vii. अध्यापक ने छात्रों से कहा कि बिना पटाखों के दीपावली मनाएँ। **संज्ञा उपवाक्य**
viii. जब-जब बाढ़ आई तब-तब फ़सलें नष्ट हुई हैं। **क्रियाविशेषण उपवाक्य**

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों को रचना के भेद के आधार पर पहचानकर लिखिए –
i. मनोज घर आते ही मैच देखने लगा। **सरल वाक्य**
ii. जो छात्र विज्ञान में रुचि लेते हैं वही डॉक्टर और इंजीनियर बनते हैं। **मिश्र वाक्य**
iii. आप चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी। **संयुक्त वाक्य**
iv. बच्चे को सड़क पार करनी थी, पर वह साइकिल से टकरा गया। **संयुक्त वाक्य**
v. वह आलसी है और कामचोर भी। **संयुक्त वाक्य**
vi. जब विवाह सकुशल पार हो गया तब लड़की के पिता ने चैन की साँस ली। **मिश्र वाक्य**

प्रश्न 5. नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए
i. वे कार्यकर्ता कहाँ हैं जिन्होंने चुनाव जितवाए हैं। (सरल वाक्य)
उत्तर : चुनाव जिताने वाले कार्यकर्ता कहाँ हैं?
ii. किसान खेत में गया और फसल काटने लगा। (मिश्र वाक्य)
जब किसान खेत में गया तब वह फ़सल काटने लगा।
iii. धमाके में पुल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। (मिश्र वाक्य)
जैसे ही धमाका हुआ पुल के टुकड़े-टुकड़े हो गए।
iv. मैं मोबाइल फ़ोन खरीदने बाज़ार गया। (संयुक्त वाक्य)
मैं बाज़ार गया और मोबाइल फ़ोन खरीदा।
v. दीवारें गंदी करने वाले छात्रों को दंडित किया जाएगा। (मिश्र वाक्य)
जो छात्र दीवारें गंदी करेंगे उन्हें दंडित किया जाएगा।
vi. सेठ बहुत मोटा है इसलिए तेज़ चल नहीं सकता।(सरल वाक्य)
मोटा सेठ तेज़ नहीं चल सकता है।
vii. एक बजते ही सर्कस का शो शुरू हो गया।(संयुक्त वाक्य)
एक बजा और सर्कस शुरू हो गया।

प्रश्न 6.निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित अंशों को देखकर आश्रित उपवाक्य भेद पहचानिए
i. वे छात्र, जो कल नहीं आए थे खड़े हो जाएँ। **विशेषण उपवाक्य**
ii. जिन्होंने भारत को आजाद करवाया उनका नाम इतिहास में अमर रहेगा। **विशेषण उपवाक्य**
iii. जैसा मोर नाचता है वैसा कोई दूसरा पक्षी नहीं। **क्रियाविशेषण उपवाक्य**
iv. मुझे विश्वास है कि महँगाई अवश्य कम होगी। **संज्ञा उपवाक्य**
v. यह आपके निर्देशन का फल है जिसके कारण फ़िल्म इतनी सफल हुई। **विशेषण उपवाक्य**

vi. जहाँ-जहाँ गांधी जी गए उनका भव्य स्वागत हुआ। **क्रियाविशेषण उपवाक्य**
vii. हम दोनों चाहते थे कि अब हम वैवाहिक बंधन में बंध जाए। **संज्ञा उपवाक्य**

बोर्ड परीक्षाओं के प्रश्न

प्रश्न 1. कोष्ठक में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर दीजिए।

1. सुबह उठकर उसने दूध पिया। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)

(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य
(ग) विधान वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

(2) झूठ बोलने वालों पर कोई विश्वास नहीं करता। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(क) जो झूठ बोलते हैं, उन पर कोई विश्वास नहीं करता।
(ख) झूठ बोलते हैं ।
(ग) वे झूठ बोलते हैं और वह कभी सत्य भी।
(घ) रमन झूठ बोलता है।

(3) मेरे समझाने पर वह मान गई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
मैंने समझाया और वह मान गई।

(4) उस लड़की को बुलाओ जो अखबार पढ़ रही है। (सरल वाक्य में बदलिए)
अखबार पढ़ रही लड़की को बुलाओ।

(5) जो महिला अधिवेशन को संबोधित करने के लिए उठी वह बहुत सुंदर थी। (सरल वाक्य में बदलिए)
अधिवेशन को संबोधित करने के लिए उठी महिला बहुत सुंदर थी।

प्रश्न 2.निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(क) मैंने सुना है कि तुम अपनी कक्षा में प्रथम आए हो- वाक्य का प्रकार बताइए। **मिश्र वाक्य**
(ख) वह स्टेशन पहुंचा और हम वहाँ से चल दिए– यह किस प्रकार का वाक्य है। **संयुक्त वाक्य**
(ग) उन्होंने जैसे ही शहनाई बजानी शुरू की, सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए-संयुक्त वाक्य में बदलिए।
उन्होंने शहनाई बजानी शुरू की और सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए।
(घ) मेरे पास एक किताब है जो बहुत रुचिकर है- सरल वाक्य में बदलिए।
मेरे पास एक बहुत रुचिकर किताब है।
(ङ) वह बहुत विनम्र है और सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है- मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।
वह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है क्योंकि वह बहुत विनम्र है।

प्रश्न 3.निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
(क) उन्होंने मूर्ति को देखा और रुक गए। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
जब उन्होंने मूर्ति की ओर देखा तब रुक गए।

(ख) जो छात्र प्रश्न पूछता है उसका ज्ञान बढ़ता है। (सरल वाक्य में रूपांतरण कीजिए)
प्रश्न पूछने वाले छात्र का ज्ञान बढ़ता है।

(ग) न ही वह मेरे घर आता है और न ही मैं उसके घर जाता हूँ। (वाक्य-भेद बताइए)
संयुक्त वाक्य

(घ) उसने आश्वासन दिया कि वह भविष्य में यह गलती नहीं दोहराएगा। (किस प्रकार का वाक्य है?)
मिश्र वाक्य
प्रश्न 4.निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
(क) उपदेशक मंच पर बैठकर उपदेश देने लगा। (संयुक्त वाक्य में रूपांतरण कीजिए)
उपदेशक मंच पर बैठा और उपदेश देने लगा।

(ख) सूर्य उदित हुआ और चारों ओर प्रकाश फैल गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
जब सूर्य उदित हुआ तब चारों ओर प्रकाश फैल गया।

(ग) जैसे ही वह धन-संपन्न हुआ वैसे ही उसकी समस्याएँ बढ़ने लगीं। (वाक्य-भेद बताइए)
मिश्रवाक्य

(घ) भविष्यवाणी है कि आज वर्षा होगी। (वाक्य-भेद लिखिए)
मिश्रवाक्य

प्रश्न 5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
(क) विदुषी कक्षा में बैठकर अपनी सहेली रेखा की प्रतीक्षा करने लगी। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
(ख) जैसे ही उसने औषधि ली, उसका रक्तचाप सामान्य हो गया। (वाक्य-भेद बताइए)
(ग) प्रतिस्पर्धा में प्रथम आने वाले छात्र को बुलाओ। (मिश्र वाक्य बनाइए)
(घ) वह गाड़ी चलाने के साथ-साथ मोबाइल पर बात भी करता है। (संयुक्त वाक्य बनाइए)
उत्तर:
(क) विदुषी कक्षा में बैठ गई अपनी सहेली रेखा की प्रतीक्षा करने लगी।
(ख) मिश्रवाक्य
(ग) जो छात्र प्रतिस्पर्धा में प्रथम आया है, उसे बुलाओ।

(घ) वह गाड़ी चलाता है साथ-साथ मोबाइल पर बात भी करता है।

प्रश्न 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
(क) अपने आत्मकथ्य के बारे में मन्नू भंडारी ने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हैं। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)
(ख) स्त्री-पुरुषों ने मिलकर आज़ादी के लिए लंबा संघर्ष किया। (संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए)
(ग) इन लोगों की छत्र-छाया हटी और मुझे अपने वजूद का एहसास हुआ। (सरल वाक्य में बदलिए)
उत्तर:
(क) मिश्र वाक्य
(ख) स्त्री-पुरुष दोनों साथ मिले और आज़ादी के लिए लंबा संघर्ष किया।
(ग) इन लोगों की छत्र-छाया हटते ही मुझे अपने वजूद का एहसास हुआ।

प्रश्न 7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
(क) इसका क्या सबूत है कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)
(ख) दोपहर हो गई और कोई बच्चा खेलने नहीं निकला। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
(ग) रमा शहर जाकर बीमार हो गई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
उत्तर:
(क) मिश्रवाक्य
(ख) जब दोपहर हो गई तब कोई बच्चा खेलने नहीं निकला।
(ग) रमा शहर गई और बीमार हो गई।

प्रश्न 8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
(क) हुड़दंग तो इतना मचाया कि कॉलेज वालों को थर्ड ईयर भी खोलना पड़ा। (वाक्य-भेद लिखिए)
(ख) मैं जल्दी से बाहर जाकर ओले देखने लगा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
(ग) नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की के बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
उत्तर:
(क) मिश्र वाक्य
(ख) ज्यों ही मैं बाहर गया, जल्दी से ओले देखने लगा।
(ग) नवाब साहब ने कुछ देर तक गाड़ी की खिड़की से बाहर देखा और स्थिति पर
गौर करते रहे।

प्रश्न 9.निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए। (CBSE 2015)
(क) वह अध्यापक था, जो कल यहाँ आया था। (संयुक्त वाक्य में)

(ख) घायल सैनिक ने शस्त्र उठाया और वह शत्रुओं से लड़ने लगा। (मिश्रित वाक्य में)
(ग) राम दशरथ के पुत्र थे और वे पिता की आज्ञा से वन को गए (सरल वाक्य में)
उत्तर:
(क) वह अध्यापक था और कल यहाँ आया था।
(ख) जब घायल सैनिक ने शस्त्र उठाया तब वह सैनिकों से लड़ने लगा।
(ग) दशरथ के पुत्र राम पिता की आज्ञा से वन को गए।

प्रश्न 10.निम्नलिखित वाक्यों का भेद रचना के आधार पर लिखिए –
हीरा-मोती ने देखा कि साँड़ दौड़ता हुआ चला आ रहा है।
भीटे की ओर पहाड़ों की चोटियाँ नंगी थीं।
हालदार साहब ने कैप्टन को देखा और द्रवित हो गए।
बच्चों ने मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगा दिया था।
बाल गोबिन का स्वर सुनकर सभी झूम उठते थे।

प्रश्न 11.निम्नलिखित वाक्यों का भेद रचना के आधार पर लिखिए –
मन्नू भंडारी ने नारे लगाए और लड़कियाँ कक्षाओं से बाहर आ गईं।
फादर बुल्के चाहते थे कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिले।
बिस्मिल्ला खाँ शहनाई वादक थे जो बाला जी मंदिर में रियाज़ किया करते थे।
मनुष्य ने सुई-धागे का आविष्कार तन ढंकने की ज़रूरत पूरी करने के लिए किया।
कुतर्कवादियों ने स्त्रियों की विद्वता नहीं देखी और आलोचना शुरू कर दी।

प्रश्न 12.निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए।
किसान ने पहाड़ी जाति के मज़बूत बैल खरीदे। (मिश्र वाक्य)
जब-जब फ़सलें अच्छी हुई हैं तब-तब महँगाई कम हुई है। (सरल वाक्य)
जो प्रतिदिन व्यायाम करता है वह स्वस्थ रहता है।(सरल वाक्य)
सबसे ज़्यादा पौधे लगाने वाला खड़ा हो जाए। (मिश्र वाक्य)
नीलामी करने के लिए काँजीहौस में पशुओं की गणना की जाती है। (संयुक्त वाक्य)

प्रश्न 13. निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए।
वह बालक जिसने घायल को अस्पताल पहुँचाया था खड़ा हो जाए। (सरल वाक्य)
चट्टानें खिसकने से घर नष्ट हो गए। (सरल वाक्य)
यही वह जगह है जहाँ गाइड फ़िल्म की शूटिंग हुई थी। (संयुक्त वाक्य)
कड़ाके की सरदी में भी भगत गाए जा रहे थे। (मिश्र वाक्य)
सपेरे के बीन बजाते ही साँप ने फन उठा लिया। प्रश्न (संयुक्त वाक्य)

प्रश्न 14. निम्नलिखित वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर उनका भेद लिखिए –
जो दूसरों की मदद करता है, वह दीनबंधु होता है।
जब-जब धर्म की हानि हुई है तब-तब ईश्वर ने अवतार लिया है।
वे जो नीली कमीज़ पहने हुए हैं, प्रयोगशाला में आ जाएँ।
यह वह 'बस है जो तीन घंटे में आगरा पहुँचाती है।
महात्मा जी का कहना था कि दीपक अपने आप बनो।

प्रश्न 15.निम्नलिखित वाक्यों से आश्रित उपवाक्य छाँटकर उनका भेद लिखिए –
तुम बाज़ार चलोगे तभी मैं चलूँगा।
कमांडर ने आदेश दिया कि गोलीबारी शुरू कर दो।
ये वही किसान हैं जो अन्नदाता कहलाते हैं।
तुम जहाँ रहते हो वहाँ पानी की व्यवस्था अच्छी नहीं है।
जिस आतंकी को पुलिस खोज रही थी वह सीमा पार भाग गया।

प्रश्न 16. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए –
(क) अंकित ने कहा कि मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।
(रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)
(ख) प्रथम आने वाले विद्यार्थी को पुरस्कार दिया जाएगा।
(मिश्र वाक्य में बदलिए)
(ग) हमने हर्षिता का पत्र पढ़कर सबको उसकी कुशलता का समाचार दिया।
(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

प्रश्न 17. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए – CBSE 2020-21
i. हर्षिता बहुत विनम्र है और सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है। (रचना के आधार पर भेद) – संयुक्त वाक्य।
ii. जो विद्यार्थी परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है।(रचना के आधार पर भेद) – मिश्र वाक्य।
iii. प्रयश बाजार गया। वहाँ से सेब लाया। (रचना के आधार पर– संयुक्त वाक्य में परिवर्तन)
प्रयश सेब लाया जब वह बाजार गया।
iv. जो वीर होते हैं, वे रणभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हैं। (रचना के आधार पर भेद) – विशेषण उपवाक्य वाक्य।
प्रश्न 18. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए – CBSE 2021-22
I. बादल घिर आए और वर्षा होने लगी। (रचना के आधार पर भेद) –संयुक्त वाक्य।
II. जो विद्यार्थी परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है।(रचना के आधार पर भेद) – संयुक्त वाक्य।
III. जो झूठ बोलते हैं, उन पर विश्वास मत करो।(रचना के आधार पर वाक्य भेद) (मिश्र वाक्य)
IV. आनंद चार दिन गाँव में रहा। वह सबका प्रिय हो गया। (रचना के आधार पर– संयुक्त वाक्य में परिवर्तन)
V. आनंद चार दिन गाँव में रहा और सबका प्रिय हो गया।

समास

• दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बने शब्द को सामासिक पद तथा इस क्रिया को समास कहते हैं।
• समाज के 6 भेद होते हैं।
1) अव्ययीभाव समास
2) तत्पुरुष समास
3) कर्मधारय समास
4) द्विगु समास
5) द्वंद समास
6) बहुव्रीहि समास

1• अव्ययीभाव समास
जिस सामासिक शब्द मे प्रथम पद प्रधान और दूसरा पद अव्यय होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं अधिकतर इसके आरंभ में आ,बे, भर,यथा,नि आदि शब्द आते हैं उदाहरण:
आजीवन, बेकाम,यथाशक्ति, निडर इत्यादि।

2• तत्पुरुष समास
जिस सामासिक शब्द में दूसरे पद की प्रधानता होती है वह तत्पुरुष समास होता है इस समास की मुख्य पहचान यह है कि समास का विग्रह करने पर मध्य में कारक विभक्ति का प्रयोग होता है।
उदाहरण:
देशगत =देश को गत
सत्याग्रह =सत्य के लिए आग्रह
गुणहीन = गुणों से हीन
सेनानायक =सेना का नायक इत्यादि।

3• कर्मधारय समास
जिस सामासिक शब्द में विशेषण और विशेष्य साथ-साथ हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
उदाहरण:
नीलगाय = नीली है जो गाय
महात्मा= महान है जो आत्मा
घनश्याम = घन के समान श्याम इत्यादि।

4• दिगु समास
जिस सामासिक शब्द का प्रथम पद संख्यावाचक होता है उसे ज द्विगु समास कहते हैं।
उदाहरण:
त्रिदेव= 3 देवताओं का समूह

दोराहा = दो राहों का समाहार
त्रिकोण = तीन कोणों का समाहार इत्यादि।

5• द्वंद समास

जिस समस्त पद के दोनों पद प्रधान होते हैं, जिनका विग्रह करते समय बीच में योजक शब्द 'और' लगता है उसे द्वंद समास कहते हैं।
उदाहरण:
दाल रोटी= दाल और रोटी
भला बुरा =भला और बुरा
पाप पुण्य = पाप और पुण्य इत्यादि।

6• बहुव्रीहि समास

इस सामासिक पद में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है बल्कि दोनों शब्द मिलकर एक नया अर्थ प्रकट करते हैं | उदाहरण:
नीलकंठ= नीला है कंठ जिसका
दुरंगा = दो रंगों वाला इत्यादि।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र

1) प्रत्यक्ष शब्द किस समास का उदाहरण है ?

क) अव्ययीभाव ख) तत्पुरुष ग) कर्मधारय उत्तर: अव्ययीभाव समास

2). पंकज में कौन सा समास है?

क)द्वंद ख) द्विगु ग) बहुव्रीहि उत्तर: बहुव्रीहि समास

3). किस समास में पहला पद प्रधान होता है?

कर्मधारय ख) अव्ययीभाव समास ग)बहुव्रीहि समास उत्तर अव्ययीभाव

4). समास धर्माधर्म में समास बताइए?

द्वंद ख) दिगु समास ग) तत्पुरुष उत्तर: द्वंद समास

5). प्राप्तांक में समास है?

अव्ययीभाव समास ख) द्वंद समास ग) तत्पुरुष समास उत्तर: तत्पुरुष समास

6). त्रिफला शब्द का समास बताइए ?

द्वंद ख) दिगु समास ग) कर्मधारय उत्तर :द्विगु समास

7). निर्धन में कौन सा समास है?

कर्मधारय ख) तत्पुरुष ग) बहुव्रीहि उत्तर : बहुव्रीहि

8). महात्मा में समास बताइए?

अव्ययीभाव समास ख) कर्मधारय समास ग) तत्पुरुष समास उत्तर :कर्मधारय समास

9). किस समास में दोनों पद मिलकर एक नया अर्थ प्रकट करते हैं?

तत्पुरुष समास ख) कर्मधारय समास ग) बहुव्रीहि समास उत्तर : बहुव्रीहि समास

10). किस समास में पहला पर संख्यावाचक होता है?

क) दिगु समास ख) कर्मधारय समास ग) बहुव्रीहि समास उत्तर : द्विगु समास

11) त्रिनेत्र में समास बताइए?

अव्ययीभाव ख) तत्पुरुष ग) दिगु समास उत्तर:दिगु समास

12). तत्पुरुष समास में प्रधान होता है?

पहला पद ख) दूसरा पद ग) दोनों पद उत्तर:दूसरा पद

13). रातों रात में कौन सा समास है?

कर्मधारय समास ख) तत्पुरुष समास ग)द्वंद उत्तर: द्वंद समास

14). जिस समास मे दोनों खंड प्रधान ना हो वह है?

क) तत्पुरुष समास ख) कर्मधारय ग) बहुव्रीहि उत्तर : बहुव्रीहि समास

15). नीललोहित में किस प्रकार का समास है ?

क)बहुव्रीहि समास ख) कर्मधारय समास ग)अव्ययीभाव समास उत्तर: कर्मधारय समास

16). इनमें से किस शब्द में कर्मधारय समास नहीं है?

क)भारतवासी ख) परमेश्वर ग) महाजन उत्तर :भारतवासी

**********@@**********@@**********

पद परिचय का भेद

पद

जब शब्दो का प्रयोग वाक्य में किया जाता हैं तो उन्हें पद कहते हैं।

पद परिचय

पद परिचय का अर्थ है वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक परिचय देना। अर्थात वाक्य में प्रत्येक पद के स्वरूप तथा अन्य पदों के साथ उसके संबंध को बताने की क्रिया को पद परिचय कहते हैं।

वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के व्याकरणिक परिचय को पद-परिचय, पद-व्याख्या या पदान्वय कहते है।
व्याकरणिक परिचय यह है – वाक्य में उस पद की स्थिति बताना, उसका लिंग, वचन, कारक तथा अन्य पदों के साथ संबंध बताना।
जैसे – राम ने सीता को फल दिया।
इस वाक्य में एक क्रिया का प्रभाव दो कर्मों पर पड़ रहा है जिसमे से पहले कर्म सीता है और दूसरा कर्म फल है अतः यह द्विकर्मक क्रिया का उदाहरण है।
(द्विकर्मक का अर्थ दो कर्म का एक साथ प्रयोग करना होता है। जब किसी वाक्य में कर्ता के द्वारा क्रिया का उपयोग करने पर उसका प्रभाव दो कर्मों पर पड़ता है द्विकर्मक क्रिया कहलाती है। इसमे जो कर्म पहले आता है वह प्राणीवाचक होता है तथा जो कर्म बाद में आता है वह निर्जीव होता है।)
राम - संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'ने' के साथ कर्ता कारक, द्विकर्मक क्रिया 'दिया' के साथ।
सीता - व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग , एकवचन, कर्म कारक
फल - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक

पद परिचय - भेद
दो भेद होते हैं-
(क) विकारी
(ख) अविकारी।

(क) विकारी लिंग, वचन, कारक आदि के कारण इनका रूप बदल जाता है।
विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं-
1. संज्ञा - (संज्ञा का भेद,लिंग, वचन, कारक, अन्य शब्दों से संबंध।)
किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।
संज्ञा शब्द का क्रिया के साथ संबंध 'कारक' के अनुसार जाना जाता है।
(कारक- वाक्य में संज्ञा आदि शब्दों का क्रिया से संबंध बताने वाला व्याकरणिक कोटि कारक कहलाता है।)
2. सर्वनाम - (सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया से संबंध।)
संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं|
जैसे-मैं, हम, ये कुछ आदि।

3. विशेषण - (विशेषण के भेद, लिंग, वचन, विकार, संबंध और उसका विशेष्य।)
संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं|
जैसे- मीठा, परिश्रमी, काला, मोटा आदि।

4. क्रिया। - (क्रिया के भेद, लिंग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य,धातु कर्म और कर्ता का उल्लेख।)
जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का पता चले, उसे क्रिया कहते हैं;
जैसे- लिखना, पढ़ना, बोलना, स्नान करना आदि।
(ख) अविकारी या अव्यय

ऐसे शब्द जिनके रूप लिंग, वचन, कारक, काल, पुरुष आदि की दृष्टि से नहीं बदलते उन्हें अविकारी या अव्यय कहते हैं|
जैसे-हाथोंहाथ, इधर, वाह, अथवा आदि।

अविकारी या अव्यय शब्द पाँच प्रकार के होते हैं-
1. क्रियाविशेषण - (क्रियाविशेषण का भेद तथा जिसकी विशेषता बताई जा रही है, का उल्लेख।)
क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं|
जैसे- बहुत, धीरे-धीरे, उधर, प्रातः आदि।

2. संबंधबोधक - (भेद, जिसके साथ संबंध बताया जा रहा है, का उल्लेख।)
जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

3. समुच्चयबोधक (योजक) - (भेद, जिन शब्दों या पदों को मिला रहा है, का उल्लेख।)
जो अव्यय दो शब्दों, दो पदबंधों या दो अव्ययों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं|
जैसे – और, तथा, किंतु, परंतु अथवा आदि।

4. विस्मयादिबोधक - (हर्ष, भाव, शोक, घृणा, विस्मय आदि किसी एक भाव का निर्देश।)
जिन अव्यय शब्दों से आश्चर्य, हर्ष, घृणा, पीड़ा आदि भाव प्रकट हों, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं|
जैसे – ओह, अरे, अहा, हाय आदि|

5. निपात
वे अव्यय शब्द जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ पर बल लगा देते हैं, उन्हें निपात कहते हैं। ही, तो, भी, तक, मात्र, भर आदि मुख्य निपात हैं।

SET – 1 PAPER 2012

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए।
1. उसने उनके अनुकरणीय जीवन को नमन किया |
उत्तर विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन
2. उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित किया |
उत्तर संज्ञा , भाववाचक, स्त्रीलिंग , एकवचन
3. वे माँ की स्मृति में अक्सर डूब जाते |
उत्तर क्रिया विशेषण, कालवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण
4. जैसा करोगे वैसा भरोगे
उत्तर सर्वनाम, सम्बन्धवाचक,पुल्लिंग, एकवचन

SET – 1 PAPER 2013
निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए।
1. लखनऊ स्टेशन से गाड़ी छूट रही थी।
उत्तर जातिवाचक स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक 'छूट रही थी' क्रिया का कर्ता।
2. खीरे की पनियाती फाँकें बहुत स्वादिष्ट थीं।
उत्तर गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, स्त्रीलिंग विशेष्य 'फाँके'
3. तुम्हें भागवत ध्यान से पढ़नी चाहिए।
उत्तर मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन पुल्लिंग/स्त्रीलिंग कर्ता कारक, 'पढ़नी चाहिए' क्रिया का कर्ता।
4. बिस्मिल्ला खाँ इस मंगलध्वनि के नायक थे।
उत्तर व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग कर्ताकारक।
5. अरे, तुम भी आ गए?
उत्तर विस्मयादिवाचक अव्यय, आश्चर्य का भाव प्रकट करने वाला।

SET – 1 PAPER 2014

निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
1. वह भावुक व्यक्ति है |
उत्तर गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिग, विशेष्य-'व्यक्ति'।
2. द्वार पर कोई भिखारी खड़ा है |
उत्तर सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन
3. रमेश यहाँ रहता है ।
उत्तर स्थानवाचक क्रियाविशेषण (अव्यय)

4. वे घर पहुँच चुके हैं ।
उत्तर सर्वनाम, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन

SET – 1 PAPER 2015
निम्नलिखित वाक्य में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
आजकल हमारा देश प्रगति के मार्ग पर बढ़ रहा है |
उत्तर
आजकल- अव्यय, क्रिया विशेषण, कालवाचक
हमारा- सर्वनाम, उत्तम पुरुषवाचक, बहुवचन, पुल्लिंग
देश- संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन
बढ़ रहा है- क्रिया, अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन

SET – 1 PAPER 2016
निम्नलिखित वाक्य में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
सुरेश यदि मैं बीमार हो जाऊं तो घर की व्यवस्था रुक जाएगा |
उत्तर
(सुरेश) - संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।
(मैं) - सर्वनाम , उत्तमपुरुष , पुल्लिंग एकवचन |
(घर की) - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक।
(रुक जाएगी) - क्रिया, अकर्मक, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमानकाल।

SET – 1 PAPER 2017
निम्नलिखित वाक्य में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
"मनुष्य केवल भोजन करने के लिए जीवित नहीं रहता है, बल्कि वह अपने भीतर की सूक्ष्म इच्छाओं की तृप्ति भी चाहता है।"
उत्तर
मनुष्य- जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।
वह- सर्वनाम, एकवचन, पुरुषवाचक, पुल्लिंग, कर्ताकारक।
सूक्ष्म- विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, गुणवाचक।
चाहता- क्रिया, सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमान काल।

SET – 1 PAPER 2018
निम्नलिखित वाक्य में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
अपने गाँव की मिट्टी छूने के लिए मैं तरस गया।
उत्तर

गाँव की- संज्ञा पद, संबंध कारक, जातिवाचक संज्ञा, एकवचन
मिट्टी- संज्ञा पद, जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, कर्मकारक
मैं- सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, वर्ताकारक
तरस गया- क्रिया पदबंध, अकर्मकद्ध, भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन

SET – 1 PAPER 2019

निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
1. दादा जी प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ती हैं।
उत्तर एकवचन, क्रिया, स्त्रीलिंग।
2. रोहन यहाँ नहीं आया था।
उत्तर सर्वनाम, स्थानवाचक क्रिया विशेषण।
3. वे मुंबई जा चुके हैं।
उत्तर बहुवचन, सर्वनाम (पुरुषवाचक), कर्ता कारक।
4. परिश्रमी अंकिता अपना काम समय में पूरा कर लेती हैं।
उत्तर जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग विशेषता स्पष्ट करता है।
5. रवि रोज सवेरे दौड़ता है।
उत्तर व्यक्ति वाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग कर्ताकारक।

2020 PAPER

निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
1. किसी का ताज़ा चित्र नही छपा था ।
उत्तर नहीं - क्रिया विशेषण (नकारात्मक)
2. तीसरी बार फिर से नया चश्मा था ।
उत्तर नया - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग
3. यह सब मैंने केवल सुना।
उत्तर सुना- कर्ता की क्रिया, भूतकाल
4. मान लीजिए कि पुराने जमाने में एक भी स्त्री पढ़ी-लिखी न होती |
उत्तर स्त्री - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग

MAY 2022 PAPER

निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
1. सुरभि विद्यालय से अभी-अभी आई है।
उत्तर संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, अपादान कारक।
2. उसने मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनी।
उत्तर रीतिवाचक, क्रियाविशेषण, 'सुनना' क्रिया की विशेषता।

3. शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया।
उत्तर सर्वनाम, मध्यमपुरुष वाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।
4. वहाँ दस छात्र बैठे हैं।
उत्तर विशेषण, निश्चित संख्यावाचक, पुल्लिंग, बहुवचन।
5. परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती।
उत्तर संबंधबोधक अव्यय, परिश्रम के साथ संबंध।

अन्य उदाहरण

1. अहा! उपवन में सुन्दर फूल खिले हैं।
उत्तरः
अहा! – विस्मयवाचक अव्यय
2. निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-
(क) हम स्वतंत्रता का स्वागत करते हैं।
(ख) मैं चाहता हूँ तुम विद्वान बनो।
(ग) वहाँ चार छात्र बैठे हैं।
(घ) तुम सदा सत्य बोलो।
उत्तरः
(क) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, संबंध कारक।
(ख) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग कर्ताकारक 'चाहता हूँ' क्रिया का कर्ता।
(ग) निश्चित संख्यावाचक विशेषण विशेष्य-छात्र।
(घ) कालवाचक क्रियाविशेषण 'बोलो' क्रिया के काल का द्योतक।
3. सज्जन मनुष्य बहुत बातें बनाते है।
सज्जन : विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, इसका विशेष्य 'मनुष्य' है।
बहुत : विशेषण, संख्यावाचक, अनिश्चयवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन, 'बातें' इसका विशेष्य है।
4. वह पुस्तक क्यों नहीं पढता ?
वह - सर्वनाम, पुरुषवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक 'पढ़ता' क्रिया से संबंध
पुस्तक - संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'पढता' क्रिया का कर्म
क्यों - अव्यय, क्रिया-विशेषण, प्रश्नवाचक, 'पढता' क्रिया से सम्बन्ध
नहीं - अव्यय, क्रिया-विशेषण, 'पढता' क्रिया का क्रिया-विशेषण
पढता - क्रिया, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमानकाल, पुंल्लिंग, एकवचन,
'वह' इस क्रिया का करता है, 'पुस्तक' इस क्रिया का कर्म है |

**********@@**********@@**********

सन्देश

सन्देश क्या होते है?
सन्देश शब्द की उपत्ति संस्कृत से माननी जाती है।जिसका अर्थ है खबर या समाचार प्राप्त ।
जब कोई व्यक्ति किसी कारणवश किसी दूसरे व्यक्ति से सीधे बात नहीं कर सकता है।
तब कोई जानकारी समाचार या खबर, सन्देश के जरिये दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाता है।
सन्देश किसी व्यक्ति विशेष या किसी समूह द्वारा किसी व्यक्ति विशेष या समूहों को दिए जा सकते है ।
ये सन्देश लिखित या मौखिक दोनों हो सकते है । कोई भी सन्देश व्यक्तिगत व सामूहिक हो सकता है।
सन्देश भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्य काल में लिखे जा सकते है ।
आजकल सोशल मीडिया का जमाना है। लोग अपने रिश्तेदारों मित्रों और अन्य वधुओं को विविध संदेश भेजते
है। संदेश मानवीय संबंधों को बनाए रखने का साधन है। आजकल यह साधन इतना सस्ता, आसान, तीव्र और
सुलभ हो गया है कि लगभग सभी लोग किसी-न-किसी अवसर पर संदेश भेजते है।
संदेश - लेखन में निम्नलिखित गुण होने चाहिए;
● संदेश संक्षिप्त और स्पष्ट होना चाहिए। 30-40 शब्दों की सीमा पर्याप्त होती है। इससे बड़े संदेश ध्यान से नहीं पढ़े जाते।
● संदेश में नवीनता, ताज़गी और मौलिकता होनी चाहिए। तभी वह रूचिकर बनता है। रटे-रटाए संदेश प्राय: पढ़े नहीं जाते।
● संदेश में प्राप्तकर्ता का नाम या संकेत होना चाहिए। बिना संबोधन के संदेश प्रभाव नहीं छोड़ते।
● यदि एक व्यक्ति के लिए संदेश हो तो उसके नाम से संबोधन होना चाहिए। यदि संदेश एकाधिक लोगों के नाम हो तो उसमें निम्नलिखित संबोधन हो सकते हैं:
प्रिय बंधु !
प्रिय मित्र! / सखी!
प्रिय सदस्यगण !

प्रिय विद्यार्थियो !/ विद्यार्थिगण !
आदरणीय गुरुजन!
प्रिय नागरिक- गण!/नगरवासियो !
प्रिय देशवासियो !
● संदेश गद्य में भी हो सकता है और कविता में भी। वह गद्य-पद्य का मिश्रण भी हो सकता है।
● संदेश में चित्रों या प्रतीकात्मक चित्रों का भी उपयोग हो सकता है।
● ध्यान रहे कि चित्र से प्रभाव तो बढ़ जाता है किंतु परीक्षक को अंक केवल शब्दों के देने होते हैं। अतः विद्यार्थी शब्दों की रचना पर ध्यान दें।

संदेश - लेखन का प्रारूप
एक अच्छे संदेश-लेखन का प्रारूप इस प्रकार होना चाहिए।
- संबोधन
- शुभकामना संदेश
- संदेश-प्रेषक का नाम

एक उदाहरण
प्रिय प्रिशा !
तुम्हारे दसवीं कक्षा में प्रवेश पर ढेर सारी शुभकामनाएँ!
मस्ती और आनंद में जियो !
पढ़ाई में नए कीर्तिमान स्थापित करो।
तुम्हारी बुआ
सुरभि

उदाहरण
प्रश्न 1. दसवीं की परीक्षाओं के लिए शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय हेमेंन्द्र !
तुम्हारी दसवीं कक्षा की परीक्षाएँ आ गई हैं। मेरी कामना है कि तुम हर परीक्षा में न केवल सफल हो, पितु नए
कीर्तिमान स्थापित करो। मेरी ओर से सफलता की ढेर सारी शुभकामनाएँ! तुम्हारा नरेंद्र

प्रश्न 2. गोआ -भ्रमण करने जा रहे अपने भाई को शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय भैया!
गोआ-यात्रा की अग्रिम शुभकानाएँ! आप अपने मित्रों के साथ गोआ के समुद्र-तटों का और रोमांचक खेलों का
भरपूर आनंद लें।
अनंत शुभकामनाएँ!
आपका आशीप

प्रश्न 3. बाल दिवस के सफल आयोजन के लिए छात्रों को प्राचार्य की ओर से लगभग 40 शब्दों में एक साधुबाद
बधाई संदेश लिखिए Icbse 2021
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX

समय – 0X : XX pm
आदरणीय उप-प्रधानाचार्य, शिक्षक और प्रिय छात्रों आज के कार्यक्रम में आप सबका स्वागत है।
मेरे तरफ से आप सभी को बाल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं, इस विद्यालय का प्रधानाचार्य होने के नाते इस शुभ अवसर पर यहां आने के लिए मैं आप सबके प्रति आभार व्यक्त करता हुं। हमारे देश में 14 नवंबर को बाल दिवस के रुप में मनाया जाता है, जोकि पंडित जवाहर लाल नेहरु का जन्म दिवस है। हमारे ही तरह कई सारे विद्यालय इस त्योहार को काफी उत्साह और जोश के साथ मनाते है। हमारे द्वारा ऐसे कई सारे कार्यक्रम आयोजित किये जाते है, जो आप सभी छात्रों के चेहरों पर मुस्कान लाते है। मुझे याद है कि जब मैं एक बच्चा था तब हम इस दिन को अपने शिक्षकों के साथ मनाते थे, जिससे की हमें काफी संतुष्टि प्राप्त होती थी।
आज मैं आपके साथ कुछ विशेष बातें साझा करना चाहुंगा, जिसे आप एक सलाह भी समझ सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि बचपन हमारे जीवन का एक विशेष पल है, इसके साथ ही यह हमारे जीवन का सबसे संवेदनशील समय भी होता है। आज के समय में बच्चों के साथ कई तरह के दुर्वव्यहार किये जा रहे हैं। इसलिए हम सबको अपने जीवन में हर जगह सजग रहना चाहिए फिर चाहे वह स्कूल हो या घर।

प्रश्न 4.अपने मित्र को लोहड़ी पर लगभग 40 शब्दों में एक शुभकामना संदेश लिखिए। Cbse 2021
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय मित्र कृष्ण,
मेरी तरफ से तुम्हे नव वर्ष 2022 की हार्दिक
शुभकामनाएं।
मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि इस वर्ष तुम्हारी आकांक्षायें पूरी हों तुम्हारा पूरे परिवार में सुख-समृद्धि का आगमन हो। इस वर्ष तुम सफलता के नये शिखर को छुओ, ऐसी मेरी कामना है।

एक बार तुम्हे और तुम्हारे पूरे परिवार को मेरी तरफ से नववर्ष की हार्दिक शुभकामना।
तुम्हारी मित्र,
मोनिका

प्रश्न 5.अपनी छोटी बहन जन्मदिवस पर उसे एक बधाई संदेश 30-40 शब्दों में लिखिए |cbse 2020
उत्तर
छोटी बहन के जन्म दिन पर बधाई संदेश
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय बहन तुम्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। तुम सदा स्वस्थ एवं प्रसन्न रहो , यही कामना करती हूँ और साथ में भगवान से भी प्रार्थना करती हूँ कि इस वर्ष की इंजीनियरिंग की परीक्षा में सफलता तुम्हारे कदम चूमे और तुम्हारी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हों । एक बार फिर जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं।
क.ख.ग.

प्रश्न 6.'शिक्षक दिवस' के अवसर पर अपने हिन्दी शिक्षक के लिए एक भावपूर्ण संदेश 30-40 शब्दों में लिखिए
|cbse2020
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
आदरणीय गुरुजी , आपके अथक प्रयास और प्रोत्साहन की वजह से मैंने अपनी दसवीं की परीक्षा में न सिर्फ आपके विषय हिंदी बल्कि सभी विषयों में शत प्रतिशत सफलता हासिल की। जिसके लिए मैं सदा आपका ऋणी रहूंगा। मैं भगवान से प्रार्थना करूंगा कि वह आप जैसा शिक्षक हर बच्चे को दें ताकि उनका जीवन सँवर सके।
शिक्षक दिवस के इस पावन अवसर पर आपको ढेर सारी शुभकामनाएं।
क.ख.ग

कुछ महत्त्वपूर्ण संदेश
प्रश्न 1.नौकरी लगने पर शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय सोनाली!
पहली नौकरी की ढेरों शुभकामनाएँ।
तुम इतनी मेहनत और निष्ठा से काम करो कि अच्छी से अच्छी नौकरियाँ तुम्हारे आगे-पीछे घूमें। मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाइयाँ।
तुम्हारी प्रेरणा

प्रश्न 2.पहली बार हवाई यात्रा का आनंद लेने वाले मित्र को शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय हरेंद्र
पहली हवाई यात्रा की ढेरों शुभकामनाएँ।

तुम्हारी यह यात्रा रोमांचक, आनंददायक और कौतूहलपूर्ण हो । हवाई अड्डों की सुंदर व्यवस्थाएँ, सुरक्षा व्यवस्था और हवा में उड़ने का सुख तुम्हें आनंद से भर दे।
तुम्हारी बहन
शीला

प्रश्न 3.तुम्हारे भाई के यहाँ लड़की ने जन्म लिया है। शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्यारे भैया-भाभी जी !
ढेर सारी शुभकामनाएँ!
घर में मेरी प्यारी भतीजी आई है। अब घर में खुशियाँ ही खुशियाँ होंगी। चहल-पहल ! रंगबिरंगे फ्राक, . किलकारी, हँसी ! वाह! शुभकामनाएँ।। जल्दी आऊँगी। प्यारी टिंकी को प्यार!!
आपकी नेहा

प्रश्न 4.आपके मित्र ने क्रिकेट मैच जीतने में 100 रन बनाए। शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय प्रवीण!

तुम्हारी अजेय शतकीय पारी के लिए बहुत-बहुत बधाइयाँ ।
तुम ऐसे ही चौकों-छक्कों और शतकों की वर्षा करते रहो। तुम्हें खेलते देखकर बहुत अच्छा लगता है। और उन्नति करो। शुभकामनाएँ।
तुम्हारा लोकेश

प्रश्न 5.दादा जी ने नई कार खरीदी है। शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्यारे दादा जी !
नई कार के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ!
अब आप खूब यात्राएँ करें-आएँ जाएँ ! हमें भी खूब सैर कराएँ! नई कार नई खुशियों का खजाना बने।
आपका प्रिय
चिंटू

प्रश्न 6.आपकी माताजी ने मोबाइल खरीदा है। शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm

प्रिय माता जी !
नए मोबाइल की ढेरों शुभकामनाएँ!
अब आप दिन में जितनी बार चाहें हमसे बात कर सकती हैं। इसमें रामायण-महाभारत भी हैं, फिल्में भी और संदेशों का भंडार भी। यह मोबाइल आपको खुशी दे, व्यस्त रखे और मस्त रखे।
आपका सुपुत्र
सुकाम

प्रश्न 7.आपकी मित्र की माता जी का देहांत हो गया है। एक सांत्वना-संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय सुगंधा !
माता जी की असमय मृत्यु पर हार्दिक संवेदना !
उनका अचानक चले जाना बहुत बड़ा आघात है। परंतु भगवान की इच्छा के आगे किसी का वश नहीं। तुम धैर्य
रखना। शोक की इस घड़ी में हमेशा तुम्हारे साथ खड़ी हूँ ।
तुम्हारी संतोष

प्रश्न 8.तुम्हारी माँ बीमार हैं। शुभकामना पत्र लिखो ।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
पूज्य माता जी!
सादर चरण-स्पर्श! आप शीघ्र स्वस्थ हो। नियमित दवाई लेते रहें. आराम करें। घर के कामों से बचें। लापरवाही बिल्कुल न करें। और सबसे बड़ी बात! मुझे अपने पास समझें। मैं भगवान से नित यही प्रार्थना करूँगा कि आप शीघ्र से शीघ्र स्वस्थ हों।
आपका बिंटू

प्रश्न 9. पिताजी के जन्मदिवस पर शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
पूज्य पिता जी !
सादर चरण-स्पर्श! आपके 55वें जन्मदिवस पर ढेरों शुभकामनाएँ। आप हमेशा की तरह स्वस्थ प्रसन्न और जिंदादिल बने रहें। हम परिवार के सभी सदस्य आपकी सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।
आपका पुत्र
सर्वेश

प्रश्न10.अपने मामा के विवाह पर शुभकामना संदेश लिखिए ।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
आदरणीय मामा जी !
आपको विवाह की अनगिनत शुभकामनाएँ।
आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो, आनंदमय हो और संसार की सभी खुशियों से भरपूर हो। भगवान आप पर
कृपालु हो।
पार्थ

प्रश्न 11.आपके मित्र को आई.आई.टी. दिल्ली में प्रवेश मिला है। शुभकामना - संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm

प्रिय सुशील!
आई.आई.टी. दिल्ली में प्रवेश मिलने पर मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएँ! भगवान करे, तुम खूब उन्नति करो। धन और यश कमाओ। आई.आई.टी. में भी अपनी प्रतिभा से नाम अर्जित करो। लाखों बधाइयाँ !
तुम्हारा विनय

प्रश्न 12.तुम्हारा मित्र कोरोना-संकट के दिनों में गरीबों की सेवार्थ काम में लगा है। उसके लिए शुभकामना
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
संदेश लिखिए।
प्रिय सर्वमित्र !
तुम कोरोना-संकट से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए अपने नगर-प्रशासन की सहायता कर रहे हो। यह बहुत महान कार्य है। मुझे तुम पर गर्व है। तुम्हें इसका पुण्य प्राप्त होगा। मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएँ। यशस्वी बनो।
तुम्हारा मित्र लोकेश

प्रश्न 13.तुम्हारा मित्र गरीब बच्चों की मुफ्त पढ़ाई में लगा है। उसे शुभकामना संदेश लिखिए।
उत्तर
दिनांक – XXXX / XX / XX
समय – 0X : XX pm
प्रिय सौरभ !

तुम इंजीनियरिंग के साथ-साथ गरीब बस्ती के बच्चों को मुफ्त पढ़ाने के लिए भी जा रहे हो। यह सुनकर मेरा हृदय गदगद हो उठा। सौरभ ! मुझे तुम पर गर्व है। तुम महान हो। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ! तुम्हारा यह सेवा-भाव तुम्हें बहुत ऊँचाइयाँ प्रदान करे।
तुम्हारा हृदयेश ।

**********@@**********@@**********

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन शब्द की रचना 'ज्ञापन' शब्द में 'वि' उपसर्ग लगाने से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है-विशेष जानकारी देना। अर्थात किसी वस्तु की बिक्री बढ़ाने के लिए उस वस्तु के गुणों का प्रचार-प्रसार करना ही विज्ञापन कहलाता है। विज्ञापन का उद्देश्य होता है-उत्पादक द्वारा अपनी वस्तुएँ खरीदने के लिए लोगों को आकर्षित और लालायित करना तथा उन्हें बेचकर मोटा मुनाफ़ा कमाना। आज जिधर भी देखो, विज्ञापन किसी न किसी वस्तु का गुणगान करते नज़र आते हैं। टेलीविजन के चैनेल, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, होर्डिंग्स, साइन बोर्ड, बस स्टैंड, दीवारें मेट्रो, बस तथा वाहनों की दीवारें आदि पर विज्ञापन दिखाई देते हैं। अब फ़िल्मों के बीचबीच में इतने विज्ञापन आने लगे हैं कि पता ही नहीं लगता कि हम विज्ञापन देख रहे हैं या फ़िल्म। इनके अलावा कुछ विज्ञापन सरकारी एजेंसियों द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए प्रसारित किए जाते हैं। राष्ट्रीय एकता, जनसंख्या वृद्धि रोकने संबंधी, रोगों से बचाव, मद्यपान न करने संबंधी तथा समय-समय पर मच्छर-मलेरिया रोकने संबंधी विज्ञापन इसी कोटि में आते हैं।

विज्ञापन-लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

विज्ञापन लेखन के समय ध्यान रखने योग्य बात

- सबसे अधिक ध्यान विज्ञप्ति वस्तुओं पर होना चाहिए।
- विज्ञान को BOX में लिखिए।
- विज्ञप्ति वस्तु के गुणो के उल्लेख हो।
- सूक्ति(Slogans) की तरह कोई लाइन हो।
- हो सके तो चित्र का प्रयोग करे।
- तरह-तरह(Bold,Font size,Color) की अक्षरों का प्रयोग करे।
- विज्ञापन के अन्दर भी गोला या BOX को उपयोग करें।
- प्रेरक शब्दो का प्रयोग, रियायत(Discount) का उल्लेख हो।
- सम्पूर्ण सूत्र हो।

विज्ञापन-लेखन के कुछ उदाहरण-

1. विराट मोबाइल फ़ोन बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

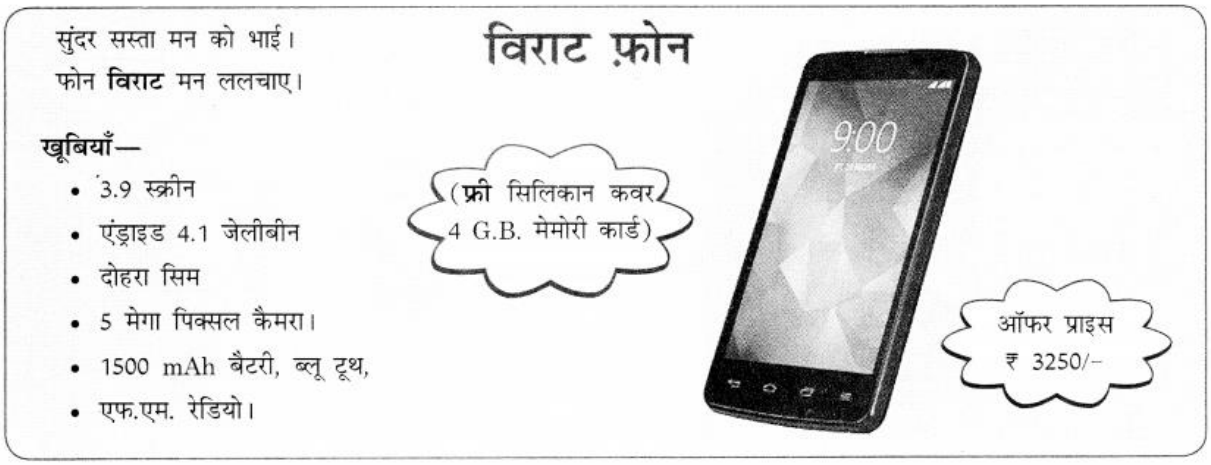

2. 'प्लाजा' कार कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिएं।

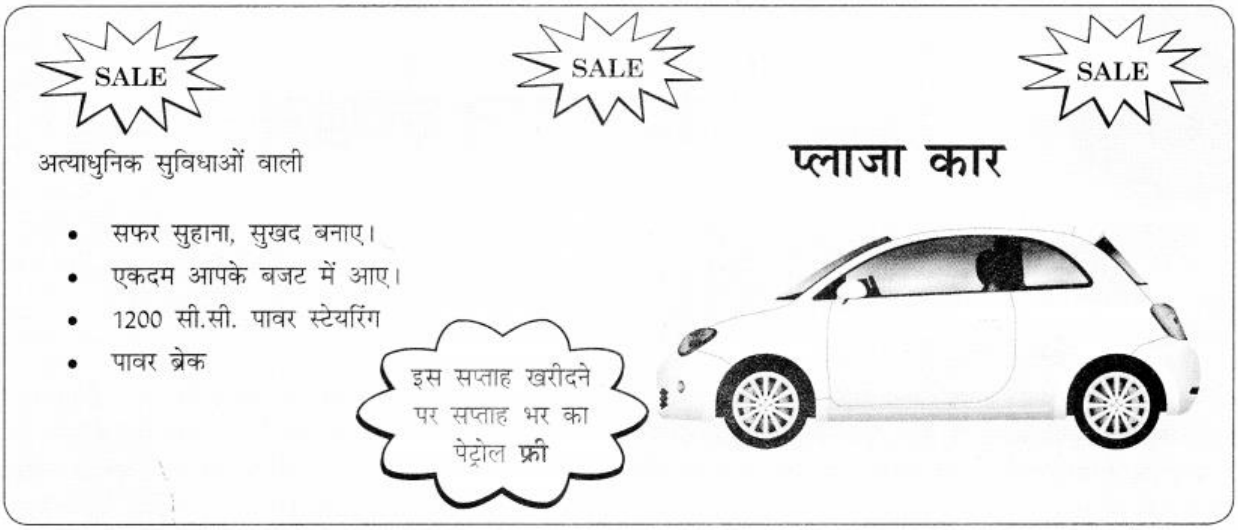

3. 'मोहित' बैग बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

4. 'ज्योति घड़ी' बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

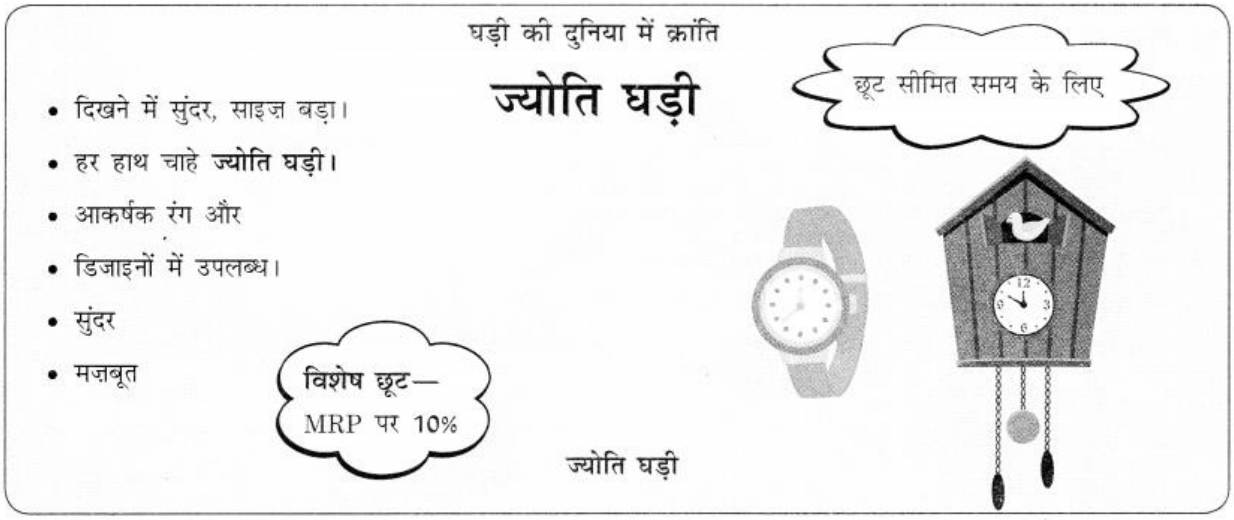

5. 'रॉयल टेलीविज़न' बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

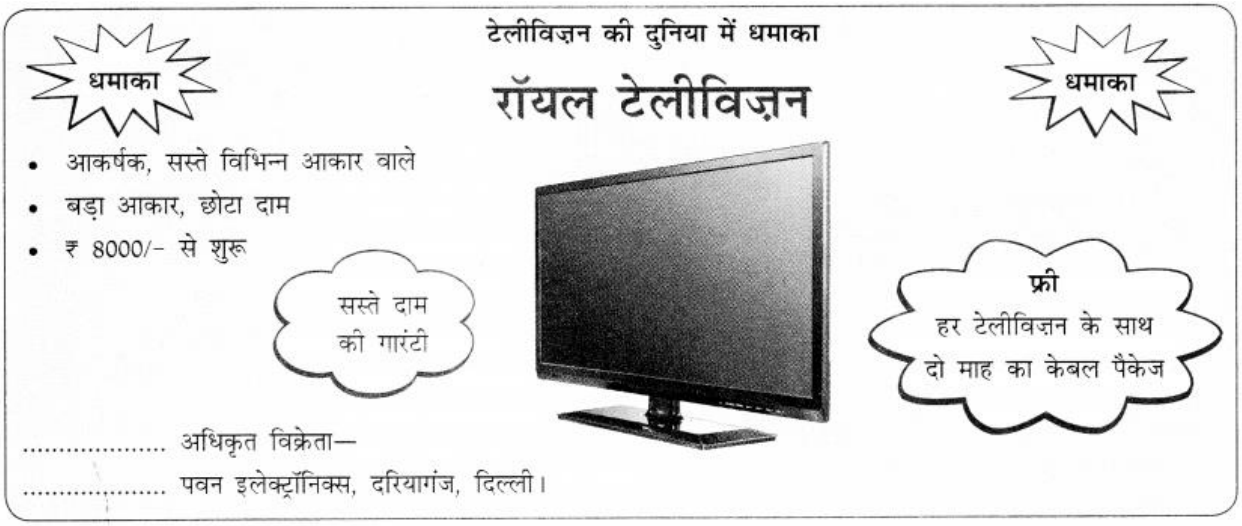

6. 'उत्सव' छाता बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

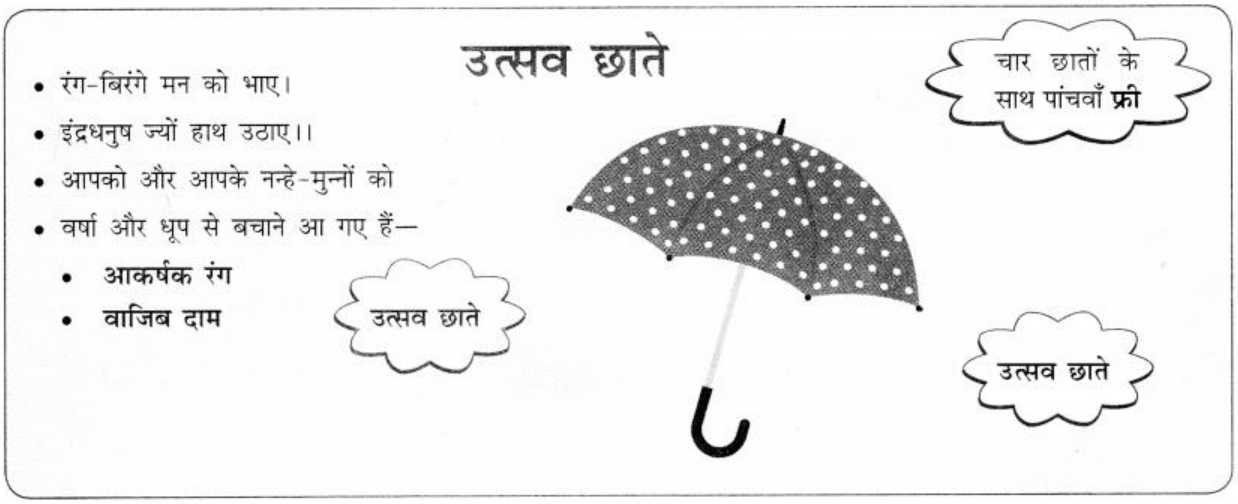

7. 'शीतल' ए.सी. कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

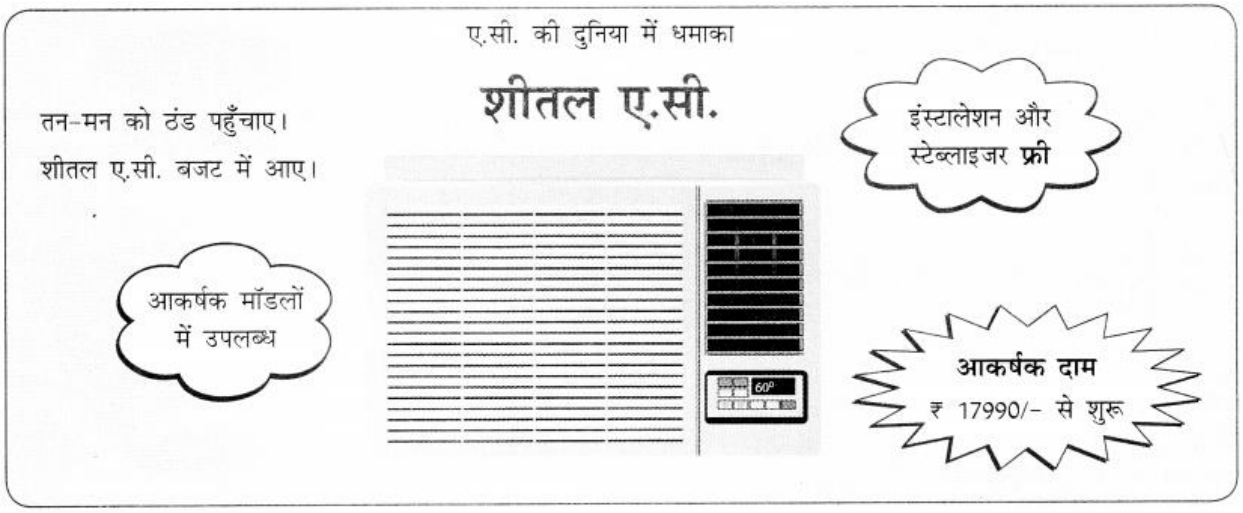

8. 'सुविधा' वाशिंग मशीन बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए। आधी आबादी को आराम पहुँचाने सुविधा वाशिंग मशीन आ गई है

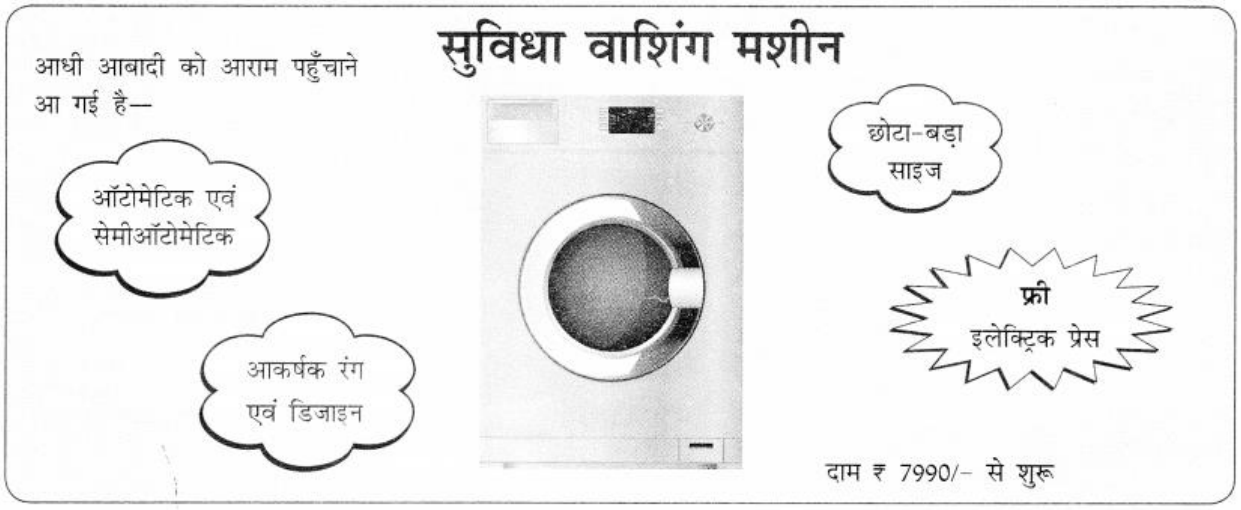

9. 'चित्रा' पेंसिल बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

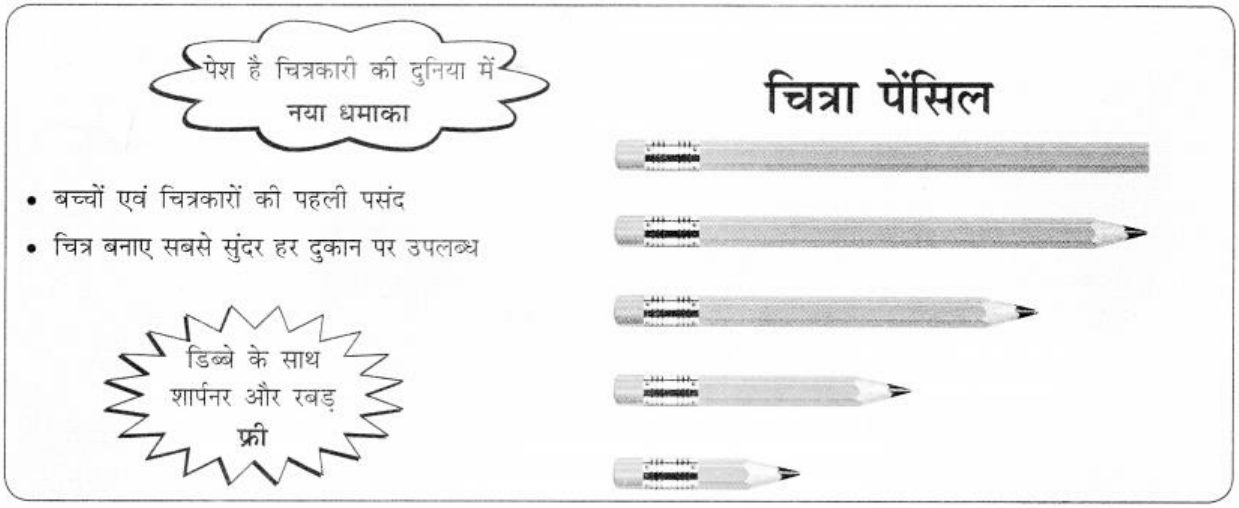

10. 'शक्ति प्राश' नामक फूड सप्लीमेंट बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

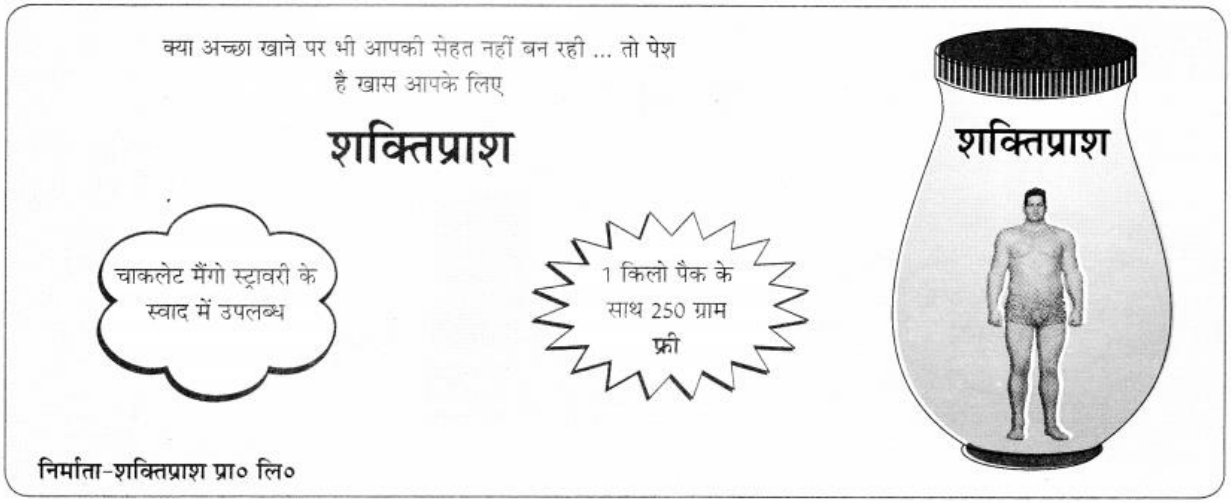

11. ट्रैक्टर बनाने वाली कंपनी 'सूमो' के लिए ट्रैक्टर की विशेषताएँ बताते हुए विज्ञापन तैयार कीजिए।

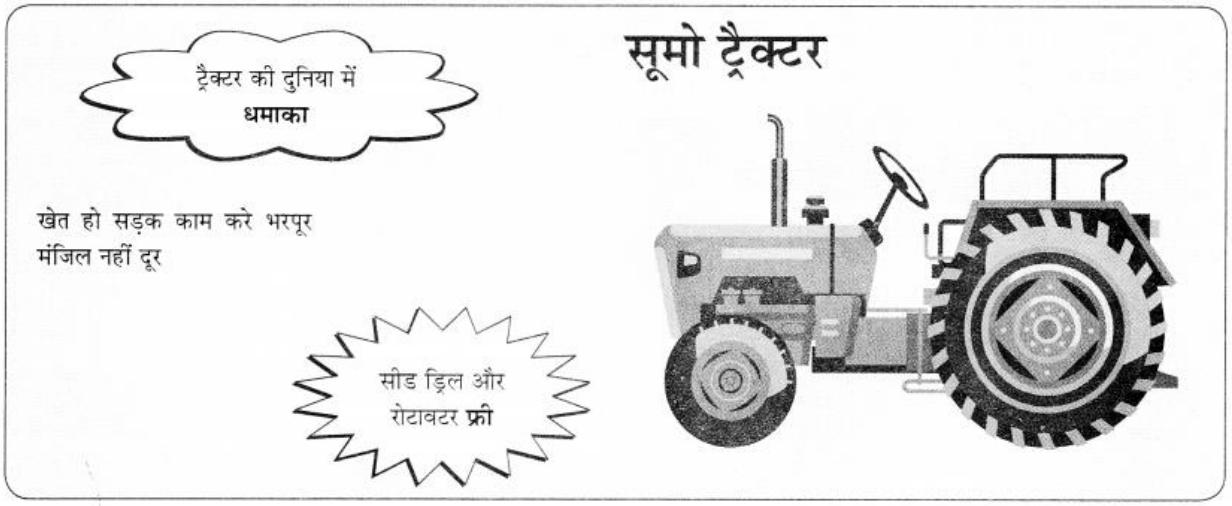

12. 'विद्यार्थीप्राश' बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए। क्या आपका बच्चा पढ़ाई में कमज़ोर है ? क्या वह पढ़ाई में पिछड़

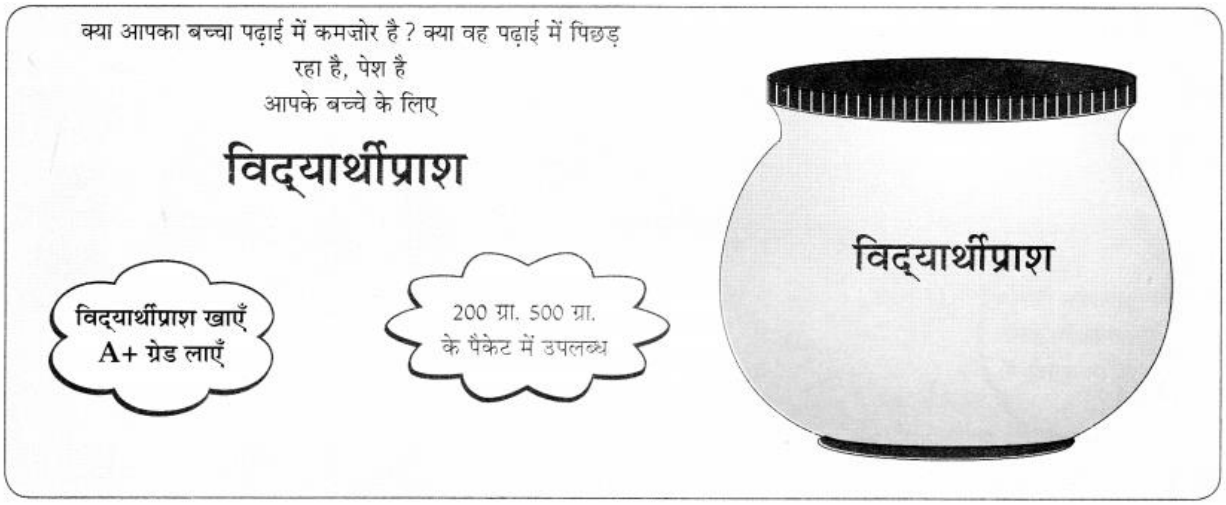

13. 'गणित' विषय के लिए होमट्यूशन पढ़ाने वाली संस्था 'मल्होत्रा ट्यूटोरियल्स' के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए। समाधान है

क्या आपको गणित कठिन लगती है यदि हाँ, तो
आपकी समस्या का समाधान है

मल्होत्रा ट्यूटोरियल्स

I से M.Sc तक
की कक्षाओं की गणित के लिए मिले
अच्छी शिक्षा

उचित फीस

संपर्क करें
9871.....

14. आप अपना मकान बेचना चाहते हैं। उसके मूल्य एवं अन्य खूबियों का उल्लेख करते हुए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

बिकाऊ

बिकाऊ

तीन मंजिला मकान

150 वर्ग गज से बना
5 कमरे, 4 टॉयलेट
दो तरफ से खुला, कार पार्किंग सहित
30 फीट रोड पर

बिकाऊ

संपर्क करें
9350.....

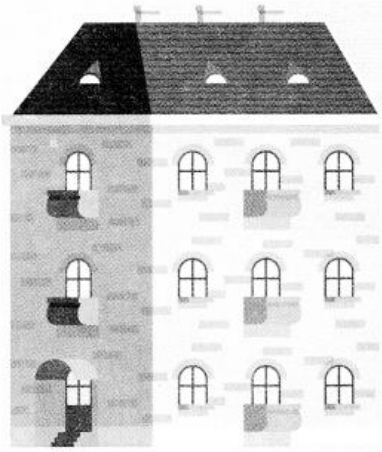

15. 'सुमन' साड़ियों की बिक्री बढ़ाने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

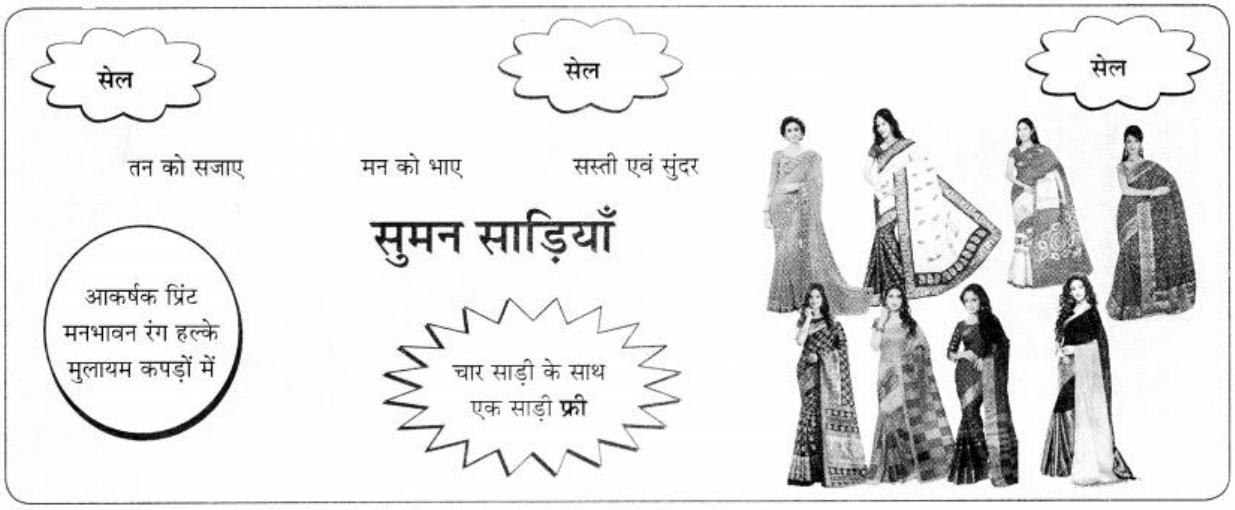

16. 'विद्यार्थी पुस्तक भंडार' में पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए। । विद्यार्थी पुस्तक भंडार

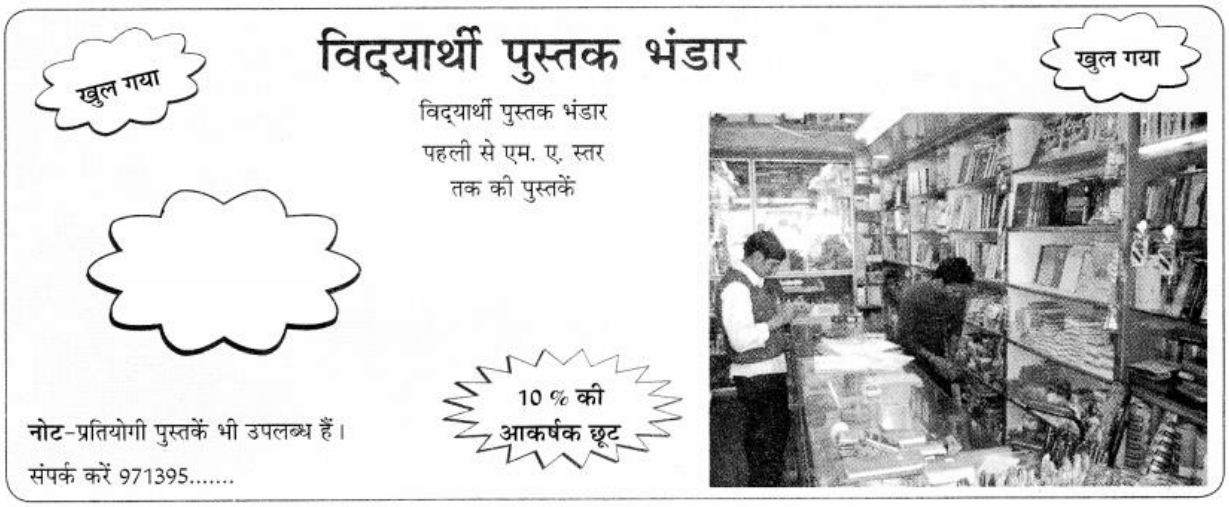

17. आपकी गली में तनु ब्यूटी पार्लर खुला है। इसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

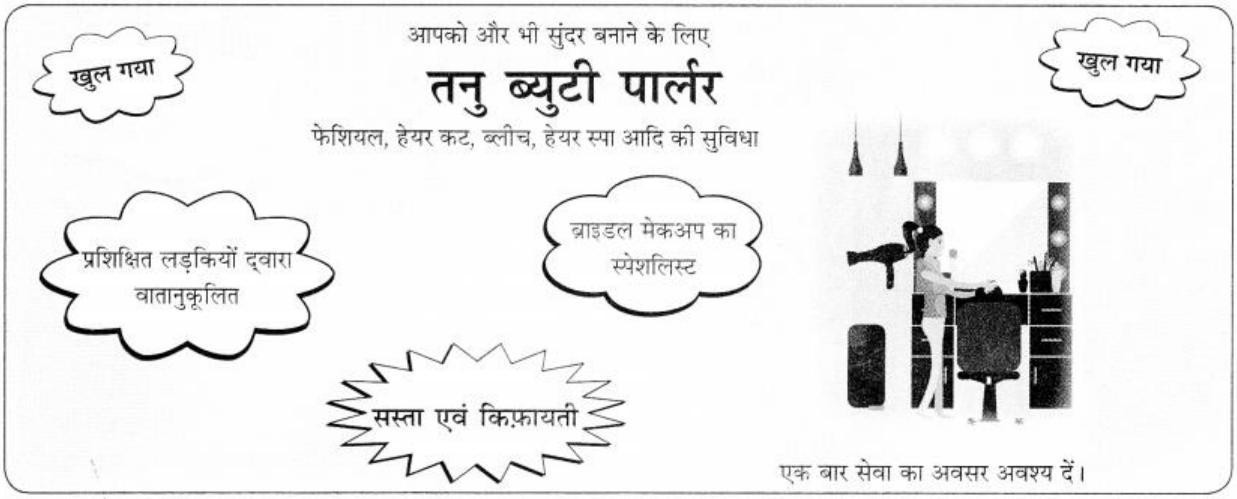

18. आपके पड़ोस में 'गोपाल डेयरी' खुल गई है। इसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

19. 'उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग' पर्यटकों के लिए कई आकर्षक योजनाएँ लाया है। उनके संबंध में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

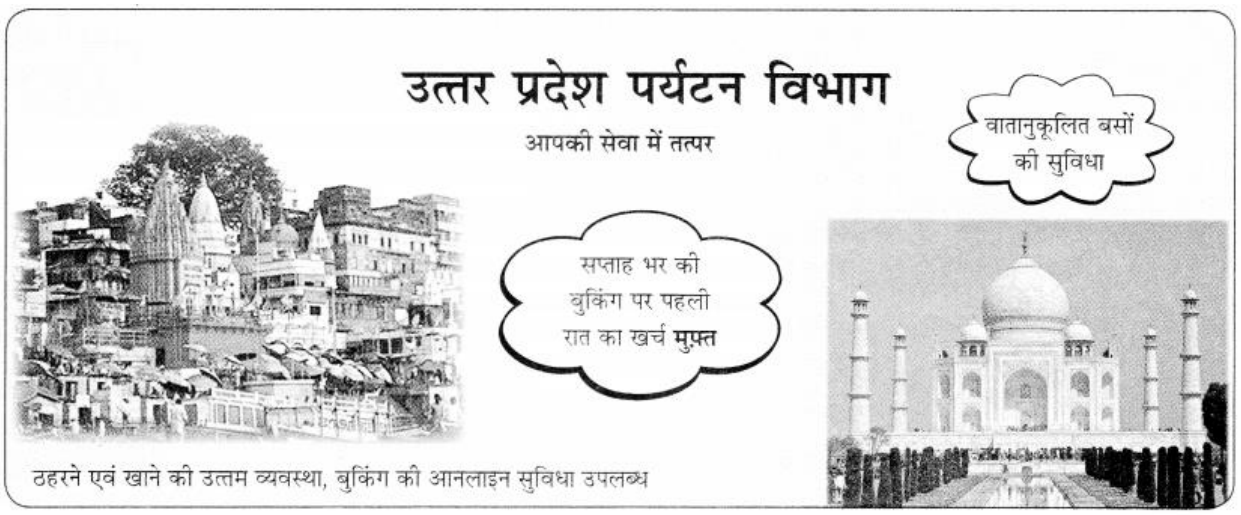

20. 'राजस्थान पर्यटन विभाग' की आय बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

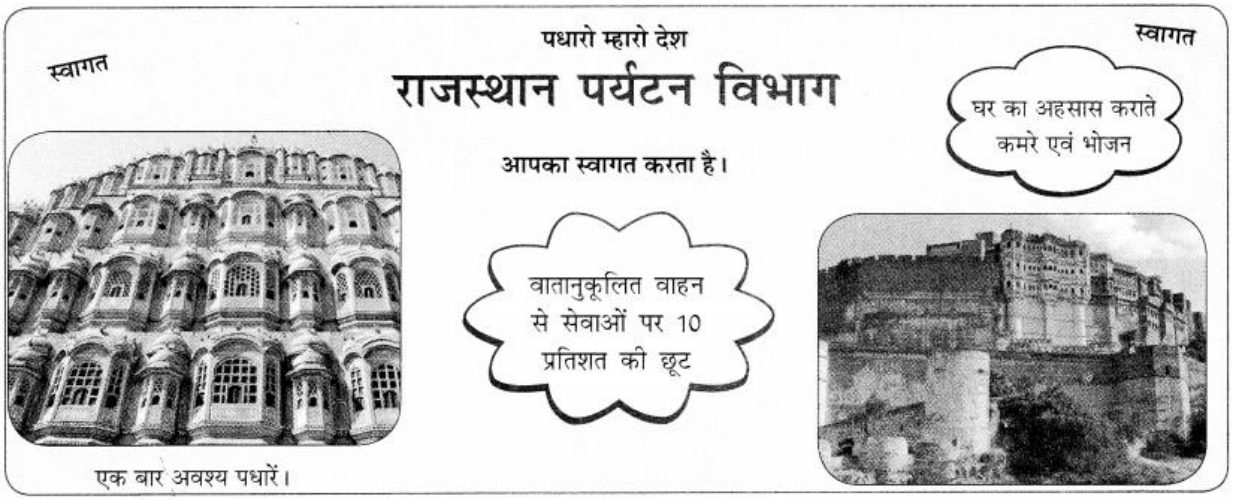

21. 'समीर' पंखा बनाने वाली कंपनी की बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

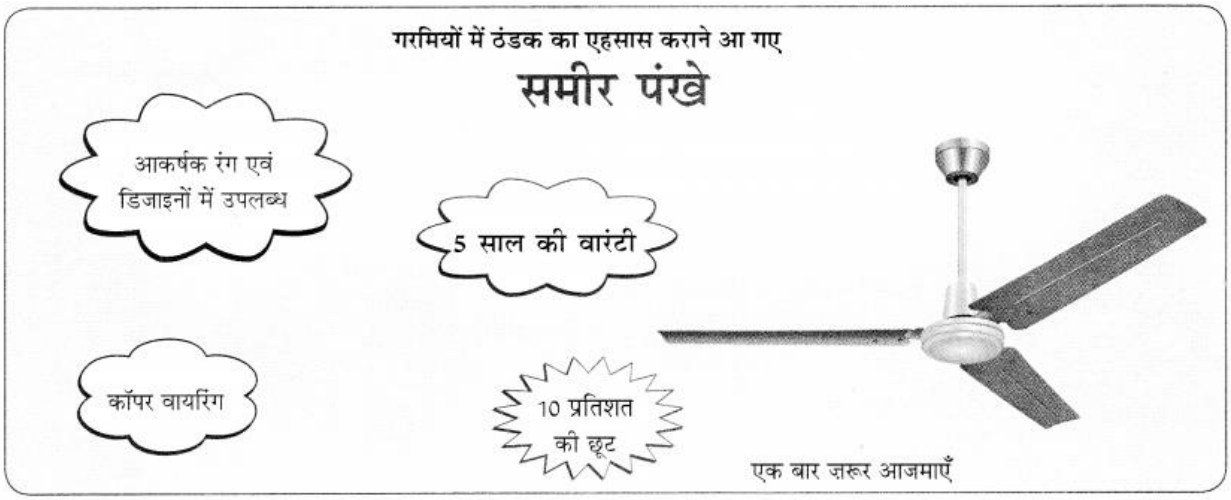

22. 'हरियाली' पौधशाला में विविध प्रजातियों के पौधे छूट के साथ उपलब्ध हैं। उनकी बिक्री बढ़ाने वाला विज्ञापन तैयार कीजिए।

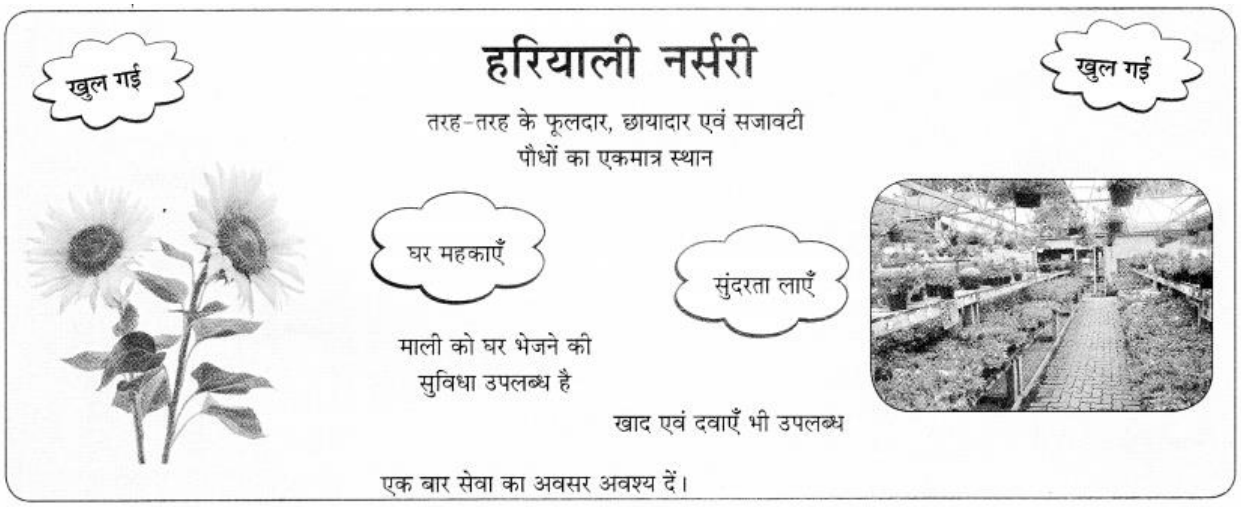

23. 'गंगाजल' नामक बोतल बंद पानी उपलब्ध कराने वाली कंपनी की बिक्री के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

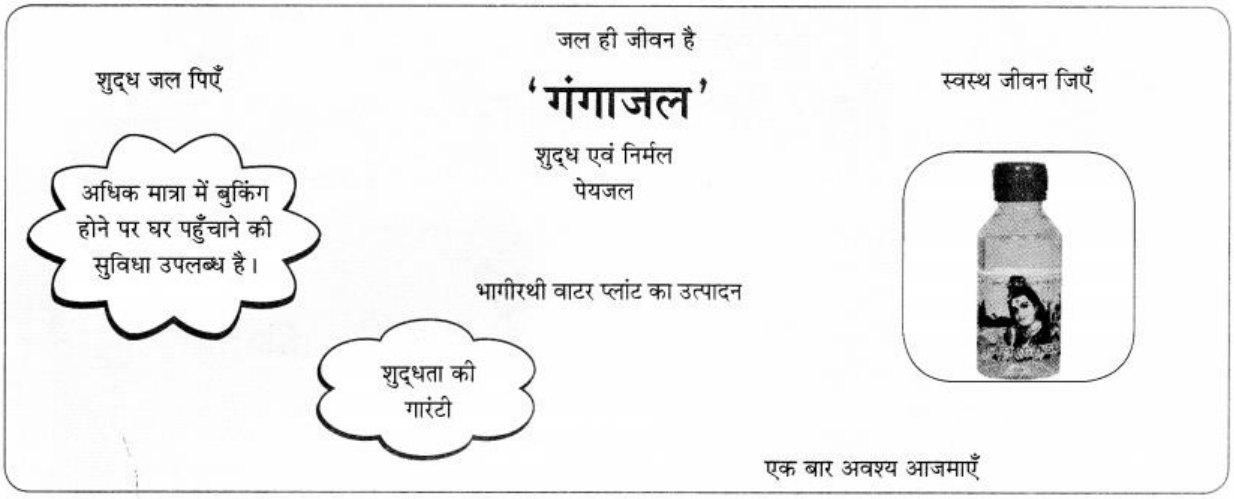

24. 'सौम्या शैंपू' बनाने वाली कंपनी की बिक्री बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

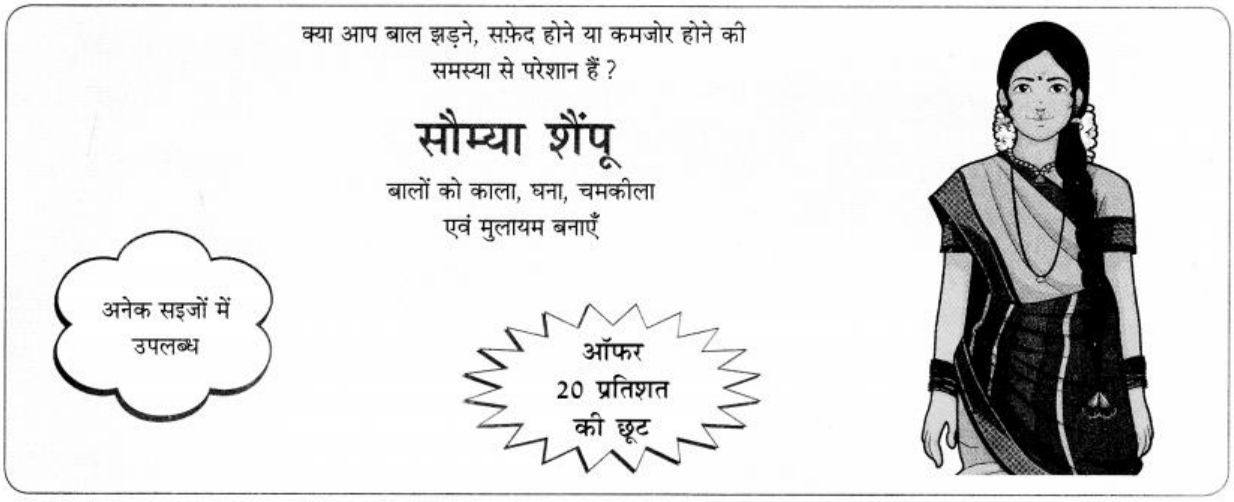

25. आपकी गली में ही 'हॉली हार्ट' प्ले स्कूल खुल गया है। इसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

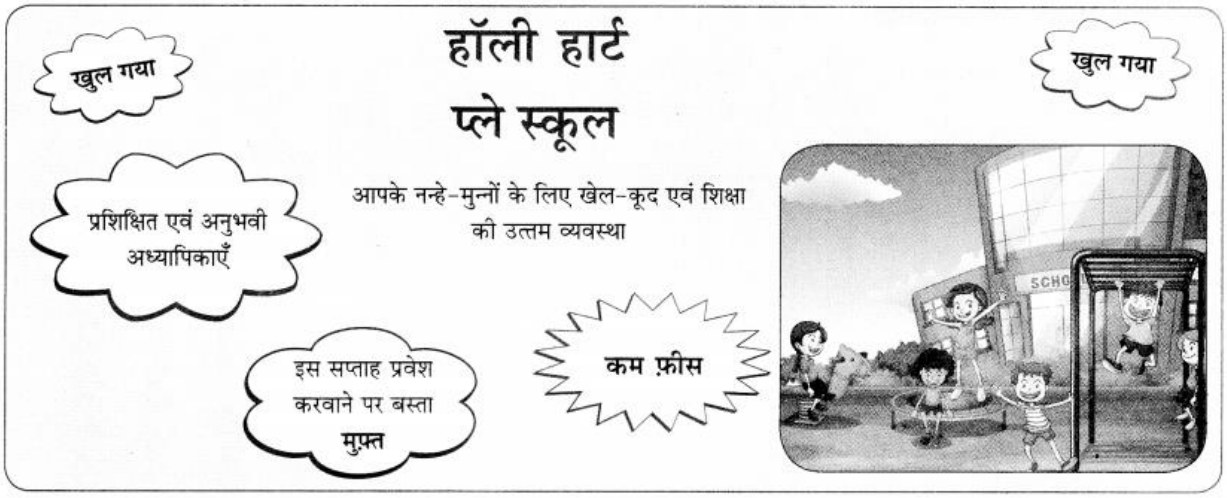

26. 'सेंचुरी क्रिकेट अकादमी' में प्रवेश बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

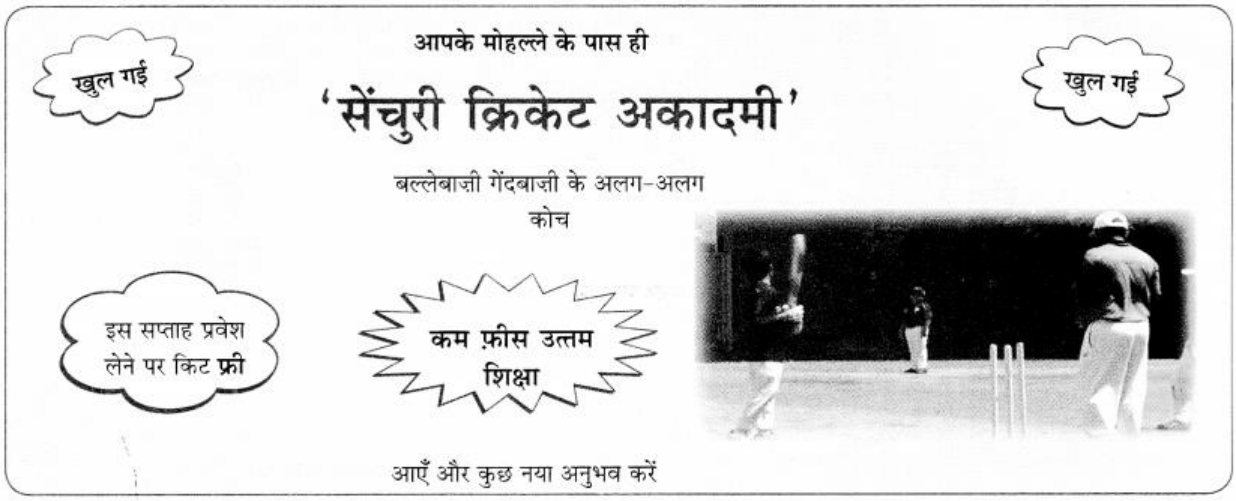

27. 'रूप निखार' साबुन बनाने वाली कंपनी साबुनों की बिक्री बढ़ाना चाहती है। इसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

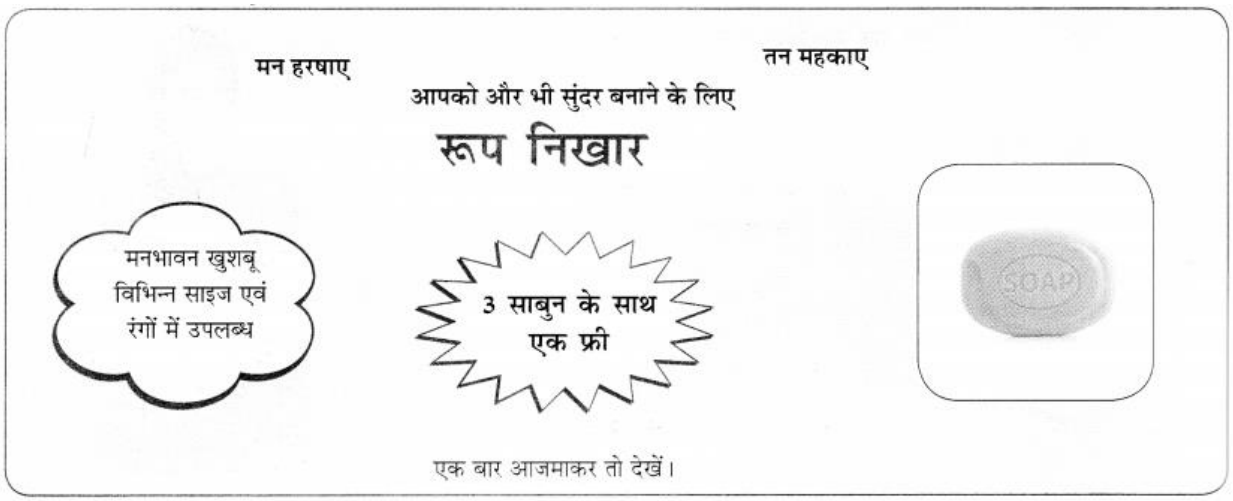

28. 'रोशनी' मोमबत्ती बनाने वाली कंपनी अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापन बनवाना चाहती है। इस कंपनी के लिए आप विज्ञापन लेखन कीजिए।

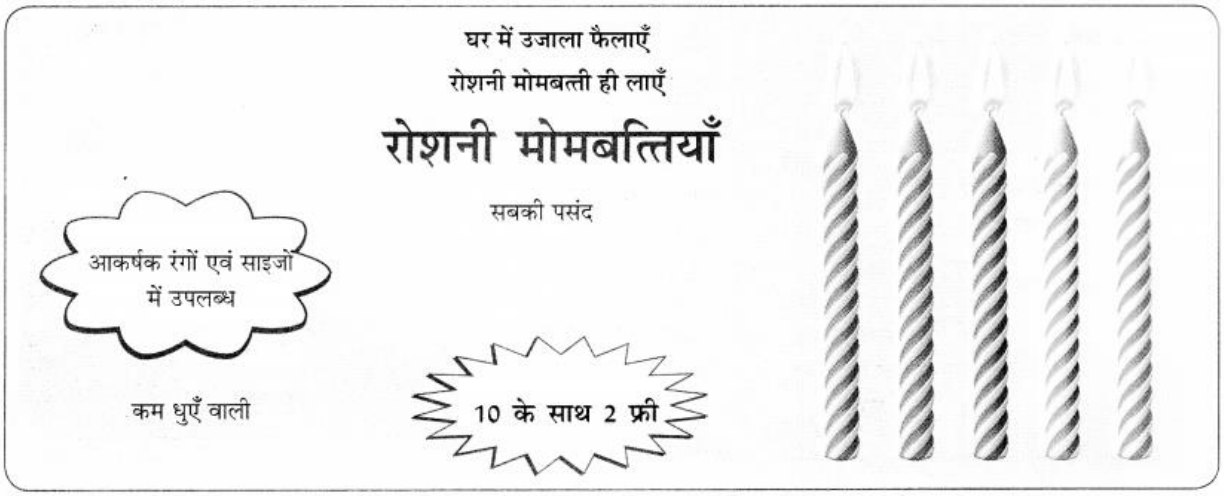

29. 'आस्था' अगरबत्तियाँ बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

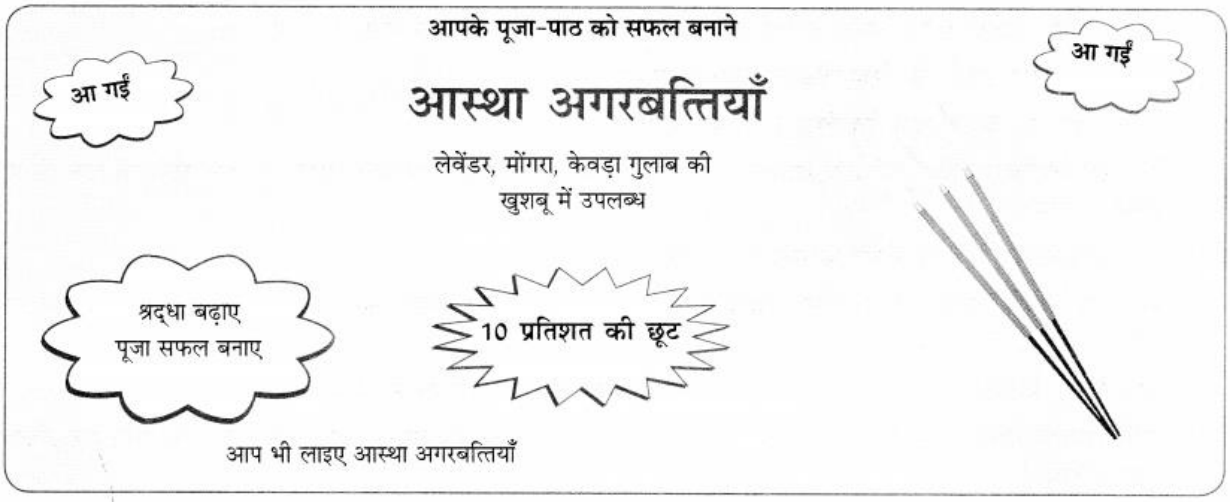

30. 'रफ़्तार' ट्रेवेल्स एवं ट्रेवेल एजेंसी को ड्राइवर्स की आवश्यकता है। आवश्यक योग्यताओं का उल्लेख करते हुए विज्ञापन तैयार कीजिए।

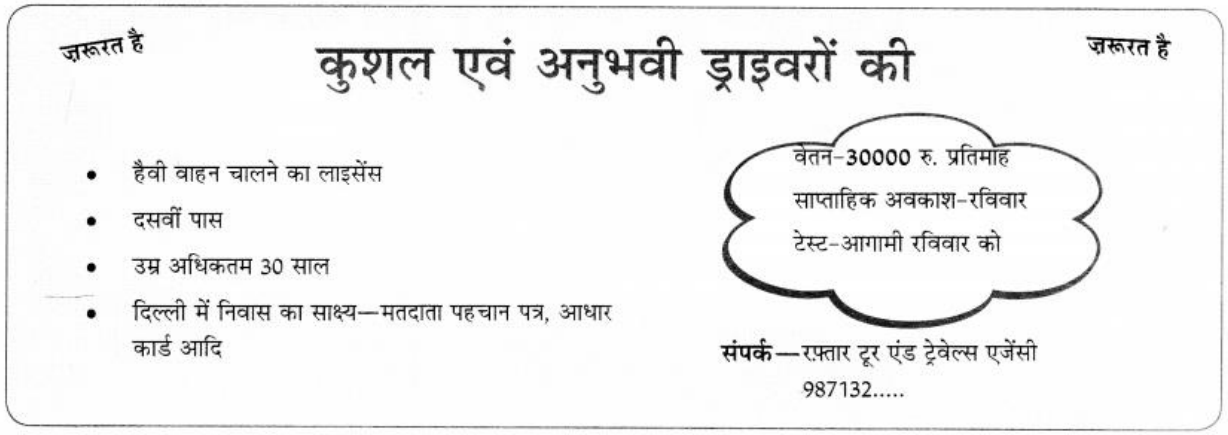

अनुच्छेद लेखन

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

(1) श्रम का महत्त्व

संकेत-बिन्दु: श्रम-आदर्श जीवन का मूल-मंत्र अ) उन्नति का आधार श्रम ब) सफलता पाने के लिए केवल इच्छा नहीं कर्मण्यता आवश्यक स) देश को आगे बढ़ाने में श्रम का महत्त्व द) उपसंहार

(2) विपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत

संकेत-बिन्दु: मित्र की पहचान आ) मित्र की आवश्यकता ब) चुनाव स) सच्चा मित्र औषधि के समान द) उपसंहार।

(3) मोबाइल फोन: कितना सुविधाजनक

संकेत-बिन्दु: अ) अद्‌भुत वरदान ब) सुविधाएँ स) हानियाँ द) उपसंहार

(1) श्रम का महत्त्व

संकेत-बिन्दु: श्रम-आदर्श जीवन का मूल-मंत्र अ) उन्नति का आधार श्रम ब) सफलता पाने के लिए केवल इच्छा नहीं कर्मण्यता आवश्यक स) देश को आगे बढ़ाने में श्रम का महत्त्व द) उपसंहार।

श्रम-आदर्श जीवन का मूल-मंत्र- 'श्रम' आदर्श जीवन का मूल मंत्र है। हमारे ऋषि-मुनियों ने, वेद-शास्त्रों ने-सभी ने एक स्वर से श्रम के महत्व को स्वीकार किया है। सच बात तो यह है कि श्रमशील व्यक्ति का अमृत-स्पर्श छोटे-से-छोटे कार्य को बड़ा एवं महान बना देता है।

उन्नति का आधार श्रम- सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक के इतिहास पर अगर हम नजर दौड़ाएँ, तो हम पाएँगे कि मानव ने निरंतर परिश्रम करके ही अपने विकास का पथ प्रशस्त किया है। आज संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह उसके सतत परिश्रम का फल है। संसार के जितने भी उन्त और समृद्धशाली देश हैं, उन सबके पीछे परिश्रम का ही आधार है। द्वितीय महायुद्ध ने जापान को लगभग तहस-नहस कर दिया था। उसके दो बड़े औद्योगिक नगर हिरोशिमा और नागासाकी अणु बम की मार से खंडहर-मात्र रह गए थे, पर आज जापान विश्व का सबसे अधिक संपन्न देश है, क्यों? इसका सिर्फ एक ही उत्तर है-उनके अपने सतत परिश्रम के कारण। छोटे-से-छोटा समझा जाने वाला कार्य भी पूरी लगन और श्रद्धा से किया है बोझा ढोने वाला कुली तेनजिंग ही संसार की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर विजय पताका फहरा सका है। सुभाषचंद्र बोस, अब्राहम लिंकन, लेनिन, गाँधी और संसार के असख्य लोग निरन्तर श्रम करके ही सफलता प्राप्त कर सके है। किसी लेखक ने कहा है, यदि तुम मे उद्योगी बनने की क्षमता है, तो अपनी सारी शक्तियों को केन्द्रित करके अपने उद्देश्य की पूर्ति में निरत हो जाओ, बाधाओं और विरोधो से भयभीत मत बनो। सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।"

कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है- पुरुष हो पुरुषार्थ करो उठो, सफलता वर-तुल्य वरो, उठो।

अपुरुषार्थ भयंकर पाप है न उसमें यश है, न प्रताप हैं।आज हमारे चारों ओर अकर्मण्यता का बोलबाला है। कोई भी व्यक्ति काम करके खुश नहीं है। श्रम और श्रम के मूल्य को ताक पर रखकर हम ताश में, चौपड़ में, सोने में, गपशप में अपना समय नष्ट कर रहे हैं। श्रम का गुरुमंत्र पढ़कर अन्य देश न जाने कितने आगे निकल गए हैं और हम आज आजादी के इतने वर्षों बाद भी, गरीबी की सीमा-रेखा के नीचे पड़े सिसक रहे हैं। हम गाल ही बजाते रहे और दुनिया वैभव की मीनार चढ़ गई।देश को आगे बढ़ाने में श्रम का महत्त्व- आज भी इतना निराश होने की जरूरत नहीं है। जो बीत गया, उसे भूलकर यदि हम आज से ही परिश्रम करने का व्रत ले लें तो क्या नहीं हो सकता। धूल भरे वीरान रेगिस्तानों में लहलहाते खेत नजर आएँगे, चिमनियों से उठते हुए धुएँ से और मेहनतकश इंसानों के शोर से गरीबी सात समुंदर पार भाग जाएगी। हमें सदा याद रखना चाहिए कि श्रम ही जीवन है। उन्नति और विकास का रास्ता श्रम से होकर जाता है। देश को आगे बढ़ाने में एकमात्र श्रम ही सार्थक है।

उपसंहार- आज श्रम का ही दूसरा नाम सफलता माना गया है। श्रम ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा आधार स्तंभ होता है। मनुष्य कठिन परिस्थिति से निकलकर ही सफलता हासिल करता है। अगर हम अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो श्रम करना आवश्यक है।

(2) **विपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत**

संकेत बिन्दु: मित्र की पहचान- अ) मित्र की आवश्यकता ब) चुनाव स) सच्चा मित्र औषधि के समान द) उपसंहार।

मित्र की पहचान- कविवर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ये पंक्तियाँ मित्र की महत्ता बताने के लिए कितनी सटीक हैं। मनुष्य को मुसीबत के समय चार की परख (जाँच-पड़ताल) अवश्य करनी चाहिए-धैर्य, धर्म, मित्र और पत्नी। अर्थात् मुसीबत के समय जो हमारा साथ निभाए, वही मित्र है। मित्र की आवश्यकता- मित्र की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को होती है। उसके जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं। वह इनको किसी के साथ बाँटना चाहता है तथा अपनी इस आवश्यकता को पूरी करने के लिए अत्यंत करीबी व्यक्ति की कामना करता है। वह अपने दुख-सुख प्रत्येक को बता भी नहीं सकता है, क्योंकि- "रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय। सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।।" इस भौतिकवादी एवं मशीनी युग में मनुष्य आत्मकेन्द्रित और एक-दूसरे से दूर होता जा रहा है। ऐसे में मित्र की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

चुनाव- मित्र बनाते समय हमें अत्यन्त सावधान रहने की जरूरत होती है किसी के दो-चार गुणों को देखकर मित्र बनाने की भूल नहीं करनी चाहिए। ऐसे मित्र प्रायः मुसीबत पड़ते ही साथ छोड़ जाते है। रहीम ने ऐसे मित्रों की तुलना तालाब के जल से करते हुए कहा है-

"जाल पर जल जात बहि, तजि मीनन को छोह । रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छोडत छोह ।।"

अर्थात जिस प्रकार जाल पड़ने पर पानी मछलियों को छोड़कर तालाव में जा मिलता है और मछलियों को मरने के लिए छोड़ जाता है वैसा मछलियों नहीं कर पाती हैं। वे जल से लगाव रखती है, और साथ छूटते ही

तड़पकर जान दे देती हैं। मित्रों के पहचान की सबसे अच्छी कसौंदी विपत्ति काल है। सच्चा मित्र औषधि के समान- मित्र सच्चा है तो वह विपत्ति में कभी भी साथ नहीं छोड़ता है। वह कुसंगति में पड़े मित्र को सन्मार्ग की ओर ले जाता है।

सच्चा मित्र औषधि के समान होता है जो उसे हर मुसीबत से बचाता है। वह मित्र के गुणों की प्रशंसा करने के साथ-साथ उसे बुराइयों से भी अवगत कराता है, जिससे व्यक्ति उनसे छुटकारा पा सके। वह सदैव अपने मित्र की भलाई की बात सोचता है। सच्चा मित्र भाई-बंधु की तरह होता है, जो खुशी हो या गम-हर अवसर पर हमारा साथ देता है।

उपसंहार- आज के इस युग में मित्र की आवश्यकता और महत्ता और भी बढ़ गई है। हमें भी मित्र के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम उससे अपेक्षा करते हैं। मित्रता के बीच कभी स्वार्थ को आड़े नहीं आने देना चाहिए। जिसे सच्चा मित्र मिल जाए, उसका जीवन सफल हो जाता है।

(3) **मोबाइल फोन: कितना सुविधाजनक**

संकेत बिन्दु: अ)अद्‌भुत वरदान ब) सुविधाएँ स) हानियाँ द) उपसंहार।

अद्‌भुत वरदान- कहते हैं आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जब-जब मनुष्य को आवश्यकता महसूस हुई तब-तब आविष्कार हुए हैं। जब मनुष्य आदिम था अर्थात् अपने विकास के प्रथम चरण में था, उसने पत्थर को रगड़कर आग का आविष्कार किया। पत्थरों के औजार और तन सजाने तथा सर्दी-गर्मी से बचने के लिए उसमें रंग-बिरंगे परिधानों का आविष्कार किया। इस प्रकार नित नए आविष्कार होते रहे, युग बदलते रहे। वास्तव में मनुष्य को जब जिस वस्तु की आवश्यकता पड़ी उसने उसे पाने के हर संभव प्रयास किए और आज भी यह प्रयास निरंतर जारी हैं। कम्प्यूटर, टी.वी., रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन इत्यादि भौतिक वस्तुएँ इसके परिचायक हैं। आज से कुछ वर्ष पहले क्या हमने कभी कल्पना भी की थी कि हम फोन हाथ में लेकर घूमेंगे? हमारी टेक्नोलॉजी इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है कि पलक झपकते ही विज्ञान का एक नया तथा अद्‌भुत वरदान हमारे सामने होता है। मोबाइल फोन भी ऐसा ही एक वरदान है, जो "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" है। आज हर व्यक्ति के हाथ में इसे देखा जा सकता है। हो भी क्यों न, यह है ही इतना लाभदायक। आज मोबाइल एक मित्र की भाँति हमारे साथ रहता है और कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होने देता। हर व्यक्ति इससे जुड़ा है।

सुविधाएँ- मोबाइल फोन के कई लाभ हैं, जैसे कभी गाडी खराब हो गई, कही पर देर हो गई या कोई ऐसी घटना हो गई जिसकी आप किसी को सूचना देना चाहते है या सहायता लेना चाहते है, तो झट से यह मोबाइल फोन आपकी समस्या को हल कर देगा। केवल बात करने की ही नहीं, यह फोन अन्य सुविधाएँ भी देता है। तरह-तरह के खेल कैलकुलेटर, फोनबुक की सुविधा, समाचार, चुटकुले, चटपटी बातें, ये तो आम सुविधाएँ है। एस. एम. एस सबसे अधिक सस्ता साधन है, देश-विदेश कहीं भी अपना संदेश पहुँचाइए। कई लोग मिलकर बात कर सकते हैं और आप यदि कहीं काम में लगे है तो आपके लिए संदेश आपका मोबाइल स्वयं ले लेगा। जितना गुड डालिए, उतना ही मीठा होगा।

एक नई और महत्वपूर्ण सुविधा जो मोबाइल ने लोगों को दी है, वह है एस.एम.एस के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेना और अब तो प्रतियोगियों के भाग्य का फैसला भी जनता के हाथ में है। जितना गुड़ डालिए, उतना ही मीठा होगा-चाहिए तो कैमरा लीजिए, ई-मेल की सुविधा प्राप्त कीजिए और भी न जाने क्या-क्या।

हानियाँ- हानियाँ- प्रश्न यह उठता है कि अगर यह इतना लाभकारी है, तो फिर विद्यालय में अध्यापक इसके प्रयोग पर नाराज क्यों होते है? इस पर रोक क्यों लगाते है? यहाँ दोष मोबाइल का नहीं, इसका प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का है जो बिना सोचे-समझे इसका दुरुपयोग करने लगते हैं और तब यह लाभ देने के स्थान पर हानिकारक हो जाता है। मोबाइल फोन का सबसे बड़ा दोष तो यह है कि यह समय-असमय यहाँ वहाँ बजता ही रहता है। लोग सुरक्षा और शिष्टाचार भूल जाते हैं। गाड़ी चलाते समय फोन पर बात करना असुरक्षित ही नहीं, कानूनन अपराध भी है। उपसंहार- हर चीज एक सीमा में हो तो अच्छा है क्योंकि हामी उसका लाभ और महत्व समझ में आता है। किसी का भी दुरुपयोग विनाश के गर्त में जाने का सरल मार्ग होता है। अगर मोबाइल फोन की सुविधा मिली है हम उसका सदुपयोग करना चाहिए। यदि हम इसका पोली-मोति सबका हित को यह अन्य आविष्कारों की तरह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगा अन्यथा इस पान को अभिशाप में बद नही।

उपसंहार- हर चीज एक सीमा में हो तो अच्छा है क्योंकि तभी उसका लाभ और महत्त्व समझ में आता है। किसी का भी दुरुपयोग विनाश के गर्त में जाने का सरल मार्ग होता है। अगर मोबाइल फोन की सुविधा मिली है तो हमें उसका सदुपयोग करना चाहिए। यदि हम इसका उपयोग भली-भाँति सबके हित में कर सकें तो यह अन्य आविष्कारों की तरह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगा अन्यथा इस वरदान को अभिशाप में बदलते देर नहीं लगेगी।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

(1) **समय का महत्त्व**

संकेत-बिन्दुः अ) समय का सदुपयोग विकास की कुंजी अमूल्य धन ब) समय गतिशील-किसी की प्रतीक्षा नहीं करता स) हमारा कर्त्तव्य द) उपसंहार

(2) **भारत की ऋतुएँ**

संकेत-बिन्दुः छः ऋतुएँ-भारत में विशेष अ) ऋतुओं का क्रम और प्रत्येक ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य की छटा ब) हमारे जीवन में महत्त्व स) उपसंहार

(3) **हमारे सच्चे मित्र पेड़-पौधे**

संकेत-बिन्दु: भूमिका अ) पेड़-पौधों के बिना जीवन असंभव ब) उपयोगिता स) पेड़-पौधों की निरंतर की जा रही क्षति का परिणाम द) पेड़-पौधों को बचाने के लिए जरूरी उपाय य) उपसंहार

उत्तर:

(1) **समय का महत्त्व**

संकेत-बिन्दु: समय का सदुपयोग विकास की कुंजी अ) अमूल्य धन ब) समय गतिशील-किसी की प्रतीक्षा नहीं करता स) हमारा कर्त्तव्य द) उपसंहार

1. **समय का सदुपयोग विकास की कुंजी-** जीवन नदी की धारा के समान है। जैसे नदी की धारा ऊँची-नीची भूमि को पार करती निरंतर आगे बढ़ती रहती है उसी प्रकार जीवन की धारा भी सुख-दुख तथा सफलता-असफलता के अनेक संघर्षों को सहते-भोगते आगे बढ़ती रहती है। बहना जीवन है और ठहराव मृत्यु। जीवन का उद्देश्य निरंतर आगे बढ़ते रहने में है-इसी में सुख है, आनंद है। लेकिन सुख-आनंद और आगे बढ़ने में जो वस्तु काम करती है, वह है समय। जो भागते हुए समय को पकड़कर इसके साथ-साथ चल सकते हैं, वही तो जीवन में कामयाब होते हैं। वस्तुतः समय का सदुपयोग ही विकास की कुंजी है।

2. **अमूल्य धन-** अंग्रेजी में समय को 'धन' कहा है, पर समय 'धन' से कहीं ज्यादा कीमती है, अमूल्य है। धन आज है, कल नष्ट हो गया, परसों फिर आ सकता है। लेकिन जो समय अतीत के गर्त में समा गया, लाख चेष्टा करने पर भी वह लौटकर नहीं आ सकता। इसीलिए जितने भी संत-महात्मा हुए हैं, सभी ने समय के मूल्य को पहचानने का उपदेश दिया है। समय जीवन है और समय को नष्ट करना जीवन को नष्ट करना है। एक आम कहावत है कि "जो समय को नष्ट कर देता है समय उसे नष्ट कर देता है।" न जाने कितने पुण्यों के प्रताप से हमें मनुष्य-जीवन मिला है; अगर हमने इसे नहीं पहचाना तो बाद में पछताना-ही-पछताना बाकी रह जाता है। इसलिए समय को पहचान कर काम करना चाहिए। कुछ लोग अपना आलस्य और अकर्मण्यता छिपाने के लिए प्रायः कहते सुने जाते हैं कि-"साहब! क्या करें? समय ही नहीं मिलता।" और अगर ऐसे लोगों की दिनचर्या देखें तो पता लगेगा कि जनाब 9-10 बजे तक सोते ही रहते हैं। जो इतना समय सोने में नष्ट कर देंगे, उनके पास अच्छे और अधिक काम के लिए समय ही कहाँ रहेगा? सोना, सैर-सपाटा करना आदि जीवन के आवश्यक अंग हैं, पर इनकी सीमा होनी चाहिए। फ्रैंकलिन ने कहा था, "अगर तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है, तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ क्योंकि जीवन इसी से बनता है।" गतिशील समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।

3. **समय गतिशील-**किसी की प्रतिक्षा नहीं करता- समय मानव के लिए वरदान है जो इसका सदुपयोग करता है, उसके लिए खुशियों के तथा सफलता के ढेर लगा देता है और जो इसका दुरुपयोग करता है, उसे यह अवनति के ऐसे गहरे गर्त में फेंक देता है जहाँ से उभरना असंभव हो जाता है। संसार की बड़ी-से-बड़ी लड़ाइयों का भाग्य-निर्णय समय कर देता है। आज संसार में जिन व्यक्तियों को महान कहा जाता है, उनका

जीवन-इतिहास इस बात का साक्षी है कि उनका एक-एक पल गिना हुआ था। उनके प्रत्येक कार्य का समय तय था, क्योंकि वे जानते थे कि समय का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है। हिन्दी में एक कहावत है-

"बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुध लेह" अर्थात् जो समय बीत गया, उसे भूलकर वर्तमान और भविष्य का ध्यान करो। सदियों की गुलामी के बाद आजाद हुए अपने देश की उन्नति और विकास के चरम शिखर तक ले जाना है। हमारे देखते-देखते संसार के अन्य देश हमसे आगे और बहुत आगे निकल गए हैं। उनके यान चाँद-सूरज की दूरियाँ नाप रहे हैं और हम भी उनसे बहुत पीछे हैं। क्यों? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है कि उन्होंने समय को पहचाना है, उसकी कीमत को समझा है और दिन-रात परिश्रम करके देश का निर्माण किया है। उन्हीं की तरह यदि हम समय की कीमत को समझें तो प्राकृतिक संपदा से भरपूर अपने देश को अधिक समुन्नत और विकासशील बना सकते हैं।

4. **हमारा कर्त्तव्य-** देश को उन्नति और विकास के चरम शिखर तक ले जाने के लिए समय के महत्त्व को समझना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। मानवीय जीवन में समय का अत्यंत महत्त्व है।

5. **उपसंहार-** हम सभी भारत देश के निर्माता हैं। हमें हमेशा अपने देश की उन्नति के लिए अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। अगर हम काम को निश्चित समय पर पूरा करते हैं तो इससे समय भी बच जाता है जिसका प्रयोग हम समाज के कल्याण के लिए भी कर सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि कभी भी समय व्यर्थ न हो सके। समय का पूरा उपयोग करना चाहिए और समय के महत्त्व को समझाना चाहिए।

(2) **भारत की ऋतुएँ**

संकेत-बिन्दुः अ) छः ऋतुएँ-भारत में विशेष ब) ऋतुओं का क्रम और प्रत्येक ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य की छटा स) हमारे जीवन में महत्त्व द) उपसंहार

1. **छः ऋतुएँ-**भारत में विशेष- भारत की धरा प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से विश्व में अनूठा स्थान रखती है। विश्व के अन्य देशों में प्रायः तीन ही ऋतुएँ होती हैं, पर भारत में ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर तथा बसंत-इन छः ऋतुओं का चक्र गतिशील रहता है।

2. **ऋतुओं का क्रम और प्रत्येक ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य की छटा**- बसंत ऋतु को 'ऋतुराज' कहा गया है। बसंत में पृथ्वी का शृंगार देखते ही बनता है। चारों ओर पुष्पों तथा फलों की भरमार सबका मन मोह ले लेती है। न अधिक सर्दी, न अधिक गर्मी। समस्त चराचर में नई स्फूर्ति का संचार होता है। बसंत पंचमी और रंगों का त्यौहार होली इसी ऋतु में मनाए जाते हैं बसंत के बाद धीरे-धीरे शुरू होता है, ग्रीष्म का साम्राज्य। भयंकर गर्मी, लू तथा तेज धूप में पृथ्वी तवे की तरह जलने लगती है। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच जाती है। सभी की नजरें आकश पर जा टिकती हैं। पेड़-पौधे झुलस जाते हैं। कुओं, तालाबों आदि का पानी सूखने लगता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ग्रीष्म ऋतु का कोई महत्त्व नहीं। ग्रीष्म ऋतु के बिना अन्न नहीं पक सकता। इसीलिए अन्न के उत्पादन में इस ऋतु का बहुत महत्त्व है। ग्रीष्म की भयंकर तपन के बाद आती है-सुहावनी वर्षा जो अपने साथ नवजीवन का संदेश लाती है। आकाश में काले-काले बादल छाने लगते हैं और वर्षा की

बूँदों से धरती की प्यास बुझनी प्रारम्भ हो जाती है। पशु-पक्षियों को चैन की साँस मिलती है। वर्षा के जल से धरती की प्यास तो बुझती ही है, खेतों में अन्न भी उगता है। चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली छा जाती है। इस ऋतु में चारों ओर जल-ही-जल दिखाई देने लगता है। मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं, प्रायः बाढ़ें आ जाती हैं तथा मच्छर-मक्खियों का प्रकोप भी बढ़ जाता है। लेकिन इस ऋतु के अभाव में जीवन सम्भव नहीं, क्योंकि जल ही जीवन का आधार है। इस ऋतु में तीज, रक्षाबंधन तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी जैसे त्यौहार आते हैं।

धीरे-धीरे वर्षा समाप्त होने लगती है तथा आगमन होता है- शरद ऋतु का गुलाबी जाड़े से। इस ऋतु में भी अधिक सर्दी नहीं पड़ती। यह ऋतु वर्षा के प्रकोप से राहत दिलाती है। आकाश में बादल दिखाई नहीं देते तथा मौसम भी सुहावना रहता है। विजयदशमी और दीपावली-ये दो बड़े पर्व भी इस ऋतु में ही मनाए जाते हैं।

शरद के बाद सर्दी बढ़ने लगती है तथा आगमन होता है-हेमंत ऋतु का। सूर्य दक्षिणायन की ओर अपनी यात्रा आरम्भ कर देता है। वायु में ठंड बढ़ जाती है, जिससे लोग ठिठुरने लगते हैं। यह ऋतु स्वास्थ्य के लिए अच्छी बहुत है। इस ऋतु में पाचन-शक्ति के बढ़ने से खाया-पिया हजम हो जाता है। इन्हीं दिनों में पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फ गिरती है। बर्फ गिरने से ठंडी हवाएँ चलती हैं तथा मैदानी

भागों में भी ठंड बढ़ जाती है। हेमंत के बाद आती है- शिशिर ऋतु। इस ऋतु को 'पतझड़' भी कहते हैं। इस ऋतु में वृक्षों से पत्ते गिरने लगते हैं। ऐसा लगता है मानो 'प्राचीन' को त्यागकर 'नवीन' के लिए स्थान दिया जा रहा है। प्रातः तथा सायंकाल कोहरा भी छाने लगता है। इस ऋतु में यदि पुराने पत्ते न झड़ें तो नए कैसे आ पाएँगे? अतः यह ऋतु भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

3. **हमारे जीवन में महत्त्व-** ऋतुओं का यह चक्र प्रकृति नटी द्वारा अभिनीत नृत्य नाटिका की भाँति लगता है, जिसमें एक के बाद एक दृश्य आते हैं। सभी ऋतुओं का अपना-अपना महत्त्व है तथा सभी अपनी-अपनी विशेषताओं से इस देश को अनुप्राणित करती हैं। भारत की इन्हीं विशेषताओं पर मुग्ध होकर इकबाल ने ठीक ही कहा था-'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा।'

4. **उपसंहार-** हर किसी के जीवन में ऋतुएँ बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। इन सभी ऋतुओं की वजह से हमारे भारत देश को ऋतुओं का देश कहा जाता है। यह सभी ऋतुएँ एक नई उमंग और उत्साह लेकर आती हैं। भारत देश की यह सब ऋतुएँ हमारे जीवन में कुछ नया परिवर्तन करती हैं।

(3) **हमारे सच्चे मित्र पेड़-पौधे** संकेत-बिन्दु: भूमिका Û पेड़-पौधों के बिना जीवन असंभव Û उपयोगिता Û पेड़-पौधों की निरंतर की जा रही क्षति का परिणाम Û पेड़-पौधों को बचाने के लिए जरूरी उपाय Û उपसंहार

1. **भूमिका-** मनुष्य और पेड़-पौधों का साथ आदिकाल से रहा है। यदि कहा जाए कि पेड़-पौधे मनुष्य के पहले साथी हैं तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। भूखे मनुष्य को पेड़ों ने फल-फूल दिया और तन ढकने को अपनी छाल एवं पत्तियाँ। उसने अपनी शीतल छाया में मानव को आश्रय दिया। शायद इसी बात को वर्तमान और भावी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए वृक्षों की पूजा की जाती है।

2. **पेड़-पौधों के बिना जीवन असंभव-** पेड़-पौधों के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना भी व्यर्थ है। वे हमें प्राणदायी ऑक्सीजन देकर हमें जीवन देते हैं और विषरूपी कार्बन-डाई-ऑक्साइड एवं अन्य विषैली गैसों का पान करते हैं। इस प्रकार वे साक्षात् शिव के समान कल्याणकारी हैं। वृक्ष हमारे पालन-पोषण कर्ता भी हैं। वे फल-फूल, पत्तियाँ, तना, जड़ आदि विविध रूपों में भोज्य उपलब्ध कराते हैं। वे दूध और मांस उपलब्ध कराने वाले जानवरों को चारा एवं भोजन उपलब्ध कराकर उनके जीवन का आधार बनते हैं।

3. **उपयोगिता-** पेड़-पौधे हमें क्या-क्या नहीं देते हैं। वे आजीवन प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में कुछ-न-कुछ देते ही रहते हैं। पेड़ हमें पहनने को वस्त्र (रेशे), मूल्यवान लकड़ी तथा दैनिकोपयोगी अनेक वस्तुएँ तथा उन्हें बनाने के कच्चा माल उपलब्ध करवाते हैं। पेड़ों से हमें नाना प्रकार की औषधियाँ, जड़ी-बूटियाँ आदि प्राप्त होती हैं। इनसे लाख, गोंद एवं शहद मिलता है। वन और पेड़-पौधे आज भी आदिवासियों के लिए वरदान बने हुए हैं। पेड़-पौधों से ही उनकी सारी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। ये पेड़-पौधे ही उनकी आजीविका का साधन हैं। वन एक ओर जंगली जानवरों को आश्रय एवं भोजन प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करते हैं। हरे-भरे पेड़ धरती का शृंगार हैं। उनकी हरियाली मनोहर एवं नेत्रज्योति बढ़ाने वाली होती है।

पेड़-पौधे उपजाऊ मृदा को कटने-बहने से बचाते हैं, ये वर्षा लाने में सहायक होते हैं तथा बाढ़ रोकने में सहायक बनते हैं। पेड़-पौधें ऋषियों-मुनियों के समान कल्याणकारी होते हैं जो स्वयं आतप सहकर दूसरों को शीतल छाया प्रदान करते हैं और मनुष्य का बहुविधि कल्याण करते हैं।

4. **पेड़-पौधों की निरंतर की जा रही क्षति का परिणाम**- जनसंख्या वृद्धि और औद्योगीकरण ने पेड़-पौधों को अपूर्ण क्षति पहुँचाई है। स्वार्थी मानव अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए इनकी अंधाधुंध कटाई करता जा रहा है। इसके अलावा सड़कों को चौड़ा करने, उद्योग लगाने के लिए भी इनकी कटाई की जा रही है। बाढ़ और भूस्खलन जैसे प्राकृतिक प्रकोप इसी के परिणाम हैं।

5. **पेड़-पौधों को बचाने के लिए जरूरी उपाय**- पेड़-पौधों को बचाने के लिए यद्यपि सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं परन्तु सभी लोगों के सहयोग के बिना यह प्रयास अधूरा होगा। लोगों में वनों के प्रति जागरूकता फैलानी होगी। नए आरोपित पौधों को पेड़ बनने तक देखभाल करनी होगी तथा खाली जमीन में अधिकाधिक पेड़ लगाकर धरती का शृंगार करना होगा, जिससे यह धरती जीवों के रहने योग्य बनी रह सके।

6. **उपसंहार-** हम सभी के जीवन में पेड़ों का बहुत महत्त्व हैं। इसलिए पेड़ों की कटाई नहीं करनी चाहिए बल्कि उनकी रक्षा करनी चाहिए और पेड़ों के महत्त्व को समझना चाहिए। सरकार ने भी पेड़ों को बचाने के लिए बहुत सारे कदम उठाये हैं। पूरे देश में श्वन महोत्सवश् 7 जुलाई को पेड़ों की रक्षा के लिए मनाया जाता है। इसके कारण पेड़ हमारे मित्र हैं।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200- शब्दों में निबन्ध लिखिए-

1- **विज्ञान: वरदान या अभिशाप संकेत-बिन्दुः** प्रकृति पर विजय (क) मनुष्य के लिए वरदान (ख)जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ (ग) उत्पन्न समस्याएँ (घ) सदुपयोग या दुरुपयोग-हमारी जिम्मेदारी (ड) निष्कर्ष।

2- **दूरदर्शन के लाभ-हानि संकेत-बिन्दु**: दूरदर्शन का अर्थ एवं परिचय (क) दूरदर्शन की उपयोगिता (ख) दूरदर्शन की लोकप्रियता के कारण (ग) दूरदर्शन से होने वाली हानियाँ (घ) निष्कर्ष।

3- **खेल और स्वास्थ्य**

संकेत-बिन्दुः खेलों की उपयोगिता (क) खेल और स्वास्थ्य का सम्बन्ध (ख) हमारा कर्त्तव्य (ग) निष्कर्ष। उत्तर: (1) विज्ञान: वरदान या अभिशाप संकेत-बिन्दु: प्रकृति पर विजय (क) मनुष्य के लिए वरदान (ख) जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ (ग) उत्पन्न समस्याएँ (घ) सदुपयोग या दुरुपयोग-हमारी जिम्मेदारी (ड) निष्कर्ष।

1. प्रकृति पर विजय- वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण आज का युग विज्ञान का युग माना जाता है। विज्ञान ने प्रतिदिन नए आविष्कार करके मानव जीवन को सरल और आरामदायक बना दिया है। बटन दबाते ही विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आज्ञाकारी सेवक की भाँति हमारी सेवा में तत्पर रहते हैं। जिनके कारण मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति आ गई है। आज मानव ने विज्ञान के बल पर प्रकृति को भी अपनी दासी बना लिया है।

2. मनुष्य के लिए वरदान- विद्युत आविष्कार ने तो मानव जीवन को सुखों से भर दिया है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक मानव जिस प्रकार के उपकरणों-साधनों का प्रयोग करता है वे सभी विज्ञान की ही देन है। आज मानव को गर्मी से बचने के लिए पंखे, एयरकंडीशनर, रेडियो, चलचित्र, टेलीविजन, बल्ब, रसोई के उपकरण आदि विज्ञान की ही देन है। कम्प्यूटर, फैक्स, मोबाइल फोन, सैटेलाइट संचार व्यवस्था आज इतनी सामान्य हो गई है कि हमें सारे विश्व की सूचनाएँ एक ही क्षण में उपलब्ध हो जाती हैं। सारी मानव-जाति को एक-दूसरे के निकट लाने में विज्ञान का अद्भुत योगदान है। कृषि के क्षेत्र में नई-नई तकनीकों, रसायनों की खोज ने उपज को चौगुना कर दिया है। मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से नदियों को बाँधकर नहरें निकाल दी हैं, बड़े-बड़े पर्वतों का सीना चीरकर सुरंगें बना दी हैं। समुद्र के सीने से आज का सबसे आवश्यक तत्व 'पेट्रोलियम' निकाल लेना मानव की एक बड़ी उपलब्धि है। मानव की सुविधा के लिए रेल, मोटर, वायुयान, जलयान, बड़े-बड़े भवन सभी सुविधायें बड़े-बड़े इंजीनियर्स की ही तो देन है चिकित्सा के क्षेत्र में नई-नई औषधियों की खोज, नई-नई तरह की मशीनों का ऑपरेशनों में प्रयोग आज मानव जीवन के लिए वरदान बनकर सामने आया है। लेजर-तकनीक से इलाज ने तो आज सचमुच चमत्कृत ही कर दिया है। विज्ञान की आज की सबसे बड़ी देन तो कम्प्यूटर है। कम्प्यूटराइज्ड रोबोटों की मदद से आज ऐसे-ऐसे कार्य होने लगे हैं, जिनको मानव शायद ही कभी कर पाता। आज मनुष्य ने चन्द्रमा ही नहीं सौरमण्डल के दूसरे ग्रहों की भी खोज करना आरम्भ कर दिया है।

3. **जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ**- विज्ञान न चिकित्सा का क्षेत्र हो या इंजीनियरिंग का, भौतिक विज्ञान की बात हो या रसायान विज्ञान की, सभी क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिखाया है। विज्ञान ने मनुष्य को क्या-क्या नहीं दिया? आज बटन दबाते ही सारे सुख-साधन उपलब्ध हो जाते हैं सारी मानव-जाति को एक-दूसरे के निकट लाने में विज्ञान का अद्‌भुत योगदान है। शिक्षा के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर एक वरदान बनकर ही सामने आया है। जल, थल, आकाश का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ मनुष्य की पहुँच न हुई हो। कम्प्यूटर प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य का हितैषी बनकर सामने आया है।

4. **उत्पन्न समस्याएँ-** जहाँ विज्ञान ने मानव को इतने वरदान दिये हैं, वहीं अनेक समस्याएँ भी खड़ी कर दी है। विज्ञान ने मनुष्य को विनाश के साधन भी उपलब्ध करा दिए हैं। युद्ध के विनाशकारी उपकरण टैंक, बमवर्षक विमान, फाइटर-विमान, अणु-बम, विषैली गैसों तथा प्रदूषण के कारण पर्यावरण को खतरा भी विज्ञान की ही देन है। ध्वनि, जल, वायु प्रदूषण का जन्मदाता विज्ञान ही है। मानवता पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति के मस्तक पर चिंता की रेखाएँ उभर आती है। वास्तव में विज्ञान अपने में निर्माण और सृजन के साथ विनाश एवं विध्वंस की शक्तियाँ समेटे हुए हैं।

5. **सदुपयोग या दुरुपयोग**-हमारी जिम्मेदारी- यदि मनुष्य वैज्ञानिक उपलब्धियों का दुरुपयोग करता है तो विनाश होगा ही। सदुपयोग या दुरुपयोग का सम्बन्ध विज्ञान से नहीं उसके उपयोगकर्त्ताओं पर निर्भर है। विज्ञान पर दोष लगाना तो सचमुच मूर्खता ही है। विज्ञान स्वयं मैं विनाशकारी नहीं है बल्कि वह तो आज की मानव संस्कृति के लिए वरदान बनकर ही सामने आया है। विष्णु सरीखा पालक है, शंकर जैसा संहारक। पूजा उसकी शुद्ध भाव से करो, आज से आराधक।।

6. **निष्कर्ष**- अंत में यही कहा है कि विज्ञान की शक्तियों का प्रयोग सोच-समझकर करना होगा क्योंकि अंकुश के अभाव में यह विनाशकारी बन जाता है।

(2) **दूरदर्शन के लाभ-हानि संकेत-बिन्दु**: दूरदर्शन का अर्थ एवं परिचय (क) दूरदर्शन की उपयोगिता (ख) दूरदर्शन की लोकप्रियता के कारण (ग) दूरदर्शन से होने वाली हानियाँ (घ) निष्कर्ष।

1. दूरदर्शन का अर्थ एवं परिचय- आज विज्ञान ने मानव को अनेक उपहारों से उपकृत किया है। विज्ञान ने मनोरंजन के क्षेत्र में भी ऐसे उपकरण तथा साधन प्रदान किए हैं जिन्होंने इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। ऐसा ही उपकरण है-दूरदर्शन। दूरदर्शन का अर्थ है-दूर से दर्शन कराने वाला। ़त्रेता युग में संजय ने अंधे धृतराष्ट को उनके पास बैठाकर महाभारत युद्ध का आँखों देखा वर्णन सुनाया था। उस समय ऐसा प्रतीत हुआ था कि संजय ने अपनी दिव्यदृष्टि से महाभारत का युद्ध देखा, वह कोई चमत्कारी पुरुष था। आज वही कार्य दूरदर्शन के द्वारा संभव है। दूरदर्शन एक ऐसा साधन है जो देश-विदेश की घटनाओं को ज्यों-का-त्यों हमारी आँखों के सामने ला देता है।

2. **दूरदर्शन का उपयोगिता**- दूरदर्शन की उपयोगिता इतनी तेजी से बढ़ रही है, कि आज यह मनुष्य, परिवार और समाज की आवश्यकता बन गया है। यह ज्ञान एव मनोरंजन का अत्यन्त लोकप्रिय साधन बन गया है। इससे दिनभर का थका तन-मन उत्साह से भर उठता है तथा देश-विदेश की जानकारियाँ प्राप्त करता है। सात समुंदर पार घट रही घटनाओं को हमें दिखाता-सुनाता है। यह बच्चों के लिए जितना उपयोगी

है उतना ही वृद्ध या अन्य आयुवर्ग के लोगों के लिए। हर प्रकार का कारोबार करने वाला व्यक्ति इससे अपनी मानसिक थकान भगाकर ऊर्जान्वित हो उठता है। इसके कार्यक्रम प्रातः से देर रात तक प्रसारित होते रहते हैं।

3. **दूरदर्शन की लोकप्रियता के कारण-** इस पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम- सबसे पहले बच्चों के कार्यक्रमों की बात करते हैं, इस पर एन. सी. आर. टी. द्वारा तैयार कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है जो उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। छात्रों के लिए कहानी, गीत, नाटक, चुटकुलों का भी समय-समय पर प्रसारण किया जाता है। युवक-युवतियों के लिए विभिन्न धारावाहिक एवं फिल्में प्रसारित की जाती हैं, वहीं प्रौढ़ों और वृद्धों के लिए अनेक कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। इसके अलावा मौसम सम्बन्धी जानकारी, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समाचार विद्वंतजनों से समसामयिक विषयों पर परिचर्या, खेलों का सजीव प्रसारण, किसानों का कार्यक्रम कृषि-दर्शन, विभिन्न प्रतियोगिता सम्बन्धी कार्यक्रम इसकी लोकप्रियता में चार चाँद लगाते हैं। दूरदर्शन पर समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने सम्बन्धी जन संदेश और कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन पर समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने सम्बन्धी जन संदेश और कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा बनाए गए कार्यक्रमों के माध्यम से विज्ञान, गणित, भाषा, कृषि, कम्प्यूटर जैसे अनेक विषयों की शिक्षा नियमित रूप से दी जा रही है। दूरदर्शन पर विज्ञान के प्रयोगों, अंतरिक्ष सम्बन्धी नई जानकारी, प्रकृति के छिपे रहस्यों सम्बन्धी सूचनाएँ, देश-विदेश की घटनाओं सम्बन्धी जानकारी, खेल-कूद तथा अन्य समारोहों का सीधा प्रसारण दिखाया जाता है। हम घर बैठे विश्व के किसी भी कोने में होने वाले कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। समुद्र की गहराइयों, पर्वत श्रृंखलाओं, वन्य-प्राणियों तथा प्रकृति के अन्य रहस्यों को साक्षात देख सकते हैं। दूरदर्शन ने पृथ्वी को एक परिवार बना दिया। आज दूरदर्शन व्यापार तथा विज्ञापन का भी प्रभावशाली माध्यम बन गया है। अच्छे-अन्छे धारावाहिक हमारी संस्कृति से हमारा परिचय करा सकते हैं।

4. **दूरदर्शन से होने वाली हानियाँ**- दूरदर्शन से जहाँ इतने लाभ हैं वहीं इससे कुछ हानियाँ भी हैं, जिसका सर्वाधिक असर युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है। इस पर प्रसारित कार्यक्रमों से सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ रहा है। भारतीय संस्कृति के मूल्यों का क्षरण हो रहा है, समाज में अश्लीलता बढ़ रही है। इसके कार्यक्रमों को देख युवावर्ग दिग्भ्रमित हो रहा है। वह चोरी, हत्या, अपहरण, आत्महत्या, बलात्कार के दृश्यों को देखकर विकृत मानसिकता का शिकार हो रहा है। युवावर्ग की पढ़ाई चौपट करने तथा उसे फैशनपरस्त बनाने में इसकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। आजकल दूरदर्शन पर जिस प्रकार के कार्यक्रमों की भरमार है, उनके कारण छात्रों का नैतिक पतन हो रहा है। विदेशी चैनलों के आ जाने से जिस प्रकार का सांस्कृतिक प्रदूषण हो रहा है, वह अत्यधिक चिंता का विषय है। इन चैनलों पर दिखाए जाने वाले अधिकांश कार्यक्रमों में जिस प्रकार मद्यपान, कामुक दृश्यों, कैबरे नृत्य, चुंबन पाश्चात्य संगीत, हिंसा तथा अर्धनग्न दृश्यों का प्रदर्शन किया जा रहा है, उनके कारण युवावर्ग का नैतिक पतन होना स्वाभाविक है। अतः खेद का विषय है कि जो दूरदर्शन जनजागरण तथा शिक्षा का सशक्त माध्यम था, वही आज नैतिक पतन का कारण बन रहा है। यदि समय रहते ऐसे कार्यक्रमों पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जाएगी।

5. **निष्कर्ष**- अंत में यही कहा जा सकता है कि दूरदर्शन ज्ञान एवं मनोरंजन का अद्‌भुत साधन है। जिसका सदुपयोग या दुरुपयोग करना मनुष्य के अपने हाथ में है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है अतः उससे यही उम्मीद की जा सकती है कि अपने निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वह दूरदर्शन का प्रयोग करेगा। अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर देश की उन्नति व समृद्धि में अपना योगदान देगा।

(3) **खेल और स्वास्थ्य**

संकेत-बिन्दु: खेलों की उपयोगिता (क) खेल और स्वास्थ्य का सम्बन्ध (ख) हमारा कर्त्तव्य (ग) निष्कर्ष।

1. **खेलों की उपयोगिता**- खेल मात्र खाली समय का सदुपयोग नहीं है, अपितु जीवन की नियमित आवश्यकता है। जिसने दिन में एक बार खेलों को स्थान दिया है, वह जीवन में सदैव खुश रहता है, स्वस्थ रहता है, मजबूत रहता है, बड़ी से बड़ी मुसीबतों में विचलित नहीं होता है। सूरजमुखी के फूल के भाँति चेहरा खिला-खिला रहता है जो लोग खेलों को महत्त्व नहीं देते, वे सदैव गुड़हल की भाँति मुरझाये हुए ही रहते हैं। खेल से मनुष्य में आत्मविश्वास नेतृत्व की क्षमता पैदा होती है, इच्छाशक्ति सदैव बलवती रहती है, संगठन की शक्ति का अहसास होता है। निराशाएँ कभी ऐसे व्यक्ति का पीछा नहीं कर पाती हैं। होठों पर मुस्कुराहट, वार्ता में आत्मविश्वास, मन में उत्साह, स्वस्थ-विचारों का विकास का एक साथ झुण्ड बनाये रहते हैं। इस तरह स्वस्थ शरीर वरदान बन जाता है। अतः खेल स्वास्थ्य का पर्याय है।

2. **खेल और स्वास्थ्य का संबंध**- धन के अभाव में मनुष्य सुख का अनुभव कर सकता है, किन्तु अस्वस्थ रहने पर सुखों का अनुभव तो दूर, सब कुछ सामने होते हुए भी सुखी नहीं रह पाता। इसलिए जीवंत पुरुष यही कहा करते हैं कि मानव को स्वास्थ्य के प्रति सदैव सचेत रहना चाहिए। रोग-व्याधि उससे दूर ही भागते हैं। भौतिक सुखों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब शरीर नीरोग हो। अतः विद्वान कहा करते हैं कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दवाओं के ढेर रखने से अच्छा है खेलना सीखो, सांसारिक सुखों की अनुभूति करनी है तो हँसना सीखो। हँसना भी खेल का एक हिस्सा है। स्वस्थ युवक खेल-सामग्री के अभाव में भी खेल सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि खेल के लिए विशेष साधन जुटाए जाएँ साधन के अभाव में भी खिलाड़ी कोई-न-कोई खेल ढूँढ़ ही लेते हैं। साथ न मिलने पर भी मस्ती में अकेले भी खेला जा सकता है। पहले बच्चे लकड़ी की गाड़ी बनाकर खेलते थे और आज खेल के साधन बाजार में महँगे दामों पर मिलते हैं। यह सोचकर मत बैठें कि जब तक साधन नहीं होंगे, तब तक कैसे खेलें? बहुत से लोग आज अपने स्तर को बनाए रखने के लिए बच्चों को घर में कैद रखना चाहते हैं, वे खेल के सभी साधन घर में ही जुटा देते हैं, जिससे सामूहिक खेलों से बालक वंचित रह जाता है। घर में खेले जाने वाले खेलों से मानसिक खेल तो हो जाते हैं, किन्तु शारीरिक खेल नहीं हो पाते हैं। शारीरिक खेल तो घर से बाहर सामूहिक रूप से ही सम्पन्न होते हैं। आज क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल तथा अन्य खेलों के प्रति स्तरीय रुचि सम्पन्न घरों में पैदा हुई है। ग्रामीण अंचल में खेले जाने वाले प्रायः सभी खेल बिना किसी विशेष साधन के खेले जाते हैं। आयुर्वेद में कहा गया है कि खूल भूख लगने पर भोजन का आनंद मिलता है और परिश्रम से पसीना आने में शीतल छाया का आनन्द मिलता हैं। थकान के बाद शीतल छाया में और सामान्य भोजन में जो आनंद की अनुभूति होती है, ऐसी आनंद की अनुभूति रोगग्रस्त शरीर को विविध प्रकार के व्यंजनों से भी नहीं मिलती है। उदाहरण स्वरूप जो बालक रुचि से खेलता है उसकी पाचन-शक्ति बढ़ती है। दूसरी ओर आलसी बच्चे होते हैं जो टी.वी. पर

आने वाले पदार्थों के विज्ञापन की ओर आकर्षक होते हैं तथा उन्हें ही प्रयोग करते हैं। जिन्हें वे सही से नहीं खाते तथा अस्वस्थ हो जाते हैं।

3. **हमारा कर्त्तव्य**- खेलने वाले बच्चों, युवकों के लिए कभी चिकित्सकों की आवश्यकता नहीं पडती है। शरीर स्वयं निरोग हो जाता है। खेल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हम स्वयं खेलते हुए स्वस्थ रहते हुए दूसरों को भी प्रेरित करें। जब हम हरी सब्जी तथा ताजे फल खाएँगे तो हम स्वस्थ रहेंगे। खेलने व व्यायाम करने से हमारे शरीर का विकास होता है।

4. **निष्कर्ष**- खेल किसी भी देश के युवाओं के लिए प्रतीक है। इससे देश के लोग स्वस्थ और युवा रहते हैं। एक आलस पूर्ण और निष्क्रिय राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं करता है। इसीलिए देश का विकास शारीरिक व्यायाम और खेल कूद पर बहुत निर्भर करता है।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200-250 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

(1) **ग्लोबल वार्मिंग संकेत-बिन्दु:** प्रस्तावना (क) ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा एवं अर्थ (ख) ग्लोबल वार्मिंग का प्राकृतिक कारण (ग) ग्लोबल वार्मिंग का मानवीय कारण (घ) रोकने के उपाय (ड) उपसंहार।

(2) **समाज में मीडिया की भूमिका संकेत-बिन्दु:** प्रस्तावना (क) मीडिया क्या है (ख) मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ (ग) सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव (घ) उपसंहार।

(3) **आत्मनिर्भर या स्वावलंबी संकेत-बिन्दु:** प्रस्तावना (क) संसार में परावलंबी अर्थात् परमम दुखम् (ख) आत्म-निर्भर व्यक्ति (ग) स्वावलंबन से लाभ (घ) उपसंहार। उत्तर:

(1) **ग्लोबल वार्मिंग संकेत-बिन्दु:** प्रस्तावना (क) ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा एवं अर्थ (ख) ग्लोबल वार्मिंग का प्राकृतिक कारण (ग) ग्लोबल वार्मिंग का मानवीय कारण (घ) रोकने के उपाय (ड) उपसंहार।

1. **प्रस्तावना**- ग्लोबल वार्मिंग हमारे देश की ही नहीं, अपितु पूरे विश्व की समस्या है। यह धरती के वातावरण पर लगातार बढ़ रही है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रत्येक देश कुछ न कुछ उपाय लगातार कर रहा है, परन्तु यह घटने की जगह निरंतर बढ़ रही है। ग्लोबल वार्मिंग के लिये सबसे बड़ा जिम्मेदार मानव स्वयं है। मनुष्य की गतिविधियों से खतरनाक गैसे- कार्बन-डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड इत्यादि का ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में वातावरण में बढ़ोत्तरी हो रही है।

2. **ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा**- धरती के वातावरण में तापमान के लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोत्तरी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ- पृथ्वी के निकट हवाई और महासागर की औसत तापमान में बीसवीं शताब्दी से हो रही वृद्वि और उसकी अनुमानित निरंतरता है पृथ्वी की सतह के निकट विश्व की वायु के औसत तापमान में 2500 वर्षों के दौरान 0.74 प्लस माइनस 0.8 डिग्री सेल्सियस (1.33 प्लस माइनस 0.32 डिग्री एक)।

3. **ग्लोबल वार्मिंग का प्राकृतिक कारण**- ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैसें हैं। ये वे गैसें होती हैं जो बाहर से मिल रही गर्मी को अपने अंदर सोख लेती है। ग्रीन हाउस गैसों में सबसे महत्त्वपूर्ण है कार्बन डाइ ऑक्साइड, जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जन करते हैं। पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर यहाँ का तापमान बढ़ाने के कारक बनती है कार्बन डाइ-ऑक्साइड। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन इसी तरह चलता रहा तो 21वीं सदी में हमारे पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा सकता है। यदि ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे दुनिया के कई हिस्सों में बर्फ की चादर बिछ जाएगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ जाएगा और दुनिया के कई हिस्से जल में विलीन हो जाएँगे भारी तबाही मचेगी। यह किसी विश्वयुद्ध या किसी 'एस्टेरॉयड' के पृथ्वी से टकराने से होने वाली तबाही से भी ज्यादा भयानक होगी।

4. **ग्लोबल वार्मिंग का मानवीय कारण**- ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार अधिकांश कारक मानव द्वारा किए गए निर्मित कार्य जिसका परिणाम विनाशकारी है। नदियों की धारा को अवरुद्ध किया जा रहा है हमारी खुशी और संसाधनों को इकट्ठा करने के लिए पेड़ और जंगलों को नष्ट किया जा रहा है। औद्योगिक क्रांति की वजह से कोयले, तेल और करोड़ों वाहनों के चलाने की वजह से प्रदूषण बहुत बढ़ रहा है जिससे हमारी पृथ्वी असामान्य रूप से गर्म होती जा रही है।

5 मानव द्वारा निर्मित ग्लोबल वार्मिंग के अन्य कारण-1. वनों की कटाई, 2. औद्योगिकरण, 3. शहरीकरण, 4. मानव की विभिन्न क्रियाएँ, 5. हानिकारक यौगिकों में वृद्धि, 6. रासायनिक उर्वरकों का उपयोग। ग्लोबल वार्मिंग का एक कारण विकसित देश है। संयुक्त राज्य अमेरिका और बहुत से अन्य विकसित देश इस समस्या के लिए अधिक जिम्मेदार हैं क्योंकि विकासशील देशों की अपेक्षा उनके देश की कार्बन उत्सर्जन की प्रतिदर 10 गुना अधिक है। लेकिन औद्योगिक प्रकृति बनाए रखने के लिए कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने के इच्छुक नहीं है। दूसरी ओर भारत, चीन, जापान जैसे विकासशील देशों का मानना है कि वह भी विकास की प्रक्रिया में है, इसलिए वह कार्बन-उत्सर्जन को कम करने का रास्ता नहीं अपना सकते। इसलिए विकसित देशों को भी थोड़ा सामंजस्य बनाकर अपनी पृथ्वी की सुरक्षा समझकर कार्य करना चाहिए।

6. **ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय**- ग्लोबल वार्मिंग रोकने के लिए जागरूकता फैलानी होगी। हमें पृथ्वी को सही मायने में 'ग्रीन' बनाना होगा। अपने 'कार्बन फुटप्रिंटर्स' को कम करना होगा। हम अपने आसपास के वातावरण को प्रदूषण से जितना मुक्त रखेंगे, इस पृथ्वी को बचाने में उतनी बड़ी भूमिका निभाएँगे। वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए मुख्य रूप से सी.एफ.सी. गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा। इसके लिए फ्रिज, एयरकंडीशनर और दूसरे कूलिंग मशीनों का इस्तेमाल कम करना होगा। औद्योगिक इकाइयों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ हानिकारक है इस प्रदूषण को रोकने के लिये पर्यावरण मानकों का सख्ती से पालन करना होगा। पेड़ों की कटाई रोकनी होगी और जंगलों के संरक्षण पर बल देना होगा। पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पनबिजली पर ध्यान दिया जाए तो वातावरण को गर्म करने वाली गैसों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। जंगलों की आग को रोकना होगा। पेड़ लगाएँ।

6. **उपसंहार**- मानव को मिलकर इस ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी को बचाना जरूरी है। नहीं तो भयंकर परिणाम देखने को मिलेगा जिसमें शायद पृथ्वी का अस्तित्वहीन रहे। इसलिए मानव को सामंजस्य बुद्धि और एकता के साथ मिलकर सभी देशों को इसके बारे में उपाय ढूँढ़ना अनिवार्य है। हमारी साँसें चलती रहें इसलिए तकनीकी और आर्थिक आराम से ज्यादा अच्छा प्राकृतिक सुधार जरूरी है।

(2) **समाज में मीडिया की भूमिका**

संकेत-बिन्दु: प्रस्तावना (क) मीडिया क्या है (ख) मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ (ग) सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव (घ) उपसंहार।

1. . **प्रस्तावना**- मीडिया संचार का ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम समाज में घटित हो रही किसी भी घटना, किसी भी प्रकार की जानकारी शिक्षा एवं किसी भी प्रकार के विज्ञापन के प्रचार-प्रसार को बहुत ही सहजता से समाज के व्यक्ति के पास तक पहुँचा सकते हैं।

2. **मीडिया क्या है**- तकनीकी विकास से पहले मीडिया शब्द का प्रयोग केवल किताबों, समाचार पत्रों, जिसे हम प्रिंट मीडिया के रूप में जानते हैं, के लिए होता था परन्तु अब टेलीफोन, फिल्में, रेडियो तथा इंटरनेट आदि भी मीडिया के प्रमुख अंग बन गए हैं। पहले मीडिया के ये सभी आधुनिक साधन नहीं थे तो केवल प्रिंट मीडिया का ही प्रयोग होता था। लोग साहित्य लेखन के द्वारा ही अपने विचारों को प्रकट किया करते थे। जैसे कि भारत की आजादी के लिए चलाए जा रहे आंदोलनों को सफल बनाने के लिए इससे लोगों को जोड़ने के लिए अनेक प्रकार के प्रिंट मीडिया का सहारा लेकर कई समाचार पत्रों तथा पत्रिका का संपादन किया जा रहा था। आज का मीडिया हमारे समाज को नया आकार प्रदान करने तथा इसको मजबूत बनाने में अपनी एक सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मीडिया लोगों के मनोरंजन का एक बेहतरीन साधन है। आज मीडिया के द्वारा ही किसी देश के किसी कोने में बैठकर दुनिया के किसी कोने में घटित हुई घटना को टेलीविजन या रेडियो के माध्यम से आसानी से देख व सुन सकते हैं। इसके साथ ही सोशल मीडिया भी हमें तरह-तरह की खबरों से अवगत कराता है। पहले लोग अपने से दूर मित्रों एवं रिश्तेदारों से बात करने के लिए टेलीग्राम एवं पत्र लेखन का सहारा लेते थे। आज फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब आदि जैसे सोशल मीडिया का प्रयोग कर बड़ी आसानी से एक-दूसरे से बातचीत कर सकते हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा अपने मित्रों रिश्तेदारों से बात कर सकते हैं। आज के समाज में मीडिया किसी न किसी रूप में जगह बनाए हुए हैं।

3. **मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ**- हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के तीन स्तंभ कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका के साथ ही साथ मीडिया को भी हमारे लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में माना जाता है। आज हमारी जनता को जागरूक करने एवं उसके लिए लागू की गई किसी भी नई योजनाओं की जानकारी मीडिया के द्वारा ही आम जन मानस तक पहुँचाती है।मीडिया के द्वारा आज समाज का हर व्यक्ति भ्रष्टाचार एवं देश में हो रहे घोटालों को उजागर करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज कोई भी व्यक्ति देश में होने वाली गलत घटना को अपने मोबाइल या कैमरे में रिकार्ड कर उसे सोशल मीडिया के माध्यम से उस घटना के दोषियों को सजा दिलाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकता है।

आधुनिकीकरण के साथ ही औद्योगिक क्षेत्र में भी मीडिया ने क्रांति ला दी है। आज मीडिया विज्ञापन का ऐसा सरल माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी व्यापारी या कम्पनी अपने उत्पादों को टेलीविजन तथा सोशल मीडिया का प्रयोग करके जनमानस को बड़ी सहजता से बता सकती है। मीडिया के द्वारा संक्रामक बीमारी के द्वारा आदि के बारे में बता कर लोगों को सचेत किया जा रहा है। आज मीडिया के द्वारा ऐसे अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जिसमें किसानों को खेती के नए-नए वैज्ञानिक तरीकों से अवगत कराया जाता है। इसका सीधा असर किसानों के फसल उत्पादन की क्षमता पर पड़ता है। इस तरह मीडिया का हमारे आज के समाज में बहुत ही बड़ा योगदान है।

4. **सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव**- परन्तु किसी भी सिक्के के दो पहलू होते हैं। किसी चीज से जितना लाभ होता है उतनी ही हानि भी होती है। मीडिया के माध्यम से समाज में अनेकों प्रकार की भ्रांतियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं। बच्चे अपना समय पढ़ाई में न लगाकर सोशल मीडिया में लगा रहे हैं। जब से लोग सोशल मीडिया का प्रयोग ज्यादा करने लगे हैं तब से लोगों में बीमारियाँ भी काफी बढ़ने लगी हैं। सोशल मीडिया के जरिए कई लोग साइबर क्राइम करते हैं। जैसे कि लोग किसी का पासवर्ड चुरा लेते हैं, उससे उनकी पर्सनल जानकारी ले लेते हैं या फिर उनके मोबाइल की फोटोस और वीडियो को चुरा लेते हैं। जिनको सोशल मीडिया की ठीक से जानकारी नहीं होती, वे दूसरे के झाँसे में आ जाते हैं, जिससे उनका सारा पैसा उनके खाते से निकाल दिया जाता है। इसमें लोगों की पर्सनल चीजें हैक करके उन्हें ब्लैकमेल भी किया जाता है। इसमें कई प्रकार की साइट ऐसी हैं कि सोशल मीडिया के जरिए भेजी जाती हैं जो लोगों को काफी लालच देने वाली होती हैं। लोगों के झाँसे में आकर उसमें फँस जाते हैं।

5. **उपसंहार**- मीडिया एक दोधारी अस्त्र है। जहाँ एक तरफ यह लोगों के विचार को एक रूप देता है। वहीं दूसरी तरफ पाठकों को आकर्षित करने के लिए सनसनी खेज मुद्दे बनाना इसका चरित्र है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि मीडिया का प्रयोग बड़ी सूझ-बूझ के साथ प्रयोग होना चाहिए यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है।

(3) **आत्मनिर्भर या स्वावलंबी**

संकेत-बिन्दु: प्रस्तावना (क) संसार में परावलंबी अर्थात् परमम दुखम् (क) आत्म-निर्भर व्यक्ति (क) स्वावलंबन से लाभ (क) उपसंहार।

1. **प्रस्तावना**-खुदी को कर बुलंद इतना, कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से ये पूछे-बता तेरी रजा क्या है? शायर की उपर्युक्त पंक्तियाँ स्वावलंबी मनुष्य के बारे में है। जिनका आशय है स्वावलंबी या आत्मनिर्भर व्यक्तियों के सामने ईश्वर को भी झुकना पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों का भाग्य लिखने से पहले ईश्वर को भी उनसे पूछना पड़ता है-'बता तेरी रजा क्या है।' परमुखापेक्षी व्यक्ति न तो स्वयं उन्नति कर सकता है और न ही अपने समाज एवं राष्ट्र के किसी काम आ सकता है। स्वावलंबन का अर्थ है-अपना सहारा आप बनना, आत्मनिर्भर बनना। परमुखापेक्षी व्यक्ति सदैव दूसरों का मुख देखता है।

2. **संसार में परावलंबी अर्थात् परमम दुखम्**- परावलंबी को हमेशा आश्रय देने वाले के अधीन बनकर रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में न तो उसका आत्मसम्मान जीवित रह पाता है और न ही आत्मविश्वास। वह

दूसरों के हाथ की कठपुतली बनकर कुंठा, त्राय, यातना, पीड़ा, अपमान और उपेक्षा का जीवन जीने पर विवश हो जाता है। इसलिए परावलंबन को घोर पाप माना गया है। स्वावलंबी व्यक्ति ही सही अर्थों में जान पाया है कि दुःख-पीड़ा क्या होते हैं और सुख-सुविधा का क्या मूल्य एवं महत्त्व, कितना आनंद और आत्म-संतोष हुआ करता है। विश्व और समाज किसे कहते हैं। अपमान की पीड़ा क्या होती है। अभाव किसी तरह से व्यक्ति को मर्माहत कर सकते हैं। परावलंबी को तो हमेशा मान-अपमान की चिंता त्याग कर, हीनता के बोध से परे रहकर, इस तरह व्यक्ति होते हुए भी व्यक्तित्वहीन बनकर जीवन गुजार देना पड़ता है। सहज, सरल मानव बनकर रहने, मानवीय सम्मान और गरिमा पाने की भूख हर मनुष्य में जन्मजात होती है।

3. **आत्मनिर्भर व्यक्ति**- आत्मनिर्भर होने का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य के पास बड़े-बड़े, ऊँचे-ऊँचे राजमहल हो, अपार संपत्ति हो, ऐसा नहीं होने पर यदि मनुष्य के पास बड़ी-बड़ी ऊँची-ऊँची गतिविध् ियों पर अपना अधिकार नहीं तो उन सबका होना न होना बेकार है। स्वतंत्र तथा इच्छानुसार कार्य करके ही मनुष्य अपने साथ-साथ, आस-पड़ोस, गली-मुहल्ले, समाज और पूरे देश का हित साधन कर पाने में सफल हो पाया है। आत्मनिर्भर व्यक्ति द्वारा किए गए परिश्रम से बहने वाली पसीने की प्रत्येक बूँद मोती के समान बहुमूल्य हुआ करती है। जिसे सच्चा सुख एवं आत्मसंतोष कहा जाता है, वह केवल आत्मनिर्भर व्यक्ति को ही प्राप्त हुआ है। स्वावलंबन की एक झलक पर कुबेर का खजाना न्योछावर किया जा सकता है।

4. **स्वावलंबन से लाभ-** स्वावलंबी व्यक्ति ही आत्मचिंतन करके अपने लोक के साथ परलोक का सुधार कर सकता है। संत कबीर कपड़ा बुनकर अपने परिवार का पालन किया करते थे। गुरुनानक देव अपने पुत्रों की नाराजगी मोल लेकर भी धर्मशाला (गुरुद्वारे) के चढ़ावे को हाथ नहीं लगाते थे। श्रीकृष्ण को गौएँ चराना, संत रैदास और दादूदयाल जूते गाँठना जैसे कार्य संकेत करने वाले हैं। निश्चय ही स्वावलंबी बनने की प्रेरणा देने वाले हैं। जो व्यक्ति स्वावलंबी नहीं होते, वे ही अपनी प्रत्येक असफलता के लिए भाग्य को दोष देते हैं। तुलसीदा सने ठीक ही कहा है-'देव-देव आलसी पुकारा'। स्वावलंबी मनुष्य सफलता या असफलता की परवाह किए बिना निरन्तर प्रयासरत रहते हैं और दृढ़ता से आगे बढ़ते जाते हैं। पथ के शूल (काँटे) उनके कदमों को रोक नहीं पाते और सफलता अंततः उन्हीं का वरण करती है। आत्मनिर्भरता के बल पर भी शिवाजी ने थोड़े से सिपाहियों के साथ औरंगजेब की विशाल सेना को नाकों चने चबवा दिए थे। एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य द्वारा उपेक्षित किए जाने पर भी धनुर्विद्या में अद्‌भुत कौशल प्राप्त किया था। नेपोलियन जैसे साधारण व्यक्ति एक महान सेनानायक बन पाया था। एक किसान तथा बढ़ई का पुत्र अब्राहम लिंकन अमेरिका का राष्ट्रपति बन पाया था। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है।

5. **उपसंहार**- आज का व्यक्ति अधिक से अधिक सुख- साधन तो चाहता है पर दूसरों को लूट-खसोट और टाँग पीछे खींचकर, अपने परिश्रम और स्वयं अपने पर विश्वास और निष्ठा रखकर नहीं। यही कारण है कि आज का व्यक्ति स्वतंत्र होकर भी परतंत्र और दुःखी है। इस स्थिति से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है और वह स्वावलंबी या आत्मनिर्भर बनना, अन्य कोई नहीं।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

(1) **समाज और कुप्रथाएँ संकेत-बिन्दु** - प्रस्तावना (क) समाज की संस्थापना (ख) समाज विरोधी तत्व एवं कुप्रथाएँ (ग) कुप्रथाएँ सामाजिक जीवन की बेडियाँ (घ) उपसंहार

(2) **प्रातःकालीन भ्रमण संकेत-बिन्दु** - प्रस्तावना (क) प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ (ख) प्राणदायिनी आॅक्सीजन की प्राप्ति (ग) प्रातःकाल प्राकृतिक सुन्दरता (घ) उपसंहार

(3) **आतंकवाद संकेत-बिन्दु** - भूमिका (क) आतंकवाद का अर्थ (ख) भारत में आतंकवाद (ग) कश्मीर में आतंकवाद (घ) आतंकवाद फैलने के कारण (ड) समाधान (च) उपसंहार उत्तर ः

(1) समाज और कुप्रथाएँ

संकेत-बिन्दु प्रस्तावना (क) समाज की संस्थापना (ख) समाज विरोधी तत्व एवं कुप्रथाएँ (ग) कुप्रथाएँ सामाजिक जीवन की बेडियाँ (घ) उपसंहार

1. **प्रस्तावना-** हम जहाँ रहते हैं, जिनके बीच रहते हैं, वह समाज है। समाज मनुष्यों से मिल-जुलकर रहने का स्थान है। व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता। आज व्यक्ति जो कुछ भी, वह समाज के कारण है। बिना समाज के व्यक्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सभ्यता, संस्कृति भाषा आदि सब समाज की देन है। समाज में फैली हुई कुरीतियाँ या कुप्रथाएँ भी समाज के विकार के कारण है।

2. **समाज की संस्थापना-** समाज की संस्थापना मनुष्य के पारस्परिक विकास के लिए हुई है। मनुष्य इस कारण ही आपसी सहयोग कर सका है और ज्ञान तथा विकास की धारा को अक्षुण्ण बनाए रख सकता है। मनुष्य के समूचे विकास का आधार समाज है। मनुष्य में सद् तथा असद् प्रवृत्तियों में संघर्ष चलता रहता है। वह असद् प्रवृत्ति वाले मनुष्य समाज के अगुआ बन जाते हैं और सद प्रवृत्ति वालों को वे तरह-तरह के उपाय व नियम-उपनियम बनाकर परेशान करने लगते हैं। वे अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए नियमों को तोड़ने लगे और मानव जाति के सामने नवीन सामाजिक व्यवस्था को पेश करने लगे, जो समाज की विसंगतियों और अंतविरोधों में संबंध रखने के कारण समाज में व्यवधान पैदा करने वाली सिद्ध हुई। इसी से कुरीतियों को जड़ पकड़ने का अवसर मिला। कुरीतियों या कुप्रथाओं को हवा देने का काम धर्म के पुरोधाओं ने शुरु किया। वे धर्म के नाम पर अंधविश्वास फैलाने लगे और परस्पर भेदभाव की दीवार खड़ी करके मानव को विरोधी बनाने में सफल हुए हैं।

3. **समाज विरोधी तत्व एवं कुप्रथाएँ-** समाज विरोधी तत्वों ने अपनी शक्ति को बढ़ावा दिया और सत्यमार्ग से व्यक्तियों को हटाने में सफलता प्राप्त की। इस तरह समाज कुरीतियों से घिरने लगा। जाति का आधार जो कर्म के अनुसार था, अब जन्म के अनुसार हो गया। कभी विवाह करना अपराध था। विधवा को उपेक्षित जीवन जीना पड़ता था। वह श्रृंगार नहीं कर सकती थी, साधारण कपड़े पहनती थी, किसी शुभ कार्य में सम्मिलित भी नहीं हो सकती थी। आज विधवा विवाह होने लगे हैं, परन्तु गाँवों में विधवाओं को आज भी उपेक्षित जीवन जीना पड़ रहा है। बाल विवाह कानूनन अपराध है।

इसी तरह श्राद्ध कर्म, मृत्यु-भोज, सती-प्रथा, घूंघट प्रथा, स्त्रियों को शिक्षित न होने देना, जादू-टोने, शकुन-अपशकुन विचार आदि अनेक ऐसी कुप्रथाएँ हैं जो समाज को निरन्तर तोड़ रही है। यह सब हमारी भयत्रस्य मनोवृत्ति का परिणाम है।

4. **कुप्रथाएँ सामाजिक जीवन की बेडियाँ-** वे विचार या कुप्रथाएँ जो जीवन और सामूहिक जीवन को आगे बढ़ाने से रोकती हैं, हमें त्याग देनी चाहिए। लेकिन विवेकशील वर्ग आज अशिक्षिता की अपेक्षा ऐसी प्रथाओं से घिरा हुआ है, वह कुप्रथाओं को पानी दे रहा है। उसका कारण है कि वह शिक्षित होने पर भी भयमुक्त नहीं हो सका है। दिन पर दिन समाज अर्थलोलुपता के चंगुल में फँसता जा रहा है।

5. **उपसंहार**- कुप्रथाओं के विरोध में जो संस्थाएँ काम कर रही हैं, वे भी प्रदर्शन से ज्यादा कुछ नहीं कर रही हैं। क्योंकि वे स्वयं कुप्रथाओं का शिकार है। उनमें सत्य को जीने का साहस नहीं है। इस दिशा में सबको एकजुट होकर अपने लिए प्रयास करना चाहिए और कुप्रथाओं का डटकर विरोध करना चाहिए जिससे इन कुप्रथाओं का अस्तित्व नगण्य हो जाए। यह सब लोगों में जागरुकता फैलाकर ही हो सकता है। यह अब चरित्र स्थापना के लिए किए गए प्रयत्नों से ही संभव होगा।

(2) प्रातःकालीन भ्रमण

संकेत-बिन्दु- प्रस्तावना (क) प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ (क) प्राणदायिनी आक्सीजन की प्राप्ति (क) प्रातःकाल प्राकृतिक सुन्दरता (क) उपसंहार

1. **प्रस्तावना-**प्रातःकाल सैर को जाओ। बिन पैसे के स्वास्थ्य बनाओ।

किसी कवि ने ठीक कहा है कि प्रातःकाल सैर करने से स्वास्थ्य सुधरता है। प्रातःकाल उठने के लिए आवश्यक है रात को शीघ्र सो जाये। Early to bed and early to rise का सिद्धान्त अपनाएँ। प्रातःकाल भ्रमण शरीर में नवचेतना व स्फूर्ति का संचार करता है। शारीरिक और मानसिक दोनों ही रूपों में यह स्वास्थ्यवर्धक है। चिकित्सा शास्त्रियों की राय है कि बीमार, वृद्ध तथा अन्य लाचार व्यक्ति यदि व्यायाम के अन्य रूपों को नहीं अपना पाते वे प्रातःकाल की सैर से अपना काम चला सकते हैं। इस सैर से बिगड़े हुए आंतरिक अवयवों को सही ढंग से कार्य करने में बहुत मदद मिलती है।

2. **प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ**- शरीर की माँसपेशियाँ प्रातःकालीन भ्रमण से कार्यरत हो जाती हैं तथा रक्त-संचार सामान्य हो जाता है। इसके फलस्वरूप मनुष्य आंतरिक रूप से अच्छे स्वास्थ्य एवं चैतन्यता का अनुभव करता है। उच्च रक्त चाप, पेट की समस्याएँ, मधुमेह आदि रोगियों को चिकित्सक खूब सैर करने की सलाह देते हैं। मधुमेह को नियंत्रित करने की तो यह रामबाण औषधि है।

3. **प्राणदायिनी आक्सीजन की प्राप्ति**- शहरों में प्रातःकालीन भ्रमण के लिए जगह-जगह हरे-भरे पेड़-पौधों से युक्त पार्क बनाए गए हैं। जहाँ पार्क की सुविधा नहीं होती है वहाँ लोग सड़कों के किनारे लगे वृक्षों के समीप से होकर टहलते हैं। गाँवों में इस प्रकार की समस्या नहीं होती है। सभी जानते हैं कि हमारे लिए आक्सीजन बहुत महत्त्वपूर्ण है। दिन के समय तो यह मोटरगाड़ियों आदि के धुएँ से प्रदूषित हो जाती है। अतः

प्रातःकाल सर्वथा उपयुक्त होती है। प्रातः भ्रमण से मनुष्य अधिक मात्रा में आक्सीजन ग्रहण करता है। इससे शरीर में उत्पन्न विकार स्वतः ही दूर हो जाते हैं।

4. **प्रातःकाल प्राकृतिक सुंदरता-** सुबह के समय प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। उगते सूरज की लालिका समस्त अंधकार को मिटा देती है। वृक्षों पर बैठी कोयल का मधुर गान सभी के मन को मोह लेता है। आकाश में स्वच्छंद विचरण करते एवं चहचहाते पक्षियों का समूह नवीनता का संदेश देता है। सुबह की मंद-मंद बहती सुगंधित हवा शरीर को नई ताजगी प्रदान करती है। सुबह के समय हरी-भरी घास पर ओस की बूँदें ऐसी प्रतीत होती है जैसे प्रकृति ने उन बूँदों के रूप में मोती बिखेर दिए हो। बूढ़े, बच्चे व युवा सभी वर्ग के लोग यहाँ दिखाई देते हैं। लोग भ्रमण के साथ उनके विषयों पर बातचीत करते हैं जिससे नई जानकारियों के साथ परस्पर मेल भी बढ़ता है। बच्चे अनेक प्रकार के खेल का आनंद उठाते हैं। प्रातःकालीन शुद्ध व सुगंधित वायु तथा विभिन्न प्रकार के खेल उनके शारीरिक व मानसिक विकास में सहायक होते हैं। कुछ लोग प्रातःभ्रमण को समय की बरबादी मानकर उसे जीवन भर टाल देते हैं। ऐसे लोग प्रकृति के कई मूल्यवान उपहारों से वंचित हो जाते हैं।

5. **उपसंहार-** इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रातःकालीन भ्रमण बच्चे, बूढ़े व युवा सभी के लिए अनिवार्य है। यह हमारे शरीर में नई स्फूर्ति, नई चेतना व नया उल्लास प्रदान करता है। सुबह की शुद्ध व सुगंधित वायु शरीर के अनेक विकारों को दूर करती हैं। प्रातःकालीन मनोरम दृश्य अत्यंत सुखद प्रतीत होता है। इस प्रकार दिन की शुरुआत मनुष्य को अधिक स्वस्थ एवं प्रसन्न रखती है। जिससे वह अपनी क्षमताओं को पूर्ण रूप से उपयोग कर सकता है।

(3) आतंकवाद संकेत-बिन्दु- भूमिका (क) आतंकवाद का अर्थ (ख) भारत में आतंकवाद (ग) कश्मीर में आतंकवाद (घ) आतंकवाद फैलने के कारण (ड) समाधान (क) उपसंहार

1. **भूमिका-'**जहाँ भी जाता हूँ वीरान नजर आता है, खून में डूबा हर मैदान नजर आता है। कैसा है वक्त कि दिन के उजले में भी, नहीं इंसान को इंसान नजर आता है।' कवि की उपर्युक्त पंक्तियाँ समाज में बढ़ते आतंकवाद की ओर संकेत करती हैं। आतंकवाद एक अत्यंत भयावह समस्या है जिससे पूरा विश्व जूझ रहा है।

2. **आतंकवाद का अर्थ**- भय या दहशत। ऐसी अमानवीय तथा भय उत्पन्न करने वाली ऐसी गतिविधि जिसका उद्देश्य निजी स्वार्थपूर्ति या अपना दबदबा बनाए रखने के उद्देश्य से या बदला लेने की भावना से किया गया काम हो-आतंकवाद कहा जाता है। आज विश्व में जिस प्रकार आतंकवाद फल-फूल रहा है, उसके पीछे सांप्रदायिकता धर्मांधता एवं कट्टरता एक प्रमुख कारण है। विश्व में कुछ ऐसे संगठन हैं, जो युवाओं की दिशा भ्रमित करके, उन्हें धर्म, राजनीति या सांप्रदायिकता के नाम पर गुमराह करके उनके हृदय में क्रूरता, कट्टरता तथा घृणा का जहर घोलकर बेगुनाहों का खून बहाने के लिए प्रेरित करने में सफल हो जाते हैं।

3. **भारत में आतंकवाद-** भारत शांतिप्रिय देश है। यहाँ बुद्ध, महावीर एवं गाँधी जैसे अहिंसावादी महापुरुष पैदा हुए हैं। आतंक की प्रवृत्ति भारत की भूमि से मेल नहीं खाती परन्तु दुर्भाग्य पिछले दो दशकों से भारत आतंकवाद की लपेट में रहा है।

4. **कश्मीर में आतंकवाद-** कश्मीर का आतंकवाद आज नासूर बन गया। वहाँ के बच्चे स्कूल नहीं जा सकते। घर में बुजुर्ग एवं महिलाएँ भी सुरक्षित नहीं। आतंकवादी कभी मुम्बई में हमले करते हैं तो कभी कोलकाता में बम-विस्फोट करते हैं, कभी गुजरात के अक्षरधाम मंदिर में, तो कभी कश्मीर में मस्जिद में खून खराबा किया करते हैं। 11 जुलाई, 2006 को कश्मीर एवं मुम्बई में 13 धमाकों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में आतंकवाद अपनी जड़ें जमा चुका है।

ओसामा बिन लादेन ने अफगानिस्तान की भूमि पर रहकर अमेरिका के तीन टावरों को पलभर में भूमिसात कर दिया। अमेरिका को भी उसे पकड़ने में दस साल से ज्यादा लगे। आज भी उस आतंकी का नेटवर्क पूरे विश्व में फैला हुआ है।

5. **आतंकवाद फैलने के कारण-** आतंकवाद फैलने का मुख्य कारण है- धार्मिक कट्टरता। ओसामा बिन लादेन, तालिबान, सीरिया, पाकिस्तान, फिलीस्तीन इन सबके पीछे साम्प्रदायिक शक्तियाँ काम कर रही हैं। ये आतंकवादी आधुनिक तकनीक से लैस विध्वंस की ढेरों सामग्री रखते हैं। भारत में आतंकवाद फैलने का एक अन्य कारण है-क्षेत्रवाद और राजनीतिक स्वार्थ। वोट के भूखे राजनेता जानबूझकर आतंकवाद को आश्रय देते हैं।

6. **समाधान-** आतंकवाद को मिटाने के लिए दृढ़ संकल्प तथा कठोर कार्यवाही आवश्यक है। भारत को आतंकवाद मिटाने के लिए आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को समूल नष्ट करना होगा। जिस दिन अमेरिका की तरह पूरा विश्व दृढ़ संकल्प कर लेगा और आतंकवाद को करो या मरो का प्रश्न बना लें और विश्व के बड़े-बड़े देश भारत का सहयोग करें तो आतंकवाद को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

7. **उपसंहार-** आतंकवाद जिस तरह से पूरे संसार में अपनी जड़े फैला रहा है, यह गंभीर चिंता का विषय है। अगर इस पर जल्द काबू नहीं किया गया तो, आने वाली पीढ़ी के लिए यह बड़ा खतरा पैदा कर सकता है। इसलिए आतंकवाद की समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए हम सभी को एकजुट होकर प्रयास करने की जरूरत है।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

(1) **अनेकता में एकता- हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता**

संकेत-बिन्दु- सांस्कृतिक का अर्थ (क) भारतीय संस्कृति में विविधता (ख) अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ (ग) भारत में अनेक धार्मिक मत (घ) भारत में एकरूपता (ड) उपसंहार।

(2) **बाल श्रम संकेत-बिन्दु**- भूमिका- बालश्रम क्या है (क) बालश्रम के कारण (ख) बालश्रम के परिणाम (ग) बालश्रम रोकने के उपाय (घ) उपसंहार।

(3) **यातायात के नियम संकेत-बिन्दु**- प्रस्तावना (क) चैराहों पर बत्ती तथा अन्य व्यवस्था (ख) वाहनों को निर्धारित गति में चलाना तथा अन्य सावधानियां (ग) उपसंहार। उत्तर

(1) **अनेकता में एकता**-अनेकता में एकताः हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता संकेत- बिन्दु : सांस्कृतिक का अर्थ (क) भारतीय संस्कृति में विविधता (ख) अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ (ग) भारत में अनेक धार्मिक मत (घ) भारत में एकरूपता (ड) उपसंहार ।

1. **सांस्कृतिक का अर्थ**- यूनान मिस्त्र रोमां सब मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाकह नामो निशां हमारा। इस कथन में देशभक्ति नहीं है बल्कि हमारी सांस्कृतिक परम्परा का यथार्थ है, जो युगों-युगों से स्वच्छ अविरल धारा के समान प्रवाहमान रही है और आगे भी रहेगी। विश्व में भारत ही ऐसा देश है जिसकी संस्कृति समृद्ध कहलाती है। लेकिन आचार-विचार तो उसका बाह्य रूप है भीतरी रूप से मानव का शेष प्रकृति के साथ तादात्म्य है। संस्कृति का समानार्थक शब्द 'कल्चर' भी है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के कल्टस और कल्टुरा शब्दों से हुई जिसका अर्थ है- कृषि करना।

2. **भारतीय संस्कृति में विविधता**- संस्कृति को परिभाषित करते हुए डाॅ. राधाकृष्णन ने लिखा है- संस्कृति विवेक बुद्धि का, जीवन को भली प्रकार जान लेने का नाम है। अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंश बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ-साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ जाते हैं। संस्कृति हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए हैं तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभव का हाथ है। संस्कृति हमारा पीछा जन्म-जन्मांतरों तक करती है। संस्कृति वैविध्यपूर्ण है। भाषा, धार्मिक विचार, जाति, बहुजातीय समाज सभी में विविधता है, किन्तु इनमें प्रारम्भ से ही समन्यात्मकता भी है। भारत में प्राचीनकाल से ही विदेशी-आर्य, यवन, यूनानी, शक, हूण, कुषाण, अरबवासी, तुर्क, मंगोल, अंग्रेज, फ्रांसीसी, डच आदि आए लेकिन सभी आक्रमणकारी अन्ततः भारतीय बन गए।

3. **अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ**- अनेक जातियाँ एवं बोलियाँ- भारत में अनेक जातियों एव बोलियाँ है। भारत को प्राय भाषा का अजायबघर कहा जाता है। यहाँ लगभग 180 बोलियों बोली जाती है। इन सबके बावजूद भारतवासी एक है भारत की समन्वय की भावना एकरूपता की भावना पर आधारित है। अनेकता में एकता का अनुसंधान हमने प्रारम्भ किया है। भारत की एकता वह सम्पूर्णता है जो माँ की तरह सतत कामदुधा है। नदी की तरह सतत प्रवाहमान और प्रगतिशील है। उससे जुड़कर ही हम छोटे-बड़े की भावना को भूलकर अपने को देवता से भी अधिक भाग्यशाली मानते हैं।

4. **भारत में अनेक धार्मिक मत**- भारतीय समाज में सदा से अनेक धार्मिक मत-मतान्तर साथ-साथ विकसित होते रहे हैं। भारत में हिन्दू, बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव आदि अनेक मत-मतान्तर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की परम्परा में विविधता के मध्य एकता की स्थापना करने की क्षमता है। वेदों में कहा गया है-'वसुधैव कुटम्बकम'। यह अनेकता में एकता विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों में परिलक्षित होती है।

5. **भारत में एकरूपता**- भारतीय समाज में एकरूपता का पुट है। यद्यपि भारत में हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई, यहूदी, जैन और बौद्ध आदि सामाजिक इकाइयाँ हैं, जिनके अपने-अपने सामाजिक आचार-विचार, जीवन-दर्शन, धार्मिक विश्वास, परम्परा और रीति-रिवाज हैं, फिर भी उनमें पारस्परिक संबंध उदार तथा सहिष्णु हैं। सभी धर्म के लोग अपने-अपने त्यौहार मनाने के लिए स्वतंत्र हैं।

6. **उपसंहार**- भारतीय संस्कृति अध्यात्मवादी है अतः उसका स्रोत कभी सूख नहीं सकता। वह निरंतर अलख जगाती रहती है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आनंद से जोड़ती रहती है। उसकी चेष्टा मानव जीवन को नव से नव ज्योति, बल, संगीत, स्नेह उल्लास और उत्साह से भरने की है। यही इस सस्कृति की सबसे सशक्त विशेषता है। वस्तुत पर्व, उत्सव और त्यौहार ही इस संस्कृति की अन्त अभिव्यक्ति है।

(2) **बाल श्रम**

संकेत बिन्दु: भूमिका - बालश्रम क्या है (क) बालश्रम के कारण (ख) बालश्रम के परिणाम (ग) बालश्रम रोकने के उपाय (घ) उपसंहार ।

1. **भूमिका** - बालश्रम क्या है- बालश्रम बच्चों द्वारा अपने बाल्यकाल में किया गया श्रम या काम है जिसके बदले उन्हें मजदूरी दी जाती है। बालश्रम भारत के साथ सभी देशों में गैर कानूनी है। बालश्रम एक अभिशाप है जिसने अपना जाल पूरे देश में बिछा दिया है कि प्रशासन की लाखों कोशिशों के बाद भी यह अपना प्रचंड रूप धारण करने में सफल रहा है। यह हमारे समाज के लिए कलंक बन चुका है। किसी भी बच्चे के बाल्यकाल के दौरान पैसों या अन्य किसी भी लोभ के बदले में करवाये गये काम को बालश्रम कहा जाता है। इस प्रकार की मजदूरी पर अधिकतर पैसों या जरूरतों के बदले काम किया जाता है। बालश्रम पूर्णरूप से गैर कानूनी है। इस प्रकार की मजदूरी को समाज में हर वर्ग द्वारा निंदित भी किया जाता है। लेकिन इस तरह का अभ्यास हम समाज वाले ही करते हैं। जब बच्चों को उनके परिवार वालों से दूर रखकर उन्हें गुलामों की तरह पेश किया जाता है। अगर सामान्य शब्दों में समझे तो जो बच्चे 14 वर्ष से कम आयु के होते हैं उनसे उनका बचपन, खेलकूद शिक्षा का अधिकार छीनकर उन्हें काम में लगा कर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से प्रताड़ित कर कम रुपयों में काम कराकर शोषण करके उनके बचपन को श्रमिक रूप में बदल देना ही बालश्रम कहलाता है।

2. **बालश्रम के कारण-** आज के समय में बालश्रम पूरे देश में फैल चुका है। हमारे समाज में सरकार द्वारा चलाए गए नियमों के बाद भी गंदी आदत समाज से छूटती ही नहीं है। भारत की ज्यादातर आबादी गरीबी से पीड़ित है। कुछ परिवारों के लिए भरपेट खाना खाना भी एक सपना-सा लगता है। गरीबी के कारण बहुत से लोग अपने को भी खो चुके हैं। गरीबी की वजह से गरीब माता-पिता अपने बच्चों को घरों और दुकानों में काम करने भेजते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसे निर्णय बच्चों की शारीरिक और मानसिक अवस्था को झकझोरकर रख देते हैं। दुकानदार और छोटे व्यापारी बच्चों से काम तो बड़ों जितना करवाते हैं लेकिन उन्हें कीमत आधी देते हैं। क्योंकि बच्चे चालाक नहीं होते हैं इसलिए उन्हें ज्यादा चोरी और ठग का अवसर नहीं मिलता है। व्यापार में उत्पादन लागत कम लगने की वजह से भी कुछ व्यापारी बच्चों की जिन्दगी बर्बाद

कर देते हैं। हमारे देश मं आजादी के बाद भी बहुत से इलाके ऐसे हैं जहाँ के बच्चे आज तक शिक्षा जैसे मौलिक अधिकार से वंचित हैं। हमारे देश में हजारों गाँव हैं, जहाँ पर पढ़ाई की कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है। लेकिन है भी तो कोसों दूर है। इस तरह का प्रशासनिक ढीलापन भी बालश्रम के लिए जिम्मेदार है। बच्चों के लिए किफायती अच्छे स्कूलों की कमी से बच्चों को अनपढ़ और बेबस रहना पड़ता है। बहुत से परिवारों का मानना है कि उनके जीवन में कभी अच्छी जिन्दगी लिखी ही नहीं है। वर्षों से चली आ रही मजदूरी की परम्परा ही उनके जीवन व्यतीत करने का एकमात्र स्रोत होता है।

3. **बालश्रम के परिणाम**- एक बच्चे को 1000-1500 रुपए देकर मजदूरी करवाने से कई प्रकार की हानि होती है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चा अशिक्षित रह जाता है। देश का आने वाला कल, अंधकार की ओर जाने लगता है। इसके साथ ही बेरोजगारी और गरीबी और अधिक बढ़ने लगती है। जिस उम्र में बच्चों को सही शिक्षा मिलनी चाहिए, खेल-कूद के माध्यम से अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहिए, उस उम्र में बच्चों से काम करवाने से बच्चों का शारीरिक मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास रुक जाता है। शिक्षा के मूल अधिकार से वंचित रखना कानूनन अपराध है। बच्चों से कारखाने में काम करवाना अपराध है।

4. **बालश्रम रोकने के उपाय**- बालश्रम का अंत करने के लिए हमें सबसे पहले अपने घरों और दफ्तरों में किसी भी बच्चे को काम पर नहीं रखना चाहिए। बालश्रम को खत्म करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए। बालश्रम को रोकने के लिए कड़े-से-कड़े कानून बनाए जाएँ और उन पर सख्ती से कार्यवाही की जाए। कोई जुर्माना नहीं, सीधे सजा का प्रावधान होना चाहिए। आखिरकार लोगों को किसी बच्चे की जिन्दगी बरबाद करने का कोई अधिकार नहीं है। सरकार ने गरीब बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा, खाना और कुछ स्कूलों में दवाइयाँ जैसी सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। अगर हमें किसी भी बालश्रम का पता चले तो उसके बारे में पहले बच्चे के माँ-बाप से बात करें और उन्हें समझाए कि इससे बच्चे का भविष्य खराब होगा। और यह कानूनी अपराध है।

5. **उपसंहार-** कैलाश सत्यार्थी सामाजिक कार्यकत्र्ता और 'बचपन बचाओं आन्दोलन' के संस्थापक अध्यक्ष हैं। इस समय वे 'ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर' के अध्यक्ष है। बचपन बचाओ आन्दोलन में लगभग 70,000 स्वयं सेवक हैं, जो लगातार मासूमों के जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए कार्यरत हैं। उन्होंने अब तक 80 हजार से अधिक बच्चों की जिन्दगी बदली है। पिछले दो दशकों से वे बालश्रम के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं। उन्होंने 'बचपन बचाओ आन्दोलन' की स्थापना 1983 में की। उनके अनुसार बाल मजदूरी महज एक बीमारी नहीं, बल्कि कई बीमारियों की जड़ है। इसके कारण कई जिंदगियाँ तबाह होती हैं। बालश्रम को रोकने के लिए सरकार ही नहीं वरन् हमारा भी कत्र्तव्य है कि इस योजना में सरकार का पूरा साथ दें। बालश्रम सामाजिक है इसे सभी के द्वारा जल्दी से जल्दी खत्म करने की जरूरत है।

(3) **यातायात के नियम** संकेत-बिन्दु- प्रस्तावना (क) चैराहों पर बत्ती तथा अन्य व्यवस्था (ख) वाहनों को निर्धारित गति में चलाना तथा अन्य सावधानियाँ (ग) उपसंहार।

1. **प्रस्तावना-** हर व्यक्ति अपने जीवन में कहीं भी आने-जाने के लिये सड़क का प्रयोग करता है। हर रोज सड़क हादसों के भी बहुत-से किस्से सुनने को मिलते हैं। ज्यादातर दुर्घटना लोगों की लापरवाही के कारण होती है, जल्दी पहुँचने के चक्कर में और नशा करके वाहन चलाने वाले से उसका जीवन छीन सकती हैं। सरकार ने लोगों की सुरक्षा और सड़क दुर्घटना को कम करने के लिए यातायात के बहुत से नियम बनाए हैं जिनका पालन करना हमारा कत्र्तव्य है।

2. **चौराहों पर बत्ती तथा अन्य व्यवस्था**- सड़क पर पड़ने वाले चैराहों पर अलग-अलग रंग की बत्ती लगाई गई हैं। सबसे ऊपर लाल बत्ती जिसका अर्थ है-रुकना। पीली बत्ती का अर्थ है- चलने के लिए तैयार होना और हरी बत्ती का अर्थ है-चलना। साइकिल और पदयात्रियों के लिए अलग से रास्ता बनाया गया है। एक तरफ सड़कों पर हमें एक पंक्ति में चलना चाहिए क्योंकि अगर हम पंक्ति तोड़ेंगे तो आने जाने में दिक्कत होगी और ज्यादा देर लगेगी। कभी दूसरों से आगे निकलने की होड़ नहीं रखनी चाहिए क्योंकि दुर्घटना से देर भली। यू टर्न लेते समय अपने से पीछे चलने वाले वाहन चालक को हाथ से इशारा कर देना चाहिए। कभी भी बिना पार्किंग के गाड़ी न खड़ी करें चाहे दो मिनट के लिए क्यों न खड़ा करना हो।

3. **वाहनों को निर्धारित गति में चलाना तथा अन्य सावधानियाँ**- वाहन को निर्धारित गति सीमा के अन्दर ही चलाना चाहिए। गाड़ी में सीट बैल्ट का प्रयोग अन्य अनिवार्य है। जगह-जगह पर दिशा दर्शाने वाले चिन्ह बने हुए हैं हमें उनका ध्यान रखना चाहिए। सही दिशा में वाहन चलाना चाहिए। स्कूल कॉलेज आदि के सामने वाहन की गति कम करनी चाहिए। लगातार लंबे समय तक हॉर्न का प्रयोग नहीं करना चाहिए और अब तो सरकार ने हॉर्न पर प्रतिबंध लगा दिया है। मुड़ने से पहले लाईट जलाकर इशारा कर देना चाहिए। माँ-बाप को चाहिए कि वह अपने बच्चों को बचपन से ही यातायात के नियमों के बारे में बताएँ। स्कूल में भी इस विषय पर पढ़ाया जाना चाहिए और परीक्षा भी होनी चाहिए। बिना लाइसेंस के किसी भी व्यक्ति को वाहन नहीं चलाना चाहिए और बार-बार गलती करने वाले का लाइसेंस रद्द करना चाहिए। यह सभी नियम सुरक्षा के लिए हैं और हमें इन्हें जिम्मेदारी से अपनाना चाहिए।

4. **उपसंहार**- मनुष्य को सुरक्षित रहने के लिए सड़क के नियम अपनाने चाहिए जिससे मनुष्य सुरक्षित रह सके। वह यातायात के नियमों का पालन करें। स्वयं को सुरक्षित रखकर दूसरों को भी सुरक्षित रख सकें क्योंकि जीवन अनमोल हैं।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

(1) **साक्षरता क्यों आवश्यक है?**

संकेत-बिन्दु : प्रस्तावना (क) साक्षरता का अर्थ (ख) साक्षरता के अभाव में हानि (ग) साक्षरता के लाभ (घ) उपसंहार।

(2) **भ्रष्टाचार या भारत में भ्रष्टाचार**

संकेत-बिन्दु: प्रस्तावना (क) भ्रष्टाचार का अर्थ (क) भ्रष्टाचार के मूल में शासन तंत्र (ख) भ्रष्टाचार की क्या बात करें (ग) भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय (घ) उपसंहार

(3) **स्वच्छता या 'स्वच्छ भारत अभियान'**

संकेत-बिन्दु: प्रस्तावना (क) स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत (ख) स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य (ग) स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय (घ) उपसंहार उत्तर ः

(1) **साक्षरता क्यों आवश्यक है?**

संकेत-बिन्दु : प्रस्तावना (क) साक्षरता का अर्थ (ख) साक्षरता के अभाव में हानि (ग) साक्षरता के लाभ (घ) उपसंहार।

1. **प्रस्तावना-** आज शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। पूर्ण शिक्षा न भी सही, क्योंकि महंगी, और विषम परिस्थितियों वाले युग में वह सभी के लिए शायद संभव भी नहीं, पर कम से कम साक्षर तो सभी हो ही सकते हैं। अर्थात् अक्षर-ज्ञान पाकर अपना काम तो सभी चला ही सकते हैं। इतना पढ़ना-लिखना तो हर आदमी के लिए बहुत जरूरी हो गया है कि व्यक्ति अपने पत्र आदि स्वयं पढ़-लिख सके। कहीं अंगूठा लगाने से पहले यह जान सके कि यह सब क्यों और किसलिए कर रहा है और उसके भविष्य

के लिए वह उचित है या अनुचित जैसी सामान्य जानकारियों के लिए साक्षर होना प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत आवश्यक है। साक्षर व्यक्ति अपने आपको चुस्त-चालाक और धोखेबाज व्यक्तियों से बचा सकता है। इन्हीं बुनियादी तथ्यों के आलोक में आज सरकारी-गैर सरकारी अनेक स्तरों पर साक्षरता का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। शिक्षा सबका अधिकार है।

2. **साक्षरता का अर्थ-** 'साक्षरता' शब्द का सामान्य प्रचलित अर्थ क्या है, यह जानकर भी इसकी आवश्यकता पर विचार किया जा सकता है। 'साक्षरता' का सामान्य अर्थ है 'अक्षर ज्ञान' अर्थात् विशेष ज्ञान प्राप्त न होने पर भी कम से कम इतना ज्ञान तो हर व्यक्ति को रखना ही चाहिए कि वह किसी एक या अधिक भाषाओं के अक्षरों का ज्ञान अच्छी तरह रखता हो। उन अक्षरों को जोड़कर अपना नाम आदि पढ़-लिख सकता हो। 'साक्षरता' शब्द का अर्थ मात्र इतना ही है और इसी भावना से उसका प्रचार-प्रसार भी हो रहा है। निरक्षर व्यक्ति किसी महाजन से लेता तो मात्र 500 रु. है पर अँगूठा 5000 हजार पर लगवा लिया जाता है। जब इतनी रकम चुका पाना संभव नहीं होता तब पता चलता है कि वास्तविकता क्या है? उसके साथ कितना बड़ा धोखा हुआ है।

3. **सारक्षता के अभाव में हानि-** कई बार ऐसा भी हुआ है कि जमींदारों महाजनों ने लगान या कुछ कर्ज के बदले में किसी का खेत या घर तक गिरवी रखकर उस पर अंगूठा लगवा लिया। फिर धीरे-धीरे या तो उसको परिवार समेत बंधुआ मजदूर बन जाना पड़ा, या फिर सब छोड़-छाड़ पर चुपचाप भाग जाना पड़ा। इस प्रकार साक्षर न होने से न जाने कितने प्रकार के परिणाम बेचारे निरक्षर व्यक्ति भोग चुके हैं। साक्षरता उस प्रकार के दुष्परिणामों से बचने का एक मात्र अच्छा और उचित उपाय है।

4. **साक्षरता के लाभ-** साक्षर व्यक्ति अपनी चिट्ठी-पत्री तो स्वयं लिख-पढ़ ही सकता है, मनीआॅर्डर फार्म भी खुद भर सकता है। आजकल कई प्रकार के फार्म भी भरते रहना पड़ता है। वे सब भी भर कर अपने पैसे बचा सकता है। मान लो तकनीकी कारणों से कोई फाॅर्म खुद नहीं भर सकता, तो कम-से-कम यह तो जान ही सकता है कि जिससे भरवाया जा रहा है, वह सब-कुछ उसकी इच्छानुसार और ठीक ही भर रहा है या नहीं। आजकल कई चीजें पैकेट में बिकती हैं। उन पर कीमत, पैकेट बनाने और वस्तु के सुरक्षित रहने की तारीख आदि उस पर लिखी होती हैं। दवाइयों की पैकिंग पर भी यह अब लिखा रहता

है। साक्षर व्यक्ति खरीदते समय यह सब देखकर खरीद सकता है। निरक्षर को कई बार तारीख के बाद की वस्तु या दवा थमा दी जाती है। उसके खाने से अच्छे भले आदमी की जान भी जा सकती है। मरीज ऐसी दवा या टीका लगवाकर मर सकता है। साक्षर को ऐसा माल या दवा नहीं दी जा सकती है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि साक्षर होने के लाभ-ही-लाभ हैं। जब व्यक्ति इस प्रकार के लाभ पा लेता है तो फिर वह अपने बच्चों को अनपढ़ या निरक्षर नहीं रहने देता। स्वयं कष्ट उठा कर चाहेगा कि उसके बच्चे पढ़-लिख जाएँ। निरक्षर व्यक्तियों के साथ कई बार ऐसा हुआ है कि दूसरे व्यक्ति ने बताए गए पते की बजाय अपने घर या किसी परिचित का पता लिख दिया हो। इस प्रकार मनीआॅर्डर भेजने वाले व्यक्ति ने तो भेज दिया पर पाने वाले को नहीं मिला, हो गई न गड़बड़। ऐसी गड़बड़ियों पर नजर रखकर अपने अन्य साथियों को बचाकर एक महत्वपूर्ण समाज-सेवा का कार्य कर सकता है।

5. **उपसंहार-** इस प्रकार आज के कम्प्यूटरीकृत युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए पहले अच्छी-से-अच्छी शिक्षा पाकर चैकन्ना-चुस्त और जागरूक रहने की आवश्यकता है। यदि ऐसा संभव न हो सके, तो कम-से-कम अपना और साथियों का हित साधने के लिए साक्षर होना परम आवश्यक है। इसके लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं का लाभ उठाकर हम निरक्षर को यथासम्भव शीघ्र साक्षर बनकर स्वतंत्र राष्ट्र का स्वतंत्र-जागरूक नागरिक प्रमाणिक करने का प्रयास करना चाहिए।

(2) **भ्रष्टाचार या भारत में भ्रष्टाचार**

संकेत-बिन्दु : प्रस्तावना (क) भ्रष्टाचार का अर्थ (ख) भ्रष्टाचार के मूल में शासन तंत्र (क) भ्रष्टाचार की क्या बात करें (क) भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय (क) उपसंहार

1. **प्रस्तावना-** आधुनिक युग को भ्रष्टाचार का युग कहा जाए, तो अत्युक्ति न होगी। आज भ्रष्टाचार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में फैल चुका है। इसकी जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि समाज का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रह पाया है।

2. **भ्रष्टाचार का अर्थ**- भ्रष्टाचार दो शब्दों के मेल से बना हुआ है। भ्रष्ट और आचार अर्थात ऐसा आचार जो भ्रष्ट हो, जो समाज के लिए हानिप्रद हो। भ्रष्टाचार के मूल में मानव का स्वार्थ तथा लोभ प्रवृत्ति है। आज प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक कमाकर सभी प्रकार के भौतिक सुखों का आनंद भोगना चाहता है। धन की लालसा भ्रष्ट आचरण करने को मजबूर कर देती है। वह उचित अनुचित की परवाह किए बिना मन की लालसा उसके विवेक को कुंठित कर देती है।

कबीर ने ठीक कहा है-

"मन सागर मनसा लहरि बूड़े बहे अनेक, कहे कबीर ने बाचि है, जिनके ह्रदय विवेक।"

मानव का मन अत्यंत चंचल होता है जब वह उसे लोभ और लालच की जंजीरों में जकड लेता है तो मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है तथा उसे प्रत्येक बुरा कार्य भी अच्छा लगने लगता है। वह सामाजिक नियमों को तोड़कर, कानून का उल्लंघन करके केवल अपने स्वार्थ के लिए अनैतिक कर्मों की ओर प्रवृत्त हो जाता है। मानव-निर्माता नीतियों नियमों का उल्लंघन करना ही भ्रष्टाचार है।

3. **भ्रष्टाचार के मूल में शासन-तंत्र**- भ्रष्टाचार के मूल में शासनतंत्र बहुत हद तक उत्तरदायी है। ऊपर से नीचे तक सभी भ्रष्टाचारी हों तो भला कोई ईमानदार कैसे हो सकता है। आज भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हैं कि कोई भी अपराधी रिश्वत देकर छूट जाता है तथा निर्दोष को सजा भी हो सकती है। लोगों में न तो कानून का भय है और न ही सामाजिक दायित्व की भावना। देश के बड़े-से-बड़े नेता ही भ्रष्टाचार और घोटालों में लिप्त हों तो अन्य लोगों की क्या बात करें। विश्व के दूसरे देशों में ऐसी स्थिति नहीं है। वहाँ के लोग भ्रष्टाचारी नेता को सहन नहीं कर पाते। अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को एक घोटाले के कारण ही हार का सामना करना पड़ा था। भारत की इस स्थिति को देखकर हमें एक

शायर का शेर याद आता है। "बरबाद चमन को करने को, बस एक ही उल्लू काफी था। हर शाख पे उल्लू बैठा था, अंजामें गुलिस्तां क्या होगा?"

भारत के कितने शीर्ष कोटि के नेता भ्रष्टाचार में लिप्त पाए गए। उनके बैंक खाते विदेशों में हैं। विदेशों में उन्होंने प्रोपर्टी बना ली है तथा भारत में भी बेनामी संपत्ति बना लीं। जब पकड़े गए तो विदेश भाग गए। कहते हैं न कि कभी तो कानून की गिरफ्त में आएँगे। जब उनके यहाँ सी.बी. आई के छापे पड़ते हैं तो उनके साथ के भ्रष्टाचारी नेता उनके बचाव में सफाई देने लगते हैं। सरकार को सत्ता के मद में चूर बताते हैं। अरे! कोई उनसे पूछे कि जब उन्होंने घोटाले किए थे तब वे भी वो सत्ता में महत्वपूर्ण पदों

पर आसीन थे।

4. **भ्रष्टाचार की क्या बात करें**- बाजार में सिंथेटिक दूध बेचा जा रहा है, नकली दवाओं की भरमार है, फलों और सब्जियों को भी रासायनिक पदार्थों द्वारा आकर्षण बनाकर बेचा जा रहा है, चाहे लोगों की जानें क्यों न चली जाएँ। तस्करी का सामान खुले आम बिकता है। अनेक बार उच्च अधिकारियों के संरक्षण में ही भ्रष्टाचार पनपता है। उनकी जेबें भरने के बाद किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं होती। किसी को सजा नहीं होती।

'जिसकी लाठी उसकी भैंस' तथा 'बाप बड़ा न भइया सबसे बड़ा रुपया' वाली कहावतें चरितार्थ हो रही हैं।

5. **भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय-** भ्रष्टाचार को किस प्रकार दूर किया जाए यह गंभीर प्रश्न है। इसके लिए स्वच्छ प्रशासन तथा नियमों का कड़ाई से पालन हो। यदि 100-200 भ्रष्टाचारियों को कड़ी सजा मिल जाए, उनकी सारी संपत्ति चाहे वह चल हो अथवा अचल, उन्हें आजीवन कारावास हो जाए तभी शायद अन्य

भ्रष्टाचारियों में भय व्याप्त होगा। इस नासूर बीमारी ने तो देश की जड़ें खोखली कर दी हैं। भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए युवा पीढ़ी को आगे आना होगा और एक भ्रष्टाचार मुक्त समाज का निर्माण करने के लिए कृत संकल्प होना पड़ेगा।

6. **उपसंहार-** भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। भ्रष्टाचार से जुड़े लोग अपने स्वार्थ में अंधे होकर राष्ट्र का नाम बदनाम कर रहे हैं। अतः यह बेहद ही आवश्यक है कि हम भ्रष्टाचार के इस जहरीले सांप को कुचल डालें। साथ ही सरकार को भी भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे। जिससे हम एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत के सपने को सच कर सकें।

(3) **स्वच्छता**

या

'स्वच्छ भारत अभियान' देश की सफाई एकमात्र सफाई कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है, क्या इसमें नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है हमें इस मानसिकता को बदलना होगा-नरेंन्द्र मोदी।

संकेत-बिन्दु प्रस्तावना (क) स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत (क) स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य (क) स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय (क) उपसंहार

1. **प्रस्तावना-** स्वच्छता न केवल हमारे घर, सड़क तक के लिए ही जरूरी नहीं होती है। यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है। इससे न केवल हमारा घर-आँगन ही स्वच्छ रहेगा बल्कि पूरा देश ही स्वच्छ रहेगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना स्वच्छ भारत अभियान जो कि हमारे देश के प्रत्येक गाँव और शहर में प्रारम्भ की गई है, जो देश के प्रत्येक गली गाँव की प्रत्येक सड़कों से लेकर शौचालय का निर्माण कराना और देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना ही इस अभियान का उद्देश्य है।

2. **स्वच्छ भारत** अभियान की शुरुआत- भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी की जयंती पर 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। माननीय मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की 145 वीं जयंती के अवसर पर इस अभियान की शुरुआत की, स्वच्छ भारत अभियान के तहत 2 अक्टूबर 2014 को उन्होंने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादियों से इस अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। स्वच्छता को लेकर भारत की छवि बदलने के लिए श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को एक मुहिम से जोड़ने के लिए जन-आंदोलन बनाकर इसकी शुरुआत की।

3. **स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य-**

I. खुले में शौच बंद करवाना जिसके कारण हर साल हजारों बच्चों की मौत हो जाती है।
II. लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत, सामूहिक शौचालयों का निर्माण करवाना जिसमें 1 लाख 34 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे।
III. लोगों की मानसिकता को बदलना उचित स्वच्छता का उपयोग करके।

IV. शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देना और सार्वजनिक जागरुकता को शुरु करना।
V. गाँवों को साफ रखना।
VI. 2019 तक सभी घरों में पानी की पूर्ति सुनिश्चित करके गाँवों में पाइपलाइन लगवाना जिससे स्वच्छता बनी रहे।
VII. ग्राम पंचायत के माध्यम से ठोस और तरल अपशिष्ट की अच्छी प्रबन्धन व्यवस्था सुनिश्चित करना।
VIII. सड़के फुटपाथ और बस्तियाँ साफ रखना।
IX. साफ सफाई के जरिए सभी में स्वच्छता के प्रति जागरुकता पैदा करना।

4. **स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय**-

I. शहरी विकास मंत्रालय,
II. राज्य सरकार,
III. ग्रामीण विकास मंत्रालय,
IV. गैर सरकारी संगठन,
V. पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय,
VI. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम व निगम,

इस प्रकार स्वच्छता अभियान में इन मंत्रालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

5. **उपसंहार-** जो परिवर्तन आप युग में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप पर लागू करें- महात्मा गाँधी। आज स्वच्छता की जागरुकता मशाल सभी में पैदा होनी चाहिए। इसके तहत स्कूलों में भी स्वच्छ भारत अभियान के कार्यक्रम होने लगे हैं। स्वच्छता से न केवल हमारा तन साफ रहता है। हमारा मन भी साफ रहता है।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए

(1) **प्रदूषण की समस्या**

संकेत-बिन्दुः प्रदूषण के कारण (क) प्रदूषण की व्यापकता (क) प्रदूषण वृद्धि के कारण (ख) प्रदूषण के दुष्प्रभाव (ग) प्रदूषण से बचने के उपाय (घ) निष्कर्ष।

(2) **आपदा प्रबंधन**

संकेत-बिन्दु प्राकृतिक आपदाएँ (क) दोषी कौन (ख) सरकार की जिम्मेदारी (ग) नागरिकों के कत्र्तव्य (घ) निष्कर्ष।

(3) **संगति का प्रभाव**

संकेत-बिन्दुः भूमिका (क) संगति के प्रकार (क) संगति का प्रभाव (ख) उदाहरण (घ) उपाय (ड) निष्कर्ष।
उत्तर

(1) **प्रदूषण की समस्या**

संकेत-बिन्दुः प्रदूषण के कारण (क) प्रदूषण की व्यापकता (ख) प्रदूषण वृद्धि के कारण (ग) प्रदूषण के दुष्प्रभाव (घ) प्रदूषण से बचने के उपाय (ड) निष्कर्ष।

1. **प्रदूषण के कारण-** मनुष्य के जीवन में ज्यों-ज्यों विज्ञान का प्रभाव बढ़ता गया त्यों-त्यों वह विकास की ओर कदम बढ़ाता गया। झोपड़ियों और कच्चे घरों में रहने वाले मनुष्य ने आलीशान मकान बनाए। चैड़ी-चैड़ी सड़के बनाईं। तीव्रगामी मोटर गाड़ियाँ और घोर गर्जन करने वाले द्रुतगामी विमान बनाए। उसने अनेक कल-कारखाने स्थापित किए। इससे पेड़ों को अंधाधुंध काटा गया और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते हुए प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हुआ, जिसका परिणाम प्रदूषण के रूप में हमारे सामने हैं।

2. **प्रदूषण की व्यापकता-** किसी समय प्रदूषण स्थान विशेष या शहरों तक ही सीमित था परंतु गाँवों में विकास एवं मशीनीकरण होने से अब गाँव भी प्रदूषण से अछूते नहीं हैं। हाँ, अभी प्रदूषण का स्तर वहाँ शहरों जितना नहीं है। शहरों के प्रदूषित वातावरण में जीवन घुटन-भरा होता जा रहा है। इस समस्या ने विश्व को चिंता में डाल दिया है।

3. **प्रदूषण वृद्धि के कारण-** प्रदूषण बढ़ने के अनेक कारण हैं। इसके मूल में बढ़ती जनसंख्या है, जिसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक वातावरण समाप्त कर सीमेंट और कंकरीट के जंगल बनाए गए। विकास के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की गई। हरे-भरे पेड़ों को काटा गया। इन कारखानों से निकला धुआँ, बढ़ती दुर्गंध, गंदा पानी, डीजल- पेट्रोल की गंध, इनमें चलने वाली मोटरों और मशीनों का शोर जीवन के लिए घातक बन रहा है। इससे अनेक बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। इस उपभोगवादी युग में चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर ही जोर दिया जा रहा है, जिसके लिए मशीनीकरण किया गया। इनसे निकला कूड़ा-करकट, जानलेवा रसायन मिला गंदा जल बिना साफ किए तालाबों में फेंका जा रहा है, जो मनुष्यों के अलावा जलीय जीवों के लिए खतरा बनते जा रहे हैं।

4. **प्रदूषण के दुष्प्रभाव-** ध्वनि प्रदूषण के कारण श्रवण संबंधी बीमारियों के अलावा उच्च रक्तचाप और हृदयघात जैसी बीमारियाँ बढ़ रही हैं। बढ़ते वाहनों की आवाज और प्रत्येक घर में प्रयुक्त विद्युत उपकरणों से लगातार निकलने वाली आवाज हमारी सुनने की क्षमता को प्रभावित कर रही है।

प्रदूषण की मार से प्राणी ही नहीं प्रकृति भी बुरी तरह से प्रभावित हो रही है। प्रकृति का संतुलन खोता जा रहा है। वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है। प्राकृतिक चक्र परिवर्तित हो रहा है जिससे असमय वर्षा, अचानक सर्दी, गर्मी का घटना-बढ़ना जैसी अकल्पित समस्याएँ सामने आ रही हैं और इसका सीधा असर फसल उत्पादन पर पड़ रहा है।

5. **प्रदूषण से बचने के उपाय-** प्रदूषण कम करने के लिए हमें अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाने होंगे। कल-कारखानों को शहरों से दूर स्थापित करना होगा। जल और वायु प्रदूषण रोकने हेतु आवश्यक कदम उठाने होंगे। प्रदूषण कम किए बिना मनुष्य सुखमय जीवन नहीं जी सकेगा।

6. **निष्कर्ष-** निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदूषण को कम करने का एकमात्र उपाय सामाजिक जागरूकता है। प्रचार माध्यमों के द्वारा इस संबंध में लोगों तक संदेश पहुँचाने की आवश्यकता है। सामूहिक प्रयास से ही प्रदूषण की विश्वव्यापी समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

(2) **आपदा प्रबंधन**

संकेत-बिन्दुः प्राकृतिक आपदाएँ (क) दोषी कौन (ख) सरकार की जिम्मेदारी (ग) नागरिकों के कत्र्तव्य (घ) निष्कर्ष।

1. **प्राकृतिक आपदाएँ-** 'कहर हुआ सुनामी का चक्रवात, भूस्खलन या फिर भूचाल का डर हुआ, कभी बाढ़ का, कभी सूखे का कौन है उत्तरदायी इनका प्रकृति या दोष है यह इंसान का।'

2. **दोषी कौन-** जब हम हजारों- लाखों लोगों को बेघर होते देखते हैं, घायल होते और मरते देखते हैं, तो यह प्रश्न हमारे सामने आ खड़ा होता है कि इनके लिए आखिर कौन जिम्मेदार है? प्राकृतिक कारणों के साथ-साथ मनुष्य भी पर्यावरणीय असंतुलन के लिए उत्तरदायी है। वास्तव में प्राकृतिक आपदा प्रकृति का मानव के प्रति रोष है जिसकी अभिव्यक्ति धरती से क्षणभर में जीवन का अस्तित्व मिटाने की क्षमता रखती है। प्रकृति का यह रोष, यह तांडव देख मानव सिहर उठता है, किन्तु जन-जीवन में सामान्य होते ही सब कुछ भूल जाता है। वह अपनी भूल से तनिक भी सीख नहीं लेता तथा लगातार वृक्षों की कटाई कर अपने क्षणिक भोग की वस्तुओं का निर्माण करता जाता है और फिर सुनामी जैसी महाआपदा को निमंत्रण देता है। आज ऐसे उपायों की आवश्यकता बहुत अधिक है जिनकी योजना पहले से बनाई गई हो, सबको उनकी जानकारी हो तथा यथाअवसर उनका उपयोग किया जा सके।

3. **सरकार की जिम्मेदारी-** सरकार द्वारा मौसम की चेतावनी देकर, बचाव कार्य तथा प्राथमिक उपचार के बारे में विशेष प्रशिक्षण देकर लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है। अच्छे निर्माण कार्यों की समझ हमारे लिए बहुत आवश्यक है ताकि घरों, विद्यालयों तथा संस्थानों को सुरक्षित रखा जा सके। आपदारोधी इमारतों का निर्माण करना तथा विद्यमान इमारतों की मरम्मत तथा उनका नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक है। केन्द्रीय स्तर पर जहाँ वस्तुओं और वित्तीय संसाधनों की पूर्ति की जाती है, वहाँ आपदाओं से निबटने का मुख्य दायित्व राज्य सरकार का है। जिला प्रशासन सभी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु होता है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे-छोटे संगठन भी निरन्तर सहायता एवं बचाव कार्यों में लगे रहते हैं।

4. **नागरिकों के कर्तव्य-** हम सुसंस्कृत, सुसभ्य कहलाने वाले प्राणी आए दिन होने वाली आपदाओं के लिए सभी सरकार को कोसते है तो कभी ईश्वर से शिकायत करते है, लेकिन स्वयं हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। जरा सोचिए किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा का शिकार सबसे अधिक कौन होता है? आम आदमी ही जब इसकी चपेट में आता है तो क्यों न हम सब मिलकर कुछ ऐसे उपाय करें जिससे इन आपदाओ का

सामना किया जा सके। अपने मोहल्ले के लोगों के साथ मिलकर पहले से ही सुरक्षा योजनाएं बना ली जानी चाहिए और समय-समय पर उनका अभ्यास करना चाहिए। लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक अभियान चलाए जाने चाहिए। समाज में इन आपदाओं से संबधित सावधानी बरतने तथा उचित जानकारी पहुंचाने के लिए सबसे अच्छा उपाय है- विद्यालय में बच्चों को जागरूक करना।

इस प्राकृतिक आपदाओं को रोक तो नहीं सकते किंतु उचित जानकारी, समुचित व्यवस्था और संगठित होकर इनके हानिकारक प्रभाव को कम अवश्य कर सकते है। उसके अतिरिक्त संकट के समय हम साहस व धैर्य से इनका सामना करना चाहिए।

5. **निष्कर्ष** - प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए और इससे निपटने के लिए सरकार और लोगों को इसके प्रति सतर्क रहने की जरूरत है, इसके साथ ही हम सभी को अपने सुख, सुविधाओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन करने से बचना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने चाहिए और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए तभी प्राकृतिक आपदा के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

(3) **संगति का प्रभाव**

संकेत-बिन्दुः भूमिका (क) संगति के प्रकार (ख) संगति का प्रभाव (ग) उदाहरण (घ) उपाय (ड) निष्कर्ष।

1. **भूमिका**-'कदली, सीप, भुजंग ते, एक स्वाति, गुन तीन। जैसी संगति कीजिए, तैसोई फल दीन।' प्रसिद्ध कवि रहीम की ये पंक्तियाँ संगति की महत्ता बताने के लिए पर्याप्त हैं कि किस प्रकार स्वाति नक्षत्र की बूँद अलग-अलग संगति में पड़कर अलग-अलग रूप-रंग और गुण-धर्म वाली भिन्न प्रकृति वाली वस्तु बन जाती है। यही बूँद बेले के पत्ते पर पड़कर कपूर, सीप में गिरकर मोती और सर्प के सिर पर गिरकर मणि का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार मनुष्य की सफलता और असफलता उसकी संगति पर निर्भर करती है। चंदन के संपर्क में आने से विषधर अपना विष त्याग देता है और कपूर का संपर्क पाकर वस्तुएँ सुगंधित हो जाती हैं। स्वर्णपात्र में शराब रखी होने पर भी साधुजन उसकी निंदा ही करते हैं।

2. **संगति के प्रकार-** संगति को दो भागों में बाँटा जा सकता है-सत्संगति और कुसंगति। सत्संगति मनुष्य के लिए सर्वविधि से कल्याणकारी होती है। वह मनुष्य को अच्छी बातें सिखाती हुई उसके ज्ञान में वृद्धि करती है। इसके विपरीत कुसंगति उसे पतन के गर्त में ले जाती है। ऐसा व्यक्ति समाज विरोधी गतिविधियों में शामिल हो जाता है। वह अपने परिवार, समाज और देश की भलाई की बात सोच भी नहीं सकता है।

3. **संगति का प्रभाव-** मनुष्य को किस संगति में रहना है, इसका चुनाव उसे विवेकपूर्ण करना चाहिए। एक सामाजिक प्राणी होने के कारण एक-दूसरे से हम मिलते-जुलते रहते हैं। हमारी आवश्यकताएँ हमें परस्पर निकट लाती हैं। ऐसे में हम जिस प्रकार के व्यक्ति के साथ संगति करेंगे उसी प्रकार का असर हमारे मन और स्वभाव पर पड़ता है।

4. **उदाहरण-** लोहे का गुण है- पानी में डूब जाना। एक कील या छड़ पानी में तुरंत डूब जाती है, परंतु लकड़ी सुखद भविष्य का निर्माण करना चाहते हो तुम्हें मन लगाकर परीक्षा की तैयारी करनी होगी। सफलता हमेशा परिश्रमी पुरुषों का ही वरण करती है। में जुड़कर वही कील तैरती है। इसी प्रकार यदि हम हींग बेचने

वाले के पास खड़े होते हैं तो कुछ दें ले या न दें ले परन्तु उसकी महक हमें मिल ही जाती है और यदि शराबी और जुआरी के पास उठते-बैठते है या असामाजिक कार्य करने वालों की संगति में रहने का असर हमारे व्यक्तित्व पर जरूर पड़ता है। यह शाक्यमुनि गौतमबुद्ध की संगति का असर था कि अंगुलिमाल जैसा कुख्यात डाकू भी उनका भक्त बन गया और सतो की संगति के प्रभाव से ही डाकू वाल्मीकि रामायण के रचयिता वाल्मीकि बन गए।

5. **उपाय-** संगति का प्रभाव युवामन पर अधिक पड़ता है, इसलिए युवाओं और विद्यार्थियों को विशेषतः सजग रहने की आवश्यकता होती है क्योंकि इस उम्र में मन कोमल होता है, जिस पर संगति का असर अत्यंत शीघ्रता से होता है। अतः जीवन में उन्नति करने एवं अच्छा मनुष्य बनने के लिए सत्संगति ही करना चाहिए।

6. **निष्कर्ष-** किसी भी जीवन की विजय और पराजय उसकी संगति पर निर्भर करते हैं। जो व्यक्ति बुरा होकर भी विद्वान होता है उसका जीवन व्यर्थ होता है। अगर हमें जीवन में सफलता और उन्नति प्राप्त करनी है तो अपने जीवन की संगति पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

**********@@**********@@**********

ई-मेल लेखन (शिकायत पत्र)

*ई-मेल दो शब्दों के मेल सेबना है 'ई + मेल', से अभिप्राय है-इलेक्ट्रॉनिक जबकि मेल का हिन्दी पर्याय है-डाक। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यतु के वेग समान भेजी जानेवाली डाक, इलेक्ट्रॉनिक मेल अथवा ई-मेल कहलात है।

आज कंप्यूटर के दौर में ई-मेल के द्वारा ऑनलाइन-पत्र भेजे जाते हैं। ऑनलाइन भेजे जानेवाले पत्र पलक झपकते ही अपने गन्तव्य तक पहुँच जाते हैं। इस प्रकार पत्र को इन्टरनेट की सहायता से ई-मेल के द्वारा 'प्रेषित'(प्राप्तकर्ता) तक पहुँचाना 'ऑनलाइन पत्र' या 'ई-पत्र' कहलाता है। ऑनलाइन पत्र भेजने के लिए प्रेषक व प्रेषिती दोनों के पास अपना 'ई-मेल' आइडी होनी अनिवार्य है। ई-मेल के जरिए न सिर्फ सन्देशों का बल्कि डिजिटल दस्तावेजों, वीडियो आदि को अटैच (संलग्न) करके किसी दूसरे को ई-मेल पते पर भेजा एवं प्राप्त किया जाता है।

वर्तमान समय में वेबसाइट हैं जो ई-मेल आइडी बनाने उपलब्ध कराती हैं- जी-मेल, याहू, रेडिफ मेल, हॉट मेल आदि।

ई-मेल का मुख्य भाग ई-मेल को सिलसिलेवार क्रम में प्रस्ततु किया जाता है अथवा लिखा जाता है, वे ई-मेल के भाग कहलाते हैं।

सामान्यतः ई-मेल के भाग निम्नलिखित होते हैं-

(1) आरम्भ- ई-मेल के प्रारम्भ में सन्देश प्राप्तकर्ता अथवा प्रेषिती का पता लिखा जाता है। 'To' के अन्तर्गतर्ग जिस व्यक्ति को ई-मेल भेजा जा रहा है उसका ई-मेल पता लिखा जाता है; जसै To:anusharma@gmail.com

यदि एक से अधिक अर्थात तीन व्यक्तियों को ई-मेल भेजना है तो 'To' में जाकर ई-मेल आइडी का प्रयोग कर तीनों को ई-मेल भेज सकते हैं। 'To' में जाकर ई-मेल आइडी का प्रयोग कर तीनों को ई-मेल भेज सकते हैं 'To' करने से तीनों में से किसी को भी यह ज्ञात नहीं हो पाएगा कि अन्य दो व्यक्ति कौन हैं? जिन्हें यह ई-मेल भेजा गया है।

CC का अर्थ है कार्बन कॉपी (Carbon Copy)। इसके अन्तर्गत यदि एक व्यक्ति को ई-मेल भेजना है और यदि आप कि अन्य दो लोगों को यह पता रहे क्या भेजा है तब अन्य दो लोगों का ई-मेल पता CC में डाल सकते हैं ।

जिस से सब का ई-मेल, एक दूसरे देख सकते है । BCC का अर्थ है, ब्लाइंड कार्बन कॉपी (Blind Carbon Copy)। BCC करने से ई-मेल जिस-जिस को किया गया हैं ।
वह किसी को भी ज्ञात नहीं होता है, गुप्त रहता है।
(2) विषय- ई-मेल के दूसर भाग विषय अथवा सब्जेक्ट के अन्तर्गत जिस सन्देश को लिखा जा रहा है। उसे संक्षेप में इसके अन्तगर्त बताया जाता है; जैसे होली की शुभकामनाए ।

(3) सन्देश- इसके अन्तर्गत मूल विषय का विस्तारपर्वूक वर्णन किया जाता है। मूल विषय ध्यानपर्वूक इसके अन्तर्गत लिखा जाता है तथा अनुच्छेद के मध्य थोड़ी जगह भी छोड़ी जाती है।

(4) अटैचमेन्ट- सन्देश प्रेषित करते समय यदि किसी दस्तावेज को सन्देश अथवा पत्र आदि के साथ संलगित करना होता हैतो अटैचमेन्ट के द्वारा उसे सन्देश अथवा पत्र के साथ भेजा जाता है। ध्यान रहे अटैचमेन्ट का प्रयोग तभी किया जा सकता है जब वह दस्तावेज कम्प्यूटर में सरुक्षित (सेव) हो।

(5) अंत ई-मेल में अन्त में जब सन्देश लिखा जा चुका हो तथा आवश्यकता पड़ने पर अटैचमेन्ट लगाई जा चुकी हो तत्पश्चा संबंधित व्यक्ति को सन्देश प्रेषित करने के लिए सेंड (Send) के विकल्प का प्रयोग किया जाता है।

सेंड के एक क्लिक करने से प्रस्तुत ई-मेल सम्बन्धित व्यक्ति/व्यक्तियों तक पहुँच जाएगी जिसका ई-मेल लिखा गया है।

ई-पत्र लेखन-

(1) ए.टी.एम. कार्ड न मिलने की शिकायत सम्बन्धी ई-पत्र लिखिए।

To<debitcard@bobcards.com >

Subject: ए टी एम कार्ड न मिलने की शिकायत ।

सेवा में,

श्रीमान महा प्रबन्धक,
बकैं ऑफ बड़ौदा,
शहीद भगत सिहं मार्ग,
कोलाबा, मुंबई-400001
महोदय,

मेरा खाता नं. ..... हैं। मैंने एक माह पहले ए.टी.एम. कार्ड के लिए आवेदन किया था, किन्तु यह मुझे अभी तक नहीं

मिल सका है। कृपया बताएँ इस देरी की क्या वजह है।

आपसे निवेदन है कि आप मेरा ए.टी.एम. कार्ड शीघ्र से शीघ्र मेरे पते पर भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

पीयषू कुमार

(2) गलती से दूसरे अकाउंट में पैसे ट्रांसक्शन होने के सम्बन्ध में ई-पत्र लिखिए।

To< indbankchh01@gmail.com >

Subject: गलती से दूसरे अकाउंट में पैसे ट्रांसक्शन होने की शिकायत ।

सेवा में,

श्रीमान महा प्रबन्धक,
इंडियन बैंक,
करोल मार्ग,
नोएडा, मुंबई-400001
महोदय,

आपसे सविनय निवेदन है की मैं राकेश आपकी शाखा का ग्राहक हूँ । मेरा खाता नं.-12223456789 है । इस खाते में से 5000 रुपए गलती से चले गए हैं । श्रीमान बैंक मैनेजर से निवेदन है की मेरे द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति को गलती से रुपए चले गए हैं ।

आप से गुजारिश है मेरे पैसे वापस कार्वा दीजिये मैं आपका सदा आभारी रहूँगा ।

धन्यवाद।

भवदीय,

राकेश कुमार

(3) सड़क निर्माण में घटिया सामग्री प्रयुक्त करने की शिकायत में ई-पत्र लिखिए ।

To< trpwddelhi99@gmail.com >

Subject: सड़क निर्माण में घटिया सामग्री प्रयुक्त करने की शिकायत ।

सेवा में,
अध्यक्ष
नगरपालिका
मैनपुरी
दिल्ली-110096

महोदय,

वार्ड संख्या १० में कचहरी रोड से खतराना मोहल्ले की सड़क अभी पिछले सप्ताह नगरपालिका ने बनवाई है। इस सड़क में प्रयुक्त निर्माण सामग्री अत्यन्त घटिया स्तर की है तथा सीमेण्ट और रेत का अनुपात एक-दस का है, इस कारण सड़क उखड़ने लगी है ।

मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि सक्षम अधिकारियों से इस शिकायत की जांच करवाएँ तथा सड़क को पुनः निर्मित न कर दे। शीघ्र कार्यवाही की अपेक्षा है।

धन्यवाद।

भवदीय,

दीपक कुमार

(4) अपने क्षेत्र में कानून और व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर दैनिक संपादक को ई-पत्र लिखिए।

To< tainikjagran@gmail.com >

Subject: कानून और व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर शिकयात ।

सेवा में
मुख्य संपादक,

तैनिक जागरण ,

नई दिल्ली -09

महोदय,

बड़े खेद के साथ मुझे यह शिकायत करना पड़ रहा है।आशा है, इसकी उपयोगिता को समझते हुए आप इसे अपने पत्र में स्थान देंगे ।

आजकल गुड़गाँव अपराध, चोरी, बलात्कार, उठाई-गिरी जैसी समस्याओं का केंद्र बनता जा रहा है। जैसे-जैसे नगर की प्रगति हो रही है, लूटपाट, डकैती, चोरी और अपराधों में भी वृद्धि हो रही है। अब तक पता नहीं चल सका है।

नगर-प्रशासन से निवेदन है कि 'कुछ करें ताकि हम नगरवासी चैन से घर के बाहर निकल सकें'।

धन्यवाद।

भवदीय,

संजय

(5) एक छात्र के अशिष्ट व्यवहार के लिए शिकायत करते हुए अपने प्रधानाचार्य को ई-पत्र लिखिए।

To< principalsaintxavierschool22@gmail.com >

Subject: एक छात्र के अशिष्ट व्यवहार के लिए शिकयात ।

प्रधानाचार्य,

सेंट जेवियर स्कूल,

मुंबई।

श्रीमान,

पूरे सम्मान के साथ मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूँ कि दसवीं कक्षा के राम कुमार अवकाश के दौरान लड़कियों के साथ बहुत ही अशिष्टता और क्रूरता से पेश आता हैं।

अतः मेरा अनुरोध है कि उनके खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी ,

सीमा

स्ववृत/Biodata

नौकरी के लिए आवेदन पत्र

प्रश्न 1. "इंडियन केमिकल्स लिमिटेड" 36, न्यूलिंक रोड, मुंबई मे रिक्त मार्केटिंग एक्सिक्यूटिव के पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर 1.

सेवा मे
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
मानव संसाधन विभाग
इंडियन केमिकल्स लिमिटेड
36, न्यूलिंकरोड
अंधेरी, मुंबई - 400055
विषय: "मार्केटिंग एक्सिक्यूटिव के पद हेतु आवेदन"
महोदय,

आज दिनांक 16 अप्रैल 2006 को दिल्ली मे प्रकाशित नवभारत टाइम्स मे प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कंपनी को मार्केटिंग एक्सिक्यूटिव कि आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ । मेरा स्वावृत आवेदन के साथ सालंग्न है।

स्ववृत

नाम – नरेंद्र कुमार
पिता का नाम – राम प्रकाश ठाकुर
माता का नाम – सुनीता ठाकुर
जन्मतिथि – 30 जुलाई 1992
वर्तमान पता – 302 नारिमन पाइंट, मुंबइ 11000092
दूरभाष – 011 -2254565
मोबाइल संख्या – 0000546
ईमेल – sureshthakur@.....

शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी सामाजिक विज्ञानं गणित	72% प्रथम
2	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी रसायन शास्त्र,	86 % प्रथम
3	स्नातक	2011	मध्यविशवविद्यालय, तमिलनाडु	रसायन शास्त्र,	69 % प्रथम
4	एम.बी.ए	2012	मध्यविशवविद्यालय, तमिलनाडु	रसायन शास्त्र	93 % प्रथम

अन्य योग्यताएं

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास(एम.एस।ऑफिस तथा इंटरनेट)।
- फ्रेंच भाषा का कार्य योग्य ज्ञान।

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय वाद - विवाद प्रतियोगिता (वर्ष2001) मे प्रथम पुरस्कार
- राजीवगांधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) मे प्रथम पुरस्कार
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कैप्टन

कार्योतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- **उधयोग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अख़बारों का नियमित पाठन**
- **देश भ्रमण का शौक**
- **इंटरनेट सर्फिंग**
- **फुट बॉल और क्रिकेट मे अभिरुचि**

धन्यवाद

निवेदक/आवेदक

क,ख़,ग

परीक्षा भवन, मुंबई-११०००१

प्रश्न 2 – सर्वोदय बाल विद्यालय गोल मार्केट दिल्ली में हिंदी विषय पीजीटी का पद रिक्त है। विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए शिक्षा निदेशक को आवेदन पत्र प्रस्तुत करें।

उत्तर 2.

सेवा में
शिक्षा निदेशक

शिक्षा निदेशालय
पुराना सचिवालय
दिल्ली 110053

विषय – पीजीटी हिंदी पद के लिए आवेदन पत्र।

महोदय

मैं सुरेश ठाकुर विगत कुछ वर्षों से दिल्ली सरकार के विद्यालय में संविदा शिक्षक के रूप में बतौर काम कर रहा हूँ । मुझे ज्ञात हुआ सर्वोदय बाल विद्यालय गोल मार्केट में हिंदी पीजीटी का पद रिक्त है।

मैं इस पद के लिए उचित योग्यता रखता हूँ। यह मेरे घर से निकट भी है।
अतः श्रीमान से निवेदन करना चाहता हूँ कि मुझे सर्वोदय बाल विद्यालय गोल मार्केट में बतौर हिंदी प्रवक्ता के पद पर नियुक्त करने की कृपा करें।

धन्यवाद
निवेदक
सुरेश ठाकुर
302 गोल मार्केट
नई दिल्ली
5 फरवरी 2020
मेरा स्ववृत्त आवेदन पत्र के साथ संलग्न है।

स्ववृत्त

नाम – सुरेश ठाकुर
पिता का नाम – राम प्रकाश ठाकुर
माता का नाम – सुनीता ठाकुर
जन्मतिथि – 30 जुलाई 1992

वर्तमान पता – 302 गोल मार्केट नई दिल्ली 11001
दूरभाष – 011 -2254565
मोबाइल संख्या – 0000546
ईमेल – sureshthakur@……
शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी सामाजिक विज्ञानं गणित	72% प्रथम
2	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी इतिहास अर्थशास्त्र	86 % प्रथम
3	स्नातक	2011	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिंदी	69 % प्रथम
4	बी.एड	2012	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिंदी	93 % प्रथम
5	परास्नातक	2014	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिंदी	79 % प्रथम

अन्य योग्यताएं

- कंप्यूटर में 1 वर्ष का डिप्लोमा
- मैकेनिकल इंजीनियरिंग में 6 माह का डिप्लोमा
- हिंदी अंग्रेजी जर्मनी स्पेनिश भाषा की जानकारी।
- योगा के क्षेत्र में 6 माह का प्रशिक्षण।

उपलब्धियां –

- विद्यालय स्तर पर एनसीसी में उच्च प्रशिक्षण।
- भारत को जानो प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर द्वितीय पुरस्कार

- गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने का पुरस्कार

कार्येत्तर गतिविधियां और अभी रुचियां –

- योगाभ्यास क्रिकेट शास्त्रीय संगीत गायन वादन में विशेष रूचि।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजन करने का अनुभव तथा रुचि
- आधुनिक तकनीकों का प्रयोग सीखना तथा समाज के लिए उपयोगी बनाना।

धन्यवाद
क, ख, ग
नईदिल्ली-110001

प्रश्न 3. कमप्यूटर अध्यापक पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर 3.

प्रेषक
संपतकुमार
परीक्षा भवन
नईदिल्ली -24
19, अप्रैल, 2001

सेवा मे,
श्रीमान। प्रधानाचार्य जी
के.वी. स्कूल
नईदिल्ली

विषय: कमप्यूटर अध्यापक पद हेतु आवेदन पत्र।
महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि विश्वस्व सूत्रों से ज्ञातहुआहै कि आपके विद्यालय मे कमप्यूटर अध्यापक / अध्यापिका(प्राइमरी कक्षा के लिए) का पद रिक्त है।

मैं इस पद के लिए आवेदन देना चाहता हूँ। मैं ने इसी विद्यालय से अपनीस्कूली शिक्षासंपन्न की हूँ। मेरे पढ़नेऔर पढ़ाने मे अत्यंत आरयूसीएचआई है । मैं ने

कमप्यूटर ट्रेनिंग मे दक्षता प्राप्त की हुई है । मेरी टाइपिंग स्पीड 100 शब्द पर मिनट है। मेरे परिवारका वातावर्ण पूर्णत: पठन पठान के अनुकूल है, किन्तु अचानक मेरे पिताजी की मृत्यु हो जाने के कारण परिवार का भार मेरे कंधे आ गया है। मे पूर्ण ईमानदारी और निष्ठापूर्ण मन लगाकर अपना काम करूँगा तथा मैं आपको विश्वासित करता हूँ कि मेरी ओर से आपको कभी तकलीफ़ नहीं होगी और न ही मैं आपको किसी भी प्रकार की शिकायत का मौका दूंगा।

स्ववृत्त

नाम – संपतकुमार
पिता का नाम – राम प्रकाश ठाकुर
माता का नाम – सुनीता ठाकुर
जन्मतिथि – 30 जुलाई 1992
वर्तमान पता – 302 परीक्षा भवन,
गोल मार्केट नईदिल्ली -24
दूरभाष – 011 -2254565
मोबाइल संख्या – 0000546
ईमेल – sampathkumar@.....

19, अप्रैल, 2001

शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी सामाजिक विज्ञानं गणित	72% प्रथम
2	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी इतिहास अर्थशास्त्र	86 % प्रथम

3. कमप्यूटर ट्रेनिंग मे पूर्णत: दक्ष हूँ।

अन्य योग्यताएं

- कला व गायन मे भी कुशल।

सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज़, रिपोर्ट कार्ड, सर्टिफिकेट की कापी आदि पत्र के साथ ही सलग्न है। एक सकरतमक उत्तर की प्रतीक्षा है

सधन्यवाद

संपातकुमार

नईदिल्ली

प्रश्न 4. कल्पना कीजिए कि आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा किया है और किसी प्रसिद्ध

अखबार में पत्रकार पद के लिए आवेदन भेजना है। इसके लिए एक आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर-

सेवा में,

संपादक,

अमर उजाला,

पानीपत।

विषय: पत्रकार पद के लिए आवेदन हेतु।

महोदय,

आज दिनांक 10 जुलाई, 20 21 को प्रकाशित अमर उजाला से प्रकाशित विज्ञापन से पता चला है कि आपके

कार्यालय को पत्रकार की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रहा/रही हूँ। मेरा

स्ववृत इस आवेदन पत्र के साथ संलग्न है। इसका अवलोकन करने पर आपको विश्वास होगा कि मैं इस पद

के लिए पूरी तरह से उपयुक्त उम्मीदवार हूँ। मैं आपके विज्ञापन में वर्णित सभी योग्यताओं को पूरा करता

हूँ/करूँगी। मैं आपके विज्ञापन में वर्णित सभी योग्यताओं को पूरा करता हूँ/करूंगी। मेरा संक्षिप्त विवरण

इस प्रकार है:

नाम: महेश/ महेश्वरी

पिता का नाम: कखग

जन्मतिथि: xx/xx/x00xx

वर्तमान पता: 65, विकास नगर, तिरुवरूर

स्थाई पता: 65, विकास नगर, तिरुवरूर

दूरभाष: xxxx-4546840 छल ध्वनि: 9478895845

ईमेल: cclchapter@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएं:

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी सामाजिक विज्ञानं गणित	72% प्रथम
2	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिंदी अंग्रेजी इतिहास अर्थशास्त्र	86 % प्रथम
3	स्नातक	2011	तमिलनाडु विश्वविद्यालय	गणित	92 % प्रथम
4.	पत्रकारिता	2002	तमिलनाडु विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी, संस्कृत	96 प्रथम

अन्य योग्यताएँ:

इस योग्यता के साथ-साथ में कई वर्षों से स्वतंत्र लेखन से भी ज जुड़ाहुआ/जोड़ी हूँ। मुझे पत्रकारिता ने बेहद

रूचि है। मैं आपको पूर्ण विश्वास दिलाता /दिलाती हूँ कि मैं अपना कार्य पूरी निष्ठा से करूंगा / करूंगी ।

आपसे अनुरोध है कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे आवेदन पत्र पर सकारात्मक विचार करते हुए

मुझे पत्रकार पद पर नियुक्त करें।

सा धन्यवाद,

भवदीय,

(हस्ताक्षर)

स्ववृत्त लेखन के महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

1 प्रश्न – स्ववृत्त से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – स्ववृत्त व्यक्ति के पहचान का एक माध्यम है। यह किसी नौकरी , पद आदि के आवेदन के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

जिसमें व्यक्तिगत जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। आवेदक का जन्म , शैक्षणिक योग्यता ,अंक , प्रतिशत ,कार्य अनुभव आदि सभी समाहित होते हैं।

2 प्रश्न – उम्मीदवारों के चयन में स्ववृत्त किस प्रकार सहायक होता है ?

उत्तर- उम्मीदवारों के चयन में स्ववृत्त की अहम भूमिका होती है। इसके माध्यम से उम्मीदवारों की गुणवत्ता का मूल्यांकन स्वता किया जा सकता है।

व्यक्ति के संक्षिप्त मूल्यांकन का सर्वश्रेष्ठ आधार स्ववृत्त को माना गया है।

3 प्रश्न – एक अच्छे स्ववृत्त में क्या-क्या विशेषताएं होती है ?

उत्तर – कोई भी लेखन कला करते समय उसकी बारीकियों को विशेष ध्यान दिया जाए तो निश्चित रूप से वह विशेषता के दर्जे में सम्मिलित हो जाता है।

स्ववृत्त के साथ भी ऐसा ही है। एक अच्छे और विशेषताओं से युक्त स्ववृत्त में जन्म से लेकर शैक्षणिक योग्यता , प्रतिशत , अंक , वर्ष , कॉलेज , विद्यालय का नाम आदि विस्तृत रूप से सुव्यवस्थित ढंग से लिखा जाना चाहिए।

लेखन करते समय उसकी शुद्धता और स्पष्टता का ध्यान रखा जाना चाहिए।

इन सभी विशेषताओं से अच्छे स्ववृत्त की रचना की जा सकती है।

4 प्रश्न – स्ववृत्त में अन्य योग्यताओं के अतिरिक्त कार्येत्तर गतिविधियों की चर्चा करना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर – कार्येत्तर गतिविधियों की चर्चा तब अहम हो जाती है जब आवेदन की भरमार हो। इससे आवेदक को विशेष लाभ मिलता है , क्योंकि उसके पास अनुभव बताने के लिए विशेष होता है।

यह उसे अग्रणी पंक्ति में ला खड़ा करता है।

इसीलिए स्ववृत्त लिखते समय अपने कार्यकुशलता, कार्येत्तर गतिविधियों को अवश्य लिखें।

5 प्रश्न – स्ववृत्त निर्माण की कला में निपुण होना क्यों आवश्यक है ?
उत्तर – क्योंकि इससे व्यक्ति का मूल्यांकन होता है।
जो व्यक्ति अपना मूल्यांकन ठीक प्रकार से करवाना चाहता है , अपनी अहमियत को प्रकट करना चाहता है उसको स्ववृत्त निर्माण में कुशल होना अति आवश्यक है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्ववृत्त स्वयं को विस्तृत रूप से कागज पर प्रकट करने का एक माध्यम है।

जितना बढ़िया स्ववृत्त होगा उतना ही बढ़िया व्यक्ति का मूल्य लगाया जा सकता है।

इसमें विभिन्न प्रकार के बिंदुओं को ध्यान रखा जाता है।

जैसे – जन्म स्थान , तिथि , शैक्षणिक योग्यता , अतिरिक्त कुशलता आदि।

विस्तार पूर्वक और नियम बद शैली में लिखी गई स्ववृत्त व्यक्ति के महत्व को प्रदर्शित करता है। यह उसे सैकड़ों की भीड़ में अलग कर देता है।

औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र लेखन

1. आपके क्षेत्र में सरकारी राशन की दुकान का संचालक गरीबों के लिए आए अनाज की कालाबाजारी करता है और कुछ कहने पर उन्हें धमकाता है। उसकी शिकायत करने हेतु लगभग 120 शब्दों में जिलाधिकारी को पत्र लिखिए।

सेवा में
जिलाधिकारी
मेरठ
उत्तर प्रदेश
दिनांक.....

विषय- सरकारी राशन की दुकान के संचालन में अनियमितता की शिकायत हेतु।
महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र प्रीत नगर, मवाना, जिला – मेरठ में संचालित सरकारी राशन की दुकान की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। महोदय, सरकार द्वारा सरकारी राशन की दुकानों के संचालन का उद्देश्य गरीबों के लिए मुफ्त अथवा कम मूल्य पर अनाज उपलब्ध कराना होता है। किंतु अत्यंत खेद का विषय है कि हमारे क्षेत्र में सरकारी राशन की दुकान का संचालक गरीबों के लिए आए अनाज की कालाबाजारी करता है। जब भी उपभोक्ता राशन लेने के लिए उसकी दुकान पर जाते हैं तो वह कुछ न कुछ बहाने बनाकर उन्हें निर्धारित राशन नहीं देता और बाजार में अधिक मूल्य पर उस अनाज की कालाबाजारी करता है। जब लोग उसे ऐसा करने से रोकते हैं या अपना विरोध प्रकट करते हैं तो वह उन्हें धमकाता है। इस संबंध में स्थानीय पुलिस चौकी में भी कई बार शिकायत दर्ज कराने का प्रयास किया गया किंतु कोई भी उचित कार्यवाही नहीं हुई।

मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया इस विषय में शीघ्र संज्ञान लेते हुए उक्त सरकारी राशन की दुकान के संचालक के विरुद्ध आवश्यक अनुशासनात्मक कार्यवाही करके स्थानीय निवासियों की इस समस्या का समाधान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद
दिनेश कुमार
प्रीतमनगर, मवाना
जिला मेरठ **CBSE-2021**

2. आपकी चचेरी दीदी कॉलेज में दाखिला लेना चाहती हैं, किन्तु आपके चाचाजी आगे की पढ़ाई न करवाकर उनकी शादी करवाना चाहते हैं। इस बारे में अपने चाचाजी को समझाते हुए लगभग 120 शब्दों में एक पत्र लिखिए।

35, अशोक विहार
नई दिल्ली
दिनांक.....
आदरणीय चाचा जी
सादर चरण स्पर्श

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। हम लोग भी यहाँ ठीक हैं। चाचा जी मुझे कल ही स्नेहा का पत्र प्राप्त हुआ जिससे मुझे ज्ञात हुआ कि वह आगे की पढ़ाई के लिए कॉलेज में दाखिला लेना चाहती है किंतु आप इसके लिए सहमत नहीं हैं और उसका विवाह करके अपने दायित्व से मुक्त होना चाहते हैं। चाचा जी स्नेहा सदैव एक कुशाग्र छात्रा रही है और उसने अपनी 12वीं की परीक्षा जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर बहुत अच्छे अंको से उत्तीर्ण की है। ऐसे में इतनी अल्प आयु में उसका विवाह कर देना उचित नहीं है। अब तो सरकार द्वारा भी लड़कियों की विवाह योग्य 18 साल की उम्र को बढ़ाकर 21 वर्ष किए जाने से संबंधित विधेयक संसद में पेश किया गया है। अतः कानूनी दृष्टि से भी यह अनुचित होगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया आप स्नेहा को आगे पढ़ने की अनुमति प्रदान कर उसे आत्म-निर्भर बनने का अवसर प्रदान करें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्नेहा निश्चित ही शिक्षित होकर अपने परिवार को गौरवान्वित करेगी। आशा है आप मेरा यह अनुरोध स्वीकार करके उसे शीघ्र कॉलेज में प्रवेश दिलवा देंगे। आदरणीय चाची जी को मेरा सादर प्रणाम और स्नेहा को शुभ आशीर्वाद कहिएगा।
आपका भतीजा
अबस

CBSE-2020

3. गत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं। जिससे आप चिंतित हैं। इन अपराधों की रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

सेवा में,

थानाध्यक्ष महोदय,

तिलक नगर थाना,

नई दिल्ली-110018

दिनांक- 23 मार्च 20XX

विषय–अपराधों की रोकथाम के संदर्भ में।

माननीय महोदय,

मैं दिल्ली के तिलक नगर का रहने वाला हूँ। मुझे अत्यंत दु:ख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि हमारी कॉलोनी में दिन-प्रतिदिन अपराध बढ़ रहे हैं। पहले यह कॉलोनी शांतिप्रिय थी पर अब यहाँ हम भय में जीवन जी रहे हैं। महिलाएँ तो घर से निकलने में कतराती हैं। कुछ सप्ताह पहले दो महिलाओं का किसी राह चलते लूटेरे ने पर्स छीन लिया और कल तो हद ही हो गई घर के सामने किसी काम से मेरी माता जी खड़ी थीं वहाँ राह चलते किसी ने उनकी चेन खींचकर ही भाग गया। घर के सदस्य उसके पीछे भागे परंतु वह तेजी से नौ दो ग्यारह हो गया। पूरे क्षेत्र में चोरी व छीनने की घटनाओं के कारण भय का माहौल हैं। लोग घर से निकलने में भी कतराते हैं।

अत: आप से विनम्र निवेदन है कि हमारी उचित सुरक्षा का प्रबंध करे व प्रतिदिन पुलिस की गश्त लगाते रहे। इससे हमें सुरक्षा का भाव मिले।

धन्यवाद,

भवदीय,

अ. ब. स

CBSE-2019

4. आपका एक मित्र शिमला में रहता है। आप उसके आमंत्रण पर ग्रीष्मावकाश में वहाँ गए थे और प्राकृतिक सौंदर्य को खूब आनंद उठाया था। घर वापस लौटने पर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।।
दिनांक 23 मार्च 20XX
प्रिय मित्र नीरज,
सस्नेह अभिवादन,
मैं कुशलतापूर्वक दिल्ली पहुँच गया हूँ। आशा है तुम भी ठीक होंगे। बहुत बहुत धन्यवाद मित्र। इस ग्रीष्मकाल के अवकाश को तुमने यादगार बना दिया। मैंने स्वपन में भी इस तरह का नजारा नहीं देखा जो तुमने मुझे शिमला में दिखाया। तुम्हारे व तुम्हारे परिवार के सहयोग द्वारा ही हमारी यह मात्रा यादगार बनी। सच में तुम तो प्रकृति की गोद में ही रहते हो। इतना सुंदर दृश्य तुमने हमें पहाड़ियों से दिखाया जैसे स्वर्ग हो। मैं अपने शब्दों द्वारा भी उस प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन नहीं कर सकता। यहाँ आकर के मुझे दोबारा तुम्हारे साथ बिताए गए समय का स्मरण हो रहा है। मेरे माता-पिता जी भी तुम्हारे व तुम्हारे परिवार वालों को याद कर रहे हैं। मेरी माता तो तुम्हारी माता जी की मित्र ही बन गई थी। सच में दो परिवारों के साथ मिलकर की गई यात्रा यादगार ही बन जाती है। आशा है तुम भी परिवार सहित दिल्ली आओ तो हम सभी साथ मिलकर मथुरा-वृंदावन घूमने चलेंगे। चाचा जी व चाची जी को मेरा प्रणाम कहना एवं बहन को स्नेह देना। तुमसे पुनः मिलने की आशा में।।
तुम्हारा मित्र
ऋषि

CBSE-2019

5. आपके क्षेत्र के पार्क को कूड़ेदान बना दिया गया था। अब पुलिस की पहल और मदद से पुनः बच्चों के लिए खेल का मैदान बन गया है। अतः आप पुलिस आयुक्त को धन्यवाद पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
क. ख. ग.,
नई दिल्ली-1100XX
सेवा में,
पुलिस आयुक्त
पश्चिमी दिल्ली
दिनांक-18 मई, 20XX
(3) विषय-आभार व्यक्त करने हेतु।
महोदय, हम मदनपुर निवासी इस क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों और आपको धन्यवाद देना चाहते हैं। हम दिल से आभारी रहेंगे। इस क्षेत्र के पार्क में पिछले कुछ वर्षों में कूड़ा फेंक–फेंक कर उसे कूड़ाघर में तब्दील कर दिया था।

परन्तु पुलिस से मीटिंग के बाद, पार्क के पास एक बोर्ड लगवाया गया कि उस क्षेत्र में कूड़ा फेंकना मना है। पुलिस विभाग के एक सब-इंस्पेक्टर की नियुक्ति ने कूड़ा डालने वालों को वहाँ आने से मना कर दिया। फिर आसपास के रिहायशी इलाकों वाले लोगों के साथ पार्क में एक फुटपाथ का निर्माण कर पार्क को एक नया रूप मिला। अब सुबह और शाम को लोग पार्क में घूमने आने लगे हैं और इसका श्रेय पुलिस विभाग को मिलना चाहिए।

एक बार फिर से इस क्षेत्र के लोग आपको धन्यवाद देते हैं।
मदनपुर क्षेत्र के निवासी
(सेक्रेटरी)

CBSE-2018

6. पटाखों से होने वाले प्रदूषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

पंकज लेन
वसंत कुंज,
नई दिल्ली।
दिनांक-25 अगस्त, 20XX
प्रिय मित्र,
तुम्हारा पत्र मिला। जानकर खुशी हुई कि तुम्हारे माताजी–पिताजी इन दिनों यूरोप घूमने गए हुए हैं और वे सभी प्रमुख जगहों पर जाएँगे। यूरोप घूमकर वापस आने वाले लोग वहाँ के वातावरण जो पूर्णतया प्रदूषण रहित है, का वर्णन करते हैं।

हमारे देश में अब अगले महीने दीपावली का पर्व आ रहा है। जहाँ तक दियों या बल्ब से शहर का रोशन होना बहुत अच्छा । लगता है वहीं दिवाली और दिवाली से पूर्व पटाखे चलाने से। होने वाले प्रदूषण से वातावरण इतना खराब हो जाता है कि पटाखों से निकलने वाले सल्फर के कणों के कारण सांस लेना। दूभर हो जाता है और यह कई बीमारियों की जड़ है। इसलिए मैं तो तुमसे यही कहना चाहूँगा कि खुद भी पटाखे चलाने से परहेज करो और अपने आसपास के लोगों को भी पटाखों से। होने वाले प्रदूषण के बारे में बताओ।
तुम्हारा मित्र
क.ख.ग

CBSE-2018

7. पी.वी. सिंधु को पत्र लिखकर रियो ओलंपिक में उसके शानदार खेल के लिए बधाई दीजिए और उनके खेल के बारे में अपनी राय लिखिए।

58/19,
अलकापुरी,
दिल्ली।
दिनांक 20 सितम्बर, 20XX
प्रिय पी.वी. सिंधु
सस्नेह नमस्कार,
कल आपका टी.वी. पर प्रदर्शन देखा। उसे देखकर मुझे बहुत गर्व हुआ। आपने ओलम्पिक में रजत पदक प्राप्त करके भारत का नाम रोशन किया है। आपकी यह सफलता प्रशंसा के योग्य है। ओलम्पिक में रजत पदक पाना बड़े सम्मान की बात है।

यह देख कर मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि आपने अपने माता-पिता का ही नहीं अपितु पूरे देश का नाम विश्व में रोशन किया हैं आप बहुत अच्छी खिलाड़ी हैं।

आपके परिश्रम एवं प्रतिभा को देखकर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि आप एक न एक दिन स्वर्ण पदक भी प्राप्त करोगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप भविष्य में इसी प्रकार की सफलता प्राप्त कर जीवन के पथ पर आगे बढ़ती जाए। अंत में मेरी ओर से एक बार पुनः आपको इस सफलता के लिए हार्दिक बधाई ।
आपकी प्रशंसिका

CBSE-2017

8. अपने क्षेत्र में जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
आगरा नगर निगम,
आगरा।
दिनांक 20 जनवरी, 20XX
विषय-जलभराव की समस्या हेतु।
महोदय,
मैं लोहामंडी क्षेत्र की निवासी हैं तथा आपका ध्यान अपने क्षेत्र में जलभराव से हो रही समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। वर्षा ऋतु के पश्चात् जगह-जगह सड़कों पर जलभराव हो गया जिसके कारण मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है साथ ही आने-जाने वालों की गाड़ियों में पानी चले जाने के कारण खराब हो जाती हैं तथा वे दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। जल भराव से संपूर्ण क्षेत्र में दुर्गंध फैल रही है। ऐसा नहीं है कि हमारे क्षेत्र में सफाई कर्मचारी नहीं आते अपितु वे नियमित रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करते थे, परंतु वे उस जलभराव की समस्या का समाधान नहीं करते हैं। कई बार मौखिक रूप से क्षेत्रीय सफाई निरीक्षक से भी कहा तथा लिखित रूप में भी इसकी चर्चा की, परंतु किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। वर्षा के पानी का भराव गंदी नालियों और सफाई न होने के कारण पूरे क्षेत्र में मलेरिया के फैलने की भी संभावना बढ़ गई है। यह चिंता का विषय है।

अतः आप से अनुरोध है कि लोहामण्डी क्षेत्र के निवासी की इस समस्या के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उचित निर्देश देने की कृपा करें। जिससे कि पूरा क्षेत्र इस जलभराव की समस्या से बच सके।

मुझे आशा है कि आप हमारे क्षेत्र की सफाई करवाने के लिए तुरंत आवश्यक कार्यवाही करेंगे।
भवदीया
अ ब स

CBSE-2017

9. अपनी योग्यता तथा खेलों में रुचि का परिचय देते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य महोदय को विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित खेलों में भाग लेने की अनुमति के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर:

परीक्षा भवन,

गाजियाबाद।

सेवा में,

श्रीमती प्रधानाचार्या जी,

दयानन्द बाल मन्दिर,

गाजियाबाद,

दि. 27 मार्च, 20 xx

विषय-वार्षिकोत्सव में आयोजित खेलकूद में भाग लेने के लिए पत्र।

महोदया,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं की छात्रा हूँ। आज ही कक्षाध्यापिका से वार्षिकोत्सव में खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन के विषय में सुना। जैसा आपको विदित है कि इस बार राष्ट्रीय व स्कूली स्तर पर आयोजित कई प्रतियोगिताओं में मैंने भाग लिया है व पुरस्कार भी जीते हैं। मेरा आपसे यही निवेदन है कि मुझे आप विद्यालय की इन प्रतियोगिताओं में खेलने की अनुमति प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद!

आपकी आज्ञाकारी शिष्या,

क, ख, ग,

कक्षा-दसवीं (अ)

CBSE – 2016

10. यात्रा करते समय मेट्रो में छूट गए अपने बैग और मोबाइल को मेट्रो कर्मचारी द्वारा आपको वापस भेज दिए जाने पर उसकी ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए प्रबंधक को एक पत्र लिखिए। [5]

उत्तर:

सेवा में,

प्रबंधक

दिल्ली मेट्रो, नई दिल्ली

दिनांक : 25 जनवरी, 20XX

विषयः मेट्रो में छूटे सामान का वापस मिलना।

महोदय,

कल दिनांक 24 जनवरी, 20XX को मैंने द्वारका सेक्टर-9 से राजीव चौक तक की यात्रा मेट्रो से की थी। जल्दबाजी में उतरते समय मेरा बैग मेट्रो में ही छूट गया। मुझे अपने आफिस पहुँचकर अपनी गलती का पता चला।

मेरे सुखद आश्चर्य की सीमा न रही जब मेट्रो के एक कर्मचारी श्री दीपक सिन्हा ने मुझे फोन पर बुलाया कि मेरा बैग राजीव चौक मेट्रो के आफिस में है और मैं अपना सामान ले जा सकता हूँ। उनको व्यवहार बहुत सुखद और प्रशंसनीय है। मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ क्योंकि मेरे बैग में मेरे आफिस के कई कागजात आदि रखे थे। मैं चाहता हूँ कि ऐसे ईमानदार श्री दीपक सिन्हा को प्रमाण पत्र सहित सम्मानित करना चाहिए जिससे कि दूसरे कर्मचारी भी ईमानदारी का पाठ सीख सकें।

सधन्यवाद

भवदीय

(नाम, पता व फोन नं.)

CBSE – 2016

11. बस में यात्रा करते हुए आपका एक बैग छूट गया था जिसमें जरूरी कागज और रुपये थे। उसे बस कंडक्टर ने आपके घर आकर लौटा दिया। उसकी प्रशंसा करते हुए परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए।

उत्तर:

सेवा में,

अध्यक्ष,

पंजाब राज्य परिवहन निगम,

अम्बाला।

दिनांक : 25 फरवरी, 20XX

विषय-बस में छूटे बैग का वापस मिलना। महोदय, कल दिनांक 24 फरवरी 20XX को मैंने दिल्ली में कार्य समाप्ति पर अम्बाला के लिए दिल्ली बस स्टैण्ड से वातानुकूलित (एयर कंडीशनिंग) बस पकड़ी थी। सफर पूर्ण होने पर मैं बस से उतर कर अम्बाला चला गया। मेरे सुखद आश्चर्य की तब सीमा नहीं रही जब दो घंटे पश्चात बस के कंडक्टर श्री रामनाथ चौधरी मेरे घर का पता पूछते हुए मेरे बैग के साथ मेरे घर पहुँच गये। तब मुझे अहसास हुआ कि बस से उतरते हुए मैं अपना बैग बस में भूल गया था, जिसमें कई जरूरी कागज, कुछ रुपये और भारत सरकार द्वारा जारी आधार कार्ड था। उसी पर मेरे घर का पता लिखा हुआ था। मुझे कंडक्टर का व्यवहार बहुत सराहनीय और प्रशंसनीय लगा। मैं उसकी ईमानदारी के प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस तरह के ईमानदारे कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, जिससे दूसरे कर्मचारी भी ईमानदारी का पाठ सीख सकें। सधन्यवाद और श्री रामनाथ चौधरी का पुनःआभार।

भवदीय

(नाम, पता, फोन नम्बर)

(दिनांक 28 जनवरी 20XX)

CBSE – 2015

12. अपनी कक्षा को आदर्श कक्षा का रूप देने के लिए अपने सुझाव देते हुए प्रधानाचार्य महोदय को एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

उत्तर:

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

नवीन भारती पब्लिक स्कूल,

सरोजनी नगर, नई दिल्ली।

विषय : आदर्श कक्षा के सम्बन्ध में सुझाव हेतु।

महोदय,

मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं अपनी कक्षा को एक आदर्श कक्षा के रूप में देखना चाहता हूँ। इसके लिए मैं आपके सम्मुख कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आदर्श कक्षा आदर्श विद्यार्थियों से बनती है। अतः ज्ञान को प्राप्त करके ही विद्यार्थी आदर्श विद्यार्थी बन सकता है। यह विद्या ही है जो मनुष्य को नम्र, सहनशील और गुणवान बनाती है। यदि अध्यापक प्रत्येक छात्र को पढ़ाई हेतु प्रेरित करें तथा उनके लिए उचित समय सारणी तैयार करें तो भविष्य में प्रत्येक छात्र उन्नति कर सकेगा। पढ़ाई के साथ उन्हें नैतिक शिक्षा भी प्रदान की जाए जिससे वे अच्छाई और बुराई के बीच अंतर कर सकें। जो छात्र पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करे एवं आदर्श विद्यार्थी बनकर दिखाए, उसे पुरस्कृत किया जाना चाहिए ताकि कक्षा के अन्य विद्यार्थी भी उससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सफलता की ओर अग्रसर कर पाएं। विद्यार्थियों को अनुशासित किया जाए, कक्षा में साफ-सफाई के लिए प्रेरित किया जाए और समय के महत्व के विषय में जानकारी दी जाए। इस प्रकार की पहल और प्रयास द्वारा हमारी कक्षा एक आदर्श कक्षा बन जाएगी। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मेरे सुझावों पर अवश्य विचार करें। सधन्यवाद !

आपका आज्ञाकारी शिष्य

क.ख.ग.

कक्षा दसवीं 'ब'

दिनांक : 5 फरवरी, 20XX

CBSE - 2014

13. अपने मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए –

3/15 लाल नगर

आगरा

प्रिय मित्र भरत

नमस्ते

तुम्हारे पिता से ज्ञात हुआ कि तुमने बोर्ड की परीक्षा में अपने संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह समाचार सुनकर मेरा मन खुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था कि तुम परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो जाओगे, लेकिन यह जानकर कि तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ अपने संभाग में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया है, मेरी खुशी की सीमा नहीं रही।

इस परीक्षा के लिए तुम्हारी मेहनत और नियमित अनुशासन पूर्वक पढ़ाई ने ही तुम्हें इस सफलता तक पहूंचाया है। मुझे पूरी आशा थी कि तुम्हारी मेहनत रंग लाएगी और मेरा अनुमान सच साबित हुआ।। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम से जीवन में कोई भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

मैं सदा ही यह कामना करूंगा कि तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरि बढ़ाते रहो |

शेष मिलने पर

तुम्हारा मित्र

क ख ग

CBSE - 2013

अलंकार

अलंकार की परिभाषा-अलंकार का अर्थ है आभूषण। जिन उपकरणों या शैलियों से कार्यों की सुंदरता बढ़ाई जाती है उन्हें अलंकार कहा जाता है सरल भाषा में काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहते हैं

अलंकार के प्रकार-अलंकार मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं-

१-शब्दालंकार

२-अर्थालंकार

१-शब्दालंकार -**जहां शब्दों में चमत्कार उत्पन्न होता है** उसे शब्दालंकार कहते हैं। इसके अंतर्गत अनुप्रास अलंकार, यमक अलंकार, श्लेष अलंकार आते हैं

१ अनुप्रास अलंकार-जहां एक **वर्ण की आवृत्ति** एक या एक से अधिक बार होती है और काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है वहां अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण-तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

यहां त कि लगातार आवृत्ति हुई है इस कारण यह अनुप्रास अलंकार है।

२-यमक अलंकार-जहां एक शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग किया गया हो और प्रत्येक बार उसके शब्द के अर्थ अलग-अलग हो उसे यमक अलंकार कहते हैं। उदाहरण-

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय ।

इस पद में कनक शब्द का प्रयोग दो बार हुआ है प्रथम कनक का अर्थ सोना और दूसरे कनक का अर्थ धतूरा है।

३-श्लेष अलंकार-शिरीष का अर्थ है चिपकना। वह शब्द जिसमें अनेक अर्थ जुड़े हो उसे श्लेष अलंकार कहते हैं। उदाहरण-रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून। यहां दूसरी पंक्ति में पानी

शब्द है जो प्रसंग के अनुसार तीन अर्थ दे रहा है।

२-अर्थालंकार-अर्थालंकार में सौंदर्य भाव से संबंधित होता है यहां **अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होते हैं** उसे अर्थालंकार कहते हैं। इसकी पांच भेद होते हैं-

१-उपमा

२-रूपक

३-उत्प्रेक्षा

४-अतिशयोक्ति

५-मानवीकरण

१-उपमा अलंकार-जहां दो वस्तुओं में समान धर्म के आधार पर समानता बताई जाती है वहां उपमा अलंकार होता है इनमें तुलना एवं समानता के लिए सां ,सी,से, सम,सहश,व

सम , आदि योजक शब्द का प्रयोग होता है। उदाहरण-कर कमल सा कोमल है। यहां पर हाथों की कोमलता की समानता कमल से की गई है।

२-रूपक अलंकार-रूपक शब्द का अर्थ होता है एकता। वस्तुओं के बीच अभिनेता को स्पष्ट करना रूपक अलंकार का मुख्य गुण है यहां उपमेय और उपमान में भेद समाप्त हो जाता है वहां रूपक अलंकार होता है। उदाहरण-मैया! मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।

यहां पर चंद्रमा और खिलौने के बीच की भिन्नता को मिटाकर एकता प्रकट की गई है।

३-उत्प्रेक्षा अलंकार-उत्प्रेक्षा का अर्थ है किसी वस्तु के संभावित रूप की उपेक्षा करना जहां पर उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाती है वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस अलंकार में मानो ,जानो, मनु ,जनु, इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण-वही शुभ सरिता के तट पर कुटिया का कंकाल पड़ा है ,मानो वासो में धूल बनकर शत-शत हाहाकार खड़ा है।

४-अतिशयोक्ति अलंकार-जब किसी की अत्यंत प्रशंसा करते हुए कोई बात बहुत बढ़ा चढ़ा कर अथवा लोक सीमा का उल्लंघन करके कहीं जाए तब वह अतिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण-देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करके करुणानिधि रोए पानी परात को हाथ छुऔ नहीं नैनन के जल सौ पग धोए।।

हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आग लंका सारी जल गई गए निशाचर भाग।

५-मानवीकरण अलंकार-जहां जड़ वस्तुओं अर्थात प्रकृति पर मानवीय चेष्टा ओं का आरोप किया जाता है वहां मानवीकरण अलंकार होता है। उदाहरण-आ रही रवि की सवारी नवकिरण का रथ सजा है कली कुसुम से पथ सजा है बादलों से अनु चोरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।

अलंकार पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न (भाग १)

१-अलंकार की परिभाषा दीजिए?

उत्तर-काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहते हैं।

२-अलंकार कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर-अलंकार मुख्य दो प्रकार के होते हैं १-शब्दालंकार २-अर्थालंकार।

,३-शब्दालंकार के अंतर्गत कुल कितने अलंकार पाए जाते हैं?

उत्तर-शब्दालंकार के अंतर्गत कुल तीन प्रकार के अलंकार पाए जाते हैं १-अनुप्रास अलंकार

२-यमक अलंकार

३-श्लेष अलंकार।

४-अर्थालंकार के अंतर्गत कुल कितने अलंकार पाए जाते हैं?

उत्तर-अर्थालंकार के अंतर्गत कुल 5 अलंकार पाए जाते हैं-१-उपमा

२-निरूपक ३-उत्प्रेक्षा ४-अतिशयोक्ति

५-मानवीकरण।

५-निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर इनमें कौन सा अलंकार है बताइए?

१-पीपर पात सरिस मन डोला।

उत्तर-उपमा अलंकार।

६-वंन शारदी चंद्रिका चादर ओढ़े। है इसमें कौन सा अलंकार है?

उत्तर-रूपक अलंकार

७-तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए कौन सा अलंकार है।

उत्तर-अनुप्रास अलंकार

८-उपमा अलंकार किसे कहते हैं?

उत्तर-जहां उपमेय के समान गुण धर्म आदि के आधार पर उपमान से समानता बताई जाए वहां उपमा अलंकार होता है उदाहरण-कर कमल सा कोमल है।

९-बढ़त बढ़त संपत्ति सलील मन सरोज बढ़ जाए पहचानिए कौन सा अलंकार है?

उत्तर-रूपक अलंकार

१०-उपमा अलंकार की पहचान बताइए?

उत्तर-उपमा अलंकार में तुलना एवं समानता के लिए सा सी से सम साहस शीश आदि योजक शब्द का प्रयोग होता है।

<u>अलंकार पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर</u> (पिछले 10 वर्षों के अनुसार)

(भाग 2)

१-वह बांसुरी की धुनि कानि परै , कुल कानि हियो तजिभाजति है। इसमें कौन सा अलंकार है?

उत्तर-अनुप्रास अलंकार

२-नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देंह जैसे हिल रही हो। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर-उत्प्रेक्षा अलंकार।

३-प्रश्नचिन्हनो में उठी है भाग्य सागर की हिलोरै। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है बताइए?

उत्तर-रूपक अलंकार

४-वह जिंदगी क्या जिंदगी, जो सिर्फ पानी -सी सही। इसमें कौन सा अलंकार है?

उत्तर-उपमा अलंकार

५-उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण लिखिए?

उत्तर-नील परिधान बीच सुकुमारि, खुल रहा था मृदुल अधखुला अंग, खिला हो जो बिजली के फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग।

६-अनुप्रास अलंकार का उदाहरण दीजिए?

उत्तर-अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है-तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।

लाली मेरे लाल की जीत देखौ तित लाल। लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।

७-सुरति सुंदर सुखद सुमन तुझ पर खेलते हैं। यह कौन सा अलंकार है?

उत्तर-अनुप्रास अलंकार।

८-सिंधु सा विस्तृत और अथाह में कौन सा अलंकार है पहचानिए?

उत्तर-उपमा अलंकार

९-एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास ।अलंकार स्पष्ट कीजिए?

उत्तर-रूपक अलंकार।

१०-कल कानन कुंडल मोरपंखा उर पै बना माल बिराजति है। अलंकार पहचान कर लिखिए?

उत्तर-अनुप्रास अलंकार।

(भाग 3) **<u>अलंकार पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर-</u>**(पिछले 10 वर्षों के अनुसार)

१-तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए। उपयुक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

क-यमक ख-श्लेष ग-अनुप्रास घ-रूपक

उत्तर-अनुप्रास अलंकार

२-चरण कमल बंदौ हरिराई, इन पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?

क-उत्प्रेक्षा अलंकार ख-उपमा अलंकार ग-यमक अलंकार घ-रूपक अलंकार

उत्तर-रूपक अलंकार।

३-निम्नलिखित में से कौन सा शब्दालंकार नहीं है।

क-श्लेष ख-यमक ग-उपमा घ-अनुप्रास

उत्तर-उपमा अलंकार।

४-निम्नलिखित में से कौन सा अर्थालंकार नहीं है

क-उपमा ख-रूपक ग-उत्प्रेक्षा घ-यमक

उत्तर -यमक।

५-तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है'मैं कौन सा अलंकार है?

क-श्लेष अलंकार ख-अनुप्रास अलंकार ग-यमक अलंकार घ-रूपक अलंकार

उत्तर-यमक अलंकार।

६-चरण कमल बंदों हरिराई"मैं कौन सा अलंकार है?

क-श्लेष अलंकार ख-यमक अलंकार ग-अनुप्रास अलंकार घ-रूपक अलंकार

उत्तर-रूपक अलंकार।

७-कालिंदी कूल कदंब की डारन। मैं कौन सा अलंकार है?

क-श्लेष अलंकार ख-यमक अलंकार ग-अनुप्रास अलंकार घ-रूपक अलंकार

उत्तर-अनुप्रास अलंकार।

८-मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों मैं कौन सा अलंकार है?

क-रूपक ख-श्लेष ग-यमक घ-अनुप्रास

उत्तर-रूपक अलंकार।

९-हनुमान की पूंछ में लग न पाई आग। लंका नगरी जल गई, गए निशाचर भाग। पंक्ति में निहित अलंकार बताइए?

क-उपमा ख-अतिशयोक्ति ग-यमक घ-रूपक

उत्तर-अतिशयोक्ति।

१०-हरिपद कोमल कमल से। मैं कौन सा अलंकार है?

क-उपमा ख-अनुप्रास ग-यमक घ-उत्प्रेक्षा

उत्तर-उपमा।

(भाग 4) **<u>अलंकार पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर</u>**-(पिछले 10 वर्षों के अनुसार)

१-माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

क-श्लेष अलंकार ख-यमक अलंकार ग-अनुप्रास अलंकार घ-रूपक अलंकार

उत्तर-यमक अलंकार।

२-रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए ना उबरे, मोती, मानुस, चून।। पंक्ति में निहित अलंकार बताइए?

क-श्लेष अलंकार ख-यमक अलंकार ग-अनुप्रास अलंकार घ-रूपक अलंकार

उत्तर-श्लेष अलंकार।

३-पानी परात को हाथ छुऔ नहीं नैनन के जल सौ पग धोए। इसमें कौन सा अलंकार है?

क-यमक अलंकार ख-अतिशयोक्ति अलंकार ग-रूपक अलंकार घ-अनुप्रास अलंकार

उत्तर-अतिशयोक्ति अलंकार।

५-आ रही रवि की सवारी, नवकिरण का रथ सजा है। कली कुसुम से पथ सजा है बादलों से अनुचरो ने स्वर्ण की पोशाक धारी। इसमें कौन सा अलंकार है?

क-रूपक अलंकार ख-अतिशयोक्ति अलंकार ग-मानवीकरण अलंकार घ-उपमा अलंकार

उत्तर-मानवीकरण अलंकार।

६-काली घटा का घमंड घटा। पंक्ति में निहित अलंकार बताइए?

क-यमक अलंकार ख-रूपक अलंकार ग-अनुप्रास अलंकार घ-अतिशयोक्ति अलंकार

उत्तर-यमक अलंकार।

७-तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए। मैं कौन सा अलंकार है?

क-उत्प्रेक्षा अलंकार ख-अनुप्रास अलंकार ग-रूपक अलंकार घ-यमक अलंकार

उत्तर-अनुप्रास अलंकार

८-लघु तरणि हंसिन- सी सुंदर। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

क-उपमा अलंकार ख-अनुप्रास अलंकार ग-श्लेष अलंकार घ-यमक अलंकार

उत्तर-उपमा अलंकार।

९-रघुपति राघव राजा राम। नी कौन सा अलंकार है?

क-रूपक अलंकार ख-अनुप्रास अलंकार ग-यमक अलंकार घ-मानवीकरण अलंकार

उत्तर-अनुप्रास अलंकार।

१०-पीपर पात सरिस मन डोला मैं कौन सा अलंकार है?

क-अनुप्रास अलंकार ख-श्लेष अलंकार ग-उपमा अलंकार घ-अतिशयोक्ति अलंकार

उत्तर-उपमा अलंकार।

(भाग 5**) <u>अलंकार पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर</u>**-(पिछले 10 वर्षों के अनुसार)

१-अंबर -पनघट में डुबो रही, तारा घट ऊषा नागरी। मैं कौन सा अलंकार है?

उत्तर-रूपक अलंकार ।

२-विपत्ति कसौटी जे कसे तेई सांचे मीत। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर-रूपक अलंकार

३-सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात। मनु नील मणि सेल पर आप तो

परर्यो प्रभात।।

उत्तर-उत्प्रेक्षा अलंकार।

४-एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर-रूपक अलंकार

५-जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।बारै उजियारे करै बढे अंधेरो होय। इसमें कौन सा अलंकार है?

उत्तर-श्लेष अलंकार

६-मखमल के झूल पड़े हाथी सा टीला। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर-उपमा अलंकार।

७-पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार निहित है?

उत्तर-रूपक अलंकार

८-आगे नदियां पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर-अतिशयोक्ति अलंकार

९-चरण सरोज पखारन लागा। इसमें कौन सा अलंकार है?

उत्तर-रूपक अलंकार

१०-चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही है जल थल में। इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर-अनुप्रास अलंकार।

**********@@**********@@**********